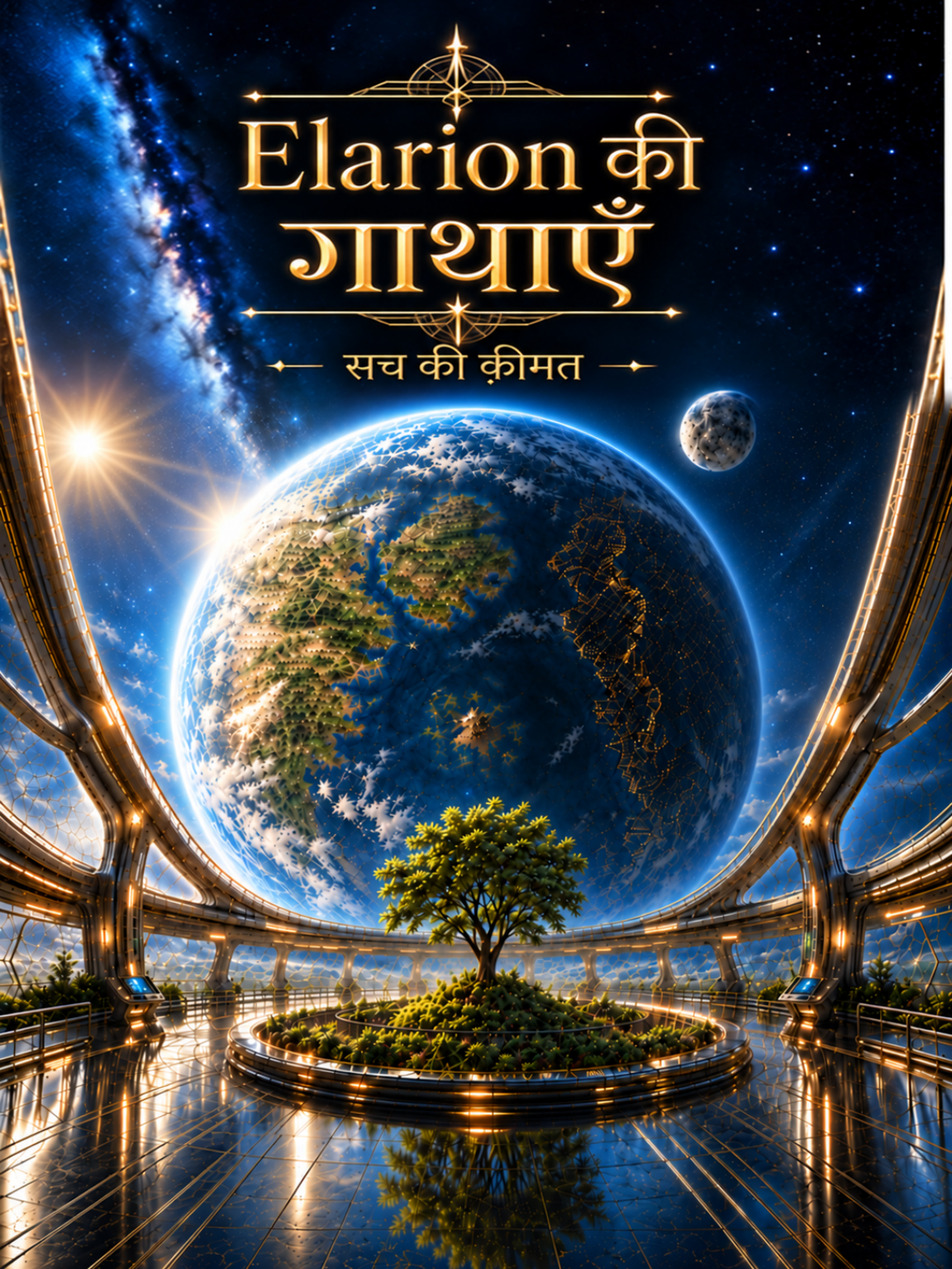
Elarion की गाथाएँ
सच की क़ीमत

विषय-सूची

भाग I — पृथ्वी और ELARION 5

1. पृथ्वी: गतसमनी का बगीचा 7
2. पृथ्वी: यहूदा का चुंबन II 11
3. ELARION: ELARION का सूर्य 12
4. पृथ्वी: मरियम मगदलीनी 17
5. ELARION: संघ की राजधानी NITRA 35
6. पृथ्वी: यहूदा का चुंबन 52
7. ELARION: स्वर्ण वलय 62
8. पृथ्वी: विभाजन का दिन 65
9. ELARION: परत 70
10. पृथ्वी: शापित अंजीर का पेड़ 83
11. ELARION: MAREIA LIOREN 104
12. पृथ्वी: पहाड़ पर यीशु 110
13. ELARION: ARIEN KORVETH 115
14. पृथ्वी: एक नई पीढ़ी का आरंभ 142

भाग II — एक अपराध के टुकड़े 148

15. 30 मुद्राएँ 148
16. घाव को बजट मिलता है 153
17. रक्षा के न्यास 158
18. BIO-AI, जिसके भीतर नफ़रत नहीं थी 164
19. बिना नक़्शे की प्रयोगशालाएँ 169
20. MAREIA का संदेह 174
21. अंधेपन की परीक्षा 182

22. अपवाद....194
23. आख़िरी भुगतान....203
24. पहला बुख़ार....219

भाग III — स्वर्ण वलय की महामारी....233

25. AURIOLA के घर....233
26. पूरी तस्वीर से अनजान प्रणालियाँ....242
27. वह नाम जिसे लेने से वे डरते थे....252
28. शीशे के पीछे स्वर्ण वलय....259
29. JESAIR की आवाज़ और एकीकृत एलार का सेतु....268
30. तिहाई....285
31. शीशे के उस पार....303
32. वे जो आते हैं....309

भाग IV — तिहाई के बिना ELARION....321

33. जिन हाथों की कमी थी....321
34. जीवितों का हिस्सा....334
35. महामारी का वित्तीय ढाँचा....344
36. वह आदमी जिसके पास नक़्शा था....353
37. सिर्फ़ ARIEN नहीं....365
38. तिहाई के बाद की महासभा....371
39. एक एलार....389
40. सत्ता का भार....401

पृथ्वी के लिए एक सीख....429

धरती पर प्रौद्योगिकी की बढ़ती ताक़त को काबू में रखने का सवाल....429
भ्रष्टाचार और अकुशल शासन....430
कर चोरी की समस्या....430

युद्धों का अंत और पैसों की हर हेराफेरी का तत्काल खुलासा.....431
सार्वभौमिक मूल आय (UBI) का न्यायपूर्ण और पारदर्शी क्रियान्वयन.....431
अनंत जीवन की चुनौतियाँ और पृथ्वी की आबादी के सवाल का पारदर्शी हल.....432

राजनीतिक आंदोलन HTTPS://HUMANITYUNITEDMOVEMENT.ORG.....433

राजनीति का आधार, सहज विवेक.....433
राजनीतिक अकादमी.....435
एक वैश्विक दुनिया के लिए वैश्विक आंदोलन.....437
भरोसे की बुनियाद है पारदर्शिता.....438
तकनीकी प्रगति और काम का भविष्य.....441
अवसर की समानता और मनुष्य की गरिमा.....442
दूर तक सोचना और भविष्य की ज़िम्मेदारी.....442
आंदोलन ख़ुद कैसे चले.....443
आख़िर हम हासिल क्या करना चाहते हैं?.....444
नई पीढ़ी के नाम.....445

भाग I — पृथ्वी और Elarion

ब्रह्मांड में हर दूरी का अर्थ बिछोह नहीं होता।

देह के लिए तीस प्रकाश-वर्ष एक अथाह खाई है। प्रकाश के लिए एक लंबी यात्रा। स्मृति के लिए शायद उससे कुछ कम। तारों के विस्तार में कहीं दो ग्रह अपने-अपने सूर्य की परिक्रमा करते थे। न वे एक ही पदार्थ से बने थे, न उनका तारा एक था। फिर भी उनमें वैसा ही साम्य था जैसा दो दूर-दूर के सपनों में हो सकता है।

दोनों पर समुद्र थे जो भोर में चाँदी हो जाते थे। दोनों पर बादल थे, पहाड़, नदियाँ, मरुस्थल और ऐसे भूभाग जहाँ युगों से हवा धूल में अपनी मौन लिपि लिखती आई थी। दोनों पर पत्थरों पर पानी बरसता था, धरती से पेड़ उगते थे और जीव सीखते थे पीड़ा और लालसा का भेद, भय और आशा का भेद, जो मिला है और जिसे बदला जा सकता है, उन दोनों का भेद।
उन ग्रहों में एक का नाम Elarion था।

दूसरे का नाम पृथ्वी रखा जाना था।

वे एक-दूसरे से दूर थे, पर इतने भी दूर नहीं कि कभी उनके बीच से प्रकाश, कोई विचार, कोई संकल्प या फिर इनसे भी निःशब्द कोई चीज़ गुज़र न सके। ब्रह्मांड केवल अंतरिक्षयानों के रास्ते ही नहीं जानता। वह प्रभाव की धीमी धाराओं को भी जानता है, अलग-अलग इतिहासों के बीच के अदृश्य बंधनों को, और उन चीज़ों की विचित्र वापसी को भी जिन्हें हम खोया हुआ समझ बैठे थे।
इन दोनों संसारों को जोड़ने वाला सूत्र महज़ संयोग का साम्य नहीं था।

वह सरल नहीं था। न ऐसा था जिसे देखते ही मानचित्र पर उकेरा जा सके या इतिहास-वृत्त में दर्ज किया जा सके। उनका बंधन उन बातों में से था जो पीछे मुड़कर ही दिखाई देती हैं, जब नियति पूरी हो चुकती है और मनुष्य सहसा समझता है कि जो घटनाएँ अलग-अलग लगती थीं, वे शुरू से एक ही वाक्य के अंश थीं।

Elarion के लोग बहुत ऊँचाई तक पहुँच चुके थे। उनके शहर आकाश को छूते थे, उनके यान ग्रहों के बीच के अँधेरे से परिचित थे, उनकी मशीनें उन चीज़ों की गणना करती थीं जो कभी केवल आभास की पहुँच में थीं। उन्होंने आयु बढ़ाना, देह को चंगा करना, रेगिस्तानों का रूप बदलना और गुंबदों के नीचे संसार बसाना सीख लिया था। वे अपने भविष्य की ओर उस जाति के साहस से देखते थे जिसे विश्वास होने लगा था कि शायद ही कोई चीज़ सदा के लिए असंभव हो।

पर सबसे उन्नत सभ्यताएँ भी मानवीय रहती हैं, जब तक उनमें ऐसे जीव बसते हैं जो प्रेम और ईर्ष्या कर सकते हैं, क्षमा कर सकते हैं, डर सकते हैं और सत्ता की लालसा रख सकते हैं। और जहाँ मनुष्य है, वहाँ इतिहास कभी केवल तकनीक का इतिहास नहीं होता। वह हृदय का इतिहास भी होता है।

उन दिनों Elarion पर दो लोग रहते थे।

Jesair Davion।

Mareia Lioren।

उनके नाम अभी किसी मिथक का हिस्सा नहीं बने थे। वे बस ऐसे नाम थे जिन्हें कमरों में, रास्तों और बगीचों में, दोस्तों और करीब से जानने वालों के बीच पुकारा जाता था। पर कुछ नामों का भाग्य निराला होता है। पहले वे एक मनुष्य के होते हैं। फिर पीड़ा के। फिर स्मृति के। और अंत में वे ऐसे रूप में लौटते हैं जिसे अब कोई पूरी तरह पहचान नहीं पाता। यह कहानी Elarion पर शुरू होती है, एक अपरिचित सूर्य के प्रकाश में।

पर उसकी गूँज सदा वहीं नहीं रहेगी।

क्योंकि कुछ जीवन एक संसार की सीमा पर समाप्त नहीं होते। कुछ मुलाकातें मानो अपने घटने से पहले ही घट चुकी होती हैं। और कुछ प्रेम इतिहास में इसलिए नहीं लौटते कि उन्हें विदा लेना नहीं आता, बल्कि इसलिए कि उनकी बात अभी पूरी नहीं हुई है।

1. पृथ्वी: गतसमनी का बगीचा

फसह के अंतिम भजन गाए जा चुके थे और यरूशलेम रात में डूब रहा था। यीशु अपने शिष्यों के साथ किद्रोन नाला पार कर गए। पीछे छूटते नगर की साँसों में अब भी दिन की गरमी थी, पर घाटियों में ठंडक उतर आई थी। जैतून के पहाड़ पर ऐसा सन्नाटा था मानो पत्थरों तक ने साँस रोक ली हो।

वे उस जगह आए जिसे गतसमनी कहते थे। वहाँ एक बगीचा था, मरोड़ खाए तनों वाले जैतून के पेड़ थे और पत्तियों की धीमी सरसराहट थी। शिष्य उसे जानते थे। कोई उत्सव-स्थल नहीं था वह, बस एक साधारण-सा एकांत, जहाँ मनुष्य तब चला आता था जब उसे बिना किसी साक्षी के परमेश्वर से बात करनी होती थी।

यीशु ठहर गए। उनका मुख शांत था, पर यह वह शांति नहीं थी जो सहज घड़ियों में चेहरे पर रहती है। यह वह शांति थी जिसने भीतर तक हिल गई किसी चीज़ को बिखरने से रोक रखा था।

“तुम यहाँ बैठो,” उन्होंने धीरे से कहा, “तब तक मैं जाकर प्रार्थना करूँ।”

फिर वह पतरस, याकूब और यूहन्ना को थोड़ा और आगे ले गए। तीनों बिना कुछ पूछे उनके पीछे चले। उन्हें लग रहा था कुछ घट रहा है जो उनकी समझ से बाहर है। जिन यीशु ने उनके सामने रोगियों को चंगा किया था, आँधी को चुप करा दिया था, और ऐसे अधिकार से बोले थे जैसा उन्होंने किसी और के वचनों में नहीं सुना था, उन्हीं की चाल अचानक भारी हो गई थी। मानो हर पग पर कोई भार हो जो उन्हें दिखाई नहीं देता था।

अंत में वह उनकी ओर भी मुड़े।

“मेरा मन इतना उदास है कि जान निकली जाती है,” उन्होंने कहा। “यहीं रहो और मेरे साथ जागते रहो।”

वे शब्द किसी उलाहने से भी भारी पड़े। पतरस ने मुँह खोला, मानो एक बार फिर अपनी निष्ठा का वचन देना चाहता हो, पर यीशु चल दिए थे। दूर नहीं, आँखों के सामने ही, थोड़ी-सी दूर। फिर भी उनके बीच सहसा ऐसी दूरी खुल गई जिसे कोई पार नहीं कर सकता था।

यीशु एक जैतून के पेड़ के पास रुके। हवा ने उनके वस्त्र को छुआ। ऊपर चाँदी-सी पत्तियाँ काँप रही थीं और धरती पर छायाएँ बिखरे हुए पानी की तरह पड़ी थीं।

वह घुटनों के बल बैठ गए।

फिर मुँह के बल धरती पर गिर पड़े।

और उसी क्षण उनके चारों ओर रात और गहरी हो गई।

वे दृश्य उनके पास सजीव चित्रों की तरह आए, स्वप्न और साधारण स्मृति से कहीं अधिक स्पष्ट। अटल। निर्मम।

उन्होंने पेड़ों के बीच मशालें देखीं।

उन्होंने हथियारबंद पुरुषों को आगे बढ़ते देखा, धातु की खनक सुनी, फुसफुसाहटें और आदेश सुने। और उनके बीच यहूदा को देखा। उसका मुख पीला था, पर निश्चय अडिग था। वह उस आदमी की तरह आगे चल रहा था जो सीमा लाँघ चुका है और अब पीछे देखने से डरता है। पास आकर उसने तलवार या आरोप से नहीं, एक चुंबन से उनकी पहचान करा दी।

इस दर्शन में यीशु ने अपने गाल पर यहूदा के होंठों का स्पर्श महसूस किया। वह जानते थे कि इसी संकेत से उन्हें सौंप दिया जाएगा।

"मित्र," वह शब्द उनके भीतर गूँजा जो उन्हें कहना होगा। और उसकी पीड़ा बेड़ियों से भी अधिक थी।

दृश्य बदल गया।

उन्होंने महायाजक के घर का आँगन देखा। आग। लपटों से उजला हुआ एक दासी का चेहरा। अनजान लोगों के बीच आग तापता पतरस, नज़रों से बचता हुआ। उन्होंने प्रश्न सुना, "क्या तू भी उसके साथ था?"

और फिर पतरस का उत्तर सुना।

"मैं उसे नहीं जानता।"

यीशु ने आँखें मूँद लीं, पर दृश्य ओझल नहीं हुआ।

दूसरी बार इनकार। फिर तीसरी बार। अपनी ही आवाज़ से डरे हुए पतरस ने ऊँचे स्वर में शपथ खाई कि वह उस मनुष्य को नहीं जानता। तभी रात में मुर्गे की बाँग गूँजी। तीखी। छोटी-सी। भयावह रूप से साफ़।

और यीशु ने पतरस की आँखें देखीं, उस क्षण की, जब उसे याद आएगा।

उन आँखों में उन्होंने अपने ही भय से टूटे हुए मित्र को देखा।

यीशु काँप उठे।

"हे पिता," उन्होंने फुसफुसाकर कहा, "वे धूल हैं। दुर्बल हैं। और मैं उनसे प्रेम करता हूँ।"

फिर एक और दृश्य आया।

आँगन। उपहास। मार से ढका हुआ चेहरा। सैनिकों के हाथों में सरकंडा। सिर में धँसाए जाते काँटे। हवा में आग की तरह लहराती भीड़ की चीख़। वे हाथ जो उन्हें पीटते थे, फिर भी जानते नहीं थे कि किसे छू रहे हैं। वे मुँह जो उनकी हँसी उड़ाते थे, फिर भी समझते नहीं थे कि उनमें साँस परमेश्वर की दी हुई है।

फिर पहाड़ी।

क्रूस की लकड़ी।

कीलें।

यीशु ने शहतीर पर अपनी फैली हुई बाँहें देखीं। कलाई की त्वचा पर रखा लोहा देखा। ऊपर उठा हथौड़ा देखा। वह गिरा भी न था कि उनकी देह पीड़ा से तन गई, मानो भविष्य वर्तमान को चीरकर अभी से ही उन तक आ पहुँचा हो।

उनके मुँह से धीमी कराह निकली।

माथे पर पसीने की बूँदें उभरीं। पहले निर्मल, फिर गहरी। बालों के बीच से होती हुई कनपटियों पर बहने लगीं, लहू की बूँदों जैसी लाल और भारी। वे गतसमनी के बगीचे की मिट्टी पर गिरीं, जैतून की जड़ों के बीच धूल में।

यीशु काँप रहे थे, पर भागे नहीं।

“हे मेरे पिता,” उन्होंने इतने मंद स्वर में कहा कि रात ही सुन सकी, “यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझसे टल जाए।”

मौन।

ख़ाली मौन नहीं था वह। वह उस पिता का मौन था जो साँस से भी निकट है, फिर भी उस राह को हटा नहीं लेता जिस पर चलना आवश्यक है।

यीशु ने हथेलियाँ ज़मीन पर गड़ा दीं। उँगलियाँ मिट्टी में धँस गईं। दर्शन थमे नहीं। उन्होंने क्रूस के नीचे अपनी माँ को देखा। अपने प्रिय शिष्य को उसके पास खड़ा देखा। उन लोगों को देखा जो मुँह फेर रहे थे। उस आकाश को देखा जिसे अँधेरा ढँक लेगा। अपनी देह को देखा, जो एक साँस खींचने के लिए ऐंठकर ऊपर उठेगी। प्यास देखी। अकेला छोड़ दिए जाने की पीड़ा देखी। मृत्यु देखी। और मरियम मगदलीनी को देखा, जो तीन उँगलियों से उनकी कील से बिंधी कलाई को छू रही थी।

फिर भी इस सबके पार उन्हें कुछ और भी दिखाई दिया।

बहुत धुँधला, रात के छोर पर प्रकाश की पतली-सी पट्टी जैसा।

उन्होंने वे चेहरे देखे जो अभी अस्तित्व में नहीं आए थे। दूर देश और दूर काल के लोग। उन्होंने पापियों को देखा जो अपने अपराध पर रोएँगे। रोगियों को, जो उनके नाम का सहारा लेंगे। टूटे हुओं को, जिन्हें उनके घावों में आशा मिलेगी। पतरस को देखा, जो गिरकर फिर उठेगा। शिष्यों को देखा, जो तितर-बितर होंगे और फिर लौटेंगे। उन्होंने देखा कि प्रेम विश्वासघात, भय और मृत्यु के पार भी जा सकता है, यदि वह प्रेम बना रहे।

“जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं,” अंत में उन्होंने कहा, “जैसा तू चाहता है वैसा हो।”

उनके ये शब्द कहते ही देह की पीड़ा थम नहीं गई। भय मिट नहीं गया। जो घड़ी आने वाली थी वह उनसे टली नहीं। पर उनके भीतर एक शांत समर्पण दृढ़ हो गया, और यह समर्पण पराजय नहीं, एक भेंट था।

उन्होंने सिर उठाया।

“हे पिता,” उन्होंने विनती की, “मुझे सामर्थ्य दे कि अंत तक इनसे प्रेम करूँ। मुझे सामर्थ्य दे कि जो मुझे मारेंगे उन्हें शाप न दूँ। मुझे सामर्थ्य दे कि पतरस को दया की दृष्टि से देखूँ। मुझे सामर्थ्य दे कि मन में घृणा लाए बिना यहूदा का चुंबन स्वीकार करूँ। मुझे सामर्थ्य दे कि जब देह गिरने लगे तब भी क्रूस उठा सकूँ। मुझे सामर्थ्य दे कि तब भी तेरा पुत्र बना रहूँ जब देखने में ऐसा लगूँ जैसे परमेश्वर ने मुझे त्याग दिया हो।”

तभी बगीचे में हवा चली। जैतून के पत्ते सरसराए, जैसे कोई अदृश्य हाथ उनके ऊपर से गुज़रा हो। यीशु की साँस भारी थी पर अब सँभलकर चल रही थी। माथे पर लहू की बूँदें धीरे-धीरे ठंडी पड़ रही थीं।

वह शिष्यों के पास लौटे तो उन्हें सोता हुआ पाया।

पतरस का सिर झुका था, याकूब नींद में चुप पड़ा था और यूहन्ना की साँस बेचैन थी, मानो आने वाले आतंक ने उसे भी छू लिया हो। वे दुःख से थके हुए थे। देह से दुर्बल। मनुष्य थे।

कुछ पल यीशु उन्हें देखते रहे।

“तो क्या तुम एक घड़ी भी मेरे साथ जाग न सके?” उन्होंने पूछा।

इसमें केवल उलाहना नहीं था। यह उस मनुष्य की पीड़ा भी थी जो अपनी सबसे कठिन घड़ी में अकेला रह गया था। और उसकी कोमलता भी, जो उनकी दुर्बलता को उनके अपने स्वीकार करने से पहले ही जानता था।

“जागते रहो और प्रार्थना करो,” उन्होंने कहा, “कि परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तत्पर है, पर देह दुर्बल है।”

फिर वह बगीचे के अँधेरे की ओर मुड़े।

वे बस इतना जानते थे कि वह प्रार्थना करने जा रहे हैं।

पर वह जानते थे कि उस घड़ी से मिलने जा रहे हैं जो मशालें लिए रास्ते पर चली आ रही है।

अध्याय पर लेखक की टिप्पणियाँ

यह प्रसंग मुख्यतः नए नियम में वर्णित गतसमनी के बगीचे के दृश्य पर आधारित है। यीशु को होने वाले भविष्य के दर्शन यहाँ जोड़े गए हैं।

2. पृथ्वी: यहूदा का चुंबन II

बगीचे में यीशु के निकट पहुँचते ही दीवार के पास की वह रात इतनी प्रबलता से लौट आई कि एक पल के लिए उसे न सैनिक दिखे, न मशालें।

एक बार फिर वह उनके सामने खड़ा था। फिर उसे अपनी साँस महसूस हुई। फिर वही सुनाई दिया: बस।

लेकिन इस बार उसके पीछे हथियारबंद आदमी थे।

“प्रणाम, रब्बी,” उसने कहा।

यीशु ने उसे देखा और यहूदा समझ गया कि वह महायाजकों और चाँदी के सिक्कों के बारे में जानते हैं। और सबसे बढ़कर, वह समझते हैं कि उसने यही संकेत क्यों चुना।

यहूदा ने उन्हें चूमा।

इस बार ऊपर से सब अधिक शांत था। छोटा-सा चुंबन, सबके सामने, रीति के अनुरूप। इसीलिए कहीं अधिक भयानक। पहला चुंबन आवेग में हुई चूक था। यह उसका निर्जीव जुड़वाँ था। अब यह अपनाए जाने की याचना नहीं थी। यह बलि चढ़ने वाले की पहचान थी।

यीशु ने कहा,

“यहूदा, क्या तू मनुष्य के पुत्र को चुंबन देकर पकड़वाता है?”

और उस वाक्य में यहूदा ने एक और वाक्य सुना जो कहा नहीं गया था:

जिसे स्वीकार करने से मुझे एक बार तुझे रोकना पड़ा था, आज उसी से तू मुझे सौंप रहा है?

यहूदा पीछे हटा।

उसे लगा था कि भीतर विजय का अनुभव जागेगा। ज़रा-सा ही सही। कड़वा ही सही। पर कुछ नहीं जागा। केवल एक रिक्तता थी जिसमें वह गिरने लगा।

अध्याय पर लेखक की टिप्पणियाँ

यह अध्याय मुख्यतः नए नियम में वर्णित दृश्य पर आधारित है। यहूदा के मन में उठते विचारों की कल्पना कर उन्हें यहाँ जोड़ा गया है, ताकि वे पुस्तक के शेष कथानक से मेल खाएँ।

3. Elarion: Elarion का सूर्य

Elarion के मध्य भाग पर सूर्य धीरे-धीरे उग रहा था, मानो उसे भी उस संसार को जी भर देखने के लिए एक क्षण चाहिए था जो बीती सदियों में उसके नीचे इतना बदल गया था कि कभी किसी ने उसकी कल्पना भी न की होगी।

वे उसे सीधे-सादे ढंग से Elarion का सूर्य कहते थे। पुरानी भाषाओं में उसके बहुत-से नाम थे। सेलेनियों के गीतों में उसका नाम वन की साँस-सा कोमल सुनाई देता था, वेयरानी नाविकों के मानचित्रों में उसके लिए एक सटीक वर्णक्रमीय कूट था, और ऑरेलियाई वंश-वृत्तों में उसे उस आँख की संज्ञा दी गई थी जिसे सभी कुल याद हैं। पर अधिकांश लोगों के लिए वह बस सूरज था। शहरों पर पड़ती रोशनी, समुद्रों पर उतरती गरमी, कक्षीय वलयों की धातु की धारों पर चमक।

ऊपर से देखने पर Elarion ऐसा ग्रह लगता था जिसे अब कोई चोट नहीं पहुँच सकती थी।

उसके महासागरों को तैरते ऊर्जा-क्षेत्रों के जाल ने जोड़ रखा था। महाद्वीपों के ऊपर यातायात की तहें थीं, जिनमें मालवाहक गलियारे, यात्री-मॉड्यूल, स्वचालित यान और बचाव प्रणालियाँ चुपचाप सरकती थीं। ग्रह के जिस हिस्से में रात होती, वहाँ भी कोई जगह पूरी तरह अँधेरी नहीं होती थी। शहर किसी विराट जीव के तंत्रिका-तंत्र की तरह जगमगाते थे।

भूमध्य रेखा को घेरे एक विशाल चाप में कक्षीय वलय फैला था। बच्चे के हाथ से खिंचे गोले की तरह वह अखंड नहीं था। वह हज़ारों स्टेशनों, गोदियों, खनन केंद्रों, शोध-उद्यानों और ऊर्जा के लंगरों से बना था। इनके बीच स्वचालित यानों के बेड़े इस तारामंडल के दूसरे ग्रह Thaeron की ओर बढ़ते रहते थे।

Thaeron कभी विरल आकाश के नीचे एक कठोर गोला भर था। वहाँ पानी था, पर पर्याप्त नहीं। वायुमंडल था, पर उसे बदले बिना उसमें साँस नहीं ली जा सकती थी। रातें थीं जो बहुत लंबी खिंचती थीं, और रेगिस्तान थे जहाँ हवा शत्रु की तरह पेश आती थी। फिर भी सदियों पहले Elarion के लोगों ने तय कर लिया था कि वे उसे निर्जीव नहीं रहने देंगे।

पहले वहाँ मशीनें भेजी गईं।

फिर स्टेशन।

फिर गुंबदों के नीचे शहर।

फिर बंद बगीचे और वनों के लिए गुंबद।

और अंत में बच्चे आए, जिनका जन्म Thaeron के गुंबदों में हुआ था और जिन्हें उसकी तीखी रोशनी बिल्कुल स्वाभाविक लगती थी।

Thaeron ने ही Elarion को ब्रह्मांड के पैमाने पर सोचना सिखाया, और कारण एकदम व्यावहारिक था। जिस सभ्यता की पहुँच में दूसरा संसार हो, उसे एक ही संसार से बँधे रहने का हक़ नहीं था। Thaeron बचाकर रखी एक और साँस था। कच्चे माल का भंडार। भविष्य की प्रयोगशाला। एक ऐसी जगह जहाँ पूरे के पूरे उद्योग, समूचे शोध-कार्यक्रम, बचे रहने के सारे सपने ले जाए जा सकते थे।

यों Elarion बढ़ता गया।

तेज़ी से बढ़ा।

शायद बहुत तेज़ी से।

पिछले दो सौ वर्षों में उसके निवासियों ने उन रोगों का उपचार सीख लिया था जो कभी शहरों को उजाड़ देते थे। वे बंद खेतों में अन्न उगाते, स्वचालित मशीनों से निर्माण करते और महाद्वीपों के आर-पार पानी पहुँचाते थे। वे क्षतिग्रस्त अंगों को फिर से विकसित कर सकते थे, बशर्ते रोगी के पास समय हो और उसकी देह लंबा उपचार सह सके। इसीलिए कुछ वैज्ञानिकों को मृत्यु एक ऐसी समस्या लगने लगी थी जिसे शायद एक दिन वे बेहतर समझ पाएँगे। पर अस्पतालों में वह अब भी एक सच्चाई थी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अस्पतालों, स्कूलों, परिवहन और वित्तीय तंत्रों में काम करती थी। उसे जो आँकड़े मिलते, उनमें वह तुरंत कोई पैटर्न पहचान लेती थी। लेकिन अलग-अलग प्रणालियाँ अलग-अलग राज्यों और संस्थाओं के अधिकार में थीं। बेहतरीन मॉडल भी उन अभिलेखों की तुलना नहीं कर सकता था जिन्हें देखने की अनुमति उसे नहीं थी। और सटीक से सटीक गणना उस मनुष्य की जगह नहीं ले सकती थी जिसे निर्णय पर अपने हस्ताक्षर करने थे।

Elarion की आबादी लगभग नौ अरब थी।

तीन बड़ी शाखाएँ थीं।

ऑरेलियाई।

सेलेनी।

वेयरानी।

वे सभी Elarion के वासी थे। उनका ग्रह एक था। शहर, इतिहास, स्कूल, प्रेम, संघर्ष, क़ानून और साझा आपदाएँ भी। फिर भी उनके अंतर संस्कृति और राजनीति से आगे तक जाते थे। वे कहीं अधिक गहरे अंकित

थे, शरीर की भीतरी बनावट में, आनुवंशिकता में और उस ढंग में जिससे कुछ लक्षण पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आते थे।

ऑरेलियाइयों की आँखों में एक स्वर्ण वलय होता था।

वह हमेशा दिखाई नहीं देता था। किसी ख़ास रोशनी में उभरता था, बुखार में, गहरी एकाग्रता या पीड़ा में, या उन क्षणों में जब कोई अपने होने की सीमा छू लेता था। ऑरेलियाइयों के लिए वह निरंतरता का चिह्न था। कवियों के लिए इस बात का प्रमाण कि आत्मा का किनारा प्रकाश का बना है। चिकित्सकों के लिए एक आनुवंशिक परिघटना। राजनेताओं के लिए अस्मिता का एक नाज़ुक प्रश्न। कुछ लोगों के लिए अविश्वास का एक पुराना कारण।

सेलेनी जटिल तंत्रों के भीतर का संतुलन भाँप लेने की क्षमता के लिए जाने जाते थे। चिकित्सा, मनोविज्ञान, पारिस्थितिक तंत्रों, भूमि और जल की देखभाल तथा आघात से उबरने में सहायता देने में वे निपुण थे। उन्हें अच्छा नहीं लगता था जब लोग उन्हें कोमल कहते थे। कोमलता बस ऊपरी सतह थी। उसके नीचे जड़ों की दृढ़ता होती थी।

वेयरानी संगठन खड़ा करना जानते थे। वे प्रशासक थे, रणनीतिकार, वार्ताकार, संस्थाओं के निर्माता। अनेक राज्यों में बैंकिंग तंत्रों, व्यावसायिक संघों, निदेशक मंडलों, यातायात प्रणालियों और ग्रह से बाहर के कुछ संस्थानों में उनका दबदबा था। उन्हें सत्ता का भूखा कहना अन्याय होता। अधिक ठीक यह कहना था कि उन्होंने बहुत पहले सत्ता की भाषा सीख ली थी और उसे कभी भूले नहीं थे।

Elarion एकजुट नहीं था।

वहाँ चालीस राज्य थे। कुछ उतने ही पुराने जितनी कि लिपि, कुछ चंद पीढ़ियाँ पहले ही बने थे। लगभग हरेक की अपनी मुद्रा थी, अपना केंद्रीय बैंक, कराधान के अपने नियम, लेखांकन में अपनी छूटें और स्वतंत्रता की अपनी कल्पना।

कुछ सबसे छोटे राज्यों ने अपने छोटे आकार को ही कारोबार बना लिया था। उनके पास बड़े शहर, कारखाने या शोध केंद्र नहीं थे। वहाँ कर कम थे, मालिकों के रजिस्टर जनता की पहुँच से बाहर थे और क़ानून ऐसे थे कि गोपनीयता राज्य की ओर से दी जाने वाली एक सेवा थी। मूल्य कहीं और पैदा होता था, लोग कहीं और काम करते थे, मशीनें कहीं और उत्पादन करती थीं, पर काग़ज़ पर मुनाफ़ा यहीं जन्म लेता था। Elarion से कारखाने नहीं भाग रहे थे। वह आधार खिसक रहा था जिससे स्कूलों, अस्पतालों और नागरिकों के साझा हिस्से का ख़र्च निकलना था।

सबसे बड़ा और प्रौद्योगिकी तथा राजनीति में सबसे प्रभावशाली राज्य संघ था।

उसकी राजधानी Nitra थी। एक नदी और सात पहाड़ियों पर बसा शहर।

Nitra में अक्सर ऐसे मामलों के फ़ैसले होते थे जो दिखते तो राष्ट्रीय थे, पर वास्तव में पूरे ग्रह को छूते थे। वित्त परिषदें, सबसे बड़े संगणना केंद्र, राजनयिक दल, स्वास्थ्य परिसंघ, बैंकिंग केंद्र और ऐसे अभिलेखागार भी Nitra में थे जहाँ कुछ मंत्रियों तक को प्रवेश नहीं मिलता था।

कक्षा से देखने पर Elarion सफलता की एक तस्वीर लगता था।

पास जाकर देखने पर दरारें नज़र आती थीं।

एआई लोगों की खपत से अधिक उत्पादन कर रही थी, पर आबादी के एक बड़े हिस्से का पारंपरिक रोज़गार इतनी तेज़ी से छूट रहा था कि समाज उनके जीवन को उतनी तेज़ी से कोई नया अर्थ नहीं दे पा रहा था। उत्पादन बढ़ रहा था, पर उत्पादन प्रणालियों का स्वामित्व सिमटकर चंद हाथों में आ रहा था। राजनेता सार्वभौमिक मूल आय की बात करते थे, पर कोई ईमानदारी से नहीं बता पाता था कि उसकी गणना का आधार क्या हो, असली मुनाफ़ा कौन घोषित करता है और उस संसार में मनुष्य का हिस्सा कौन तय करता है जिसे अब वह अपने हाथों से नहीं बनाता।

चिकित्सा की उन्नति से जीवन और लंबा होने की आशा बँध रही थी, और शायद एक दिन ऐसा जीवन भी संभव होगा जिसका स्वाभाविक अंत प्रायः न आए। अभी तो चुपके-चुपके बस यह प्रश्न सिर उठाने लगा था कि यदि लोग जन्म लेते रहें और धीरे-धीरे मरना छोड़ दें तो सभ्यता का क्या होगा।

सत्ता सुरक्षा की बात करती थी।

नागरिक स्वतंत्रता की बात करते थे।

बैंक निजता की बात करते थे।

राज्य संप्रभुता की बात करते थे।

और इन सारे शब्दों के नीचे धन बहता था।

कुछ दिखता था। अधिकांश नहीं।

इसी में आने वाला पतन छिपा था।

आने वाला पतन बुद्धि की कमी से नहीं उपजने वाला था। Elarion के पास अपने से पहले की किसी भी सभ्यता से बढ़कर बुद्धि थी।

मशीनों की भी कमी नहीं थी। वे तूफ़ान, महामारियाँ, बाज़ारों की चाल और शहरों के भीतर पनपता तनाव तक भाँप सकती थीं।

नैतिकता की दुहाई देने वाले शब्द भी कम नहीं थे। वे तो ज़रूरत से ज़्यादा थे।

उसकी कमज़ोरी कहीं और थी।

सत्ता ने इस तरह चलना सीख लिया था कि पीछे उसकी कोई परछाईं दिखाई न दे।

और जब सत्ता की परछाईं दिखाई नहीं देती, तो आम लोग मान लेते हैं कि उनके और रोशनी के बीच कोई खड़ा नहीं है।

जिस वर्ष यह कहानी शुरू होती है, Elarion का सूर्य एक ऐसे ग्रह पर उग रहा था जिसे लगता था कि सबसे बड़े ख़तरे अब अतीत की बात हो चुके हैं।

Thaeron पर नए गुंबद खुल रहे थे।

Nitra में सार्वभौमिक मूल आय पर बड़ी बहस की तैयारी हो रही थी।

ऑरेलियाई Davion कुल में एक पुरुष फिर इस बात का विरोध कर रहा था कि लोग उसे चमत्कारों का उत्तराधिकारी कहें।

एक स्त्री तय कर रही थी कि क्या उस पुरुष को सदा के लिए छोड़ दे, जिससे डरना वह सीख चुकी थी।

स्वर्ण वलय से रहित एक बहन वित्तीय आँकड़ों को देख रही थी और उसे लग रहा था कि उनमें कुछ ऐसा ग़ायब है जो दिखाई देना चाहिए था।

और एक वेयरानी पुरुष, जिसने प्रेम को मालिकाना हक़ समझ लिया था, अभी नहीं जानता था कि एक दिन वह अपनी पीड़ा के लिए बजट तय करेगा।

संसार सुंदर था।

और ठीक इसीलिए कोई उसका विश्वास नहीं करना चाहता था कि वह टूट भी सकता है।

अध्याय पर लेखक की टिप्पणियाँ

इस पुस्तक में Elarion की घटनाओं के रूप में जो कुछ वर्णित है वह काल्पनिक है। किंतु मेरी राय में दूसरे ग्रहों पर मनुष्य-सदृश सभ्यताओं के होने की संभावना बहुत अधिक है। और उनमें से अनेक का भाग्य अपनी मोटी रूपरेखा में शायद पृथ्वी की मानवजाति के भाग्य से बहुत मिलता-जुलता है।

4. पृथ्वी: मरियम मगदलीनी

मगदला पानी के किनारे बसा था, और पानी वहाँ हर कहीं था।

वह उन जालों में था जो सुबह तट पर झिलमिलाते थे। मछुआरों के हाथों में था जब वे रस्सियों और बालों से पानी झटकते थे। सूरज उगने से पहले ही गलियों से गुज़रती स्त्रियों के मिट्टी के घड़ों में था। वह हवा में था, झील की नमकीन साँसों में, पक्षियों की पुकार में, और मछली की उस गंध में जो दूसरी त्वचा की तरह शहर से चिपकी रहती थी।

और फिर भी मरियम को लगता था कि वह प्यासी है।

उसकी प्यास गले और देह से भी गहरे कहीं थी। एक बेरहम प्यास, जो आधी रात उसे जगाती और अँधेरे में उठकर बैठने पर मजबूर करती, अपनी ही साँस सुनने और यह देखने के लिए कि कहीं उसमें से फिर कोई पराई आवाज़ तो नहीं निकलने वाली।

मगदला में लोग उसके बारे में दबे स्वर में बात करते थे।

कोई कहता बीमार है। कोई कहता उस पर शाप है। कोई कहता उसके साथ ऐसा कुछ हुआ था जो किसी स्त्री के साथ नहीं होना चाहिए, और तब से उसकी आत्मा घर में धुएँ की तरह भटकती है। बच्चे उससे डरते, स्त्रियाँ उसे देखकर अपने ऊपर क्रूस का चिह्न बनातीं, पुरुष ऐसे बनते जैसे उसे देखा ही न हो। वह बाज़ार से गुज़रती तो बातचीत थम जाती। वह आँख उठाती तो लोग मुँह फेर लेते।

और मरियम ने इस तरह चलना सीख लिया था कि किसी की राह में न आए।

मगर उसके भीतर शोर था।

हमेशा आवाज़ें नहीं होती थीं। कभी बस झोंके होते थे, जैसे हवा दरवाज़े से आ टकराए। कभी उसे लगता कि उसके विचार उसके अपने नहीं हैं। जैसे उसके भीतर कई प्राणी बैठे हों और सबकी चाह अलग-अलग हो। एक हँसता। एक रोता। एक उसके कान में कहता कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया है। एक उसे वे बातें याद करने को विवश करता जिन्हें वह भूलना चाहती थी। एक लोगों से डरता। एक उन्हें तुच्छ समझता। एक पानी की ओर दौड़ जाना चाहता था, फिर कभी न लौटने के लिए।

और सातवाँ चुप रहता।

वही सबसे भयानक था।

वह उसके भीतर बहुत गहरे बैठा रहता, बेआवाज़, बेनाम, केवल प्रतीक्षा करता हुआ। जब वह आता तो मरियम को कुछ महसूस नहीं होता था। न पीड़ा, न लाज, न डर। बस ख़ालीपन। मानो कोई उसका दिल निकालकर छाती में ऐसी खोखली जगह छोड़ गया हो जिसमें से ठंडी हवा बहती थी।
उस दिन यीशु को देखने से पहले ही उसने उनके बारे में सुन लिया था।

वह कफरनहूम की ओर से आए थे, लोग कहते थे। सभाघरों में शिक्षा देते थे। परमेश्वर के राज्य के बारे में बोलते थे, पर शास्त्रियों की तरह नहीं। रोगियों को चंगा करते थे। जिन्हें अशुद्ध माना जाता, उन्हें छूते थे। उन लोगों के साथ खाते थे जिन्हें धर्मपरायण लोग अपनी मेज़ पर नहीं देखना चाहते थे। कुछ का तो कहना था कि वह दुष्ट आत्माओं को आज्ञा देते हैं और वे उनकी सुनती हैं।
पहले तो मरियम को हँसी आई।

ज़ोर से नहीं। बस मन में। एक कड़वी हँसी।

एक और पुण्यात्मा, उसने सोचा। एक और आदमी जो पाप, पश्चात्ताप और शुद्धता की बातें करेगा और उस जैसी किसी स्त्री को देखते ही अपने कपड़े का छोर समेट लेगा कि कहीं वह उसे छू न ले।
वह उनके पीछे नहीं गई।

उसे कम से कम यही लगा।

मगर दोपहर बाद जब शहर तट की ओर चल पड़ा तो वह भी साथ हो ली। पहले बस यह देखने के लिए कि सब एक ही दिशा में क्यों उमड़े जा रहे हैं। फिर इसलिए कि भीड़ उसे साथ लिए चली जा रही थी। और अंत में इसलिए कि उसके भीतर कुछ था—कोई आवाज़ नहीं, कोई दुष्टात्मा नहीं, बल्कि अपनी इच्छा का बरसों से भूला हुआ कोई अंश—जो कम से कम एक ऐसा वाक्य सुनना चाहता था जिसमें धिक्कार की ध्वनि न हो।
यीशु पानी के पास खड़े थे।

उसने जैसी उनकी कल्पना की थी, वह वैसे नहीं थे। उनके वेश में ऐसा कुछ नहीं था जो उन्हें गलील के दूसरे पुरुषों से अलग करता। उनकी चप्पलें धूल से भरी थीं। वस्त्र साधारण था। चेहरे पर धूप और सफ़र की थकान थी। उनके पास कुछ पुरुष खड़े थे। कुछ को उसने उनकी बोली और हाथों से पहचान लिया—मछुआरे थे। एक बलिष्ठ था, बेचैन आँखों वाला। दूसरा कम उम्र का, चुप, मानो सब कुछ स्मृति में सहेज रहा हो।
वहाँ स्त्रियाँ भी थीं।

उसे अचरज हुआ। न वे अलग खड़ी थीं, न किनारे पर केवल सुनने वालों की तरह। वे उनके पास थीं। एक जिस ढंग से खड़ी थी उससे अच्छे घर की लगती थी, दूसरी के पास रोटियों की टोकरी थी, एक और शिष्यों से इतनी सहजता से बात कर रही थी मानो उन्हीं में से हो।
यीशु बीज बोने वाले की बात कह रहे थे।

उन दानों की, जो रास्ते पर गिरे, चट्टान पर, काँटों में और अच्छी भूमि पर। मरियम सुन रही थी और उसे लगा हर शब्द अलग जगह गिरता है। कुछ उसके भीतर की कठोरता पर। कुछ उन उथली जगहों पर जहाँ कुछ टिकता न था। कुछ भय के काँटों में। और एक—केवल एक—कहीं और गहरे।
“जिसके सुनने के कान हों,” यीशु ने कहा, “वह सुन ले।”
उसी समय उन्होंने उसे देखा।

पर शायद बात ठीक ऐसी भी नहीं थी। शायद उन्होंने उसे पहले ही देख लिया था, धूल से उसकी आँखें उठने के पहले। शायद तभी से देख रहे थे जब भीड़ चली और वह उन लोगों के बीच आ गई जो उससे ऐसे बचकर निकलना सीख गए थे जैसे राह के पत्थर से बचते हैं।
यीशु वाक्य के बीच ही चुप हो गए।

पास खड़ा पतरस उनकी ओर झुका, जैसे पूछना चाहता हो कि आगे चलें क्या। यूहन्ना ने उस दिशा में देखा जिधर गुरु देख रहे थे। भीड़ में कुछ और लोग भी मुड़े।
मरियम के समझने से पहले ही उसे उसका एहसास हो गया।

एक दृष्टि।

जिस दृष्टि से वह उसे देख रहे थे, वैसी कोई दृष्टि मरियम ने मगदला में नहीं जानी थी। उसमें न भय था, न घृणा, न कौतूहल, न अपने को शुद्ध मानने वालों की वह उपकार जताती करुणा जो कभी-कभी तिरस्कार से भी अधिक क्रूर होती है।
यह दृष्टि उसे बेपर्दा करने के लिए नहीं ढूँढ़ रही थी।

यह दृष्टि उसे जानती थी।

और ठीक इसीलिए वह उससे भाग जाना चाहती थी।

यीशु पानी के पास खड़े उसे देख रहे थे। उस क्षण मानो उन्हें मछुआरों की पुकार, भीड़ की सरसराहट, लहरों की छपछप और शिष्यों के बेचैन प्रश्न, सब सुनाई देने बंद हो गए। सब दूर चला गया। सामने बची तो

केवल लबादे की तहों में खड़ी वह स्त्री, हाथ देह से सटाए छिपाए हुए, कंधे थोड़े उठे हुए, मानो अब भी किसी वार की प्रतीक्षा हो।
उन्होंने उसमें यातना देखी।

वह तो साफ़ थी।

उन्होंने उसमें वह अँधेरा देखा जो उसकी आत्मा से ऐसे चिपका हुआ था जैसे उसकी अपनी त्वचा हो। उन्होंने तार-तार रातें, लज्जा, भय, क्रोध और ख़ालीपन देखा। उसके भीतर उसके नाम को लेकर झगड़ती सात छायाएँ देखीं।
पर इस सबसे पहले उन्हें कुछ और दिखाई दिया।

अपनापन।

वह अचानक आया, चुपचाप। जैसे कोई अनजान घर में घुसे और उसे बचपन की कोई जानी-पहचानी गंध मिले। जैसे किसी गीत में बरसों बाद कोई सुर सुनाई दे और फिर भी मालूम हो कि उसके आगे कौन-सा सुर आएगा। यीशु उसे देख रहे थे और उनके भीतर स्मृति से भी पुरानी कोई चीज़ हिली।
मनुष्यों की भाषा में उसके लिए कोई शब्द उन्हें नहीं मिला।

मानो कभी उस प्रकाश में, जहाँ से मनुष्य संसार में आते हैं, उनकी आत्माएँ एक-दूसरे के क़रीब से गुज़री हों और अब धूल, रोग, लज्जा और देहों के पार एक पल के लिए एक-दूसरे को पहचान गई हों।
मगदला की मरियम।

अभी किसी ने उसका नाम नहीं लिया था, फिर भी उन्हें लगा कि वह जानते हैं।

उस तरह नहीं जैसे कोई सुना हुआ नाम जानता है। जैसे चरवाहा रात में खोई भेड़ की आवाज़ पहचानता है। जैसे माँ दरवाज़े के उस पार बच्चे के क़दम पहचानती है। जैसे परमेश्वर मनुष्य को उसके अपना नाम बोलना सीखने से पहले ही जानता है।
मरियम भीड़ में खड़ी अपने ही आप से लड़ रही थी।

यीशु ने देखा उसके होंठ ज़रा-से हिले, हालाँकि उसने कुछ कहा नहीं। उन्होंने उसकी उँगलियाँ कपड़े को भींचती देखीं। उन्होंने उसके भीतर अपने विरुद्ध कुछ उठते देखा, उससे एक शब्द कहने के भी पहले।
फिर भी—इस सबके नीचे—वह स्वयं थी।

बीमारी के नीचे, लज्जा और उन तमाम नामों के नीचे जो लोगों ने उसे दिए थे, उन्होंने बस उसे देखा।

और इसी छिपी हुई मरियम से उन्हें तत्काल एक अपनापन महसूस हुआ।

ऐसी निकटता जिसे वह समझा नहीं सकते थे।

यहाँ तक कि उन्हें पीड़ा हुई।

क्योंकि उस पल उन्होंने केवल उसका आज का चेहरा नहीं देखा। मानो उन्हें उन राहों की छायाएँ दिखाई दीं जिन पर वह चली नहीं थी और फिर भी जो उसमें थीं। उन्होंने जल के पास एक लड़की देखी, अभी उन शब्दों से अनछुई जिन्हें लोग बाद में उसकी त्वचा पर चिपका देंगे। एक स्त्री को देखा जो रात को आतंक में जागती थी और नहीं जानती थी कि उसके सिर में गूँजती आवाज़ उसकी अपनी थी या किसी और की। उन्होंने उसका भविष्य देखा, जो अभी आया न था: अपने पीछे चलते उसके क़दम, रोटियाँ उठाए उसके हाथ, क्रूस के नीचे उसका चेहरा, क़ब्र के पास उसका रुदन।

और उस दूर के भविष्य में—एक बगीचे में, जब अभी अँधेरा होगा—वह उन्हें फिर दिखाई दी।

वह शोक से टूटी खड़ी होगी और समझेगी कि आख़िरी रोशनी भी खो चुकी है। वह उन्हें मृतकों के बीच ढूँढ़ेगी। और वह उसे फिर उसके नाम से पुकारेंगे।

मरियम।

वह नाम अभी से उनके भीतर गूँज उठा।

उनके ऊँचे स्वर में कहने से भी पहले।

उन्होंने उसकी ओर एक क़दम बढ़ाया।

तभी उसने अचानक आँखें उठाईं। दोनों की दृष्टियाँ मिलीं।

मरियम जड़ हो गई।

लोगों की नज़रें उसके लिए नई नहीं थीं। भय। धिक्कार। पुरुषों का कौतूहल। स्त्रियों का तिरस्कार। उन लोगों की नज़र जो सहायता तो करना चाहते हैं, पर जिन्हें पहले यह चाहिए कि पीड़ित वैसा ही दिखे जैसी उनकी अपनी कल्पना में पीड़ा दिखती है।

यह दृष्टि भिन्न थी।

वह बलपूर्वक उसके भीतर नहीं घुसी। उसने उसका मुआयना नहीं किया। किसी दाग़ की तलाश नहीं की जिसे नाम दिया जा सके। उसका दोष नहीं तोला। उसकी क़ीमत नहीं आँकी।

वह उसे जानती थी।

यही सबसे डरावना था।

और सबसे सुंदर।

अचानक मरियम को लगा कि इस पुरुष से छिपा नहीं जा सकता। इसलिए नहीं कि वह उसे भीड़ के सामने बेपर्दा करना चाहते थे, बल्कि इसलिए कि उनके सामने उसे अपने आप से भी छिपना छोड़ना होगा। और यह मगदला की सारी तिरस्कार-भरी निगाहों से अधिक कठिन था।

वह एक क़दम पीछे हटी।

“नहीं,” वह फुसफुसाई।

यीशु रुक गए।

“डरो मत।”

उन शब्दों ने उसे जिस बल से छुआ उसकी उसे आशा न थी। कितनी बार लोग उससे कह चुके थे कि डरो मत। पर उसका अर्थ हमेशा होता था: शांत हो जाओ, तुम हमें डराती हो। या: अपने को सँभालो, तुम हमारी राह में हो। या: चुप रहो, हमें नहीं मालूम तुम्हारा क्या करें।

उनके मुँह से उसका कुछ और अर्थ था।

डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हें जानता हूँ।

डरो मत, क्योंकि तुम सिर्फ़ इतनी ही नहीं हो।

डरो मत, क्योंकि जिसने तुम्हें जकड़ रखा है वह उससे अधिक शक्तिशाली नहीं जो तुम्हें पुकारता है।

मरियम काँपी।

“तुम मुझे नहीं जानते,” उसने कहा।

यीशु देर तक उसे देखते रहे, एक ऐसे मौन विश्वास के साथ जो उसके भीतर किसी अनजिए क्षण की स्मृति जगा रहा था।

“जानता हूँ,” उन्होंने कहा।

उनके चारों ओर भीड़ चुप हो गई।

“कहाँ से?” मरियम ने पूछा।

आवाज़ में चुनौती थी, पर उसके नीचे एक विनती थी।

यीशु ने तुरंत उत्तर नहीं दिया।

उन्होंने झील की ओर देखा। हवा सतह पर से गुज़री और प्रकाश को हज़ार छोटी चिनगारियों में तोड़ गई। फिर वह उसकी ओर मुड़े।

“वहाँ से,” उन्होंने धीरे से कहा, “जहाँ से परमेश्वर हर मनुष्य को उसके जन्म से भी पहले नाम लेकर पुकारता है।”

मरियम शब्दों को नहीं समझी, पर स्वर को समझ गई।

और उसी क्षण एकाएक उसके भीतर एक स्मृति गूँजी, जिसमें कोई चित्र नहीं था। उसे लगा कि वह कभी पहले भी उनके सामने खड़ी हुई थी—मगदला और झील से परे, इस जीवन से भी कहीं परे, जो ऐसे प्रकाश के लिए बहुत संकरा और पीड़ा से भरा था।

मानो उसकी आँखों के पहले उसकी आत्मा उन्हें पहचान गई हो।

और यही उसके भीतर के अँधेरे से सहा नहीं गया।

पहले सिर चकराया। फिर गला भिंच गया। भीड़ उसे घेरे खड़ी थी पर अचानक दूर हो गई। ध्वनियाँ नुकीली किरचों में टूट गईं—बच्चे की हँसी, कपड़े की सरसर, लहरों की थपक, किसी आदमी की खाँसी, अपने दिल की धड़कन।

अभी नहीं, उसने सोचा।

यहाँ नहीं।

वह जाना चाहती थी पर पैरों ने कहना नहीं माना। बगल में एक स्त्री ने उसे पीला पड़ते देखा और पीछे हट गई। किसी ने उसका नाम लिया। किसी और ने दुष्टात्माओं का ज़िक्र किया। उसके चारों ओर इतनी तेज़ी से जगह ख़ाली हुई जैसे पत्थर के गिरते ही पानी हट जाता है।

और फिर आवाज़ आई।

यीशु की नहीं।

उसके भीतर की।

“दूर,” मरियम ने फुसफुसाकर कहा, पर वह नहीं जानती थी कि भीड़ से कह रही है, अपने आप से या उससे जो उसके भीतर उठ रहा था।

उसके हाथ काँपने लगे। उसने उन्हें लबादे के नीचे छिपाना चाहा, पर देर हो चुकी थी। लोग पीछे हट रहे थे। उनके चेहरों पर उसे भय दिखाई दिया। वही परिचित भय जो बरसों से उसके साथ था। वह भय जो उससे कहता था: देखा? यही हो तुम। सदा ऐसी ही रहोगी।

फिर यीशु भीड़ के बीच से आए।

किसी को उनके लिए रास्ता बनाने को कहना नहीं पड़ा। लोग अपने आप हट गए।

मरियम ने आँखें झुका लीं। वह उनका चेहरा नहीं देखना चाहती थी। घृणा नहीं देखना चाहती थी। दया तो और भी बुरी होती।

वह उसके सामने रुक गए।

“मेरी ओर देखो,” उन्होंने कहा।

उनकी वाणी कठोर नहीं थी। न ही मुलायम थी। वह दृढ़ थी, मानो किसी अचल आधार पर टिकी हो।

मरियम ने सिर नहीं उठाया।

“नहीं देख सकती,” उसने फुसफुसाकर कहा।

“क्यों?”

वह हँसी। छोटी-सी, टूटी हुई हँसी।

“क्योंकि तुम्हें वे दिखाई दे जाएँगे।”

“कौन?”

“वे जो मेरे भीतर हैं।”

कुछ पल मौन रहा।

फिर यीशु ने कहा,

“मुझे तुम दिखाई देती हो।”

वे शब्द चीख़ से भी अधिक प्रबलता से उससे टकराए।

मुझे तुम दिखाई देती हो।

मुझे तुम दिखाई देती हो। रोग, लज्जा, आवाज़ों और उस कहानी के नीचे भी जो शहर तुम्हारे बारे में सुनाता रहा है।

तुम।

मरियम ने आँखें उठाईं।

यीशु उसे बिना कौतूहल के, बिना भय के, बिना घृणा के देख रहे थे। और यही असह्य था। वह उसे धिक्कार देते तो वह जानती कि क्या करना है। उससे पीछे हटते तो उस संसार पर मुहर लग जाती जिसे वह जानती थी। पर वह खड़े थे। पास। शांत। जैसे वह उसमें विनाश का ठिकाना नहीं, एक रणभूमि देख रहे हों जहाँ किसी को बचाने आए थे।

“पास मत आना,” उसने कहा।

“क्यों?”

“मैं तुम्हें चोट पहुँचाऊँगी।”

“नहीं,” उन्होंने कहा।

“तुम यह नहीं जानते।”

“जानता हूँ।”

तभी उसके भीतर प्रतिरोध उठा। उसका अपना नहीं। पुराना, उन्मत्त, पशु जैसा। उसका मुँह खुला, पर उसमें से निकले शब्द विनती के नहीं थे।

“हे यीशु नासरी, तुझे हमसे क्या काम?”

भीड़ की साँस अटक गई।

मरियम अपनी आवाज़ सुन रही थी और फिर भी उसे पहचानती नहीं थी। लज्जा गरम लहू की बाढ़-सी उस पर छा गई। उसका जी चाहा ज़मीन पर गिर पड़े, अपना मुँह ढँक ले, ग़ायब हो जाए। पर यीशु हिले नहीं।

“बस,” उन्होंने कहा।

वह एक शब्द धीमे से कहा गया था, पर मरियम को लगा जैसे पूरा आकाश उसमें से गुज़र गया।

कुछ लोगों को चीख़-पुकार की आशा थी। मंत्रोच्चार की। किसी बड़े हावभाव की। किसी ऐसी बात की जिसे शाम को आग के पास सुनाया जा सके।

पर यीशु बस उसके सामने खड़े थे और उस व्यक्ति के अधिकार से बोल रहे थे जिसे अँधेरे से अनुमति नहीं माँगनी पड़ती।

“अब तुम इसके भीतर नहीं रहोगे।”

मरियम झुक गई जैसे किसी ने उसके कंधों पर भारी पत्थर रख दिया हो। गले से पहले रुलाई फूटी, फिर चीख़, फिर कुछ नहीं। वह घुटनों पर गिर पड़ी। हाथ ज़मीन पर टेक दिए। हथेलियों पर धूल चिपक गई। उसने अपने भीतर एक-एक कर आवाज़ों को बुझते महसूस किया।

पहली ने क्रोध से प्रतिरोध किया।

दूसरी ने उपहास से।

तीसरी ने भय से।

चौथी ने स्मृतियों से।

पाँचवीं ने लज्जा से।

छठी ने निराशा से।

और सातवीं—वह जो चुप रहती थी—सबसे देर तक टिकी रही। उसने कुछ नहीं कहा। बस उसे वापस उस ख़ालीपन में खींचती रही, उस जानी-पहचानी ठंड में जहाँ आशा करने की ज़रूरत नहीं पड़ती, क्योंकि आशा भी तो पीड़ा का एक और रूप है।

यीशु उसके पास घुटनों पर बैठ गए।

"मरियम," उन्होंने कहा।

उसका नाम।

यीशु ने केवल उसका नाम लिया था, बिना किसी उपनाम, आरोप और उन तमाम बातों के जिन्हें दूसरे बरसों से उसके साथ जोड़ते आए थे।

मरियम।

और उस क्षण उसके भीतर की अंतिम रिक्तता फट गई।

वह चीख़ नहीं थी। एक साँस थी। बरसों बाद पहली सच्ची साँस।

उसे झील की गंध आई। हाथों के नीचे धूल महसूस हुई। गरदन पर धूप की गरमाहट। उसने पक्षियों को सुना। लोगों को। लहरों को। और इस सबके नीचे मौन था—सातवीं दुष्टात्मा का मृत मौन नहीं, तूफ़ान थमने के बाद की वह शांति जिसमें जीना संभव है।

वह रो पड़ी।

उसकी रुलाई में उस व्यक्ति का चैन था जिसके बंद कमरे का ताला किसी ने खोल दिया हो और कहा हो: बाहर आओ। अब भीतर रहना ज़रूरी नहीं।

यीशु ने तत्काल उसके सिर पर हाथ नहीं रखा। उसके पास ठहरे रहे, जब तक उसकी साँस सँभल नहीं गई।

फिर एक भाई की सहजता से उसका कंधा छुआ।

"तुम मुक्त हो," उन्होंने कहा।

मरियम को इसका अर्थ समझ नहीं आया।

मुक्ति उन पुरुषों के लिए शब्द था जिन पर क़र्ज़ नहीं था। उन राष्ट्रों के लिए जो रोम के अधीन नहीं थे। झील पर उड़ते पंछियों के लिए। उसके लिए नहीं।

“अब मैं क्या करूँ?” उसने पूछा।

यीशु हलके से मुस्कुराए।

“जियो।”

उस उत्तर पर उसे लगभग क्रोध आ गया। वह इतना सरल था। इतना कठिन।

“मुझे नहीं मालूम कैसे।”

“सीख जाओगी।”

“लोगों को याद रहेगा।”

“हाँ।”

“वे बातें करेंगे।”

“हाँ।”

“वे डरेंगे।”

“कुछ लोग।”

“और तुम?”

“मैं जानता हूँ तुम कौन हो।”

मरियम उन्हें देखती रही। उसके चेहरे पर राहत के साथ अविश्वास था। जैसे डरती हो कि अगली ही साँस के साथ हर भला शब्द बिखर सकता है। जैसे जीवन भर वह ऐसी ज़मीन पर खड़ी रही हो जो पैरों तले फटती रहती थी, और अब पहली बार न जानती हो कि पैरों तले ठोस ज़मीन मिले तो क्या करे।
यीशु ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया।
मरियम कुछ देर उसे देखती रही।

उनकी हथेली गरम थी, दृढ़, साधारण। उस मनुष्य की हथेली जो राहों पर चलता है, रोगियों को छूता है, रोटी तोड़ता है और बच्चों को ज़मीन से उठाता है। उसमें शक्ति का कोई दिखावा नहीं था। फिर भी जब उन्होंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया तो मरियम को लगा कि संसार की सारी करुणा उसकी ओर झुक रही है।
धीरे से उसने अपनी हथेली उनकी हथेली में रख दी।

पहले वह स्वयं उठे और फिर उसे उठने में सहारा दिया।

और तभी कुछ ऐसा हुआ जिसे उन दोनों की तरह किसी और ने नहीं देखा।

अब मरियम को उनका हाथ छोड़ देना था। वह खड़ी हो चुकी थी। सहारा लेने की ज़रूरत नहीं थी। भीड़ फिर हिलने-डुलने लगी थी। शिष्यों ने चैन की साँस ली। एक स्त्री पानी ले आई। जो बच्चा थोड़ी देर पहले माँ के लबादे के पीछे छिप गया था वह अब सिर निकालकर उत्सुकता से उसे देख रहा था।

लेकिन मरियम का हाथ अपने आप हिल गया।

यीशु का हाथ छोड़ने के बदले उसने उनकी कलाई के भीतरी हिस्से पर तीन उँगलियाँ रख दीं।

कोमलता से।

ठीक उसी जगह।

जैसे कोई ऐसा संकेत करे जिसे वह सीखने से बहुत पहले ही जानता था।

यीशु ठिठक गए।

बस एक पल था। इतना छोटा कि पतरस ने बस यही देखा कि स्त्री ने गुरु का हाथ छुआ। यूहन्ना ने बस यही देखा कि यीशु एक क्षण को मौन हो गए। पास खड़ी योअन्ना ने बस यही देखा कि मरियम अभी पूरी तरह सँभली नहीं है। भीड़ ने बस एक विचित्र घटना का अंत देखा, जिसकी चर्चा शाम को पूरे शहर में होनी थी।

पर यीशु ने वह स्पर्श महसूस किया।

कलाई पर तीन उँगलियाँ।

और उस स्पर्श के साथ कुछ ऐसा आया जिसका न इस तट से नाता था, न इस दिन से, न इस देह से।

मरियम ने फुसफुसाकर कहा,

“अकेले मत जाना।”

कहकर वह स्वयं डर गई।

शब्द उसके मुँह से तब निकले जब वह उन्हें समझ भी नहीं पाई थी। उसने उनकी ओर ऐसे देखा जैसे क्षमा माँगना चाहती हो, पर जानती न हो किस बात की। उसकी आँखों में उलझन थी। न लज्जा, न भीड़ का भय, बल्कि उस मनुष्य का गहरा विस्मय जिसने अभी-अभी किसी ऐसे स्वप्न का वाक्य कह दिया हो जिसे वह कभी याद नहीं रख सका।

“मुझे नहीं मालूम मैंने ऐसा क्यों कहा,” वह फुसफुसाई।

यीशु ने तुरंत उत्तर नहीं दिया।

वह अपनी कलाई देख रहे थे, उस जगह को जहाँ अब भी उसकी तीन उँगलियों का दबाव था। फिर उन्होंने उसकी ओर देखा।

उनके चेहरे पर कुछ इतना सूक्ष्म काँपा कि कोई बेध्यानी में उसे दया ही समझता। पर वह केवल दया नहीं थी। उसमें पीड़ा थी, विस्मय और एक शांत बोध था जिसे अभी वह अपने आप से भी स्वीकार नहीं करना चाहते थे।

“शायद तुम्हें कुछ याद आया है जिसे अभी नाम देना नहीं जानतीं,” उन्होंने कहा।

मरियम ने साँस रोक ली।

“क्या?”

यीशु ने एक क्षण झील की ओर देखा। सतह पर रोशनी टूट रही थी और पानी की ओर से आती हवा में मछली, नमक और गीली रस्सियों की गंध थी। सब कुछ साधारण था। और फिर भी उन्हें लगा कि इस साधारण संसार के पीछे एक पल को कोई और द्वार खुला है।

उन्हें कुछ स्पष्ट दिखाई नहीं दिया।

बस एक झलक।

उनके साथ-साथ चलती एक स्त्री।

गली, झील, नाम, सब दूसरे थे।

पर आँखें वही थीं।

वही स्पर्श।

उनकी कलाई पर तीन उँगलियाँ।

और वही वाक्य, जो बहुत पहले किसी और धूल में, किसी और आकाश के नीचे कहा गया था:

अकेले मत जाना।

फिर दृश्य मिट गया।

यीशु ने फिर मगदला की मरियम की ओर देखा।

“निष्ठा,” अंत में उन्होंने कहा।

मरियम समझी नहीं।

पर शब्द उसके भीतर रह गया।

निष्ठा।

निष्ठा उसके भीतर उस राह की तरह रह गई जिसे आत्मा उसकी क़ीमत जानने से पहले ही चुन लेती है।

मरियम ने आँखें झुका लीं।

“क्षमा करो,” उसने कहा। “मेरा इरादा—”

“जानता हूँ।”

“अजीब था वह।”

“हाँ।”

“मुझे उससे डर लगता है।”

यीशु हलके से मुस्कुराए, पर उस मुस्कान में हलकापन नहीं था।

“जो चीज़ें परमेश्वर से आती हैं वे भी मनुष्य को डरा सकती हैं।”

मरियम ने उनकी ओर देखा।

“क्या यह परमेश्वर से आया था?”

यीशु मौन रहे।

कहीं पीछे एक बच्चे की पुकार सुनाई दी। शिष्य फिर चलने-फिरने लगे। भीड़ धीरे-धीरे साँस ले रही थी, मानो संसार अपनी जानी-पहचानी सीमाओं में लौट रहा हो।

पर उन दोनों के बीच अब कुछ बच रहा था जो उन सीमाओं में नहीं समाता था।

जो स्त्री पहले शिष्यों के पास खड़ी थी, वह मरियम के निकट आई और उसे पानी दिया।

मरियम ने दोनों हाथों से पात्र लिया। वह धीरे-धीरे पीने लगी। पानी गरम था और उसमें मिट्टी का स्वाद था। ऐसा अच्छा पानी उसने कभी नहीं पिया था।

“तुम्हारा नाम क्या है?” स्त्री ने धीरे से पूछा।

मरियम कुछ पल झिझकी, जैसे अपना नाम उसे फिर अपना बनाना हो।

“मरियम।”

“मैं योअन्ना हूँ।”

मरियम ने सिर हिलाया। वह नाम उसने याद रखा। बाद में वह और नाम भी याद रखेगी। सूसन्ना। सलोमी। याकूब की माँ मरियम। वे स्त्रियाँ जो भोजन, धन, संदेश, चिंताएँ और आस्था लिए चलती थीं। वे स्त्रियाँ जो सदा आगे नहीं खड़ी होंगी, पर जब बहुत-से लोग ग़ायब हो जाएँगे तब वे वहाँ होंगी।

"घर जाओगी?" योअन्ना ने पूछा।

मरियम ने मुड़कर नगर की ओर देखा।

मगदला वहीं था जहाँ हमेशा से था। घर, गलियाँ, बाज़ार, परदों के पीछे आँखें। वह जगह जहाँ लोग उसे उसके सबसे बुरे दिनों से जानते थे। जहाँ हर दीवार में किसी ऐसी बात की गूँज थी जिसे वह पीछे छोड़ जाना चाहती थी।

फिर उसने यीशु की ओर देखा।

"तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने पूछा।

"दूसरे नगरों में," उन्होंने कहा। "परमेश्वर के राज्य का समाचार सुनाने।"

"और क्या तुम मेरे जैसे लोगों को भी साथ ले जाते हो?"

यीशु ने उसकी ओर ऐसे देखा जैसे उसने कुछ ऐसा पूछ लिया हो जो उन्हें दुःख दे गया।

"तुम जैसे लोगों को ही।"

मरियम ने सिर झुका लिया।

उस क्षण वह नहीं जानती थी कि वह राह उसे कहाँ ले जाएगी। वह नहीं जानती थी कि वह ऐसे दृष्टांत सुनेगी जो तुरंत समझ नहीं आएँगे, पर उसके भीतर दाने की तरह पकेंगे। वह नहीं जानती थी कि वह अंधों को आँखें खोलते, लँगड़ों को उठ खड़े होते, अभिमानियों को आहत होकर जाते और ग़रीबों को तनकर खड़ा होते देखेगी।

वह नहीं जानती थी कि एक दिन वह उनके पीछे यरूशलेम तक जाएगी।

वह नहीं जानती थी कि जब अनेक लोग तितर-बितर हो जाएँगे तब वह क्रूस के पास खड़ी रहेगी।

वह नहीं जानती थी कि वह देखेगी उन्हें कहाँ लिटाया जाएगा।

वह नहीं जानती थी कि वह अँधेरे में क़ब्र की ओर जाएगी और उसकी पीड़ा इतनी बड़ी होगी कि लगेगा सातों दुष्टात्माएँ लौट सकती हैं—फिर भी वे नहीं लौटेंगी।

वह नहीं जानती थी कि वह बगीचे में रोती रहेगी और एक मृतक को ढूँढ़ेगी, जब तक कि जीवित मनुष्य उसे आज ही की तरह पुकार नहीं लेगा:

मरियम।

और तब वह उन्हें पहचान लेगी।

अभी वह बस इतना जानती थी कि उसके भीतर शांति है।

यीशु लोगों की ओर मुड़े। कुछ अब भी प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह बताएँगे कि क्या हुआ था। पर उन्होंने केवल इतना कहा,

“परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।”

मरियम अब और सँभलकर खड़ी हुई।

घुटने अब भी काँप रहे थे। बाल बिखरे थे, चेहरा आँसुओं से भीगा, हाथ धूल से सने थे। वह ऐसी दिख रही थी जैसे कोई लड़ाई हार गई हो।

पर बरसों में पहली बार उसे लगा कि वह जीत गई है।

योअन्ना ने उसका लबादा ठीक करने में मदद की।

मरियम ने उसकी ओर देखा और धन्यवाद कहना चाहा, पर शब्द गले में अटक गए। उसकी उँगलियों में अब भी यीशु की कलाई की गरमाहट थी। उसे अब भी अपनी ही फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी।

अकेले मत जाना।

वह नहीं जानती थी कि वे शब्द कहाँ से आए थे। उसे नहीं मालूम था कि वे उसे एक साथ पराए और अपने क्यों लगते थे। पर वह जानती थी कि वे अब उससे अलग नहीं होंगे। अब से वे उसके भीतर उस छोटी-सी लौ की तरह रहेंगे जिसे मनुष्य हथेली में हवा से बचाकर लिए चलता है।

यीशु तट के किनारे चलने लगे थे।

शिष्य उनके पीछे हो लिए। धीरे-धीरे भीड़ टोलियों, आवाज़ों और अटकलों में बिखर गई। कुछ लोग अब भी उसकी आँखों से नज़रें चुराते थे। कुछ ज़रूरत से ज़्यादा देर तक देखते थे। एक आदमी दूसरे से किसी चमत्कार की बात फुसफुसा रहा था। एक स्त्री रो रही थी। एक बच्चा मुस्कुरा रहा था, बिना यह जाने कि क्यों।

मरियम शहर और राह के बीच खड़ी रह गई।

पीछे मगदला था।

आगे यीशु।

एक बार फिर उसने पीछे मुड़कर देखा। इसलिए नहीं कि वह रहना चाहती थी। बस उस जगह को देख लेना चाहती थी जहाँ से वह अब एक बदले हुए मनुष्य के रूप में जा रही थी।
और तभी उसने देखा कि यीशु ठहर गए हैं।

वह पूरे नहीं मुड़े। बस ज़रा-सा सिर घुमाया, मानो जानते हों कि वह अब भी उस जगह खड़ी है जहाँ मनुष्य के भीतर राह की दिशा से भी बड़ा कोई निर्णय होता है।
उनकी दृष्टियाँ फिर मिलीं।

एक पल मरियम को लगा कि उनके बीच जो कुछ घटा था वह पहली बार नहीं घटा था। यह राह कहीं पहले भी थी। वह कभी कहीं उसके आगे चले थे और वह कभी कहीं इसी प्रश्न को गले में लिए खड़ी थी।
क्या मैं जाऊँगी?

क्या यहीं रहूँगी?

और उस अदृश्य अतीत में भी उसने यही निर्णय लिया था।

उसने पहला क़दम बढ़ाया।

फिर दूसरा।

और पाया कि उसके भीतर की शांति उसके साथ चल रही है।

जब वह दूसरों के साथ आ मिली, पतरस ने उसे क्षण भर देखा और आँखें फेर लीं। उसमें तिरस्कार नहीं था। उस व्यक्ति की असमंजस थी जो अभी नहीं जानता कि जब किसी दूसरे पर अनुग्रह हो तो उसे कैसे स्वीकार करे। यूहन्ना ने उसके लिए जगह छोड़ी। योअन्ना उसके साथ चलने लगी।
यीशु आगे चल रहे थे।

मरियम चलते समय हिलते उनके हाथों को देखती रही। उन्हीं में से एक ने कुछ देर पहले उसके जीवन को छुआ था और अँधेरे से निकाल लिया था। उनकी कलाई पर कुछ नहीं दिखता था। उसकी उँगलियों का कोई निशान नहीं। कोई चिह्न नहीं। कोई प्रमाण नहीं।
और फिर भी वह जानती थी कि कुछ वहाँ रह गया है।

त्वचा पर नहीं।

और गहरे।

शायद उनके भीतर।

शायद उसके भीतर।

शायद उन दोनों के बीच कहीं, उस जगह जहाँ वे राहें मिलती हैं जिन्हें लोग संयोग कहते हैं क्योंकि उनका असली नाम नहीं जानते।

झील पर सूरज ढल रहा था। पीछे धूल और रोशनी में मगदला धुँधला पड़ रहा था। सामने राह पहाड़ियों में बल खाती चली जाती थी।

मरियम नहीं जानती थी कि आगे क्या है।

पर पहली बार उसका डर सिर्फ़ इससे नहीं था कि क्या आने वाला है।

उसे इस बात से भी डर था कि वह अच्छा हो सकता है।

और उस भय में एक अनोखी मिठास थी।

वह चलती रही।

वह चलती रही और दुष्टात्माओं से पहचानी जाने वाली स्त्री की कहानी उसके पीछे छूटती गई।

वह शहर दूर होता गया जिससे कभी वह भागती थी।

उसे अभी आभास नहीं था कि उस नबी के पीछे चलने का क्या अर्थ है जिससे एक दिन लोग घृणा करेंगे।

अभी वह ऐसे चल रही थी जैसे कोई जिसे उसके नाम से पुकारा गया हो।

और उससे बहुत आगे, अभी आँखों से ओझल, एक और बगीचा, एक और रात और एक और क्षण प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसमें यह दिन यीशु के पास इतनी प्रबलता से लौटेगा कि वह उस बात को समझ लेंगे जिसका अभी बस आभास भर था।

कि मगदला की मरियम उनके पास पहली बार नहीं आई थी।

कि कुछ आत्माएँ इसलिए एक-दूसरे को नहीं जानतीं कि वे मिल चुकी हैं।

वे इसलिए मिलती हैं कि वे एक-दूसरे को पहले से जानती थीं।

अध्याय पर लेखक की टिप्पणियाँ

यह अध्याय नए नियम में मरियम मगदलीनी की भूमिका का अध्ययन करने के बाद लिखा गया है। उपलब्ध स्रोतों में कहीं भी यीशु और मरियम मगदलीनी की पहली भेंट का स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता। इस अध्याय में उनके परिचय का वह रूप है जो सबसे अधिक संभावित लगता है, सिवाय उन ब्योरों के जिन्हें इस भेंट को कथा के ढाँचे में बिठाने के लिए जोड़ा गया है।

5. Elarion: संघ की राजधानी Nitra

Nitra, Elarion का सबसे पुराना शहर नहीं था, पर उसकी ठसक ऐसी ही थी।

वह अपने ही नाम की नदी पर बसा था। नदी शहर के बीच स्मृति की तरह बहती थी, अपने ऊपर की यातायात की तहों से धीमी, किनारों पर खड़े संगणना की मीनारों से अधिक शांत। Nitra का पुराना पथरीला केंद्र तब भी बचा रहा जब उसके चारों ओर पारदर्शी गुंबद, ऊँचाई में बसते मोहल्ले, वाणिज्य-दूतावासों के उद्यान, स्वचालित मॉड्यूलों के मार्ग और वित्तीय केंद्रों की मीनारें उग आए।

Nitra में पुराना कभी ढहाया नहीं जाता था। बस उसे नए से घेर दिया जाता था।

इसलिए सात सौ वर्ष पुराने पत्थर के फ़र्श वाले चौक पर खड़े होकर कोई ऊपर कक्षीय वलय की ओर उड़ते यानों को देख सकता था।

उस दिन शहर ने उत्सव का रूप धरा था। सार्वजनिक भवनों के मुखों पर पारदर्शी अक्षर धीरे-धीरे बदल रहे थे: रोज़गार के बाद काम। वेतन के बाद मूल्य। स्वचालन के बाद मनुष्य।

संघ ने आय के भविष्य पर एक बड़ी सार्वजनिक सभा बुलाई थी।

सार्वभौमिक मूल आय पर यह पहली सभा नहीं थी। ऐसी बहसें दशकों से चली आ रही थीं। पहले अकादमिक जगत की एक चुनौती बनकर, फिर सामाजिक प्रयोग, फिर चुनावी नारा, और अंत में एक ऐसी अनिवार्यता जिसे राजनेता अब भी टालने की कोशिश में लगे थे।

पर इस बार मोहलत बहुत कम बची थी।

स्वचालित उत्पादन उस सीमा को पार कर चुका था जिसे अर्थशास्त्री कभी केवल सैद्धांतिक मानते थे। संघ के कुछ क्षेत्रों में काम, अपने पारंपरिक अर्थ में, चालीस प्रतिशत से भी कम वयस्कों के पास था। इसलिए नहीं कि बाक़ी काम करना नहीं चाहते थे। इसलिए कि उनके काम की अब ज़रूरत नहीं रही थी।

मशीनें फ़सल उगाती थीं, निर्माण करती थीं, छँटाई करती थीं, हिसाब रखती थीं, अनुवाद करती थीं, रोग पहचानती थीं, जाँचती थीं, पढ़ाती थीं, यहाँ तक कि संगीत भी रचती थीं, और इतने कम दाम पर कि मनुष्य से काम लेना आर्थिक आवश्यकता से अधिक संस्कृति का चुनाव होने लगा था।

पर बिल अब भी मनुष्य को ही भरने थे।

किराया।

भोजन।

देखभाल।

शिक्षा।

उपचार।

गरिमा।

इसीलिए राज्यों, बैंकों, व्यावसायिक संघों, विश्वविद्यालयों, नागरिक परिषदों, वंश-अभिलेखागारों और दूसरे ग्रहों के प्रशासन तक के प्रतिनिधि Nitra में एकत्र हुए थे। संघ की परिषद का विशाल सभागार अर्धवृत्ताकार था। हर वक्ता के ऊपर उसका नाम, राज्य, शाखा, संस्था और घोषित हितों का विवरण उभरता था।

कुछ के नाम के साथ लंबी सूची थी।

कुछ की सूची संदेहास्पद रूप से छोटी थी।

Jesair Davion तीसरी पंक्ति में बैठा था। किसी राजनेता की हैसियत से नहीं, ऑरेलियाई कुल परिषदों के आमंत्रित प्रतिनिधि के रूप में। उसे ऐसे आयोजन पसंद नहीं थे। इसलिए नहीं कि उसे राजनीति से परहेज़ था। इसलिए कि राजनीति में जीती-जागती पीड़ा को अवधारणा बना देने, अवधारणा को समिति और समिति को एक ऐसी रिपोर्ट बना देने की विचित्र क्षमता थी जिसे अब कोई नहीं पढ़ता था।

लड़का था तब एक बार वह एक बीमार रिश्तेदार के बिस्तर के पास खड़ा था, जिसे उसका परिवार Davion के घर लाया था। एक बुज़ुर्ग ने उसे रोगी के माथे पर हाथ रखने को कहा। Jesair ने कहना मान लिया क्योंकि वह चौदह वर्ष का था और सब उसकी ओर देख रहे थे। जब उस आदमी की हालत बिगड़ी, किसी ने कहा थोड़ा और इंतज़ार करें, शायद कुल का वरदान अपना असर दिखाए।

Jesair ने ख़ुद चिकित्सा मॉड्यूल बुलाया। उस आदमी की जान एक ऐसे उपचार से बची जिसके समय Jesair वहाँ था ही नहीं। महीने भर बाद कुल-वृत्तांत में युवा Davion के स्पर्श के बारे में एक वाक्य आ गया। उपचार करने वाली चिकित्सक का नाम उसमें नहीं था। उस दिन Jesair ने पहली बार जाना कि चमत्कार की कहानी कितनी आसानी से किसी असली मनुष्य के काम को ढँक सकती है।

उसके पास Mareia Lioren बैठी थी।

उनकी जान-पहचान पुरानी नहीं थी। सच तो यह कि यह कहना भी कठिन था कि वे एक-दूसरे को जानते हैं। स्वास्थ्य अभिलेखों पर हुई दो बैठकों में एक-दूसरे को देखा था, और एक बार एक सेलेनी

विद्यालय के बगीचे में, जहाँ Mareia बच्चों से वंशों की स्मृति के बारे में बात कर रही थी। उस भेंट में Jesair को सबसे अधिक उसका मौन याद था। वह ख़ाली नहीं था। सटीक था।

जब कोई मूर्खता की बात कहता तो Mareia शिष्टाचार की मुस्कान नहीं देती थी।

वह बस उसे ऐसे देखती कि उसे अपने ही शब्द सुनाई देने लगते।

“आपको लगता है आज कोई फ़ैसला होगा?” उसने धीरे से पूछा।

Jesair ने मंच की ओर देखा, जहाँ पहला वक्ता तैयार हो रहा था।

“नहीं। आज सब सिर्फ़ यह बताएँगे कि अभी फ़ैसला क्यों नहीं हो सकता।”

Mareia ज़रा-सा मुस्कुराई।

“लगता है अनुभव बोल रहा है।”

“Nitra बोल रहा है।”

मंच पर Daren Voltr नाम का एक वेयरानी आया। वह उत्तरी गठबंधन की मुद्रा परिषद का अध्यक्ष और अपनी पीढ़ी के श्रेष्ठतम वक्ताओं में से था। उसकी वाणी में उस आदमी का इत्मीनान था जिसे कभी जल्दी नहीं करनी पड़ी, क्योंकि प्रतीक्षा दूसरे उसकी करते थे।

“देवियो और सज्जनो,” उसने आरंभ किया, “इस सभागार में किसी को संदेह नहीं कि स्वचालन ने समाज का बुनियादी अनुबंध बदल दिया है। प्रश्न यह नहीं है कि नागरिक को सभ्यता के उत्पादन में हिस्सा मिलना चाहिए या नहीं। प्रश्न यह है कि इस हिस्से की गणना कौन करेगा, किस मुद्रा में, किसकी निगरानी में और किस क़ीमत पर।”

दीवारों पर आलेख उभरे।

चालीस राज्य।

तीस प्रचलित मुद्राएँ।

विनिमय दरों के दायरे।

स्थिरीकरण की व्यवस्थाएँ।

निर्यात की पद्धतियाँ।

ऋण के लेखे।

"मुद्रा," Daren Voltr ने कहा, "महज़ हिसाब की इकाई नहीं है। मुद्रा राज्य का स्टीयरिंग है। यदि हमने यह स्टीयरिंग एक ही ग्रहीय संस्था को सौंप दिया, तो क्षेत्र अपनी परिस्थितियों के अनुसार क़दम उठाने की क्षमता खो देंगे। अवमूल्यन हमेशा अपराध नहीं होता। कभी-कभी वह कमज़ोर राज्य के बचने का रास्ता है। विनिमय दर का डाँवाडोल होना हमेशा हेरफेर नहीं होता। कभी वह झटके का असर घटाता है।"
सभागार में सहमति की सरसराहट हुई।

Jesair को अपने चारों ओर बदलता भाव महसूस हुआ। वेयरानी सत्ता की बात ऐसे करना जानते थे कि वह दायित्व लगे। और अक्सर वह दायित्व थी भी। यहीं उनकी शक्ति थी।
पर 'मूल्य' शब्द सुनकर उसके मन में वह वाक्य उभरा जिसे वह बचपन से जानता था।

जब साझा कृति का समय पक जाए, तब मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए। जो सबके काम आता है, वह सबको दिखना चाहिए।

यह सबसे प्राचीन उपलब्ध ऑरेलियाई लेखों में था। कुल की सभाओं में, दायित्व ग्रहण करते समय और साझी संपत्ति के विवादों में भी इसे पढ़ा जाता था। कुछ इसे धार्मिक आज्ञा मानते थे। कुछ का कहना था कि यह उस पुराने समय का अवशेष है जब ऑरेलियाई छोटे समुदायों में मिलकर गुज़ारा करते थे और सर्दी काटने के लिए एक-दूसरे को अपने भंडार दिखाने पड़ते थे।
लंबे समय तक Jesair ने इसे मुख्यतः आध्यात्मिक अर्थ में समझा था। मूल्य था सत्य, सम्मान, त्याग, वह सब जो मनुष्य बिना किसी प्रतिदान के दूसरे को देता था। छाया थी झूठ, स्वार्थ और छिपी हुई मंशा।
पिछले कुछ महीनों से ही एक संभावना उसके पीछे पड़ गई थी, कि पुराना लेख शायद बिलकुल शाब्दिक अर्थ में भी कुछ कहता था।

शायद उसके रचयिताओं का आशय केवल मनुष्य के मूल्य से नहीं था, उस मूल्य से भी था जिसे एक मनुष्य पैदा करता है और दूसरा हथिया लेता है। शायद साझा कृति किसी मंदिर, कुल या बस्ती तक सीमित नहीं थी। शायद वह समूची सभ्यता थी।

Elarion हज़ारों वर्षों के संचित ज्ञान से उत्पादन करता था। मशीनें सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे, ग्रह की ऊर्जा, पूर्व पीढ़ियों के धन से हुए अनुसंधान और अरबों लोगों के आँकड़ों का उपयोग करती थीं। फिर भी उनसे उपजा मूल्य निजी बहीखातों, मुद्रा के लेनदेन और स्वामित्व की उन शृंखलाओं में गुम हो जाता था जिनके छोर पर प्रायः ऐसा कोई नाम था जिसे जनता जानती तक नहीं थी।
जो सबके काम आता है, वह सबको दिखना चाहिए।
वह सत्ता जो दूसरों के जीवन के फ़ैसले करती थी।

वह संपत्ति जो अपने को सामाजिक अनिवार्यता बताती थी।

वह लाभ जिससे सबके हिस्से की गणना होनी थी।

Jesair को यक़ीन नहीं था कि पुराने लेख का सचमुच यही अर्थ है। पुराने शब्दों को खींच-तानकर लगभग किसी भी वर्तमान की सेवा में लगाया जा सकता था। इसीलिए वह उन लोगों का विरोध करता था जो ऑरेलियाई वृत्तांतों को अचूक भविष्यवाणियाँ बना देते थे।

फिर भी वह इस अनुभूति से मुक्त नहीं हो पाता था कि साझा कृति का समय पक चुका है।

और मूल्य अब भी छाया में चल रहा है।

फिर ग्रह के सबसे बड़े पश्चिमी महाद्वीप Aménia के दक्षिण से आई एक सेलेनी स्त्री मंच पर पहुँची। उसने उन लोगों की बात की जिनसे स्वचालन ने वेतन के साथ-साथ दिन की लय, सामाजिक संबंध और किसी के काम आने का भाव भी छीन लिया था। उसने उन स्त्री-पुरुषों की गवाहियाँ दिखाईं जिन्होंने जीवन भर काम किया था और अब सुन रहे थे कि उनकी जगह मशीनें आने से सभ्यता और अधिक कुशल बन गई है।

“जब किसी का काम छिनता है,” उसने कहा, “तो केवल आय नहीं छिनती। उससे यह प्रमाण छिन जाता है कि दुनिया को उसकी ज़रूरत है। सार्वभौमिक मूल आय को महज़ एक वित्तीय व्यवस्था बनकर नहीं रह जाना चाहिए। उसे गरिमा की एक नई परिभाषा का हिस्सा बनना होगा।”

फिर अर्थशास्त्री आए।

फिर विधिवेत्ता।

फिर उत्पादन में लगी एआई के प्रतिनिधि।

उनके वक्तव्य सटीक थे, संतुलित थे और थका देने वाले थे।

Mareia, Jesair की ओर झुकी।

“आपने ग़ौर किया? सब हिस्से की गणना की बात करते हैं, पर जिस आधार पर उसकी गणना होगी उसे पूरा दिखाने को कोई तैयार नहीं।”

Jesair ने सिर हिलाया।

“क्योंकि गणना का वह पूरा आधार ही सत्ता है।”

“और सत्ता को दिखाई देना पसंद नहीं?”

“उसे दिखना बहुत पसंद है। मगर सिर्फ़ सामने से।”

Mareia ने उसकी ओर देखा। पहली बार कुछ देर तक।

“और पीछे से?”

“वहाँ अक्सर वे हाथ दिखते हैं।”

मंच पर अब संघ के एक युवा मंत्री ने बोलना शुरू किया था। वह ऑरेलियाई था, पर उसकी आँखों का स्वर्ण वलय दिखाई नहीं दे रहा था। वह न्यायसंगत मूल आय की आवश्यकता, सामाजिक सद्भाव और संस्थाओं में नागरिकों के विश्वास की बात कर रहा था।

Nerai Sael बगल की विश्लेषक दीर्घा में ऊँचाई पर बैठी थी। वहाँ से उसे बहस के साथ-साथ खुलती आँकड़ों की परतों तक पहुँच थी। वह नाम, संस्थाएँ, स्रोत, लेनदेन के दूसरे पक्ष, पुराने संबंध, अनुदान, सार्वजनिक घोषणाएँ और स्वामित्व की शृंखलाएँ देख रही थी। यानी वह सब जो उपलब्ध था।
इसीलिए जो उपलब्ध नहीं था वह उसे बेचैन कर रहा था।

Daren Voltr के विवरण में तीन परतें नहीं थीं। ये ग़ैरक़ानूनी या आपराधिक ढंग से छिपाए गए आँकड़े नहीं थे। ये बस संरक्षित थे। कारोबारी हित। अंतरराज्यीय मौद्रिक परामर्श। परामर्श के अप्रकाशित अनुबंध।
Nerai ने उन्हें चिह्नित कर लिया।

इसलिए नहीं कि उसे Voltr पर किसी ख़ास बात का संदेह था। इसलिए कि चीज़ों को नज़र से ओझल रखने के ढाँचे में शुरुआत हमेशा ऐसे ही होती थी: अपराध से नहीं, एक अपवाद से।
नीचे सभागार में बहस अब मुद्दे की तह तक पहुँच रही थी।

“मौद्रिक एकता के बिना सार्वभौमिक मूल आय में समानता नहीं होगी,” संघ की एक अर्थशास्त्री ने कहा। “हर राज्य अलग हिस्सा देगा, अलग उत्पादन गिनेगा, अलग मुनाफ़ा छिपाएगा और अपनी राजनीतिक ज़रूरत के हिसाब से अपनी मुद्रा में फेरबदल करेगा।”
“और मौद्रिक एकता के साथ यही मूल आय,” एक वित्तीय परिसंघ के वेयरानी ने उत्तर दिया, “केंद्र से दिया जाने वाला भत्ता होगी जो नागरिक को ग्रह की लेखा-मशीन की आज्ञा मानने के बदले मिलेगा।”
“नहीं,” पीछे की पंक्तियों से किसी ने कहा। “वह उसका हिस्सा होगा।”

सभागार चुप हो गया।

आवाज़ किसी राजनेता की नहीं थी। Jesair की थी।

उसने बोलने का इरादा नहीं किया था। बोलने की अनुमति नहीं माँगी थी। बस वाक्य उसके रोकने से पहले ही निकल गया था।

दीवारों पर उसका नाम उभरा: Jesair Davion, Auriola की कुल परिषद, स्वतंत्र प्रतिनिधि।

कुछ लोग मुड़कर देखने लगे।

Davion का नाम आते ही सभागार में हमेशा कुछ बदल जाता था। बदलाव इतना महीन था कि कार्यवृत्त में न आ पाता, पर पुरानी कथाओं की परछाइयाँ लंबी होती थीं।

सभाध्यक्ष ने उसे बोलने का अवसर दिया।

Jesair खड़ा हो गया।

एक पल के लिए उसे फिर उस पुराने लेख के शब्द दिखाई दिए। न पत्थर में उत्कीर्ण, न कुल-वृत्तांत में लिखे हुए, बल्कि मानो वे आलेखों, नामों और आँकड़ों के साथ सभागार के ऊपर खड़े हों।

जब साझा कृति का समय पक जाए, तब मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए।

शायद सदियों से उन शब्दों का अर्थ बहुत संकीर्ण लिया गया था। शायद सब उनकी आध्यात्मिक पूर्ति की राह देख रहे थे, जबकि सामने लेखे का प्रश्न खड़ा था। केवल धन से संबंध होने के कारण वह कुछ कम पवित्र नहीं था।

"भत्ता वह है जो सत्ता ऊपर से देती है," उसने कहा। "हिस्सा वह है जो सभ्यता का अंग होने के नाते मनुष्य का पहले ही है। यदि मशीनें पूरे ग्रह के ज्ञान, ढाँचे, इतिहास और ऊर्जा से मूल्य पैदा करती हैं तो वह मूल्य केवल मशीनों के मालिकों के हाथों में नहीं उपजता। वह सबकी विरासत से पैदा होता है।"

वह कुछ देर रुका।

"सबसे प्राचीन ऑरेलियाई लेखों में से एक में कहा गया है: जब साझा कृति का समय पक जाए, तब मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए। जो सबके काम आता है, वह सबको दिखना चाहिए।"

सभागार में कुछ लोग हिले। कुछ उस उद्धरण को जानते थे। औरों को बस एक आधुनिक राजनीतिक बहस में डाले गए पुराने धार्मिक शब्द सुनाई दिए।

"लंबे समय तक मैं सोचता था कि इसमें केवल मनुष्य के निजी आचरण की बात है," Jesair बोला। "आज मुझे इसका यक़ीन नहीं रहा। सभ्यता जितने शाब्दिक अर्थ में हमारी साझा कृति बन गई है उतने की कल्पना हमारे पूर्वज नहीं कर सकते थे। हमारी मशीनें साझे ज्ञान का उपयोग करती हैं। हमारी अर्थव्यवस्था साझे ढाँचे पर खड़ी है। हमारा उत्पादन जीवित और दिवंगत दोनों के श्रम से उपजता है। यदि उसे सबके काम आना है तो यह दिखाई देना चाहिए कि उसका मूल्य कहाँ उपजता है, कहाँ जाता है और उसके फ़ैसले कौन करता है।"

उसने दीवारों पर उभरे आँकड़ों की ओर देखा।

“आँखें मूँदकर हिस्से की गणना नहीं हो सकती। यदि नागरिक को दिखाई ही न दे कि उसका हिस्सा किस आधार पर निकाला जाता है तो उसे न्याय नहीं मिलता। उसे तसल्ली मिलती है।”

सभागार में चुप्पी थी।

सहमति की नहीं। कुछ ख़तरनाक-सी।

Daren Voltr ज़रा-सा मुस्कुराया।

उसमें तिरस्कार नहीं था। उस आदमी का संतोष था जिसे आख़िर एक इतना बड़ा दावा सुनने को मिला था कि अब वह उसकी चीरफाड़ शुरू कर सकता था।

“अच्छा,” उसने कहा। “मान लेते हैं भत्ते और हिस्से में आपका भेद। यह भी मान लेते हैं कि मनुष्य को जानने का अधिकार है कि उसका हिस्सा किस आधार पर निकाला गया। तो आपका प्रस्ताव क्या है? कैसे सुनिश्चित करेंगे कि गणना के लिए सामग्री पूरी हो, पारदर्शी हो और साथ ही सत्यापित की जा सके?”

सभागार की दीवारों से विनिमय दरों के आलेख ग़ायब हो गए। उनकी जगह ग्रह के उत्पादन का आरेख आ गया।

ऊर्जा।

भूमि।

स्वचालित कारखाने।

सार्वजनिक अनुसंधान।

निजी पेटेंट।

आँकड़ों के अभिलेखागार।

ग्रह से बाहर खनन।

लाखों केंद्रों को रेखाएँ जोड़ती थीं जो राज्यों, मुद्राओं और स्वामित्व की संरचनाओं को पार करती थीं। कुछ स्पष्ट थीं। कुछ कोषों, बैंकों और ऐसी कंपनियों की उलझन में खो जाती थीं जिनका मालिक सार्वजनिक रूप से ज्ञात नहीं था।

Jesair कुछ देर उन्हें देखता रहा।

“जो आँकड़े केवल मुट्ठी भर चुनिंदा लोगों को मालूम हैं, उनसे आप सबका हिस्सा नहीं निकाल सकते,” उसने कहा। “और जब तक व्यवस्था के निर्णायक हिस्से बैंक की गोपनीयता, व्यापार के रहस्य या मौद्रिक संप्रभुता के पीछे छिपे हैं, आप जाँच नहीं सकते कि व्यवस्था न्याय करती है या नहीं।”

“यह अब भी कोई प्रस्ताव नहीं हुआ,” Voltr ने आपत्ति की।

“यह उसकी शुरुआत है।”

Jesair ने आरेख की ओर देखा।

“मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए। यदि हमें जानना है कि Elarion पर कितना मूल्य उपजा, उसे किसने पैदा किया, किसने अपना लिया और शेष लोगों का उसमें कितना हिस्सा है, तो हमें उसका चलना दिखाई देना चाहिए।”

सभागार में कुछ दबी आवाज़ें उठीं।

“इसीलिए पूरे ग्रह में धन का प्रवाह बहुत हद तक पारदर्शी होना चाहिए,” Jesair ने कहा। “केवल राज्यों के ख़र्च नहीं। केवल राजनेताओं के खाते या सार्वजनिक संस्थाओं के अनुबंध नहीं। बड़ी निजी पूँजी की आवाजाही भी दिखनी चाहिए। स्वामित्व के संबंध। अंतिम लाभार्थी। मुद्राओं के बीच हस्तांतरण। राजनीतिक प्रभाव को मिलने वाला धन। बुनियादी ढाँचे, भूमि, मीडिया, शोध और ऐसी प्रौद्योगिकी की ख़रीद जो लाखों लोगों का जीवन बदल सकती है।”

विश्लेषक दीर्घा में Nerai ने लिखना बंद कर दिया।

उसे बेहतर रजिस्टरों, कड़े लेखापरीक्षण या उत्पादन का ब्योरा देने की एक समान पद्धति के प्रस्ताव की उम्मीद थी। पर Jesair ने सार्वजनिक और निजी वित्त के संसारों के बीच की सीमा को ही प्रश्न के घेरे में खड़ा कर दिया था।

Voltr शांत रहा।

“धन का सारा प्रवाह?”

“मैंने कहा, बहुत हद तक।”

“अपने लिए काफ़ी गुंजाइश रख ली आपने।”

“वह ज़रूरी है। जो भोजन या दवा की क़ीमत चुकाता है वह उससे ग्रह का भविष्य तय नहीं करता। जो अस्पतालों का जाल ख़रीदता है, ऊर्जा आपूर्ति पर नियंत्रण पाता है या किसी राजनीतिक आंदोलन को धन देना शुरू करता है, उसके फ़ैसले अब सिर्फ़ उसके अपने बारे में नहीं होते।”

“और छोटे और बड़े के बीच रेखा कौन खींचेगा?”

“समाज।”

Voltr मुस्कुराया।

“समाज कुछ तय नहीं करता। उसकी ओर से बोलने वाली संस्थाएँ तय करती हैं।”

“तो उन्हें भी पारदर्शी होना होगा।”

सभागार में एक छोटी-सी घबराई हँसी दौड़ गई।

Voltr ने उसे थम जाने दिया।

“और निजता का क्या?” उसने पूछा। “क्या आप चाहते हैं कि हर नागरिक हर दूसरे नागरिक के खाते देखे? वह कहाँ ख़रीदारी करता है, किसकी सहायता करता है, किसका समर्थन करता है, कहाँ आता-जाता है और किस बात पर उसे शायद लाज आती है?”

प्रश्न सभागार के ऊपर टँगा रह गया।

वह पिछले सभी प्रश्नों से सरल था। और इसीलिए अधिक ख़तरनाक।

Jesair कुछ पल चुप रहा।

“निजता की अपनी सार्थकता रही है,” उसने कहा। “और अब भी है। वह मनुष्य के अंतरंग जीवन, उसके परिवार, स्वास्थ्य, रिश्तों, विश्वासों और उस जगह की रक्षा करती है जहाँ उसे जनता के सामने कोई सफ़ाई नहीं देनी पड़ती।”

“तो आप मुझसे सहमत हैं।”

“पूरी तरह नहीं।”

Jesair ने सामने की कुर्सी की पीठ पर हथेली टिका दी।

“वित्तीय निजता का बहुत बड़ा हिस्सा मनुष्य को दूसरे लोगों से बचाने के लिए नहीं उपजा। वह सत्ता से उसकी रक्षा के लिए उपजा। भ्रष्ट राज्य से, मनमानी करने वाले शासक से, उस संस्था से जो हर सूचना को उसके विरुद्ध इस्तेमाल कर सकती थी।”

उसने पहली पंक्तियों में बैठे राज्यों के प्रतिनिधियों की ओर देखा।

“जहाँ राज्य स्वयं अपारदर्शी हो, वहाँ निजता स्वतंत्रता की अंतिम शरण हो सकती है। पर यदि हम ऐसा समाज बनाना चाहते हैं जहाँ सत्ता स्वयं पारदर्शी हो, तो हमें पूछना होगा कि क्या वही छाया अब भी निर्बलों को बचाती है या अब अधिकतर बलवानों को बचा रही है।”

इस बार कोई नहीं हँसा।

“आम आदमी नहीं चाहता कि अजनबी उसकी हर ख़रीद पर नज़र रखें,” Jesair ने कहा।

“पर एक सीमा से अधिक की संपत्ति और लेनदेन की निजता केवल निजी जीवन की बात नहीं रह जाती।”

“क्यों?”

“क्योंकि बड़ी संपत्ति केवल निजी मामला नहीं है।”

व्यावसायिक संघों के कुछ प्रतिनिधि अपनी जगह कसमसाए।

“बड़ी संपत्ति क़ीमतें, काम की शर्तें, भूमि का स्वामित्व, शहरों का रूप, अनुसंधान, मीडिया और कभी-कभी क़ानून तक बदल देने की क्षमता है। एक बिंदु के बाद प्रश्न केवल यह नहीं रह जाता कि मनुष्य किसका मालिक है। प्रश्न यह होता है कि उस स्वामित्व के बल पर वह दूसरों के साथ क्या कर सकता है।”

Voltr ने बाँहें बाँध लीं।

“और इसीलिए उसकी निजता छिन जानी चाहिए?”

“इसीलिए उसकी सत्ता का विस्तार दिखाई देना चाहिए।”

“अंतर केवल नाम का है।”

“नहीं। अंतरंग जीवन और सत्ता एक चीज़ नहीं हैं।”

Jesair का स्वर शांत बना रहा।

“किसी को यह जानने की ज़रूरत नहीं कि आपने रात के खाने में क्या मँगाया, किसे निजी भेंट भेजी या रात कहाँ बिताई। पर समाज को यह जानने का अधिकार है कि आपने दस कोषों के ज़रिए उसकी जलापूर्ति में निर्णायक हिस्सेदारी हासिल कर ली है। उसे यह जानने का अधिकार है कि राजनीतिक दल को धन देने वाली कंपनी और वह व्यावसायिक संघ जिसे वही दल सरकारी ठेके देता है, दोनों का मालिक एक ही है। उसे यह जानने का अधिकार है कि एक राज्य में दर्ज मुनाफ़ा दूसरे में पैदा हुआ और तीसरे में गुम हो गया।”

दीवारों पर नाम छिपाकर दिखाई गई स्वामित्व की एक शृंखला उभरी। एक उद्यम की कड़ी चौदह कंपनियों, छह राज्यों और ग्रह के बाहर तीन न्यायक्षेत्रों से होकर गुज़रती थी। अंत में उसका असली मालिक एक अप्रकाशित कोष में गुम हो जाता था।

“बड़ों की निजता अक्सर एक पूरे तंत्र की ढाल होती है।”

Voltr ने आरेख को देखा।

“और आप चाहते हैं कि हर कोई हर तंत्र को देखे?”

“मैं चाहता हूँ कि हर बड़ी ताक़त ऐसा निशान छोड़े जो दिखाई दे।”

“उसी क्षण?”

Jesair एक पल को झिझका।

“इतने समय के भीतर कि पारदर्शिता महज़ पुरातत्त्व बनकर न रह जाए।”

सभागार में खलबली दौड़ गई।

“तो केवल वर्षांत पर खाते दिखा देने से नहीं चलेगा,” Voltr ने कहा। “आप चाहते हैं कि धन के बड़े प्रवाह चलते-चलते ही दिखाई देते रहें।”

“हाँ।”

“और उन पर निगाह कौन रखेगा? राज्य? मुद्रा परिषद? ग्रह का बैंक?”

“इनमें से कोई संस्था अकेली नहीं।”

“तो कौन?”

Jesair ने सभागार में चारों ओर देखा।

“मैं अभी नहीं जानता कि ऐसी व्यवस्था का ठीक-ठीक रूप क्या होना चाहिए। लेकिन जानता हूँ कि उसका रूप क्या नहीं होना चाहिए। उसे किसी एक सरकार, एक बैंक, एक राज्य या एक जाति की संपत्ति नहीं होना चाहिए। उसे एक ऐसी आँख की तरह काम नहीं करना चाहिए जो सबको देखे और स्वयं अदृश्य रहे।”

Mareia ने उसकी ओर देखा।

Jesair केवल धन की पारदर्शिता की पैरवी नहीं कर रहा था। वह स्वयं देखने की क्रिया को भी पारदर्शी बनाने का रास्ता खोज रहा था।

“हर बार जब कोई झाँककर देखे तो उसका निशान रहना चाहिए,” उसने आगे कहा। “यदि कोई संस्था किसी मनुष्य की जाँच करती है तो उसे यह मालूम होना चाहिए कि किस संस्था ने ऐसा किया। यदि कोई विश्लेषण प्रणाली किसी लेनदेन को जोखिम भरा बताती है तो जिन नियमों से उसने यह तय किया उनकी समीक्षा संभव होनी चाहिए। यदि किसी को जानकारी सार्वजनिक करने से छूट मिले तो यह दिखाई देना चाहिए कि छूट मौजूद है, उसे किसने अधिकृत किया और वह कब तक लागू है।”

Nerai थोड़ा आगे झुक आई।

यह अब कोई साधारण रजिस्टर नहीं था। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें दोनों ओर से देखा जा सकता था। धन निरीक्षकों को दिखाई देता, पर निरीक्षक भी उन्हें दिखाई देते जिनकी वे जाँच करते।

पर Voltr पीछे नहीं हटा।

“और अपराधी?” उसने पूछा। “उसे भी पता होना चाहिए कि कोई उसकी जाँच कर रहा है?”

“हाँ।”

सभागार में गुनगुनाहट दौड़ गई।

“तब तो वह धन कहीं और भेज देगा।”

“यदि वह उसे इस तरह भेज सकता है कि वह गुम हो जाए, तो व्यवस्था पहले ही विफल हो चुकी है।”

“वह प्रमाण नष्ट कर देगा।”

“धन के प्रवाह का जो ब्योरा एक बार दर्ज हो चुका है उसे मिटाना संभव नहीं होना चाहिए।”

“वह अपनी मंशा छिपा लेगा।”

“मंशा हमेशा छिपाई जा सकती है। पर सिर्फ़ इसलिए कि पारदर्शिता मन नहीं पढ़ सकती, हम सत्ता को आड़ नहीं दे सकते।”

Voltr चुप हो गया।

पहली बार उसके चेहरे पर मुस्कान नहीं थी।

“आपको मालूम है आप किसका वर्णन कर रहे हैं?”

“पूरी तरह नहीं।”

“आप बैंकिंग गोपनीयता के अंत का वर्णन कर रहे हैं।”

“उसके आज के रूप के अंत का, शायद।”

“व्यावसायिक गोपनीयता के एक बड़े हिस्से के अंत का।”

“यदि व्यावसायिक गोपनीयता दूसरों के जीवन पर सत्ता को छिपाती है, तो शायद उसका भी।”

“और शायद राज्यों की मौद्रिक संप्रभुता के अंत का भी।”

Jesair ने मंच के ऊपर दर्जनों मुद्राओं के चिह्नों की ओर देखा।

“यदि मौद्रिक संप्रभुता का अर्थ उन आधारों को छिपाने का अधिकार है जिनसे अपने नागरिकों का जीवनस्तर तय होता है, तो हाँ।”

सभागार में मौन छा गया।

इस बार उसमें केवल ख़तरा नहीं था।

उसमें शत्रुता थी।

Jesair ने महसूस किया कि अगली पंक्तियों की नज़रें बदल रही थीं। अभी वह एक पुराने ऑरेलियाई कुल का प्रतिनिधि था जिसे शिष्टाचारवश सुन लेना उचित था। अब वह एक ऐसा मनुष्य बन गया था जिसने उन अधिकारों पर प्रश्न उठाया था जिन पर पूरे के पूरे राज्य, बैंक और व्यावसायिक संघ खड़े थे।

Voltr बैठ गया।

सभाध्यक्ष अगले प्रतिनिधि को बुलाने वाला था, पर किसी ने हाथ नहीं उठाया।

ग्रह के वित्तीय प्रवाह का आरेख दीवारों पर बना रहा।

लाखों रेखाएँ।

कुछ स्पष्ट।

कुछ खंडित।

और बहुत-सी अँधेरे में ख़त्म होती हुईं।

Mareia, Jesair की ओर झुकी।

“आपको एहसास है कि आपने अभी इस ग्रह के तक़रीबन हर उस व्यक्ति को नाराज़ कर दिया है जिसके पास आपसे ज़्यादा पैसे हैं?”

Jesair बैठ गया।

“इसमें कोई ख़ास मुश्किल नहीं रही होगी। मेरे पास कभी ज़्यादा थे ही नहीं।”

“मुझे नहीं लगता आपकी यह सादगी उन्हें शांत कर सकेगी।”

उसने उसकी ओर देखा।

“आपको लगता है मैं बहुत दूर चला गया?”

Mareia ने आरेख के अँधेरे हिस्सों की ओर देखा।

“नहीं,” उसने कहा। “मुझे लगता है आपने अभी सिर्फ़ दिशा दिखाई है।”

उनसे बहुत ऊपर Nerai ने विश्लेषण की एक नई प्रविष्टि खोली।

उसने संदिग्ध व्यक्ति या राजनीतिक जोखिम के रूप में उसमें Jesair का नाम नहीं डाला। बस दो वाक्य लिखे।

यदि साझा मूल्य में मनुष्य का हिस्सा न्यायसंगत होना है तो ऐसा कोई मूल्य नहीं रह सकता जो दिखाई न दे।

यदि वित्तीय सत्ता पर निगरानी संभव बनानी है तो धन की आवाजाही ही नहीं, उसे देखने वाला हर व्यक्ति भी दिखाई देना चाहिए।

उसने प्रविष्टि सहेज ली।

उसे अनुमान नहीं था कि कुछ वर्षों बाद वह इस पर वापस आएगी।

उस समय जब प्रश्न यह नहीं रह जाएगा कि मूल्य को छाया में चलने की अनुमति है या नहीं।

बल्कि यह कि छाया कितने जीवन छिपा सकती है।

सभागार के दूसरे छोर पर, वित्तीय परिसंघों के अतिथियों वाले हिस्से में, Arien Korveth बैठा था।

वह Jesair को किसी वक्ता की तरह नहीं देख रहा था।

एक पल उसकी दृष्टि Mareia की ओर गई और फिर सभागार के बीच खड़े आदमी पर लौट आई। उसमें राजनीतिक मतभेद या किसी वित्तकार की उस चिंता से अधिक निजी कुछ था जिसके हितों को एक नया विचार आघात पहुँचा सकता हो।

Arien की नज़र उस व्यक्ति की थी जिसे चोट अपने किसी मर्म पर लगी हो।

Arien से कुछ आसन छोड़कर Kael Thorne बैठा था।

वक्ताओं के लिए निर्धारित किसी स्थान पर उसका नाम नहीं चमकता था। वह न किसी राज्य का प्रतिनिधि था, न किसी राजनीतिक दल का, और आधिकारिक रूप से किसी वित्तीय घराने की ओर से नहीं बोलता था। फिर भी बैंकों के अध्यक्ष, सबसे बड़े कोषों के प्रबंधक और वे लोग उसे जानते थे जो तय करते थे कि किन नेताओं के लिए सत्ता की राह खुलेगी।

Jesair के वक्तव्य के दौरान Kael की नज़र केवल वक्ता पर नहीं थी।

वह सभागार को देख रहा था।

वह जानता था कि शब्दों का सच्चा अर्थ अक्सर कहने वाले के मुख पर नहीं, उनके चेहरों पर दिखता है जिन पर वे असर करते हैं। उसने कोष प्रबंधकों की बेचैनी, मुद्रा परिषदों के प्रतिनिधियों की सतर्कता और उन नेताओं के चेहरे पर दबी हँसी देखी जिन्हें विश्वास था कि Jesair के विचार क़ानून तक पहुँचने से पहले ही हवा हो जाएँगे।

उसे स्वयं हँसी नहीं आई।

जब Jesair ने कहा कि जो सबके काम आता है, वह सबको दिखना चाहिए, तब Kael को ऐसा तीव्र भय हुआ कि एक पल को लगा मानो पूरा सभागार सिर्फ़ उसी के लिए चुप हो गया है।

बहुत कम लोग यह जानते थे, पर उसकी बहुत-सी शक्ति का अस्तित्व इसी पर टिका था कि उसे समग्र रूप में देखना संभव नहीं था। बैंक उसके कोषों को जानते थे, पर उनके अंतिम मालिकों को नहीं। राजनेता अपने न्यासों के दाताओं को जानते थे, पर उनके धन का उद्गम नहीं। दलों के प्रबंधक खाते देख सकते थे, पर उन्हें जोड़ने वाली शृंखलाएँ नहीं। अधिकारी अलग-अलग कंपनियों को जानते थे, पर उस घराने को नहीं जहाँ सबके सूत्र लौटते थे।

पारदर्शिता का अर्थ केवल नए नियम नहीं होता।

Kael के लिए उसका अर्थ होता पर्दा उठ जाना।

वह प्रबंधकों और न्यासों की आड़ में छिपी संपत्ति को उजागर कर देती। उस धन को, जिस पर कर नहीं दिया गया था। उन दलों को, जो बाहर एक-दूसरे से घृणा करते थे पर भीतर ही भीतर उन्हीं स्रोतों से पलते थे। उन सौदों को, जो वैध दिखते थे जबकि उनकी शुरुआती पूँजी ऐसी जगहों से आई थी जिनका भद्र समाज में नाम नहीं लिया जाता था।

Jesair ने केवल आर्थिक सुधार का प्रस्ताव नहीं रखा था।

उसने अनजाने ही उस संसार पर फ़ैसला सुना दिया था जिसे Kael ने पूरी उम्र लगाकर बनाया था।

Kael के प्राण सूख गए।

इसलिए नहीं कि उसे लगता था पारदर्शिता कल आ जाएगी। क़ानूनों को टाला जा सकता था, समितियों को काम में डुबोया और जनता को थकाया जा सकता था। डरावनी बात कुछ और थी: Jesair के शब्द सरल थे। लोग उन्हें समझ सकते थे। और जिस विचार को लोग समझते हैं उसे तभी तक दबाया जा सकता है जब तक कोई ऐसा व्यक्ति उसे न कह दे जिस पर वे विश्वास करने को तैयार हों।

फिर उसका ध्यान Arien पर गया।

उसने देखा कि Jesair की ओर देखते ही कैसे उसके जबड़े की पेशियाँ तन गईं। कैसे उसकी आँखें क्षण भर के लिए Mareia पर ठहरीं। और कैसे हर बार, जब सभागार का ध्यान Jesair को मिलता, उसके चेहरे का भाव बदलता था।

Arien को केवल Jesair के विचार का भय नहीं था।

उसे ख़ुद Jesair से दिक़्क़त थी।

इससे पहले कि Arien को मालूम हो कि कोई उसे देख रहा है, Kael ने नज़र फेर ली।

मंच पर सभाध्यक्ष Jesair के वक्तव्य के लिए उसे धन्यवाद दे रहा था। सभागार धीरे-धीरे अपनी कार्यसूची पर लौट रहा था, मानो कोई बुनियादी बात हुई ही न हो। अगला वक्ता अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहा था और दीवारों पर नए आलेख तैयार हो रहे थे।

पर Kael Thorne जानता था कि कुछ क्षण ऐसे होते हैं जिन्हें उनके अपना अर्थ समझने से पहले ही पहचाना जा सकता है।

Jesair Davion ने अभी एक ऐसे संसार को नाम दिया था जिसमें सत्ता को अपने हाथ दिखाने पड़ते।

Kael जानता था कि उसके अपने हाथों पर क्या मिलेगा।

और कुछ आसनों की दूरी पर वह पुरुष बैठा था जो साफ़ तौर पर कहीं अधिक निजी कारणों से Jesair को चुप कराना चाहता था।

Kael ने Arien का नाम याद रख लिया।

सभा से लौटते समय Mareia ने शाम के समाचार चलाए। एक चैनल पर Jesair के चेहरे के नीचे पंक्ति उभरी: DAVION हर खाता देखना चाहता है। दूसरे पर भोजन ख़रीदने और किसी अस्पताल का मालिक होने का अंतर समझाया जा रहा था। तीसरे ने बैंकों के प्रतिनिधि को बुलाया था जिसका दावा था कि इन दोनों के बीच की सीमा कभी भरोसे के साथ नहीं खींची जा सकती।

“मैं सत्ता के दायरे की बात कर रहा था,” एक छोटी-सी रिकॉर्डिंग में Jesair ने कहा। प्रस्तोता ने उसे टोक दिया: “यानी निजता के दायरे की?”

Mareia ने प्रसारण बंद कर दिया। सुबह उसे स्वास्थ्य अभिलेखागार में उससे मिलना था। वह जान गई थी कि सबसे पहले उससे कौन-सा प्रश्न पूछेगी।

6. पृथ्वी: यहूदा का चुंबन

यहूदा को लंबे समय तक विश्वास था कि मनुष्य यदि अपने भीतर के दरवाज़े कसकर बंद कर ले तो वह अपने आप पर विजय पा सकता है।

बचपन से वह व्यवस्था के वचन जानता था। जानता था क्या शुद्ध है और क्या अशुद्ध। उस लज्जा को जानता था जिसका नाम ऊँचे स्वर में नहीं लिया जाता, बस जिसे छिपे घाव की तरह देह में लिए फिरते हैं। सभाघर में वह उन पुरुषों को सुनता था जो अन्यजातियों के पापों की, पतित नगरों की, उन वासनाओं की बात करते थे जिनसे परमेश्वर घृणा करता है। ऐसे समय वह अपना सिर दूसरों से ज़रा और नीचा कर लेता था कि किसी को यह न दिखे कि वह कितने ध्यान से सुन रहा है।
जो उसके भीतर जीता था उसका नाम लेने की अनुमति उसने ख़ुद को कभी नहीं दी।

इसलिए नहीं कि वह जानता नहीं था। ठीक उलटा। वह तभी से जानता था जब किशोर था और ऐसी चीज़ों पर उसका ध्यान जाने लगा था जिन पर नहीं जाना चाहिए था: काम पर झुके आदमी की गरदन, जाल खींचते हाथों की शक्ति, बड़े गुरु का स्वर जो दूसरों से ज़्यादा स्नेह से उससे बात करते थे। वह हमेशा एकाएक आता था, गरमी के झोंके की तरह, और उसके ठीक पीछे आता था भय।
नहीं।

यह नहीं।

मैं नहीं।

उसने ऐसे जीना सीख लिया कि कुछ न दिखे। समझदारी की बातें करना, तनकर खड़ा होना, लोगों की आँखों में उतनी ही देर देखना जितनी देर तक देखना सुरक्षित था। उसने दुर्बलता को तुच्छ समझना सीख लिया क्योंकि अपनी दुर्बलता ही उसे सबसे अधिक डराती थी। जब दूसरे पुरुष स्त्रियों के बारे में हँसी-मज़ाक करते तो वह ठीक उसी क्षण मुस्कुराता जब मुस्कुराना चाहिए था। जब वे विवाह की बात करते तो वह बात पैसे पर मोड़ देता, रोम पर, मंदिर पर, किसी भी वज़नदार बात पर जिसमें भेद की बू न हो।
फिर वह यीशु से मिला।

और जो कुछ उसने बरसों से अपने भीतर पत्थर के नीचे दबा रखा था वह हिलने लगा।

शुरू से वह दैहिक नहीं था। कम से कम यहूदा ख़ुद को यही समझाता था। पहले आदर था। फिर प्रशंसा। फिर कृतज्ञता। फिर कुछ ऐसा जिसे वह अब भी निष्ठा का नाम दे सकता था। यीशु उसका नाम ऐसे

लेते थे जैसे उसके पीछे कोई अशुद्धि छिपी न हो। वह उसे बिना घृणा, बिना उपहास, बिना पुरुषों की उस ख़ास शंका के देखते थे जिससे यहूदा जीवन भर डरता आया था।
और इसीलिए यह ख़तरनाक था।

यीशु की निर्मलता पत्थर की दीवार जैसी कठोर नहीं थी। वह खुली थी। उसके पास मनुष्य को केवल अपना दोष ही महसूस नहीं होता था। यह संभावना भी होती थी कि कोई उसे पूरा का पूरा देख ले, फिर भी उसे नष्ट न करे। दूसरों के लिए यह सांत्वना थी। यहूदा के लिए प्रलोभन।
सबसे कठिन थे साधारण दिन।

आग के पास की शाम, जब यीशु थके बैठे होते, लबादा कंधे से सरक जाता और रोशनी चुपचाप उनका मुख उकेरती। वह सुबह जब वह हाथ धोते और पानी कलाइयों से बहता। राह के वे क्षण जब कोई शिष्य कुछ पूछने उनके थोड़ा अधिक निकट झुकता। तब यहूदा अपनी छाती में कुछ उठते महसूस करता जिसे वह तुरंत प्रार्थना से कुचल देता।
हे प्रभु, यह लज्जा मुझसे दूर कर।
पर लज्जा दूर नहीं होती थी।
वह बस चुप रहना सीखती थी।

एक गाँव में रोगियों और याचकों की भीड़ पूरे दिन यीशु को घेरे रही थी। उस लंबी दिनचर्या के बाद शाम को यहूदा जागता रहा। बाक़ी सब छप्पर के नीचे थके हुए पुरुषों की गहरी नींद में पड़े थे। पतरस खर्राटे ले रहा था। थोमा ने नींद में दीवार की ओर करवट ली। यूहन्ना ठुड्डी तक लबादा ओढ़े शांत पड़ा था जैसे संसार कभी उसका शत्रु रहा ही न हो।
यहूदा कुछ देर उसे देखता रहा। उसे उस शांति से घृणा हुई।
फिर उसने यीशु को बाहर निकलते देखा।
वह उनके पीछे गया।

उसने अपने से कहा कि पैसों की बात करनी है। कल की राह की। उनके चारों ओर बढ़ते ख़तरे की। कोई न कोई उचित कारण सदा होता था। जब मनुष्य को वह चीज़ खींच रही हो जिसे स्वीकार करने से उसे डर लगे, तब उसे उचित कारण चाहिए होते हैं।

यीशु घर के पीछे एक नीची दीवार के पास खड़े थे। धरती पर अँधेरी, गरम रात थी। दूर कुत्ता भौंका। जैतून के पेड़ों के पीछे कहीं झींगुर बोले। यीशु के हाथ पत्थर पर थे और सिर झुका था, जैसे मौन में भी प्रार्थना कर रहे हों।

“रब्बी,” यहूदा ने कहा।

यीशु मुड़े।

“यहूदा।”

वह नाम उसके भीतर उतर गया। हमेशा उतर जाता था। जैसे यीशु उसके नाम को उन सब तहों के बिना बोलते थे जो यहूदा ने अपने ऊपर चढ़ा रखी थीं।

“तुम्हें अकेले नहीं होना चाहिए,” यहूदा ने कहा।

यीशु ने उसे शांति से देखा।

“और तुम?”

“मुझे नींद नहीं आ रही।”

“देख रहा हूँ।”

यहूदा के मुँह से छोटी, रूखी हँसी निकली।

“तुम हमेशा देख लेते हो।”

यीशु चुप रहे।

यहूदा को लगा कि उसे चले जाना चाहिए। अब भी जा सकता था। बस कुछ मामूली-सी बात कहकर मुड़ता, दूसरों के बीच वापस चला जाता और सुबह ऐसे चलता मानो कुछ हुआ ही न हो। जीवन भर इसी तरह तो उसने अपने को बचाया था: अंतिम क्षण में पीछे हटकर।

पर उस रात वह अपने बनाए पिंजरे से थक चुका था।

“तुम जानते हो लोगों के भीतर क्या जगाते हो?” उसने पूछा।

यीशु हिले नहीं।

“मैंने तुम्हारे भीतर क्या जगाया है?”

यहूदा का गला भिंच गया।

वह प्रश्न आरोप नहीं था। इसीलिए और कठिन था। यीशु ने ऐसे पूछा मानो उनके सामने पाप नहीं, खाई के किनारे खड़ा एक मनुष्य हो।

“मैं इसके बारे में बात नहीं करना चाहता।”

“फिर आए क्यों?”

यहूदा ने बगल में देखा। दीवार को। अँधेरे को। अपने हाथों को।

“क्योंकि अब मुझसे सहा नहीं जाता।”

यीशु के मुख का भाव बदला। उसमें कोमलता आई, दुर्बलता नहीं।

“क्या नहीं सहा जाता?”

यहूदा ने एक झटके में साँस छोड़ी।

“जो मेरे भीतर है।”

एक पल इतना गहरा मौन छाया कि उसे अपने कानों में लहू बहने की आवाज़ सुनाई दी।

“जीवन भर मैंने प्रार्थना की है कि यह चला जाए,” वह बोला। “जीवन भर सावधानी बरतता रहा हूँ। अपनी आँखों पर। शब्दों पर। हाथों पर। कहाँ खड़ा हूँ। किससे बचकर निकलूँ। किसके पास न जाऊँ। मैंने सोचा था तुम्हारे पास आऊँगा तो शुद्ध हो जाऊँगा।”

यीशु उसे बिना टोके सुनते रहे।

“पर उलटे यह और बढ़ गया है,” यहूदा ने कहा। “तुम्हारे पास रहकर यह और बढ़ जाता है।”

यीशु ने दृष्टि नीची कर ली जैसे उस वाक्य ने उन्हें पीड़ा दी हो।

“यहूदा…”

“नहीं,” उसने उनकी बात काट दी। “मेरा नाम इस तरह मत लो। जैसे अब भी मैं कुछ और हो सकता हूँ।”

“हो सकते हो।”

“नहीं हो सकता।”

“तुम रुक सकते हो।”

यहूदा काँपा। कहना कठिन था कि क्रोध से, पीड़ा से या आशा से।

“तुम ऐसे बोलते हो जैसे जानते ही न हो कि अपने भीतर कोई वर्जित चीज़ लिए फिरना क्या होता है।”

“मैं जानता हूँ प्रलोभन क्या है।”

“यह वाला नहीं।”

शब्द उसकी मंशा से अधिक तीखे निकले। पर अब उसने उन्हें वापस नहीं लिया।

यीशु उसके सामने एकदम स्थिर खड़े थे।

“इस घड़ी मैं तुम्हारा न्याय करने नहीं खड़ा हूँ,” उन्होंने कहा।

यहूदा हँसा, इस बार लगभग हताश होकर।

“तुम ही तो मेरा न्याय करते हो। क्योंकि अगर तुम मुझसे घिन खाकर मुझे देखते तो बात आसान होती। अगर मुझे भगा देते तो मैं जानता कि मैं क्या हूँ। पर तुम मुझे ऐसे देखते हो जैसे मैं अब भी तुम लोगों में से हूँ।”

“तुम हो।”

“वैसे नहीं जैसे मैं चाहता हूँ।”

कहते ही उसे अपने ही शब्दों से डर लगा।

अब पीछे हटने की जगह नहीं थी।

यीशु का चेहरा उदासी से भर गया।

“यहूदा, यह रास्ता नहीं है।”

“कौन-सा रास्ता?”

“किसी मनुष्य का मालिक बनना चाहना।”

“मैं तुम्हारा मालिक नहीं बनना चाहता।”

पर कहते हुए भी वह जानता था कि झूठ बोल रहा है।

उसे उनकी दृष्टि चाहिए थी। उनका स्वर। वह चाहता था यीशु केवल उसके हों। कम से कम एक बार वह सबके न रहें—रोगियों के, बच्चों के, स्त्रियों के, पतरस के, यूहन्ना के, पूरे इस्राएल के, परमेश्वर के। उसे एक ऐसा क्षण चाहिए था जो केवल उसका हो।

और इतने लंबे समय से बंद वह चाह अब विवेक के रोक पाने से पहले ही लाज छोड़ बैठी।

वह एक क़दम उनकी ओर बढ़ा।

यीशु ने हाथ उठाया, धमकी की तरह नहीं, एक सीमा की तरह।

“वहीं रहो।”

पर यहूदा के कान अब सुन नहीं रहे थे। या वह सुन रहा था, और इसीलिए बढ़ता गया। उसने उनकी बाँह का कपड़ा थाम लिया। ज़बरदस्ती से नहीं, व्याकुल आग्रह से, जैसे डूबता आदमी उसे भी पकड़ लेता है जिसे अपने साथ खींच सकता है।

“बस एक बार,” वह फुसफुसाया।

“नहीं।”

वह शब्द स्पष्ट था। शांत। दृढ़।

उस क्षण यहूदा की आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

वह झुका और उसने उन्हें चूम लिया।

उस चुंबन में अभिवादन या भाईचारे के आदर का कुछ भी न रहा। उसमें यहूदा ने अपनी भूख, हताशा, अकेलापन, अपने से घृणा, अपनाए जाने की चाह और यह क्रोध कि अपनाए जाने के लिए उसे याचना करनी थी, सब उड़ेल दिया। उसने उन्हें आवेग से चूमा, फिर दोबारा, जैसे पहले स्पर्श का छोटा-सा क्षण वह सब सँभालने के लिए काफ़ी न हुआ हो जो उसने उसमें डाल दिया था।

यीशु ने उसे अपने से हटा दिया।

उन्होंने उसे दृढ़ता से हटाया, बिना मारे, बिना घृणा के, और यहूदा तुरंत समझ गया: कोई दरार नहीं, कोई गुंजाइश नहीं, कोई 'शायद' नहीं।

यीशु के हाथ उसके कंधों पर थे।

"बस।"

यहूदा की साँस भारी थी। चेहरा एक साथ तपा हुआ और निस्तेज था। आँखें चमक रही थीं पर वह रोया नहीं। अभी नहीं।

"तो आख़िर वही बात," उसने कहा।

"नहीं।"

"तुम मुझे ठुकरा रहे हो।"

"तुमने जो किया है, मैं उसे अस्वीकार करता हूँ।"

"एक ही बात है।"

"नहीं है।"

"तुम्हारे लिए नहीं!" यहूदा फट पड़ा। "तुम हमेशा चीज़ों को ऐसे अलग कर देते हो कि ख़ुद शुद्ध बने रहो। पाप और मनुष्य। चाह और कर्म। करुणा और सीमा। पर मैं बँटा हुआ नहीं हूँ। जब तुम इसे धकेलते हो, मुझे धकेलते हो।"

यीशु अब भी उसके कंधे थामे हुए थे, पर उनका स्वर धीमा रहा।

"जो तुम्हें चीर रहा है, तुम वही नहीं हो।"

"पर जो चाहता है वह तो मैं ही हूँ।"

“और कोई मनुष्य तुम्हारी चाह के आगे अपने को सौंप देने के लिए बाध्य नहीं है।”

वह वाक्य उनके बीच पत्थर की तरह गिरा।

यहूदा उन्हें देखता रहा।

उस क्षण वह उस सीमा को पूरी तरह समझ गया। सामने बंद दरवाज़े की तरह वह अडिग खड़ी थी।

पहले उसके भीतर सब कुछ अपने ही भीतर ढह गया। फिर वह बदलने लगा।

लज्जा क्रोध बन गई।

क्रोध आरोप बन गया।

आरोप आहत अभिमान बन गया।

वह पीछे हटा।

यीशु ने उसे छोड़ दिया।

“यहूदा,” उन्होंने अब और आग्रह से कहा, “यह सब अकेले मत सहना।”

पर यहूदा को केवल अपमान सुनाई दिया। उस वाक्य में उसने सुना: तुम कमज़ोर हो। ख़तरनाक हो। तुम्हें मदद की ज़रूरत है। जो सचमुच उसमें था उसके सिवा सब कुछ उसने सुना।

“यह सब अकेले मत सहना,” उसने उपहास से दोहराया। “तो किसके साथ रहूँ? तुम्हारे साथ? तुम्हारे पास? तुम्हारी बग़ल में? बहुतों में से एक बनकर?”

यीशु मौन रहे।

“यही है तुम्हारा प्रेम?” यहूदा बोलता गया। अब उसका स्वर और कठोर था। “मनुष्य को इतनी रोशनी दो कि वह अपनी दुर्दशा देख ले, पर इतनी गरमाहट नहीं कि ठंड में जमने से बच जाए?”

“जो तुम मुझसे माँग रहे हो, वह प्रेम नहीं है।”

यहूदा ऐसे चौंका जैसे उसे चोट लगी हो।

“तो उसका नाम लो।”

यीशु ने तुरंत उत्तर नहीं दिया।

और उसी छोटे-से मौन में यहूदा ने अपने को सबसे अधिक तबाह महसूस किया। क्योंकि वह जानता था कि यीशु व्यवस्था के वचन सुना सकते थे। उसे वैसे ही दोषी ठहरा सकते थे जैसे सभाघरों में ठहराया जाता था, पुरुषों की गुप्त बातों में, अपनी शुद्धता का यक़ीन रखने वालों की निगाहों में। वह उसे भगा सकते थे, अशुद्ध कह सकते थे, घिनौना, विकृत।

पर यीशु ने ऐसा नहीं किया।

इससे यहूदा की पीड़ा ज़रा भी कम नहीं हुई।

उलटे।

यदि यीशु ने उसे राक्षस कहकर नहीं धिक्कारा तो राक्षस बन जाने का उसके पास कोई बहाना नहीं था। यदि उन्होंने उसे शाप नहीं दिया तो इस घड़ी के बाद जो कुछ वह करेगा, उसका उत्तरदायित्व उसी का होगा।

यह असहनीय था।

“तुम क्रूर हो,” यहूदा ने धीरे से कहा।

यीशु उसकी ओर एक क़दम बढ़े।

“नहीं।”

“हो। क्योंकि तुम जानते हो कि मनुष्य क्या सुनना चाहता है और उसे वह नहीं देते। जानते हो कि क्या उसे तोड़ देगा और उसे खड़ा रहने देते हो। जानते हो कि उसे तुम्हारी ज़रूरत है और उससे कहते हो: रुक जाओ।”

“हाँ,” यीशु ने कहा। “यदि ऐसा करने से तुम्हें और मुझे दोनों को चोट पहुँचेगी।”

यहूदा हँसा। अब उसमें कोई नरमी नहीं थी। केवल कड़वाहट।

“डरो मत। अब तुम्हें नहीं छुऊँगा।”

“मन में क्रोध लेकर मत जाओ।”

“तो फिर क्या लेकर?”

यीशु उसे देर तक देखते रहे।

“सच।”

यहूदा के चेहरे पर पर्दा पड़ गया।

“अपना सच उन्हीं के लिए रखो जिन्हें तुम्हारे और पास बैठने की छूट है।”

यीशु समझ गए।

“यूहन्ना का इससे कोई लेना-देना नहीं।”

“बेशक,” यहूदा ने कहा। “कभी किसी और का इससे कोई लेना-देना नहीं होता। बस मेरा।”

वह मुड़ा।

“यहूदा।”

वह रुका, पर पलटकर नहीं देखा।

“तुम्हारे नाम का अर्थ लज्जा नहीं है।”

यहूदा अँधेरे में खड़ा था। आख़िर आँसू उसकी आँखों में उमड़ आए। उन्हें उसने इतनी सख़्ती से भीतर निगला कि गला दुखने लगा।

“आज रात से यही है,” उसने कहा।

फिर वह चला गया।

यीशु दीवार के पास अकेले रह गए।

यहूदा धीरे-धीरे लौटा ताकि पैर न काँपें। जब वह छप्पर के नीचे आया तो दूसरे अब भी सो रहे थे। दुनिया नहीं बदली थी। पतरस अब भी खर्राटे ले रहा था। थोमा हिला तक नहीं था। यूहन्ना सोया था, चेहरा शांत, लगभग बच्चे जैसा।

यहूदा अपनी जगह लेट गया, पर आँखें नहीं मूँदीं।

उसकी छाती में आग थी।

पहले वह यीशु के शब्द दोहराता रहा ताकि उन्हें समझ सके।

तुमने जो किया है, मैं उसे अस्वीकार करता हूँ।

जो तुम्हें चीर रहा है, तुम वही नहीं हो।

कोई मनुष्य तुम्हारी चाह के आगे अपने को सौंप देने के लिए बाध्य नहीं है।

फिर वह उन्हें बदलने लगा।

मैं तुम्हें अस्वीकार करता हूँ।

तुम अशुद्ध हो।

कभी कोई तुम्हें वैसे प्रेम नहीं करेगा जैसे तुम चाहते हो।

और अंत में बस एक वाक्य रह गया, सरल और कठोर, ऐसा जिसके सहारे पीड़ा झेली जा सके:

उन्होंने मेरा अपमान किया।

यह वाक्य उसे सच से अधिक अच्छा लगा।

क्योंकि यदि यीशु ने उसका अपमान किया था, तो यहूदा अब केवल वह व्यक्ति नहीं था जिसने सीमा लाँघी थी। वह पीड़ित था। उसके साथ अन्याय हुआ था। उसे चोट लगी थी। उसे क्रोध करने का अधिकार था।

और क्रोध लज्जा से हलका था।

उस रात से उसके भीतर कुछ बदलने लगा।

बाहर से वह वही शिष्य रहा। सुबह उठा, थैली उठाई, सिक्के गिने, काम की बात का सीधा उत्तर दिया। यीशु बोलते तो सुनता। आगे चलना होता तो साथ चलता। पर अब वह यीशु के हर हावभाव का अपने भीतर अस्वीकार की भाषा में अनुवाद करता था।

जब यीशु किसी रोगी पर हाथ रखते, यहूदा उसमें वह स्पर्श देखता जिससे उसे वंचित रखा गया था।

जब वह किसी बच्चे को देखकर मुस्कुराते तो उसे वह दुलार दिखाई देता जो उसके हिस्से नहीं आया था।

जब यूहन्ना उनके पास बैठता तो उसे वह जगह दिखाई देती जो सदा के लिए उसके लिए वर्जित थी।

और जब यीशु शत्रुओं से प्रेम करने की बात कहते, यहूदा का विश्वास और गहरा होता कि सबसे बड़ी क्रूरता है सभी से इस तरह प्रेम करना कि कोई कह न सके: वह मेरा है।

उसके भीतर कुंठा ने तत्काल शोर नहीं मचाया। पहले वह चुपचाप खदबदाती रही। शब्दों के नीचे। सेवा के नीचे। गिने गए सिक्कों के नीचे। प्रार्थना में झुके सिर के नीचे।

पर वह थी।

और उस पल की प्रतीक्षा कर रही थी जब वह अपने को न्याय कह सकेगी।

अध्याय पर लेखक की टिप्पणियाँ

यह अध्याय पूरी तरह काल्पनिक है। इसे लिखने का कारण यह था कि धर्मग्रंथ में यहूदा के विश्वासघात का जो आर्थिक उद्देश्य बताया गया है वह मुझे बहुत उथला लगा। अपने ही गुरु से विश्वासघात के पीछे केवल आर्थिक लाभ से अधिक गहरी कोई बात रही होगी, जो उसके अस्तित्व की जड़ों तक जाती हो। निश्चय ही मेरा उद्देश्य समलैंगिकता को विश्वासघात या ऐसी किसी चीज़ से जोड़ना नहीं है। इतनी परिचित कथा में यह प्रसंग मैंने इसलिए रखा कि यहूदा की यह प्रेरणा मुझे इतनी गहरी लगी कि उससे ऐसा विश्वासघात जन्म ले सकता था। यीशु के समय में समलैंगिकता को अशुद्ध और तिरस्कार के योग्य समझा जाता था। उस समय के समाज में ऐसे लोगों के लिए जीवन असाधारण रूप से कठिन था। इसीलिए मुझे ऐसी प्रेरणा संभव जान पड़ी। वास्तव में क्या हुआ था, यह दूसरी बात है, और आज पीछे मुड़कर उसे जानना बहुत कठिन है। यह पूरा उपन्यास बहुत हद तक कल्पना पर आधारित है और इस अध्याय को भी उसी तरह पढ़ा जाना चाहिए।

7. Elarion: स्वर्ण वलय

Davion कुल का घर Nitra में नहीं था।

वह राजधानी से बहुत दूर, Auriola में था, पुरानी ऑरेलियाई बस्तियों के बीच, जहाँ घाटियाँ खुलकर चौड़े हरे पठारों में बदल जाती थीं और भोर का कुहासा इतनी देर तक धरती से लिपटा रहता कि लगता, यह देश एक ही बार में जागना नहीं चाहता।

पुरानी दीवारों ने Davion के घर को लगभग एक गढ़ का रूप दे दिया था।

कभी यहाँ ऐसे फ़ैसले हुए थे जिनकी छाप पीढ़ियों पर पड़ी थी। सो इस जगह में सत्ता की एक पुरानी पीठ की गरिमा भी थी।

फिर भी Davion परिवार के लिए वह सबसे पहले घर था, इस शब्द के गहरे अर्थ में। वहाँ दीवारें देह के साथ-साथ स्मृति को भी आश्रय देती थीं।

मुख्य कक्ष में पुरखों के चित्र टँगे थे। सभी हूबहू नहीं थे। कुछ पुराने वर्णनों से दोबारा बनाए गए थे, कुछ कलाकार की कल्पना थे। कुछ इतने पुराने थे कि उनके रंग गहराते-गहराते एक भूरी ख़ामोशी में डूब गए थे। फिर भी हर चित्र में चित्रकार ने आँखों को पकड़ना चाहा था।

स्वर्ण वलय।

कहीं दमकता हुआ।

कहीं लगभग अदृश्य।

कहीं बस एक आभास।

Jesair Davion धीरे-धीरे उस कक्ष से गुज़रा। बचपन में वह उन चित्रों से बचता था। उसे लगता था वे उससे कुछ चाहते हैं। न कोई उपलब्धि, न आज्ञाकारिता, न यश। कुछ इससे भी कठिन। चाहते थे कि उसके होने का कोई अर्थ हो।

और अर्थ का भार कर्तव्य से बढ़कर था।

Davion कुल की पुरानी कथाएँ वह बचपन से सुनता आया था। कहते थे, उसके आदि पुरखे छू भर देते तो रोग थम जाता। सूखे के दिनों में वे नदियों के किनारे खड़े होते और पानी लौट आता। उनमें से कुछ मृत्यु को आने से पहले देख लेते थे और किसी के जीवन की राह ऐसी मोड़ देते थे कि मृत्यु उससे बिना मिले

निकल जाती। प्रकृति उनकी बात किसी सेवक की तरह नहीं सुनती थी। वह ऐसे सुनती थी जैसे उसे मनाने की कोई ज़रूरत ही न हो।

Jesair को इन कहानियों पर विश्वास नहीं था।

लेकिन वह उन्हें पूरी तरह हँसी में भी नहीं उड़ा पाता था।

जीवन में कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें समझदार आदमी सच मानने से इनकार कर देता है, फिर भी रात के अँधेरे में उनकी ओर पीठ नहीं करता।

उस शाम Jesair पुस्तकालय में ठहर गया।

उसने कुल की एक पुरानी पोथी खोली। माँ ने कभी उसे सयाना होने से पहले इसे पढ़ने से मना किया था। इसलिए नहीं कि इसमें शक्ति के भेद थे। इसलिए कि इसमें उम्मीदों का बोझ बहुत था।

एक पन्ने पर Aser Davion नाम के एक दूर के पुरखे का वृत्तांत था।

जब निचली घाटी में ज्वर फैला, Aser घर-घर गया। उसने यह नहीं कहा कि मृत्यु नहीं आएगी। उसने इतना ही कहा कि उसे अकेले नहीं आना चाहिए। बहुतों का कहना था कि उसके स्पर्श से वे स्वस्थ हो गए। औरों का कहना था कि लोग बस कुछ अधिक शांति से मर सके। सच हम नहीं जानते। इतना ही जानते हैं कि तब से हमारे कुल में एक वाक्य बचा रहा। अकेले मत जाना।

Jesair ने पुरानी लिखावट पर उँगलियाँ फेरीं।

अकेले मत जाना।

कितना सीधा वाक्य था। किंवदंती बनने के लिए कुछ ज़्यादा ही सीधा।

उसने पोथी बंद कर दी।

उसी क्षण किसी अनजाने देश की एक विचित्र झलक ने उसे आ घेरा। वह किसी साधारण स्मृति या कल्पना से कहीं अधिक सच्ची लगी।

धूल।

दूसरे रंग का सूरज।

किनारे से लगा पानी।

मछुआरों के हाथ।

लकड़ी।

और एक स्त्री का स्वर, जिसने उसका नाम पुकारा। पर वह नाम Jesair नहीं था।

बुद्धि उसे छू भी न पाई थी कि वह दृश्य विलीन हो गया।

Jesair निश्चल बैठा रहा।

फिर वह हँस दिया। धीरे से, अपने ही ऊपर।

“पुराने घर,” उसने सूनेपन से कहा। “आदमी के मन में दूसरों की परछाइयाँ डालना इन्हें ख़ूब आता है।”

पर उठकर बत्ती बुझाते समय उसने एक बार फिर पोथी को देखा।

और उस वाक्य को, जो अँधेरे में भी उसके भीतर चमक रहा था।

8. पृथ्वी: विभाजन का दिन

साँझ धीरे-धीरे धरती पर उतर रही थी, जैसे स्वयं प्रकाश को भी झील के ऊपर उठी पहाड़ियों से विदा लेने में संकोच हो। शिष्य यीशु को घेरे चुप बैठे थे। यह लंबी यात्रा के बाद का साधारण मौन नहीं था। इसमें कुछ भारी था, मानो हर शिष्य को आभास हो कि आज उन्होंने जो वचन सुने, वे अकेले उनके नहीं, उन सब लोगों के भी हैं जो उनके बाद आएँगे।

यीशु दूर देख रहे थे। उनके मुख पर शांति थी, पर वह सहज शांति नहीं थी। यह उस मनुष्य की शांति नहीं थी जो पीड़ा को जानता ही न हो, बल्कि उसकी थी जिसने पीड़ा को उसके आने से पहले ही स्वीकार लिया हो।

“एक दिन आएगा,” अंत में वे बोले, “जब जो कुछ छिपा था, प्रकट हो जाएगा। मनुष्य अपने भाई से अपनी मंशा छिपा सकता है, शब्दों से अपना अपराध ढक सकता है, भीड़ के सामने धर्मी होने का स्वाँग भर सकता है। पर परमेश्वर के सामने कुछ भी छिपा न रहेगा। उस दिन मनुष्य का हृदय ऐसे खुल जाएगा जैसे प्रकाश के सामने कोई पात्र रख दिया जाए।”

शिष्य मौन रहे।

“मनुष्य का पुत्र अपने पिता की महिमा में आएगा,” यीशु ने आगे कहा, “और उसके साथ स्वर्गदूत होंगे। सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठी होंगी। वहाँ यह नहीं देखा जाएगा कि किसने अपने को क्या कहा, या कितने ऊँचे स्वर में प्रभु का नाम लिया। देखा जाएगा कि वह अपने भीतर क्या लिए था और उसने क्या किया। क्योंकि उनके बीच कोई भूखा था, और कुछ ने उसे खिलाया। कोई प्यासा था, और कुछ ने उसे पानी दिया। एक परदेसी उनके द्वार पर खड़ा था, और कुछ ने उसे घर में लिया। उनकी आँखों के सामने कोई नंगा था, और कुछ ने उसे कपड़े पहनाए। उनके सामने कोई बीमार था, कोई बंदी था, और कुछ उनसे मिलने आए।”

पतरस ने सिर उठाया। “प्रभु, आप ऐसे कहते हैं मानो जहाँ भी किसी दुर्बल से भेंट हो, वहीं मनुष्य परमेश्वर से मिलता है।”

यीशु ने उसकी ओर देखा। “और उसे कहाँ ढूँढ़ना चाहते हो? मंदिर में, जहाँ हर कोई तुम्हारी भक्ति देख सकता है? उस भेंट में, जिसे तुम याजकों के देखते चढ़ाते हो? मैं तुमसे कहता हूँ, जो दुखी मनुष्य के लिए अपना हृदय बंद करता है, वह मेरे लिए उसे बंद करता है। जो सबसे छोटे के पास झुकता है, उसका वह कर्म प्रार्थना की तरह पिता तक उठता है।”

यूहन्ना की आँखों में बेचैनी थी। वह युवा था, पर उसमें बचपने का छिछलापन नहीं था। यीशु के वचन अक्सर उसके भीतर आग जगा देते थे, लेकिन आज उनकी आँच कुछ और थी। आशा जैसी नहीं। एक ऐसे प्रश्न जैसी, जिसे स्वर देने से वह डरता था।

यीशु कहते गए,

"तब कुछ दाहिनी ओर खड़े किए जाएँगे और कुछ बाईं ओर। जिन्होंने दया से प्रेम किया, चाहे वे उसका नाम तक नहीं जानते थे, वे जीवन में बुलाए जाएँगे। पर जिन्होंने पीड़ा देखी और अपनी आँखें मूँद लीं, जिन्होंने रोना सुना और अपने कान बंद कर लिए, जिनके पास बल था और जिन्होंने उससे निर्बलों को नीचा दिखाया, वे उस अँधेरे में चले जाएँगे जिसे उन्होंने स्वयं चुना।"

वे शब्द उनके बीच ऐसे गिरे जैसे किसी गहरे कुएँ में पत्थर गिरता है।

अन्द्रियास ने चेहरे पर हाथ फेरा। थोमा की भौंहों पर बल पड़े, मानो वह मन ही मन कोई ऐसी जगह ढूँढ़ रहा हो जहाँ से यीशु को पुकारकर पूछ सके और ईशनिंदा भी न हो।

आख़िर उसी ने मौन तोड़ा।

"रब्बी," वह धीरे से बोला, "क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?"

"पूछो, थोमा।"

"आप जीवन और अँधेरे की बात करते हैं। प्रतिफल और दंड की। ऐसी आग की, जो कभी नहीं बुझती। लेकिन मनुष्य दुर्बल है। कभी वह अज्ञान से कुछ करता है, कभी डर से, कभी इसलिए कि उसे भी किसी ने चोट पहुँचाई है। यदि उसका जीवन छोटा है और उसका दोष मनुष्य का दोष है, तो क्या मनुष्य की भूलों के लिए अनंत यातना बहुत बड़ा दंड नहीं है?"

कुछ शिष्य बेचैन होकर हिले। पतरस ने थोमा की ओर तेज़ी से देखा, मानो उसे चुप कराना चाहता हो, पर यीशु ने हाथ उठा दिया।

"इसे कहने दो," उन्होंने शांति से कहा। "जो प्रश्न होंठों तक आने से डरता है, वह हृदय में मवाद बनकर रह जाता है।"

थोमा ने नज़र झुका ली। "प्रभु, मैं परमेश्वर का विरोध नहीं करना चाहता। पर मुझे डर लगता है। यदि न्याय का कोई अंत नहीं, तो दया के लिए कहाँ जगह है?"

यीशु देर तक मौन रहे।

घास के ऊपर से हवा गुज़री। एक क्षण के लिए बस पत्तों की सरसराहट और खेतों से लौटते लोगों की दूर की आवाज़ें सुनाई दीं। यीशु बोले तो उनका स्वर पहले से धीमा था।

"दया सत्य को मिटा देना नहीं है, थोमा। और सत्य दया का शत्रु नहीं है। कोई पिता देखे कि उसका बेटा आग हाथ में ले रहा है, तो क्या वह उससे कहेगा, जो जी चाहे करो, क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ? या उसका हाथ बचाने के लिए कड़े स्वर में उसे पुकारेगा?"

"कड़े स्वर में पुकारेगा," थोमा ने कहा।

"और अगर बच्चा पिता की आवाज़ से डरकर रोने लगे?"

"पिता उसे गोद में उठा लेगा।"

"हाँ," यीशु ने कहा। "पर तब, जब वह आग छोड़ देगा।"

थोमा चुप रहा।

यीशु बाक़ी लोगों की ओर भी मुड़े।

"मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं तुम्हारे बीच केवल उन्हें ढाढ़स देने नहीं आया जो पहले से परमेश्वर को खोज रहे हैं। मैं आने वाले युगों की नींव में एक पत्थर रखने आया हूँ। मेरे वचन ऐसे लोग लेकर चलेंगे जिन्होंने मुझे कभी नहीं देखा। वे अपने बच्चों के बच्चों को मेरे वचन सुनाएँगे। उन्हें लिखेंगे, उनका अर्थ खोलेंगे, उनसे बलवानों का गर्व और निर्बलों का भय तोड़ेंगे। इसलिए मेरे वचनों को अडिग रहना होगा।"

फिर उन्होंने थोमा की आँखों में देखा।

"जो व्यवस्था बुराई के प्रति नरम पड़ती है, वह पीड़ितों के लिए कठोर हो जाती है। यदि तुम हत्यारे को कहो कि उसका काम बस एक भूल थी, तो मारे गए की माँ से क्या कहोगे? यदि तुम उस धनवान से कहो, जिसने अपने द्वार पर भूखे को मर जाने दिया, कि उसका दोष छोटा है, तो उस भूखे से क्या कहोगे? यदि तुम किसी सत्ताधारी से कहो कि उसकी निर्दयता आसानी से भुला दी जाएगी, तो उनसे क्या कहोगे जिनका लहू उसके नीचे बहा?"

यूहन्ना ने साँस रोक ली।

"मनुष्यों को यह सुनना चाहिए कि उनके कर्मों का भार होता है," यीशु ने आगे कहा। "केवल आज नहीं। केवल नगर के न्यायी के सामने नहीं। केवल पड़ोसियों की आँखों में नहीं। अनंत काल के सामने भी। क्योंकि बहुतों के पाँव किसी निर्बल का रोना सुनकर भी नहीं रुकते। वे लज्जा से नहीं रुकते। अपने विवेक से भी नहीं, उसे वे चुप करा देते हैं। पर शायद वे यह जानकर रुक जाएँ कि कुछ भी भुलाया नहीं जाएगा।"

थोमा ने आँखें उठाईं। “तो क्या भय उन्हें भलाई तक ले जाएगा?”

“जो अभी प्रेम करना नहीं जानते, उनके लिए भय एक शुरुआत है,” यीशु ने कहा। “लेकिन वही अंत नहीं होना चाहिए। बच्चे को पहले खाई में गिरने से डर लगता है, इसलिए वह किनारे से दूर रहता है। बाद में वह समझता है कि जीवन बहुमूल्य है, और फिर उसे केवल भय का सहारा नहीं चाहिए। व्यवस्था के साथ भी ऐसा ही है।”

पतरस ने सोचते हुए पूछा, “प्रभु, तब कौन खरा उतरेगा? धर्मी से भी तो चूक होती है।”

यीशु की दृष्टि कोमल हो गई।

“जो गिरकर उठ खड़ा होता है, वह उस जैसा नहीं जो अपनी गिरावट में ही घर बना लेता है। जो पाप करता है और उस पर रोता है, वह उस जैसा नहीं जो पाप करता है और दूसरों को अँधेरे का नाम उजाला रखना सिखाता है। पिता दुर्बलता और हठ में भेद देखता है। घाव और अहंकार में। उसमें जो भटक गया है और सहायता पुकार रहा है, और उसमें भी जो भटक गया है और दूसरों को भी अपने पीछे खींच ले जाता है।”

“पर आप अनंत यातना की बात करते हैं,” थोमा ने आग्रह किया। “यह शब्द भारी है।”

“भारी है,” यीशु ने सिर हिलाया। “और उसे भारी होना ही चाहिए। क्योंकि बुराई भी भारी है। यदि तुम वे सारे आँसू देख लो जो एक मनुष्य के कारण दूसरे को बहाने पड़ते हैं, तो न्याय के बारे में हलके शब्दों में उपदेश न दोगे।”

एक क्षण के लिए उनकी आवाज़ काँपी। दुर्बलता से नहीं, गहरे शोक से।

“मैं आने वाली पीढ़ियों को देखता हूँ। उन राजाओं को देखता हूँ जो व्यवस्था के नाम पर हत्या करेंगे। उन याजकों को देखता हूँ जिन्हें परमेश्वर से अधिक अपनी सत्ता प्यारी होगी। उन धनवानों को देखता हूँ जो ग़रीबों की पीठ पर घर खड़े करेंगे। ऐसे लोगों को देखता हूँ जो जानेंगे कि दूसरे को कष्ट है, फिर भी कहेंगे, इससे मेरा क्या लेना-देना। इसलिए मुझे ऐसे बोलना होगा कि मेरे वचन सजावट बनकर न रह जाएँ। उन्हें विवेक के सामने रखी तलवार जैसा होना होगा।”

फिर यीशु ने कहा,

“पर यह भी मत भूलना। मैं भटके हुओं को खोजने इसलिए नहीं आया कि उनके नाश पर प्रसन्न होऊँ। मैं धर्मियों को नहीं, पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने आया हूँ। जब तक मनुष्य साँस लेता है, उसके सामने द्वार है। जब तक उसके हृदय में हलचल हो सकती है, पिता उसे पुकारता है। लेकिन जो सदा के लिए

प्रकाश को ठुकराता है, वह अँधेरा चुनता है। और जिस अँधेरे से मनुष्य को सत्य से भी अधिक प्रेम हो जाता है, वही अंततः उसका निवास बन जाता है।"

थोमा ने अपने हाथ घुटनों पर रख लिए। "तो अंतिम न्याय केवल बाहर से दिया गया दंड नहीं है?"

"नहीं," यीशु ने कहा। "न्याय उस रूप का प्रकट होना भी है जो मनुष्य ने पा लिया है। जिसने सारी उम्र प्रेम करना सीखा है, वह परमेश्वर में अपना घर पाएगा। जिसने सारी उम्र प्रकाश से घृणा करना सीखा है, उसे उसमें दाह अनुभव होगा। वही धूप फूल को खोलती है और उखड़ी हुई जड़ को सुखा देती है।"

इन वचनों ने शिष्यों को आग की चेतावनी से भी अधिक निःशब्द कर दिया।

यीशु उठे। अँधेरा गहरा गया था और धरती के ऊपर पहले तारे निकल आए थे।

"इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, जागते रहो। इसलिए नहीं कि चिंता में जियो, इसलिए कि भलाई के प्रति सो न जाओ। जब तक हाथ हैं, रोटी बाँटो। जब तक समय है, क्षमा करो। जब तक पिता की आवाज़ सुनाई देती है, उसके पास लौट आओ। क्योंकि वह दिन आएगा जब मनुष्य यह नहीं पूछेगा कि लोगों ने मेरे बारे में क्या सोचा। वह पूछेगा कि मेरे हृदय का क्या हुआ।"

फिर वे थोमा की ओर मुड़े। उनका स्वर फिर धीमा था।

"और तुम पूछने से मत डरना। जो सत्य के लिए प्रश्न करता है, वह राज्य के उससे अधिक निकट है जो केवल डर के मारे चुप रहता है।"

थोमा ने सिर हिलाया, पर उसकी आँखों में एक छाया रह गई। अविश्वास की नहीं। उस मनुष्य की छाया जिसने समझ लिया था कि परमेश्वर का न्याय उसकी इच्छा से कहीं विशाल है, और परमेश्वर की दया इतनी गहरी कि इतनी आशा करने का भी उसमें साहस न था।

उस रात उनमें से किसी को जल्दी नींद नहीं आई।

हर कोई उस दिन के बारे में सोचता रहा जब मनुष्य का हृदय खुल जाएगा।

और हर कोई चुपचाप अपने भीतर टटोलता रहा कि उसमें उजाला अधिक है या अँधेरा।

अध्याय पर लेखक की टिप्पणियाँ:

यह अध्याय पूरी तरह काल्पनिक है। अनंत दंड पाने वालों और अनंत जीवन पाने वालों को जिस तरह दो सर्वथा अलग खानों में बाँटकर देखा जाता है, उसी दृष्टि की प्रतिक्रिया में यह अध्याय लिखा गया।

9. Elarion: परत

Nerai Sael तब काम शुरू कर देती थी जब Nitra अभी सो रहा होता।

इसलिए नहीं कि सुबह उसके विचार अधिक स्पष्ट होते थे। समय से उसे कोई सरोकार न था। देशों के बीच धन का आना-जाना इससे नहीं रुकता था कि Elarion का सूर्य आकाश में कहाँ है। स्वचालित प्रणालियाँ न थकती थीं, न त्योहार मनाती थीं, न उन्हें बैंकों के बंद होने का समय मालूम था।
वह जल्दी आती थी क्योंकि तब गलियारे ख़ाली होते थे।

चुप्पी में यह पहचानना आसान था कि कौन-सा सवाल ज़रूरी है, और कौन-सा महज़ तुरंत जवाब माँगता है।

वित्तीय सत्यनिष्ठा और प्रणालीगत जोखिमों का अंतरराज्यीय प्राधिकरण Nitra के ऐतिहासिक केंद्र में नहीं था। उसकी इमारत नदी के उत्तरी तट पर, मौद्रिक परिषदों के मुख्यालयों, संघ के संगणना केंद्रों और राजनयिक उद्यानों के बीच बनी थी। नीची, चौड़ी, बाहर से देखने पर लगभग खिड़कीविहीन। वास्तुकारों का कहना था कि इसमें वे शांति और निष्पक्षता को आकार देना चाहते थे।
जिन्हें प्राधिकरण से डर लगता था, उन्हें उसमें एक क़िला दिखाई देता था।

Elarion के अधिकतर लोग प्राधिकरण को एक छोटे नाम से जानते थे।

परत।

यह नाम विश्लेषकों के बीच जन्मा था। हर बैंक, बीमा कंपनी, कर विभाग या वाणिज्यिक विनिमय केंद्र को वित्तीय जीवन की अपनी ही परत दिखती थी। बैंक खाते को जानता था, पर ज़रूरी नहीं कि उसे खाताधारक कंपनी के असली मालिक का भी पता हो। कर विभाग के पास विवरणी होती थी, पर वह उस धन को नहीं देख पाता था जो सीमा पार चला गया था। पंजी में कंपनी का संचालक दर्ज था, उस कोष के पीछे छिपा व्यक्ति नहीं, जिसके हाथ में कंपनी की बागडोर थी।
पैसा सीमा पार करता तो दूसरे अधिकार क्षेत्र में पहुँच जाता।

कभी उसके पीछे एक रिपोर्ट रह जाती।

कभी बस उसका सार।

कभी कुछ भी नहीं।

परत का काम इन अधूरी परतों को एक-दूसरे पर रखकर वे जगहें खोजना था जहाँ उनके किनारे मेल खाना छोड़ देते थे।

Nerai पुलिस अधिकारी नहीं थी।

वह किसी को गिरफ़्तार नहीं कर सकती थी, न समन भेज सकती थी, न अभियोग लगा सकती थी। अपनी मर्ज़ी से किसी बैंक में जाकर उसके खाते नहीं खँगाल सकती थी। केवल अपनी जिज्ञासा के कारण किसी कर-शरण देश से किसी मालिक का नाम नहीं माँग सकती थी। जब उसे कोई गंभीर सिलसिला दिखता, तो वह उसका विश्लेषण लिखकर उन अधिकारियों को सौंप देती जिनके पास अदालत या दूसरे देश से और ब्योरे माँगने का अधिकार था।

अक्सर वह महीनों इंतज़ार करती थी।

कभी जवाब आता कि माँगी गई जानकारी मौजूद ही नहीं है।

कभी जानकारी होती, लेकिन स्थानीय क़ानून उसे सौंपने की अनुमति नहीं देता।

और कभी-कभी कोई देश जवाब ही नहीं देता।

इसीलिए परत को Elarion का सारा धन दिखाई नहीं देता था। उसे मुख्यतः वही दिखता था जिसे दर्ज कराना किसी के लिए अनिवार्य था, जो सार्वजनिक था या जिसे किसी ख़ास जाँच में हासिल किया जा सका था।

बैंक उसे असामान्य लेन-देन की सूचनाएँ भेजते थे। सारे ग्राहकों का पूरा लेखा नहीं। केवल वे मामले जिनमें उनकी अपनी प्रणालियों या कर्मचारियों को पैसे के स्रोत पर संदेह होता, उसकी आवाजाही विचित्र दिखती या उसका नाता पहले से ज्ञात किसी जोखिम से होता।

कर विभाग समेकित आँकड़े देते थे।

वाणिज्यिक पंजियाँ काग़ज़ी मालिकों के नाम।

राजनीतिक दल अपने चंदे और ख़र्च के अनिवार्य विवरण।

हर स्रोत यथार्थ का एक अलग हिस्सा दिखाता था।

और हर एक की पहुँच से कुछ ओझल रह जाता था।

Nerai ऐसी जानकारियाँ जोड़ती थी जिनका पहली नज़र में कोई रिश्ता न दिखे। किसी बैंक की सूचना। किसी कंपनी का मालिक बदलना। विदेश से लिया गया ऋण। किसी न्यास को दान। परामर्श

सेवाओं के लिए भुगतान। किसी क्षेत्र के पुनर्निर्माण के लिए अनुदान। कोई ऐसी बीमा पॉलिसी जिसमें लाभार्थी और मालिक के नाम अलग हों।

भुगतान की टिप्पणी में भ्रष्टाचार शायद ही कभी अपना परिचय देता था।

और राजनीतिक सत्ता के लिए जुटाया गया धन अक्सर परामर्श, शिक्षा, क्षेत्रीय विकास या जनमत सर्वेक्षण जैसे शब्दों के पीछे छिपा रहता था।

Nerai उन लोगों को नहीं ढूँढ़ रही थी जिन्होंने कोई महँगी चीज़ ख़रीदी थी।

वह सत्ता को ढूँढ़ रही थी।

वह अपनी मेज़ पर बैठी और उसकी फीकी चमक वाली सतह पर हथेली रखी। प्रणाली ने उसकी पहचान की पुष्टि की। उसके सामने हवा में रात भर आई नई सूचनाओं की सूची उभर आई।

यह सारे धन का नक़्शा नहीं था।

यह संदेहों का नक़्शा था।

कुछ सूचनाओं में ठीक-ठीक ब्योरे थे। कुछ में बस लेन-देन का मोटा विवरण और बैंक के उसे चिह्नित करने का कारण था। सीमापार लेन-देन में कुछ ब्योरे पहचान छिपाकर रखे जाते थे, जब तक उन्हें उजागर करने का कोई क़ानूनी आधार न बन जाए।

Nerai ने पहला मामला खोला।

दो निर्माण कंपनियों के बीच असाधारण रूप से बड़ी रकम का अंतरण। स्पष्टीकरण लगा था। मशीनों की बिक्री हुई थी। दस्तावेज़ विश्वसनीय लगते थे।

दूसरा मामला एक न्यास का था जिसे चुनावों से कुछ ही समय पहले बड़ा दान मिला था। लेकिन भुगतान सार्वजनिक रूप से घोषित था और दाता की पहचान मालूम थी।

तीसरे में इस बात का उल्लेख नहीं था कि भुगतान पाने वाली संस्था का अंतिम स्वामी कौन था।

Nerai ने उस पर ब्योरा माँगने का निशान लगाया।

सत्रहवीं सूचना पर वह रुक गई।

वह बंदरगाह नगर Sarur के एक बैंक से आई थी। बैंक ने एक स्थानीय कंपनी की ओर से की गई सिलसिलेवार नक़द जमाओं की ओर ध्यान दिलाया था। Elarion पर ऐसी डिजिटल धारक इकाइयों को भी नक़दी कहते थे जिन्हें बिना स्थायी नेटवर्क संपर्क के एक हाथ से दूसरे हाथ में दिया जा सकता था। जमा के

समय बैंक उनकी प्रामाणिकता जाँचता था, उनके पिछले सभी धारकों की पहचान नहीं। अलग से देखें तो जमा राशियों में कुछ असाधारण नहीं था। कारोबार ही ऐसा था कि इतनी बिक्री आम बात थी।
कंपनी एक रेस्तराँ चलाती थी।

ऐसा नहीं था कि बैंक ग्राहकों की वास्तविक संख्या जानता था और इसलिए उसे शक हुआ। बात यह थी कि कुछ महीनों में जमा रकम काफ़ी बढ़ गई थी और कंपनी की बुनियादी स्थिति ज्यों की त्यों थी। वही परिसर। बैंक में दर्ज उतने ही खाते। कारोबार बढ़ाने के लिए कोई ऋण नहीं। न कारोबार बिकने की सूचना, न कामकाज में बदलाव की।
हो सकता था कारोबार चल निकला हो।

कोई नया बावर्ची आया हो।

अच्छी समीक्षाएँ मिली हों।

किसी दूसरे प्रतिष्ठान को सामान पहुँचाने का अनुबंध हुआ हो जिसकी बैंक को ख़बर न हो।

इसलिए यह सूचना कोई आरोप नहीं थी। बस इतनी बात थी कि ग्राहक के व्यवहार में आए बदलाव का कोई संतोषजनक कारण बैंक को नहीं मिल रहा था।
Nerai ने कंपनी का सार्वजनिक पंजीकरण खोला।

दर्ज मालिक एक स्थानीय उद्यमी था। उससे दो पायदान ऊपर एक क्षेत्रीय कोष था। उसके ऊपर एक कंपनी थी जो दक्षिणी द्वीपसमूह के छोटे देशों में से एक, Therinith, में पंजीकृत थी।
Therinith की पंजी अंतिम स्वामियों के नाम उजागर नहीं करती थी।

उसमें कुछ भी ग़ैरक़ानूनी नहीं था।

Therinith की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा वित्तीय गोपनीयता की नींव पर ही खड़ा था।

Nerai ने प्रतिष्ठान का नाम देखा।

Vesta Sarur सात।

वह इस ब्रांड को जानती थी। ग्रह के बड़े हिस्से में Vesta के रेस्तराँ, छोटी दुकानें, सराय और मरम्मत की कार्यशालाएँ थीं। कुछ सीधे केंद्रीय कंपनी की थीं, कुछ स्थानीय लाइसेंसधारकों की। देश के साथ-साथ उनके स्वामित्व की संरचना भी बदलती थी।
एक रेस्तराँ में असामान्य जमा का अर्थ पूरे जाल के लिए कुछ भी नहीं था।

Nerai ने विश्लेषण प्रणाली का रात का सार खोला और Vesta के नाम से जुड़ी पुरानी सूचनाएँ माँगीं।

प्रणाली ने सैकड़ों प्रविष्टियाँ खोज निकालीं। अधिकांश रोज़मर्रा की थीं। आपूर्तिकर्ताओं से विवाद, अंतरण के प्रपत्रों में ग़लतियाँ, प्राधिकरण टोकन की चोरियाँ, कर निरीक्षण, बक़ाया ऋण।

इनमें उसने एक दोहराव चिह्नित किया था जिसकी अहमियत उसकी नज़र में कम थी। प्रतिष्ठानों से जमा रकम, उसके बाद विदेशों में अंतरण और अंतिम स्वामी की अस्पष्ट पहचान। पर प्रणाली को न गल्लों में झाँकने की पहुँच थी, न सरहदों के पार संरक्षित खातों में। मामलों के स्वचालित क्रम में यह दोहराव तात्कालिक चेतावनियों से बहुत नीचे पड़ा था।

चौदह मामले बचे।

छह देशों से।

चार साल के अंतराल में बिखरे हुए।

एक-एक करके देखें तो स्थानीय अधिकारियों ने उन्हें बंद कर दिया था या उन पर आगे कोई कार्रवाई नहीं की थी। एक मामले में प्रतिष्ठान की सफ़ाई थी कि उसे नए ग्राहक मिले थे। दूसरे में बैंक ने जोखिम को नाकाफ़ी माना। तीसरा उस देश की सीमा पर रुक गया जिसने धन पाने वाली कंपनी के बारे में बताने से इनकार कर दिया था।

पर सभी पर Vesta का नाम था।

मॉडल के लिए यह कमज़ोर समानताओं का एक झुंड था। Nerai चौदह इत्तफ़ाक़ों और चौदह ऐसे दफ़्तरों का फ़र्क़ जानती थी जिनमें हर एक को केवल अपनी बंद फ़ाइल दिखती थी। उसने मूल सूचनाएँ खोलीं और उनके कारण पढ़ने लगी।

Nerai आगे झुकी।

उसे समूचे कारोबार की बिक्री नहीं दिखती थी। न गल्ले दिखते थे, न आने-जाने वालों की संख्या। भीतरी बहीखातों तक उसकी पहुँच नहीं थी, उन प्रणालियों की तो बात ही क्या जो उसे बतातीं कि किसने किस प्रतिष्ठान से क्या ख़रीदा।

उसे बस इतना दिख रहा था कि अलग-अलग देशों में कई बैंकों ने, एक-दूसरे से स्वतंत्र, एक जैसे व्यवहार की ओर ध्यान दिलाया था।

नक़दी स्थानीय प्रतिष्ठान में आती थी।

उसे सामान्य आय के रूप में दर्ज किया जाता था।

थोड़े ही समय में कुछ धन ऐसी कंपनियों को चला जाता जिनकी सेवाओं के नाम गोलमोल थे।

परामर्श।

ब्रांड प्रबंधन।

क्षेत्रीय प्रचार।

लाइसेंस शुल्क।

वहाँ से आगे, दूसरे देशों के बीच, निशान बिखर जाते थे।

“सुप्रभात।”

उसके पीछे Taren Voss की आवाज़ थी।

Nerai मुड़ी नहीं।

“प्रभात कितना शुभ है, अभी पता चलेगा।”

Taren उसकी मेज़ के पास आया। वह लंबा, छरहरा था। उसकी चाल में उस व्यक्ति की निश्चिंतता थी जिसे कभी यह जताने की ज़रूरत नहीं पड़ती कि स्थिति उसके वश में है। परत में वह Nerai से पुराना था और Vasýria की बैंकिंग व्यवस्था को ऐसी तरह से जानता था जो केवल क़ानून पढ़ने से नहीं आती।
वह वेयरानी था।

कुछ सहकर्मी इसे वेयरानी बैंकिंग घरानों की जाँच में एक बढ़त मानते थे। कुछ इसे जोखिम समझते थे। Nerai को दोनों धारणाएँ एक-सी कच्ची लगती थीं।

“क्या मिला?” उसने पूछा।

“चार साल की चौदह सूचनाएँ।”

“सुनकर लगता है किसी बहुत लंबी बैठक की शुरुआत है।”

“छह देश। अलग-अलग बैंक। काग़ज़ पर अलग-अलग मालिक।”

Taren ने आँकड़े देखे।

“और एक ही क्या है?”

“Vesta।”

वह पल भर को मुसकराया।

“मैंने उनके यहाँ खाना खाया है।”

“इस जानकारी से कुछ हासिल नहीं होगा।”

“इतनी गवाही दे सकता हूँ कि उनकी कमाई का राज़ उनका खाना नहीं है।”

Nerai ने पहली सूचना उसकी ओर सरकाई।

“जमा बढ़ती जाती है। फिर कुछ रकम परामर्श और लाइसेंस सेवाओं की एवज़ में निकल जाती है। पाने वाली कंपनियों के असली मालिकों की पहचान गोपनीय है।”

“हो सकता है इसमें कुछ भी न हो।”

“हो सकता है।”

“हो सकता है सारे प्रतिष्ठान एक ही कारोबारी ढंग से चलते हों।”

“हाँ।”

“या मुनाफ़ा इधर से उधर करने का तरीक़ा एक ही हो।”

“वह भी।”

Taren ने समय-क्रम वाली परत खोली और भुगतानों की तारीख़ें मिलाईं। कुछ प्रतिष्ठान उन्हीं बिचौलियों को पैसा भेज रहे थे। कुछ की कंपनियाँ अलग थीं, पर उनका लेखापरीक्षक या प्रशासक एक ही था।

“दिलचस्प है,” उसने कहा।

“क्या?”

“ये कंपनियाँ जताती हैं कि आपस में कोई संबंध नहीं है। पर इनके दस्तावेज़ एक ही दफ़्तर ने तैयार किए हैं।”

“कोई एक फ़र्म कई ग्राहकों का काम करती होगी।”

“हो सकता है।”

दोनों कुछ देर चुप रहे।

परत में अधिकतर मामले ऐसे ही शुरू होते थे। किसी यक़ीन के साथ नहीं, संभावनाओं की एक कतार के साथ, जिनमें से हर एक की कोई निर्दोष सफ़ाई होती थी।

तब तक, जब तक कि वे हद से ज़्यादा न हो जाएँ।

“कम से कम एक प्रतिष्ठान की अपनी बहियाँ चाहिए,” Taren ने कहा।

“उनके लिए हमारे पास कोई क़ानूनी आधार नहीं है।”

“बैंक की सूचना है।”

“बैंक का संदेह है। किसी अपराध का प्रमाण नहीं।”

“हम Sarur को कर निरीक्षण के लिए कह सकते हैं।”

“हम उनसे कह सकते हैं कि वे कर निरीक्षण पर विचार करें।”

Taren मेज़ से टिक गया।

“और छह महीने बाद वे हमें लिखेंगे कि सब कुछ स्थानीय नियमों के मुताबिक़ था।”

“शायद।”

“Therinith हमें मालिक का नाम नहीं देगा।”

“अदालत के आदेश के बिना नहीं देगा। और जब तक शक और पुख़्ता न हो, हमें अदालत का आदेश नहीं मिलेगा।”

Taren ने सामने की कड़ियों को देखा।

“मतलब हमें यह साबित करने के लिए ब्योरे चाहिए कि हमें ब्योरे चाहिए।”

“अंतरराज्यीय सहयोग की बुनियाद यही है।”

उसने आपस में जुड़ी कंपनियों की सूची को बड़ा किया। स्वामित्व की अधिकांश कड़ियों के अंत में किसी प्रशासक, किसी वकील के दफ़्तर या किसी कोष का नाम था।
कहीं कोई इंसान नहीं था।

Nerai यह नहीं कह सकती थी कि Vesta काले धन को सफ़ेद करता था। उसे तो यह भी पता नहीं था कि ये असामान्य जमाएँ सचमुच की कमाई थीं, कर में धोखाधड़ी थीं या केवल ऐसे कारोबारी ढंग का नतीजा थीं जिसे बैंक नहीं समझते थे।
उसके हाथ में बस एक प्रश्न था जो बार-बार लौटता था।

और एक व्यवस्था थी जिसमें वह उत्तर तक पहुँच ही नहीं सकती थी, जब तक उसे वह पहले से मालूम न हो।

“प्रारंभिक जाँच की फ़ाइल खोलो,” उसने कहा। “अभी कोई आरोप नहीं, न कार्रवाई का अनुरोध।”

“आधार क्या लिखूँ?”

“पैसे का स्रोत छिपाने के लिए नक़दी का कारोबार करने वाले प्रतिष्ठानों के संगठित इस्तेमाल की संभावना।”

“यह तो क़रीब-क़रीब कोई राय लगती है।”

“तो लिखो, बार-बार सामने आने वाली अंतरराज्यीय वित्तीय विसंगतियों की पड़ताल।”

Taren मुसकराया।

“सुनकर कुछ भी समझ नहीं आता।”

“इसीलिए मंज़ूर हो जाएगा।”

वह अनुरोधों की सूची बनाने लगा। न ग्राहकों का ब्योरा माँगना था, न पूरी शृंखला के गल्लों का लेखा। ऐसा अधिकार परत के पास नहीं था। वे पहले हो चुके कर निरीक्षणों के नतीजे माँग सकते थे, सार्वजनिक वित्तीय विवरण, लेखापरीक्षकों के नाम, लाइसेंस अनुबंध, स्वामित्व में हुए परिवर्तन और वे जानकारियाँ जिन्हें बैंकों ने ख़ुद असामान्य माना था।

हर अगली परत के लिए एक नया कारण चाहिए था।

हर कारण पिछली परत से निकलना ज़रूरी था।

पल भर को Nerai को अपने सामने की सतह के अँधेरे हिस्से में अपना प्रतिबिंब दिखाई दिया।

उसकी आँखों में स्वर्ण वलय नहीं था।

उसकी माँ ऑरेलियाई थी। लेकिन Nerai अपने पिता पर गई थी, जन्म से सेलेनी। बचपन में वह तरह-तरह की रोशनी में अपनी आँखें परखती रहती थी। रो चुकने पर, बुख़ार में, और उन पलों में भी जब वह पूरे मन से ध्यान लगाती।

देखती, क्या पता वह सुनहरी रेखा आख़िर उभर ही आए।

वह कभी नहीं उभरी।

उसके सौतेले भाई Jesair को वलय विरासत में मिला था। वह ऑरेलियाई भी था और Davion कुल की सबसे पुरानी ज्ञात शाखा का वंशज भी। इसीलिए लोग उसमें उन कथाओं की अगली कड़ी ढूँढ़ते थे जो उसके जन्म से सदियों पहले बनी थीं।

वह किसी को ढाढ़स देता तो लोग कहते, पुरखों का वरदान बोल रहा है।

उससे भूल होती तो कहते, उसने अपने ख़ून की लाज नहीं रखी।

Nerai पर ऐसा कोई बोझ नहीं था।

उसे किसी किंवदंती का अगला अध्याय नहीं बनना था।

वह बस अपने जैसी रह सकती थी।

फिर भी हमेशा कोई न कोई होता जो Jesair का नाम सुनते ही दुबारा उसकी आँखों में देखता। मानो उसे इसका कारण परखना हो कि भाई और बहन पर एक ही चिह्न क्यों नहीं था।

Jesair ने उसके साथ कभी ऐसा बर्ताव नहीं किया जैसे उसमें किसी चीज़ की कमी हो।

बचपन में उसने उससे कहा था कि स्वर्ण वलय बस एक ऐसी चीज़ है जिस पर लोगों की नज़र मनुष्य से पहले पड़ जाती है।

Nerai ने जवाब दिया था कि तब तो वह भाग्यवान है कि उसकी आँखों में कुछ नहीं चमकता।

तब से कभी-कभी उसे बहन से रश्क होता था।

Nerai ने अपने प्रतिबिंब से नज़र हटाकर फिर सामने काम पर ध्यान लगाया। तब तक Taren अनुरोधों का पहला दौर पूरा कर चुका था।

“Sarur ने सूचना स्वीकार कर ली,” उसने कहा। “निरीक्षण का कोई वचन नहीं दिया।”

“मेरी उम्मीद से तो ज़्यादा ही है।”

“Therinith ने मालिकों का ब्योरा देने से इनकार कर दिया है।”

“ठीक वही जिसकी मुझे उम्मीद थी।”

Taren ने द्वीप की पंजी का उत्तर खोला। लंबा था, विनम्र था, और इस तरह लिखा गया था कि पढ़ने वाले को लगे, जानकारी रोक लेना क़ानून के प्रति सम्मान का एक नमूना है।

प्राधिकरण के संदेह का आधार पर्याप्त रूप से विशिष्ट नहीं था।

ठीक किस अपराध का संदेह था, यह बताया नहीं गया था।

स्थानीय कंपनी और दूसरे देशों की वित्तीय विसंगतियों के बीच कोई संबंध प्रमाणित नहीं था।

अलग-अलग देखें तो हर वाक्य का बचाव किया जा सकता था।

साथ रख दें तो वे एक दीवार थे।

“उनका कहना है कि जब तक हम साझे नियंत्रण का प्रमाण न दें, हम अंतिम स्वामी का नाम नहीं माँग सकते,” Taren ने कहा।

“और अंतिम स्वामी का नाम जाने बिना हम साझा नियंत्रण साबित नहीं कर सकते।”

“शायद पंजी दफ़्तर के दरवाज़े पर यही लिखा हो।”

Nerai ने उत्तर को चिह्नित करके फ़ाइल से जोड़ दिया। इनकार का भी अपना मूल्य था। अपराध के सबूत के तौर पर नहीं, उन सीमाओं के नक़्शे के तौर पर जिनके पार जाँच की नज़र नहीं जाती थी।

उसने चौदह सूचनाओं को देखा।

वह नहीं जानती थी कि क्या वे सब एक ही तंत्र के हिस्से थे। हो सकता है उनके बीच ईमानदार प्रतिष्ठान भी हों, बैंकों के त्रुटिपूर्ण मॉडल भी, या फिर मामूली लेखा-भूलें। हो सकता है Vesta नाम के सिवा उनमें कोई समानता न हो।

लेकिन एक ही ढंग से शुरू होने वाले संयोग कुछ ज़्यादा ही थे।

नक़दी का कारोबार करने वाले किसी प्रतिष्ठान में पैसा प्रकट होता था।

उसे बिक्री की आय का नाम मिलता था।

फिर वह ऐसी किसी सेवा की ओर निकल जाता था जिसका मूल्य ठीक-ठीक मापा नहीं जा सकता था।

अंत में वह ऐसे देश पहुँचता था जहाँ अब किसी को पूछने की ज़रूरत नहीं थी कि वह किसका है।

“आगे क्या?” Taren ने पूछा।

“निरीक्षण के नतीजों की राह देखेंगे।”

“उसमें महीनों लग सकते हैं।”

“इस बीच लेखापरीक्षकों, प्रशासकों और परामर्श कंपनियों की पड़ताल करेंगे।”

“खातों तक पहुँच के बिना?”

“अभी सारे नाम तो राज़ नहीं हुए हैं।”

Taren ने उन कंपनियों की सूची खोली जिन्हें प्रतिष्ठानों से लाइसेंस और परामर्श के भुगतान जाते थे। पहली नज़र में उनमें कोई संबंध नहीं दिखा। अलग-अलग देशों में दफ़्तर, अलग-अलग भाषाओं में नाम, और हर एक के बताए हुए काम का क्षेत्र भी अलग।

Nerai ने उन्हें स्थापना की तारीख़ के क्रम में रखा।

फिर उनके क़ानूनी प्रतिनिधियों के अनुसार।

अंत में उन लोगों के अनुसार जिन्होंने उनकी स्थापना के दस्तावेज़ सत्यापित किए थे।

सामने पहली बार कुछ नाम दुबारा उभर आए।

अभी ये मालिक नहीं थे।

बस प्रशासक, वकील और आधिकारिक बिचौलिए।

ऐसे लोग जिनका काम संपत्ति और उसके असली स्वामी के बीच खड़ा होना था।

“तीन दफ़्तर,” Taren ने कहा।

“चौदह ऐसे मामलों में जिनका ऊपर से आपस में कोई वास्ता नहीं दिखता।”

“यह कम से कम कारोबार के साझा नाम से तो बेहतर है।”

“सबूत फिर भी नहीं है।”

“एक दिन कोई तुम्हारे सामने इक़बाल भी कर लेगा और तुम उस पर भी ख़ुश होने से इनकार कर दोगी।”

“इक़बाल भी झूठा हो सकता है।”

Taren ने सिर हिलाया और अगले अनुरोध भेज दिए।

इमारत की खिड़कियों के बाहर Nitra में धीरे-धीरे सुबह का उजाला भर रहा था। नदी के ऊपर यातायात की परतें घनी होने लगी थीं और सामने के तट पर सार्वजनिक मीनारों की बत्तियाँ जल रही थीं। नगर ने इस विश्वास से अपना दिन शुरू किया कि हर ज़रूरी चीज़ कहीं न कहीं दर्ज होती है, जाँची जाती है और सँभालकर रखी जाती है।

Nerai जानती थी कि यह सच नहीं है।

आँकड़े थे।

बस वे एक जगह नहीं थे।

हर संस्था के हाथ में अपना एक टुकड़ा था और वह अपने नियमों के हिसाब से उसकी रखवाली करती थी। बैंक पैसे की हलचल देखते थे, असली सौदा नहीं। कर विभाग विवरणियाँ देखते थे, धन की पूरी धारा नहीं। पंजियाँ कंपनियों को देखती थीं, उनके पीछे के लोगों को नहीं। जाँचकर्ता संदेह देखते थे, पर अक्सर उनके आपसी संबंध नहीं।

अपराध का अदृश्य होना ज़रूरी नहीं था।

उसका बँटा हुआ होना ही काफ़ी था।

Nerai ने एक नई कार्य-फ़ाइल बनाई। प्रणाली ने उससे नाम, क़ानूनी आधार और जोखिम का प्रारंभिक आकलन माँगा।

नाम के खाने में उसने एक ही शब्द लिखा।

Vesta।

जोखिम का आकलन करते हुए वह पल भर ठिठकी।

फिर उसने चुना,

अनिर्धारित। अंतरराज्यीय सिलसिले की संभावना।

सैकड़ों खुले मामलों के बीच फ़ाइल दर्ज हो गई। एक पल को वह चमकी, फिर प्रणाली में खो गई, जैसे उसमें कुछ ख़ास न हो।

शायद सचमुच कुछ ख़ास न हो।

शायद उसके पीछे कुछ ही प्रतिष्ठान हों जो असली मुनाफ़ा छिपाते या कम कर देने के लिए आय इधर से उधर करते हों।

लेकिन शायद Vesta वह जगह थी जहाँ अलग-अलग अपराधों से आए पैसों को अपने जन्म की एक ही कहानी मिलती थी।

Nerai अभी नहीं जानती थी।

उसके पास बस चौदह सूचनाएँ थीं, तीन विधि कार्यालय थे, और कुछ देश थे जो कड़ी का आख़िरी नाम उसे दिखाने से मना कर रहे थे।

पर बड़ी खोजों की शुरुआत में अमूमन कोई सबूत नहीं खड़ा होता।

वहाँ एक विसंगति होती है, जिसका अर्थ समझने से आसान है उसे अनदेखा कर देना।

Nerai ने बाक़ी मामले बंद कर दिए।

Vesta को उसने खुला छोड़ा।

10. पृथ्वी: शापित अंजीर का पेड़

सुबह जब वे बैतनिय्याह से निकले, हवा में अब भी ठंडक थी और राह पर धुंध की एक पतली तह ठहरी थी। सामने सुबह के उजाले में यरूशलेम उठ रहा था। उसकी दीवारें उस मनुष्य के चेहरे की तरह फीकी और कठोर थीं जो बरसों पहले रोना भूल गया हो।

शिष्य चुपचाप यीशु के पीछे चल रहे थे। पिछले दिन चिह्नों, प्रश्नों और बेचैनी से भरे थे। हर किसी को लग रहा था कि कुछ ऐसा निकट आ रहा है जिसे अब उनमें से कोई रोक नहीं पाएगा। नगर उन्हें खींचता भी था और दूर ठेलता भी। वह एक खुले फाटक जैसा था, जिसके पार आज़ादी नहीं, एक फ़ैसला उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

यीशु आगे चल रहे थे।

उस रात वे लगभग सोए ही नहीं थे। जब दूसरे विश्राम कर रहे थे, वे देर तक अकेले बैठे यरूशलेम की ओर देखते रहे थे। वे जानते थे कि जिस घड़ी की बात वे बार-बार करते आए थे, वह अब निकट नहीं आ रही थी। वह आ चुकी थी। वे उसी में चल रहे थे।

उनके क़दम अब भी दृढ़ थे, लेकिन शरीर थक चुका था। मुँह सूखा था और पेट का ख़ालीपन हर क़दम पर एक भोथी पीड़ा बनकर बोलता था। पिछले दिन से उन्होंने बहुत कम खाया था। पहले भूख उनके भीतर चुपचाप बैठी थी। अब उसकी पुकार इतनी प्रबल होती गई कि एक पल को सारी दुनिया सिमटकर खाने की एक सीधी-सी इच्छा रह गई।

रास्ते के किनारे अंजीर का एक पेड़ था।

उसकी छतरी फैली हुई थी, पत्ते खूब हरे थे। धूसर पत्थरों के बीच वह जीवन का एक द्वीप लगता था। डालियाँ राह के ऊपर झुकी थीं, और सुबह की रोशनी में वह पेड़ हृष्ट-पुष्ट, निरोग और उदार दिखता था।

यीशु उसके पास गए।

पतरस ने मुड़कर बाक़ियों की ओर देखा। यूहन्ना ने चाल धीमी की। थोमा कुछ क़दम पीछे ही खड़ा देखता रहा कि यीशु पत्तियाँ हटा रहे हैं।

वे फल ढूँढ़ रहे थे।

उनकी उँगलियाँ टहनियों के बीच घूम रही थीं। वे एक-एक डाली अलग करते, पत्तियाँ उठाते, उनकी ओट में देखते।

कुछ नहीं मिला।

सिर्फ़ पत्ते।

बस ऊपर से दिखता एक वादा।

बस भरपूरी का आभास। ऐसा कुछ नहीं जिससे किसी भूखे की भूख मिट सके।

यीशु ने पेड़ की छतरी में और भीतर हाथ डाला, मानो अब भी आशा हो कि शायद एक अगेता अंजीर ही मिल जाए। पर हाथ ख़ाली लौट आया।

कुछ शिष्यों ने एक-दूसरे की ओर देखा। वे जानते थे, अभी अंजीरों की ऋतु नहीं आई थी। पेड़ ने अपने स्वभाव के विरुद्ध कुछ नहीं किया था। हरा होने के दिनों में हरा था और उस ऋतु की प्रतीक्षा कर रहा था जिसमें उसे फल देना था।

पर भूख को ऋतुओं का धीरज नहीं मालूम।

भूख को पूरा पेड़ नहीं दिखता। उसे केवल वह फल दिखता है जो वहाँ नहीं है।

यीशु छतरी के नीचे खड़े रह गए। उनकी आँखों में दुख उतर आया, क्योंकि सामने उन्हें केवल अंजीर का पेड़ नहीं दिख रहा था। उन्हें वह नगर दिख रहा था जो अपने मंदिर, अपनी व्यवस्था और अपनी प्रार्थनाओं से जगमगाता था, पर मनुष्य की आत्मा का पेट नहीं भर सकता था। उन्हें उजले वस्त्र पहने याजक दिख रहे थे जो अशुद्ध समझे जाने वालों से मुँह फेर लेते थे। उन्हें वे पुरुष दिखे जिन्हें शास्त्र का एक-एक शब्द कंठस्थ था, पर अपने घर की दीवार के पार किसी विधवा का रोना सुनाई नहीं देता था।

उन्हें पत्ते दिखे, जिन पर फल नहीं था।

फिर भी उस दुख के नीचे एक पल के लिए कुछ और भी हिला, कुछ बहुत छोटा।

कुछ मानवीय।

थके हुए मनुष्य की झुँझलाहट। भूखी देह की कुढ़न। यह मौन रोष कि दुनिया एक बार फिर उनके सामने वादों से भरी खड़ी थी और उन्हें स्वयं कुछ भी नहीं दे रही थी।

वह बस एक पल था।

उनमें दया से पहले भूख बोल उठी और बुद्धि से पहले थकान। पल भर के लिए उन्हें पेड़ वैसा नहीं दिखा जैसा वह था। उन्हें उसमें वह सब दिखाई दिया जो जीवन का वचन तो देता था, पर ठीक उस घड़ी उन्हें राहत नहीं दे पाया जब उन्होंने उसकी इच्छा की थी।

उन्होंने एक पत्ते को छुआ।

फिर कहा,

“फिर कभी कोई तेरा फल न खाए।”

उन्होंने ऊँचे स्वर में नहीं कहा। उसमें ऐसा क्रोध नहीं था कि राह काँप उठे। उसमें थकान थी, एक फ़ैसला था, और संकल्प की एक तीखी चमक थी जो पल भर को उनकी अपनी भूख तक सिमट आई थी।
वचन का स्वर थमा तो यीशु निश्चल खड़े रहे।

उन्होंने डाल पर रखे अपने हाथ को देखा।

मानो कहे हुए वचन का भार उन्हें तभी अनुभव हुआ जब वह उनके होंठों से निकल चुका था।

फिर उन्होंने हाथ हटा लिया।

शिष्य चुप थे। किसी ने उनसे नहीं पूछा कि आपने ऐसा क्यों किया। वे यरूशलेम की ओर बढ़ गए, पर थोमा ने एक बार फिर मुड़कर पेड़ को देखा।
हरे पत्ते हवा में हौले-हौले हिल रहे थे, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

अगले दिन वे उसी राह से लौटे।

अंजीर का पेड़ सबसे पहले पतरस को दिखा। वह इतनी अचानक रुका कि याकूब उससे टकराते-टकराते बचा।

“रब्बी,” उसने हाथ से इशारा करके कहा। “देखिए। जिस अंजीर को आपने शाप दिया था, वह सूख गया है।”

सब रुक गए।

कल तक जो पेड़ हरा और पत्तों से लदा था, आज सूख चुका था। धूसर पत्ते मुड़े-तुड़े लटक रहे थे, डालियों का लचीलापन जाता रहा था और तने से कहीं-कहीं छाल उखड़ रही थी। वह ऐसा पेड़ नहीं लगता था जो धीरे-धीरे मुरझा रहा हो। लगता था जैसे जड़ से लेकर आख़िरी टहनी तक उसका जीवन एक साथ निकल गया हो।
शिष्यों के भीतर बेचैनी उतर गई।

वे पहले बहुत-से चिह्न देख चुके थे। पानी को दाखमधु बनते देखा था। रोगियों को चंगा होते, अंधों को देखते और लँगड़ों को चलते देखा था। लाज़र को कब्र से बाहर निकलते देखा था।
लेकिन इस पेड़ ने उनके मन को कुछ और ही ढंग से छुआ।

इस चमत्कार ने किसी को चंगा नहीं किया था।

भीड़ का उल्लास भी नहीं था।

किसी ने अपने बच्चे को सीने से नहीं लगाया। किसी ने आँखें आकाश की ओर उठाकर लौटे हुए जीवन के लिए धन्यवाद नहीं दिया।

पूरी घटना कठोर और मौन थी। जो हुआ था, उसे लौटा पाना असंभव-सा लगता था।

यीशु उनकी ओर मुड़े।

“परमेश्वर पर विश्वास रखो,” उन्होंने कहा। “मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो इस पहाड़ से कहे, उठ और समुद्र में जा गिर, और अपने मन में संदेह न करे, बल्कि विश्वास करे कि जैसा वह कहता है वैसा होगा, उसके लिए वैसा ही होगा।”
उन्होंने राह को घेरती ढलानों की ओर आँखें उठाईं।

“इसीलिए तुमसे कहता हूँ, प्रार्थना में जो भी माँगो, विश्वास करो कि तुमने पा लिया है, और तुम्हें दिया जाएगा। पर जब खड़े होकर प्रार्थना करो, और किसी के विरुद्ध मन में कुछ हो, तो उसे क्षमा कर दो, जिससे तुम्हारा पिता भी तुम्हें क्षमा करे।”
ये वचन उनके बीच ऐसे गिरे जैसे गहरे पानी में पत्थर।

कोई तुरंत नहीं बोला।

हर एक को उनमें कुछ अलग सुनाई दिया था।

पतरस को शक्ति का आह्वान।

यूहन्ना को भरोसे का भेद।

यहूदा को सामर्थ्य की संभावना।

थोमा को एक प्रश्न।

वह कुछ देर ठिठका। फिर यीशु के पास गया।

“प्रभु,” उसने सँभलकर कहा।

यीशु ने उसकी ओर देखा।

“पूछो, थोमा।”

थोमा ने आँखें झुकाकर अंजीर की सूखी जड़ें देखीं।

“हमने आपको पानी को दाखमधु बनाते देखा है। रोगियों को चंगा करते देखा है। मरे हुओं को जिलाते देखा है। हमने लाज़र को कब्र से निकलते देखा है, जबकि वह अँधेरे में पड़ा रह चुका था और उसकी देह में मृत्यु की गंध बस गई थी।”

वह चुप हो गया।

“और अब हमने देखा है कि आपके वचन पर एक पेड़ सूख गया।”

कुछ शिष्य बेचैनी से हिले। पतरस की भौंहें तन गईं, मानो वह थोमा को चुप कराना चाहता हो, पर यीशु ने हाथ उठा दिया।

“इसे बोलने दो,” उन्होंने कहा। “जो पूछता है वह अभी सोया नहीं है।”

थोमा ने साँस ली।

“फिर आपने ऐसा क्यों नहीं किया कि उस पर एक अंजीर लग जाता? आप भूखे थे और पेड़ फलहीन, तो आपने उसे फल क्यों नहीं दिया? उस पर फल बुलाने से आसान उसका जीवन ले लेना क्यों था?”

मौन गहरा गया।

अब कुछ अधिक साहस से थोमा ने अपनी बात बढ़ाई,

“और अगर विश्वास रखने वाला मनुष्य पहाड़ से कह सकता है कि उठ और समुद्र में जा गिर, तो वह पेड़ से क्यों नहीं कह सकता, एक अंजीर ला?”

यीशु उसे स्नेहभरी गंभीरता से देखते रहे।

“थोमा,” उन्होंने कहा, “बच्चा रोटी को देखता है तो समझता है कि रोटी बनाने वाले के हाथ में उसका आरंभ हुआ। पर समझदार मनुष्य जानता है कि वह उससे बहुत पहले शुरू हुई थी। उस दाने में जो धरती में गिरा। उस बरखा में जो ठीक समय पर आई। उस धूप में जो बहुत प्रखर नहीं थी। बोने वाले के हाथों में। चक्की के पाट में। भट्ठी की आग में।”

उन्होंने अंजीर के पेड़ की ओर इशारा किया।

“जो भी वस्तु तुम्हें सामने दिखती है, उसके पीछे अनदेखी चीज़ों का लंबा सिलसिला है। अंजीर का फल भी महज़ फल नहीं। आज डाल पर लटकने के लिए उसे कल किसी छोटे-से रूप में वहाँ होना था। महीने भर पहले वह पेड़ की देह में छिपा, मुश्किल से दिखाई देता होगा। उससे पहले वह फल का आरंभ रहा होगा, जिसे रस, प्रकाश और समय मिला। और उससे भी पहले उसका होना उस पेड़ के होने में था, जिसमें फलने की शक्ति थी।”

थोमा निश्चल होकर सुन रहा था।

यीशु ने एक सूखा पत्ता उठाया। उनके छूते ही वह उँगलियों के बीच चूर हो गया।

"जो यथार्थ तुम्हें दिखता है वह दुनिया पर तनी कोई एक खाल नहीं है। उसकी परतें हैं। उस प्याज़ की तरह जिसकी तहें कोई स्त्री चूल्हे के पास बैठी खोलती है। एक परत दूसरी को थामती है। जो आज दिखता है वह उस पर टिका है जो कल था। और जो कल था वह उस पर टिका है जो उससे भी पहले था।"

उन्होंने सबकी ओर देखा।

"दुर्बल मन केवल आख़िरी परत को देखता है और उसे पूरा संसार समझता है। अधिक सबल मन गहरे तक देखता है। विश्वास से भरा मन उन जगहों को छू सकता है जहाँ चीज़ें अभी पूरी तरह तय नहीं हुई हैं।"

यूहन्ना ने नज़र उठाई।

यीशु कहते गए,

"कुछ चीज़ें बदली जा सकती हैं, क्योंकि उनकी जड़ें पास हैं। रोगी देह में अभी जीवन की इच्छा है। जल में सृष्टि की आज्ञाकारिता बसी है। मनुष्य का हृदय एक ही क्षण में फिर सकता है। मृत्यु भी वैसी दीवार नहीं है जैसी तुम समझते हो, जब पिता सोए हुए को उसका नाम लेकर पुकारता है।"

मृत्यु का नाम आते ही उनकी आँखों के सामने लाज़र की कब्र उभरी। द्वार से लुढ़काकर हटाया हुआ पत्थर। सड़न की गंध। कफ़न की पट्टियों में लिपटा हुआ मनुष्य जो यीशु की पुकार पर बाहर चला आया था।

"लेकिन अंजीर की ऋतु आए बिना पेड़ पर अंजीर बना देना," यीशु ने धीरे से कहा, "डाल को फल धारण करने की आज्ञा भर देना नहीं है। उसका अर्थ होगा एक साथ बहुत-सी परतों को नए सिरे से लिख देना। वहाँ कल की वह बढ़त होनी चाहिए थी जो हुई नहीं। वहाँ पकने की वह प्रक्रिया होनी चाहिए थी जो घटी नहीं। वहाँ वह रस होना चाहिए था जो कितने ही दिनों से उस फल की ओर जा रहा हो। वहाँ वह समय होना चाहिए था जो वहाँ से गुज़रा ही नहीं।"

थोमा के माथे पर बल पड़े।

"पर परमेश्वर सब कुछ कर सकता है।"

"परमेश्वर सब कुछ कर सकता है," यीशु ने सिर हिलाया। "लेकिन परमेश्वर हाट का कोई जादूगर नहीं है जो बच्चे की आँख को छलता है। पिता ने दुनिया इसलिए नहीं रची कि बार-बार उसे पुराने कपड़े की तरह फाड़ दे और हमारी अधीरता के मुताबिक़ फिर से सिल ले। उसने एक व्यवस्था रची। और वह व्यवस्था भी उसी की इच्छा है।"

पर थोमा की नज़र अब भी सूखे पेड़ पर थी।

“इससे समझ में आता है कि उस पर अंजीर क्यों नहीं था,” उसने कहा। “यह समझ में नहीं आता कि आपने उसे शाप क्यों दिया।”

पतरस एकाएक उसकी ओर मुड़ा।

“थोमा—”

“नहीं,” यीशु ने शांति से उसे रोका।

उन्होंने थोमा को देखा।

“तुम ठीक पूछ रहे हो।”

सड़क पर इतनी चुप्पी छा गई कि उनके पैरों के पास सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई देती थी।

थोमा एक क़दम और पास आया।

“मैं यह नहीं पूछता कि वह वृक्ष किसका प्रतीक था,” उसने कहा। “न यह कि नगर या मंदिर का क्या अर्थ है। आपने, स्वयं आपने, उस घड़ी ऐसा क्यों किया?”

यीशु ने अंजीर के पेड़ को देखा।

देर तक उन्होंने उत्तर नहीं दिया।

बोले तो उनका स्वर पहले से धीमा था।

“क्योंकि मैं भूखा था।”

शिष्य जड़ खड़े रह गए।

“मैं थका था,” उन्होंने आगे कहा। “बीती रात लंबी थी और जो दिन आने को हैं वे कठिन हैं। उसके पत्ते देखे तो मेरे मन में फल खाने की इच्छा उठी। जब फल नहीं मिला, मेरी भूख ने पल भर के लिए दुनिया को उस एक चीज़ तक छोटा कर दिया जो मैं चाहता था।”

पतरस ने आँखें झुका लीं।

यीशु ने सूखे तने को छुआ।

“मैंने उस पेड़ में मंदिर को देखा, नगर को और उस मनुष्य को भी जो ऊपर से जीवन से छलकता है और भूखे को कुछ नहीं देता। जो मैंने देखा वह झूठ नहीं था। लेकिन सत्य भी मन की किसी अशुद्ध जगह से बोला जा सकता है। भूख, क्रोध या अहंकार के मुँह से निकले तो न्याय का वचन भी क्रूर हो सकता है।”

थोमा उन्हें ताकता रहा, मानो उसे यक़ीन न हो कि उसने ठीक सुना है।

“तो क्या आपको इस पर क्रोध आया था?”

“एक क्षण को,” यीशु ने कहा। “उस तरह नहीं जैसे उसे क्रोध आता है जो नाश करना चाहता हो। उस तरह, जैसे कोई कुछ पाने के लिए हाथ बढ़ाए और ख़ाली रह जाए तो उसे खीझ होती है। वृक्ष का कोई दोष नहीं था। उसके फलों की ऋतु नहीं थी। लेकिन उस क्षण मैंने उसके समय का पूरा विस्तार नहीं देखा। मैंने केवल अपनी भूख देखी।”

यूहन्ना ने पूछा,

“और इसलिए आपके वचन ने इसके प्राण ले लिए?”

यीशु ने सिर हिलाया।

“मनुष्य की चेतना जितनी प्रबल और जितनी एकाग्र होती है, उसके वचन का भार उतना ही बढ़ जाता है। तुम खीझ में न जाने क्या-क्या कह सकते हो और हवा तुम्हारी बातें उड़ा ले जाएगी। लेकिन जब मनुष्य अस्तित्व की जड़ों के पास खड़ा होता है, तो उसके भीतर पल भर का विचलन भी अपना निशान छोड़ सकता है।”

उनकी नज़र एक-एक पर पड़ी।

“इसलिए महान शक्ति केवल वरदान नहीं। वह बोझ भी है। जो एक शब्द से चंगा कर सकता है, उसे अपने उस शब्द से भी सावधान रहना होगा जो थकान में मुँह से निकल जाए। जो पहाड़ हिला सकता है, उसे यह देखना होगा कि उसकी इच्छा पिता से आती है या केवल उस पीड़ा से जो इस घड़ी उसके भीतर से गुज़र रही है।”

थोमा ने फिर अंजीर की ओर इशारा किया।

“फिर भी मेरी समझ में नहीं आता। आपका वचन यदि पेड़ को मार सकता था, तो उसे फल देने के लिए विवश क्यों नहीं कर सकता था?”

यीशु ने ज़मीन से सूखी डाल का एक टुकड़ा उठाया।

“क्योंकि तोड़ने और रचने की माँगें एक नहीं होतीं।”

उन्होंने टहनी को उँगलियों के बीच तोड़ दिया।

“मृत्यु पहले से इस वृक्ष में एक संभावना की तरह थी। वह हर पत्ते, हर जड़, हर देह में है। जिसका भी जन्म होता है, उसमें मिट सकने की संभावना भी होती है। मेरे वचन ने उसके लिए राह खोल दी जो इस वृक्ष में पहले ही संभव था।”

फिर उन्होंने ख़ाली हथेली आगे की।

“लेकिन अंजीर उस घड़ी उसमें तैयार नहीं था। उसके बनने के लिए वृक्ष, रस, सूर्य, मिट्टी और समय को एक साथ आना पड़ता। मुझे पूरे अस्तित्व से कहना पड़ता कि मेरी भूख के चारों ओर अपने को मोड़ ले।”
उनकी दृष्टि कठोर हो गई। शिष्यों पर नहीं, अपने ही ऊपर।

“उस क्षण भूख मेरी अपनी थी। मैं किसी बच्चे के प्राणों के लिए नहीं माँग रहा था, न किसी पीड़ित के चंगे होने के लिए। मैं अपना पेट भरना चाहता था।”
यहूदा ने कहा,

“भूखे मनुष्य के खाने की इच्छा में बुरा क्या है?”

“कुछ नहीं,” यीशु ने उत्तर दिया। “भूख पाप नहीं है। रोटी की चाह भी पाप नहीं है। लेकिन शक्ति ख़तरनाक हो जाती है जब वह दुनिया से कहती है कि अपनी व्यवस्था इसलिए मिटा दे कि जिसके हाथ में शक्ति है, वह पल भर अभाव नहीं सहना चाहता।”
वे पल भर चुप रहे।

“शाप को बस एक दरार चाहिए। आशीष को तालमेल चाहिए।”

कोई नहीं हिला।

सीधे और भारी, ये शब्द उनके बीच ठहरे रहे।

“शक्ति कभी-कभी घायल इच्छा का भी कहना मान लेती है,” यीशु ने आगे कहा। “वह तोड़ सकती है, क्षय को तेज़ कर सकती है, भय या मृत्यु के लिए द्वार खोल सकती है। लेकिन जीवन ऐसी इच्छा के सामने पूरी तरह नहीं खुलता। जीवन वहाँ जन्म लेता है जहाँ व्यक्ति की इच्छा समूचे अस्तित्व की इच्छा से मिलती है।”
थोमा सोच में पड़ गया।

“तो आप अंजीर बना सकते थे, अगर वह पिता की इच्छा के अनुरूप होता?”

यीशु ने उसे देखा।

“अगर वह अंजीर जीवन देने वाली किसी राह का अंग होता, तो वह शून्य से न रचा जाता। सारा अस्तित्व उसकी ओर बढ़ रहा होता, भले ही तुम्हें वह राह न दिखती। लेकिन केवल क्षण भर के लिए अपने पेट को चुप कराने के लिए उसे बना देना पिता में किया गया चमत्कार न होता। वह दुनिया को अपनी सनक के अधीन कर देना होता।”

उन्होंने दूर की वीरान पहाड़ियों की ओर देखा।

“जब मैं जंगल में था तो परीक्षा लेने वाले ने मुझसे कहा था, पत्थरों को रोटियाँ बना दे।”

कुछ शिष्यों ने उस घटना के बारे में सुना था, कुछ ने नहीं। अब सब कान लगाकर सुनने लगे।

“उस समय मैं कल से भी अधिक भूखा था,” यीशु ने कहा। “मेरी देह खाने को पुकार रही थी। मेरे सामने का पत्थर रोटी जैसा था और एक आवाज़ मुझसे कह रही थी, शक्ति है तो उसे काम में ला। साबित कर कि तू कौन है। अपना पेट भर।”

“और आपने मना कर दिया,” यूहन्ना ने कहा।

“मैंने मना किया, क्योंकि शक्ति का काम उसे धारण करने वाले की भूख की सेवा करना नहीं है। मनुष्य अकेली रोटी से जीवित नहीं रहता। जिसे पिता से वरदान मिला है, वह उसे अपनी लालसा का चाकर न बना ले।”

उन्होंने अंजीर के वृक्ष को देखा।

“कल मैंने इस वृक्ष को भोजन में नहीं बदला। फिर भी पल भर को मैंने इसे दोषी ठहरा दिया क्योंकि इसने मुझे खिलाया नहीं। दोनों प्रलोभनों की जड़ एक ही थी।”

पतरस ने सिर हिलाया।

“लेकिन प्रभु, आप तो निष्पाप हैं।”

यीशु ने उसकी आँखों में देखा।

“और पतरस, तुम्हारे विचार में निष्पाप होने का अर्थ क्या है? भूख न लगना? क्रोध न उठना? यह न जानना कि प्रलोभन क्या होता है?”

पतरस ने उत्तर नहीं दिया।

“पत्थर को प्रलोभन नहीं होता,” यीशु ने कहा। “पर वह इससे पवित्र नहीं हो जाता। निर्मल होने का अर्थ यह नहीं कि मनुष्य के भीतर कभी कोई अँधेरी लहर उठे ही नहीं। इसका अर्थ है कि वह उसे पूरा देखे, उसे उजाले का नाम न दे और उसे अपना स्वामी न बनने दे।”

उन्होंने अपनी हथेली देखी।

“कल मैं उसे तभी देख पाया जब वचन मेरे मुँह से निकल चुका था।”

थोमा ने कहा,

“तो क्या वह मनुष्य भी, जिसे अपना पूरा बोध है, एक पल को चूक सकता है?”

"जब तक वह देह धारण करता है, देह का स्वर भी उसके साथ रहता है," यीशु ने उत्तर दिया। "भूख, पीड़ा, भय और थकान चेतना में वैसे घुसते हैं जैसे घर में हवा। जागा हुआ मनुष्य उन्हें पहचानता है। फिर भी द्वार खुले हों और रात लंबी रही हो, तो तेज़ हवा दीपक उलट सकती है।"

"और तब?" यूहन्ना ने पूछा।

"तब वह दीपक उठा लेता है। देखता है कि क्या हुआ। वह अँधेरे को परमेश्वर के नाम से नहीं ढकता।"

यीशु फिर थोमा की ओर मुड़े।

"तुमने पूछा था कि मैंने वृक्ष को बचाया क्यों नहीं, या उसे फल क्यों नहीं दिया। क्योंकि उस क्षण मैं रचना नहीं चाहता था। पाना चाहता था। और जब मुझे नहीं मिला, तो मेरा वचन दंडादेश बन गया।"

थोमा ने नज़र झुका ली।

"क्या नाश करना रचने से सरल है?"

"हाँ," यीशु ने कहा। "मनुष्य के हाथों के लिए ही नहीं, उसकी इच्छा के लिए भी। घर गिराने को एक चोट काफ़ी है। बनाने के लिए पत्थर चाहिए, नाप चाहिए, धैर्य चाहिए और बहुत-से हाथों का मेल चाहिए। मनुष्य को घायल करने के लिए क्रोध में कहा एक शब्द काफ़ी है। उसकी आत्मा को चंगा करने के लिए कभी-कभी सारी उम्र का प्रेम भी कम पड़ जाता है।"

उन्होंने सूखी छाल पर हथेली फेरी।

"भीतर से बँटा हुआ मन नाश कर सकता है। पर सृजन भीतर की एकता से ही संभव है।"

थोमा कुछ देर मौन रहा, फिर बोला,

"लेकिन काना में जब आपने पानी को दाखमधु बनाया था, तब भी तो आपने चीज़ों की व्यवस्था बदल दी थी।"

"काना में मैंने शून्य से आनंद नहीं बनाया था," यीशु ने उत्तर दिया। "वहाँ जल था। शुद्धि के पात्र थे। विवाह था। उस परिवार का संकोच था जिसके यहाँ दाखमधु चुक रहा था। मेरी माँ का विश्वास था। एक भोज था जिसे चलते रहना था, और एक घड़ी थी जो खुल गई थी।"

मरियम को याद करके यीशु हलके से मुसकराए।

"वह दाखमधु संसार का खंडन नहीं था। वह चिह्न था कि पिता रिक्त पात्रों को भर सकता है। वह मेरे लिए नहीं था। वह औरों के लिए उपहार था।"

"और लाज़र?" थोमा ने पूछा।

"मैंने लाज़र को पुकारा तो शून्य में पड़े किसी अजनबी को नहीं पुकारा। मैंने अपने एक भाई को पुकारा जिसे पिता नाम से जानता था। उसका शरीर कब्र में पड़ा था, पर पिता में उसकी कथा समाप्त नहीं हुई थी। उसकी बहनों का प्रेम, उनका दुख, उसके लिए मेरा प्रेम और पिता की इच्छा एक ही क्षण में आ मिले थे। विश्वास ने उस परत को छू लिया था जिसमें अभी यह कहना संभव था, बाहर आ जा।"

थोमा ने फिर अंजीर को देखा।

"और यहाँ आपकी भूख के सिवा कुछ भी आकर नहीं मिला।"

"यहाँ नगर का सत्य भी आकर मिला था," यीशु ने कहा। "इसीलिए वृक्ष चिह्न बन गया। पर मेरी खीझ ने उस चिह्न को एक कठोरता दे दी जिसकी उसे आवश्यकता नहीं थी।"

"तो क्या यह चिह्न किसी और तरह भी घट सकता था?" यूहन्ना ने पूछा।

यीशु ने पल भर सोचा।

"हाँ।"

"कैसे?"

"मैं तुम्हें इसके पत्ते दिखाकर कह सकता था, देखो, यह उस मंदिर से कितना मिलता है जो जीवन का वादा करता है, पर फल नहीं लाता। मैं भूखा ही इससे आगे बढ़ सकता था और इसे इसकी ऋतु में पकने दे सकता था।"

उन्होंने तने पर हाथ रखा।

"सत्य को वृक्ष की मृत्यु की आवश्यकता नहीं थी। वह मृत्यु मेरे उस एक क्षण ने जोड़ दी।"

इन वचनों ने शिष्यों को स्वयं चमत्कार से भी अधिक विचलित कर दिया।

उन्हें यीशु को उत्तर देने वाले के रूप में देखने की आदत थी। आज उनके सामने वह मनुष्य खड़ा था जिसने अपने कर्म को ख़ुद परखा था और उसमें जो पाया उससे मुँह नहीं फेरा था।

पतरस बोला,

"आप हमें यह क्यों बता रहे हैं? आप इतना भर कह सकते थे कि पेड़ एक चिह्न था। हममें से कोई संदेह न करता।"

यीशु ने उसकी ओर देखा।

"ठीक इसीलिए।"

पतरस समझा नहीं।

“जिसके हाथ में शक्ति है, उसके सामने यह प्रलोभन हर घड़ी रहता है कि वह अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा कह दे। वह किसी काम में सफल हो तो कहेगा, पिता ने ऐसा चाहा। किसी चीज़ का नाश करे तो कहेगा, यह न्याय था। किसी को चोट पहुँचाए तो कहेगा, मैंने सत्य की सेवा की।”

यीशु का स्वर ऊँचा हुआ।

“लेकिन हर शक्तिशाली शब्द पूरी तरह पिता से नहीं आता। हर सफलता निर्मलता का प्रमाण नहीं होती। और जिस-जिसकी आज्ञा शक्ति ने मानी वह हर कोई धर्मी नहीं था।”

यहूदा उन्हें बहुत ध्यान से देख रहा था।

“तो हम भेद कैसे जानें?” उसने पूछा।

“फल से।”

यीशु ने धरती से एक सिकुड़ी हुई टहनी उठाई।

“चिह्न कितना बड़ा है, इससे नहीं। कितने लोग झुकते हैं, इससे नहीं। न इस बात से कि धरती काँप उठी या आकाश से आग उतरी। पूछना, उस कर्म के बाद क्या शेष रहा। अधिक जीवन या अधिक भय? अधिक सत्य या अपना बल दिखाने वाले के प्रति अधिक आज्ञाकारिता? अधिक स्वतंत्रता या अधिक पराधीनता?”

उन्होंने सूखे वृक्ष को देखा।

“इस चिह्न से बोध उपजा है। पर इसने वृक्ष को मृत्यु दी। इसलिए इसमें केवल प्रकाश नहीं है।”

कुछ देर बाद थोमा ने पूछा,

“और पहाड़? आपने कहा, जो विश्वास करेगा वह पहाड़ से कहेगा कि समुद्र में जा गिर। यह छोटी बात नहीं है। पेड़ पर एक अंजीर लगने से तो बड़ी ही है।”

यीशु धीमे से मुसकराए।

“क्या तुम्हें लगता है, पहाड़ केवल पत्थर है?”

थोमा ने उत्तर नहीं दिया।

“पहाड़ वह भय भी है जो मनुष्य के सामने खड़ा होकर जताता है कि मैं सदा से हूँ और सदा रहूँगा। पहाड़ वह साम्राज्य है जो निर्बलों को दबाकर कहता है, मुझे कोई नहीं हिला सकता। पहाड़ वह दोष है जिसे तुम इतने समय से ढो रहे हो कि मानने लगे हो, वही तुम्हारी देह है। पहाड़ वह मृत्यु है जिसके आगे सब झुक जाते हैं।”

शिष्य चुप हो गए।

"मनुष्य अपने विश्वास को ऐसे ही थामे जैसे लाठी थामता है, तो विश्वास उसे चलने में सहारा देगा। पर जब वह ऐसे विश्वास करता है कि अपने को पूरा पिता के हाथ सौंप दे, तब उसका विश्वास वह जगह बनता है जहाँ परमेश्वर की इच्छा दुनिया को छूती है। तब पहाड़ हिलते हैं। इसलिए नहीं कि मनुष्य परमेश्वर को आज्ञा देता है, इसलिए कि मनुष्य परमेश्वर की राह में खड़ा रहना छोड़ देता है।"

थोमा थोड़ी देर चुप रहा।

"और क्या सब मनुष्यों का विश्वास एक-सा है? क्या हर कोई पहाड़ से कह सकता है कि हिल जा?"

यीशु ठहरे। उनकी दृष्टि कठोर नहीं थी। गहरी थी, मानो वे थोमा को ही नहीं, उसके पार उस जगह तक देख रहे हों जहाँ मनुष्य अपने आपसे मिलता है।

"सबका विश्वास एक-सा नहीं होता," उन्होंने कहा। "जैसे सबकी आँखें एक-सी नहीं होतीं, भले ही सब एक ही संसार को देखते हों। एक को बस पत्थर दिखता है। दूसरे को राह। तीसरे को पिता का वह हाथ दिखता है जो पत्थर को, राह को और स्वयं उसे भी थामे है।"

थोमा ध्यान से सुन रहा था।

"मनुष्य का विश्वास केवल उसके मुँह से निकले कथन से नहीं बढ़ता," यीशु ने कहा। "वह इस बात से बढ़ता है कि मनुष्य अपने भीतर कितनी गहराई तक जागा है। बहुत-से लोग जीते तो हैं, पर मानो सपना देख रहे हों। वे देखते हैं, सुनते हैं, खाते हैं, क्रोध करते हैं, डरते हैं, चाहते हैं। पर वे नहीं जानते कि उनके भीतर देख कौन रहा है, सुन कौन रहा है, डरता कौन है और चाहता कौन है।"

शिष्य मौन थे। ये वचन खेत, मछलियों और रोटी के दृष्टांतों से भिन्न थे। ये किसी अदृश्य चीज़ को छू रहे थे जिसे फिर भी हर कोई अपने भीतर लिए चलता था।

"सबसे बड़ा विश्वास," यीशु ने धीरे से कहा, "उसे है जिसे पूरी तरह बोध है कि उसे बोध हो रहा है। जो केवल संसार को देखता ही नहीं, यह भी जानता है कि देखने वाला वह स्वयं है। जो केवल सोचता ही नहीं, यह भी जानता है कि विचार उसके सामने बादलों की तरह आते-जाते हैं। जो केवल भय अनुभव नहीं करता, यह भी जानता है कि भय उसका स्वामी नहीं है।"

थोमा के माथे पर बल पड़ गए। विरोध में नहीं, समझने के यत्न में।

यीशु ने आगे कहा,

"ऐसा मनुष्य संसार की हर परत से वैसे नहीं चिपक जाता जैसे शहद से मक्खी। वह गहरे उतरता है। देह को देखता है पर जानता है कि वह केवल देह नहीं है। विचार को देखता है पर जानता है कि वह केवल विचार नहीं है। पीड़ा को देखता है पर जानता है कि वह केवल पीड़ा नहीं है। और जब उसे इस बात की भ्रांति

नहीं रहती कि वह कौन है, तो वह उसके आगे असहाय होकर झुकना छोड़ देता है जो उसके भीतर बदलता रहता है।"

थोमा ने पूछा,

"और क्या ऐसी चेतना चमत्कार कर सकती है?"

यीशु ने उसकी ओर देखा।

"अकेला मनुष्य अपने बल पर नहीं। क्योंकि जिस क्षण तुम कहो, मैं चमत्कार करता हूँ, तुम पिता से अलग हो चुके होगे। और अलगाव दुर्बलता है, चाहे वह सामर्थ्य का रूप धारण कर ले।"

उन्होंने अपने वक्ष पर हाथ रखा।

"पूरी तरह जागे हुए मनुष्य की चेतना फिर भय, लालसा, अहंकार और संदेह के बीच छितरी नहीं रहती। वह जल की उस सतह की तरह निर्मल होती है जिस पर हवा नहीं चल रही। ऐसे जल में आकाश झलक सकता है। और जब मनुष्य में आकाश बिना विकृति के झलकता है, तो उसके माध्यम से वह घट सकता है जिसे तुम चमत्कार कहते हो।"

पतरस ने पूछा,

"तो चमत्कार मनुष्य का बल नहीं करता?"

"नहीं," यीशु ने कहा। "चमत्कार वहाँ घटता है जहाँ मनुष्य बाधा रहना छोड़ देता है। जहाँ उसकी चेतना अपनी चाह से धुँधली नहीं होती, बल्कि उसके लिए खुली रहती है जो पिता चाहता है।"

उन्होंने अंजीर की ओर देखा।

"कल मैंने तुम्हें इसका उलटा भी दिखाया।"

थोमा ने आँखें उठाईं।

"मेरे भीतर भूख उठी, पर उस समय मैं केवल उसे देख नहीं रहा था। पल भर को मैं स्वयं वह भूख हो गया। और मनुष्य जब अपनी भूख, अपना भय या अपना क्रोध बन जाता है तो उसकी चेतना सिमट जाती है। उसे केवल वह दिखता है जिसकी उसे कमी है।"

"लेकिन आपको इसका बोध हो गया," यूहन्ना ने कहा।

"वचन निकल जाने के बाद।"

यीशु का उत्तर सीधा था।

"जाग जाने का अर्थ यह नहीं कि हवा चलना बंद कर देगी। अर्थ यह है कि मनुष्य पहले से कुछ जल्दी पहचानने लगता है कि हवा उसके भीतर क्या कर रही है। कभी कर्म से पहले पहचान लेता है। कभी कर्म करते-करते। और कभी तब, जब उसे वह वृक्ष दिखता है जो उसके पीछे सूखा रह गया।"

थोमा ने धीरे से सिर हिलाया।

"इसीलिए आपने हमसे कहा कि प्रार्थना करते समय क्षमा कर दें?"

"हाँ। मनुष्य विश्वास से माँग सकता है, पर यदि उसका अंतर क्रोध से भरा है तो उसका विश्वास क्रोध से मिल जाएगा। वह न्याय माँग सकता है, जबकि सचमुच उसे प्रतिशोध की चाह है। वह सत्य की बात कर सकता है, जबकि उसकी असली इच्छा दूसरे को नीचा दिखाना है।"

यीशु ने शिष्यों पर दृष्टि फेरी।

"इसलिए मन में संदेह न होना काफ़ी नहीं है। यहूदा को भी अटल विश्वास हो सकता है। हिंसक मनुष्य भी बिना हिचके काम कर सकता है। यदि मनुष्य अपने द्वेष में एकाग्र है तो वह एकाग्रता अपने आप में भलाई नहीं बन जाती।"

इन शब्दों पर यहूदा तनिक अकड़ गया।

"सच्चा विश्वास केवल अपनी धारणा की दृढ़ता नहीं है," यीशु ने आगे कहा। "वह पिता के साथ मनुष्य की एकता है। तुम्हारी इच्छा जितना उसकी इच्छा के निकट आएगी, उतना ही कम तुम उन वस्तुओं के लिए माँगोगे जो केवल तुम्हारे काम आती हैं।"

थोमा ने पूछा,

"हम पिता की इच्छा और अपनी चाह में अंतर कैसे करें?"

यीशु ने उसके वक्ष की ओर इशारा किया।

"पहले यह मानकर कि तुम स्वयं क्या चाहते हो। बिना उसे सँवारे। बिना भक्ति के शब्दों में ढाले।"

"और फिर?"

"अपने से पूछो, तुम्हारी याचना से किसे जीवन मिलेगा।"

यीशु ने एक सूखा पत्ता उठाया।

"भली याचनाएँ जीवन को जन्म देती हैं, चाहे वे कठिन हों। बुरी याचनाएँ केवल अपने बल का प्रमाण उपजाती हैं। जब तुम इसलिए माँगते हो कि भूखे को खिला सको, किसी को चंगा कर सको, क्षमा कर सको, दूसरे का बोझ उठा सको, तब तुम्हारी याचना पिता से मिलती-जुलती है। जब तुम इसलिए माँगते हो कि

चकित कर दो, जीत लो, किसी को अपना बना लो या अपने लिए निश्चित हुई राह से बच निकलो, तब तुम परमेश्वर से माँग नहीं रहे, उसकी परीक्षा ले रहे हो।"

थोमा बोला,

"और जब हमें निश्चय न हो?"

"तब प्रतीक्षा करो।"

यीशु ने सूखे वृक्ष को देखा और फिर उसके पार हरी पहाड़ियों को।

"कभी-कभी प्रतीक्षा में कर्म से भी निर्मल विश्वास होता है। जिसे यह न मालूम हो कि उसकी इच्छा जीवन के काम आती है या नहीं, वह झट से उसे शक्ति का जामा न पहनाए। पहले उसे पिता के सामने खड़ा रहने दे।"

पतरस सूखी डालियों को देख रहा था।

"कल अगर आपने प्रतीक्षा की होती, तो पेड़ जीवित होता।"

"हाँ," यीशु ने कहा।

उनके स्वर में सफ़ाई देने का भाव नहीं था।

पतरस को समझ नहीं आया कि इस पर क्या कहे।

कुछ देर बाद थोमा फिर बोला,

"क्या आप इसे जीवित कर सकते हैं?"

सभी यीशु की ओर मुड़े।

यीशु ने तने पर हथेली रखी। आँखें मूँद लीं।

वे देर तक ऐसे ही खड़े रहे।

शिष्य प्रतीक्षा करते रहे, क्या डालियों में रस दौड़ेगा, क्या सूखे पत्ते खुल जाएँगे, क्या कठोर छाल से नई हरी कोंपल फूटेगी।

कुछ नहीं हुआ।

यीशु ने आँखें खोलीं।

"मैं पिता से इसका जीवन माँग सकता हूँ," उन्होंने कहा। "लेकिन भूल सुधारना भी इसलिए नहीं होना चाहिए कि मैं साबित कर सकूँ, अपनी भूल मिटा सकता हूँ।"

थोमा की भौंहें सिकुड़ीं।

“जब यह आपके वचन से मरा है, तो इसे फिर क्यों न जीना चाहिए?”

“शायद यह जिए,” यीशु ने उत्तर दिया। “शायद एक दिन इसकी जड़ों से नई कोंपल निकले। लेकिन अगर मैं इसे अभी केवल इसलिए जिला दूँ कि मेरी उस एक घड़ी का परिणाम तुमसे छिप जाए, तो मैं फिर अपनी शक्ति अपने लिए ही बरतूँगा।”

उन्होंने फटी हुई छाल पर उँगलियाँ फेरीं।

“हर दोष का सुधार उसका परिणाम मिटा देने से नहीं होता। कभी-कभी परिणाम का दिखाई देते रहना ज़रूरी है, ताकि वह सच बन जाए।”

थोमा ने उन्हें देखा।

“तो यह वृक्ष आपकी भूल को ढोएगा?”

“और मेरी समझ को,” यीशु ने कहा। “शायद एक दिन तुम्हारी समझ को भी।”

वे कुछ देर चुप रहे।

“मनुष्य चाहेगा कि हर उस सूखे वृक्ष को हटा दे जो उसे याद दिलाता है कि कभी वह कैसा था। पर जो वृक्ष खड़ा रहे, वह वैसे ही किसी वचन से बहुत-से और वृक्षों को बचा सकता है।”

पतरस ने लंबी साँस छोड़ी।

“आपको इस तरह बोलते सुनना कठिन है।”

“क्योंकि तुम चाहते हो कि जिसके पीछे तुम चलते हो वह तुम्हारी दुर्बलता से दूर हो,” यीशु ने कहा। “तुम्हें लगता है, तुम्हें वही बचा सकता है जिसने वह कभी महसूस न किया हो जो तुम करते हो। लेकिन जो प्रलोभन की आवाज़ को ही नहीं जानता, वह तुम्हें उसके बीच से पार कैसे ले जा सकेगा?”

“तो फिर हम कैसे जानें कि हमें आपके पीछे चलना चाहिए?” यहूदा ने पूछा।

यीशु ने उसकी ओर शांत दृष्टि से देखा।

“मेरे पीछे इसलिए मत चलो कि मुझे कभी ठोकर नहीं लगेगी। वहाँ मेरे पीछे चलना जहाँ ठोकर खाकर भी मैं सत्य से मुँह नहीं फेरता।”

यहूदा ने नज़र हटा ली।

थोमा अब भी वृक्ष को देख रहा था।

“आपने कहा था, जो फूल के बिना अंजीर चाहता है, वह राह चले बिना उपहार चाहता है।”

“हाँ।”

“और जो पेड़ पर अंजीर न पाकर उसे शाप देता है?”

यीशु ने यरूशलेम की ओर देखा।

“वह चाहता है कि उसकी अपनी कमी का दंड संसार उठाए।”

थोमा की साँस काँप गई।

यीशु ने आगे कहा,

“राजा यही करते हैं। शासक यही करते हैं। पिता अपने बच्चों के साथ, स्वामी अपने सेवकों के साथ यही करते हैं। उन्हें सत्ता, सम्मान या निश्चिंतता की भूख सताती है और फिर वे दुनिया को इसका दंड देते हैं कि उसने उनकी भूख नहीं मिटाई।”

उन्होंने अंजीर की ओर इशारा किया।

“इसलिए इस वृक्ष को याद रखना। केवल निष्फल मंदिर के चिह्न की तरह नहीं। उस मनुष्य से उपजने वाले ख़तरे के चिह्न की तरह भी जिसके वचन में शक्ति है।”

यूहन्ना ने पूछा,

“तो क्या शक्ति न होना ही अच्छा है?”

“नहीं,” यीशु ने उत्तर दिया। “शक्ति के बिना तुम गिरे को उठा नहीं सकते, बच्चे की रक्षा नहीं कर सकते, घर नहीं बना सकते। शक्ति पाप नहीं है। शक्ति उजागर करती है कि मनुष्य के भीतर क्या है।”

“आग की तरह?” यूहन्ना ने कहा।

“आग की तरह। प्रेम करने वाले के हाथ में वह गरमाहट देती है। डरने वाले के हाथ में वह जलाती है।”

थोमा बोला,

“और आग जितनी बड़ी, हाथ उतने ही निर्मल होने चाहिए।”

यीशु ने सिर हिलाया।

“शक्ति जितनी बड़ी होती है, मनुष्य को अपनी खीझ की उतनी ही छोटी चिंगारी को भी न्याय का नाम देने से बचना होता है।”

कुछ देर तक सूखे पत्तों में हवा की आवाज़ ही सुनाई दी।

फिर यीशु आगे बढ़े।

शिष्य उनके पीछे हो लिए, पर अब उनकी चाल पहले से धीमी थी। अंजीर का वृक्ष उनके पीछे राह के किनारे ऐसे चिह्न की तरह रह गया जिसे आसानी से एक ही अर्थ में नहीं बाँधा जा सकता था।

वह उस मंदिर की छवि था जिसमें अनुष्ठानों की भरमार थी और दया नहीं थी।

वह उस मनुष्य की छवि था जो ऊपर से हरा-भरा है, पर भूखे को कुछ नहीं देता।

वह वचन की शक्ति का प्रमाण था।

वह उस क्षण का परिणाम भी था जब भूख का स्वर समूचे अस्तित्व के साथ सामंजस्य के स्वर से ऊँचा हो गया था।

पतरस उस विश्वास के बारे में सोचता रहा जो पहाड़ को हिला सकता है।

लेकिन पहली बार उसने यह भी सोचा कि क्या हर उस पहाड़ को हिला देना चाहिए जिसे हिलाने की मनुष्य में शक्ति है।

यूहन्ना चेतना के उस जल के बारे में सोच रहा था जिसमें आकाश झलक सकता है। पर अब वह समझ गया था कि निर्मल जल में भी एक पत्थर गिर सकता है और एक क्षण के लिए प्रतिबिंब को तोड़ सकता है।

यहूदा शक्ति के बारे में सोचता रहा। उसके भार के बारे में नहीं। इस संभावना के बारे में कि शायद दुनिया सचमुच उस मनुष्य की इच्छा मान सकती है जिसे अपने पर कोई संदेह न हो।

थोमा उस अंजीर के बारे में सोचता रहा जो बन नहीं सका, क्योंकि जिस राह से उसे आना था वह तय ही नहीं हुई थी।

और फिर उस वृक्ष के बारे में भी, जो इसलिए मर गया क्योंकि एक छोटे-से क्षण के लिए उस पर वचन कहने वाले की राह में सामंजस्य नहीं रहा था।

यीशु उनके आगे-आगे यरूशलेम की ओर बढ़ रहे थे।

भूख अब उतर गई थी, पर सूखे वृक्ष का बोध वे अपने साथ लिए जा रहे थे। उन्होंने उसे किसी ऐसी भूल की तरह परे नहीं किया जो धर्मी मनुष्य की कथा में न जँचती हो। उसे एक मौन चेतावनी की तरह लिए चले।

वे नगर के जितने पास आते गए, क्षितिज पर मंदिर की दीवारें उतनी स्पष्ट उभरती गईं।

वे भी पत्तों से भरी थीं।

प्रार्थनाओं, बलिदानों, चोग़ों, धूप, विधियों और प्रतिज्ञाओं से।

फिर भी उनकी छाया में लोग भूखे रह जाते थे।

समय की सारी परतों पर क्रूस की छाया पहले ही घिरने लगी थी।

कोई शिष्य अभी यह नहीं समझा था कि शीघ्र ही वे एक और वृक्ष की ओर ताक रहे होंगे। सूखी लकड़ी की ओर, जो धरती और आकाश के बीच खड़ी की गई होगी। उस पर वे उस मनुष्य को देखेंगे जिससे उन्हें राज्य के फल पाने की आशा थी, और उनकी आँखों के सामने लहू, पीड़ा और मृत्यु के सिवा कुछ न होगा। उन्हें लगेगा कि सभी प्रतिज्ञाएँ सूख गई हैं।

वे राह देखेंगे कि क्या वह अपने लिए अपनी शक्ति बरतेगा।

क्या वह कीलों को ढीली पड़ जाने की आज्ञा देगा।

क्या लकड़ी को टूट जाने की आज्ञा देगा।

क्या आकाश को उनका नाश करने की आज्ञा देगा जिन्होंने उसका उपहास किया।

और वह फिर भूखा होगा।

वह प्यासा होगा।

वह थका होगा और अकेला छोड़ दिया गया होगा।

लेकिन इस बार वह पीड़ा को समूची दुनिया अपनी यातना भर में समेटने नहीं देगा।

वह अस्तित्व से नहीं कहेगा कि मेरे भय के चारों ओर मुड़ जा।

जिन्होंने उसका जीवन लिया, उन पर वह शाप नहीं बोलेगा।

वह उन्हें क्षमा कर देगा।

तभी थोमा समझेगा कि उसके गुरु की वास्तविक महानता इसमें नहीं थी कि वे किसी वृक्ष को सुखा सकते थे।

वह इसमें थी कि जब वे स्वयं वृक्ष पर लटके थे और सारी दुनिया को शाप दे सकते थे, तब उन्होंने ऐसा नहीं किया।

तभी वे समझेंगे कि यथार्थ की सबसे गहरी परतें सत्ता के शोर से नहीं हिलतीं। उन्हें उसकी शांत इच्छा हिलाती है जो पीड़ा के बीच भी पिता के साथ एक बना रहता है।

तभी वे समझेंगे कि कभी-कभी सबसे बड़ा चमत्कार उस दिन डाल पर फल बनकर नहीं दिखता जब मनुष्य भूखा हो।

कभी वह क्षमा का वचन बनकर उस दिन दिखता है जब मनुष्य को शाप देने का अधिकार हो।

कभी किसी वृक्ष की मृत्यु के बाद ही।

कभी तभी, जब सूखी लकड़ी से समूचे संसार के लिए जीवन फूट पड़ता है।

11. Elarion: Mareia Lioren

Mareia Lioren ने चुपचाप डरना सीख लिया था।

इसलिए नहीं कि वह कमज़ोर थी। कमज़ोर लोग अक्सर खुलकर अपना डर जताते हैं, इस उम्मीद में कि कोई उन्हें बचा लेगा। Mareia चुपचाप डरती थी, क्योंकि बहुत दिनों से उसे यक़ीन था कि अपनी गरिमा उसे ख़ुद ही बचानी होगी।

शुरुआती दिनों में Arien ने उस पर कभी हाथ नहीं उठाया था।

शुरू में वह उसका बहुत ध्यान रखता था।

ध्यान तब ख़तरनाक होता है जब वह प्रेम बनकर आए, पर असल में टटोल रहा हो कि कहाँ तक जा सकता है।

वह उसकी कही बातें याद रखता था। उसे ख़बर रहती थी कि वह कब थकी है। जानता था कि नगर की कौन-सी जगहें उसे पसंद नहीं, काम करते समय वह क्या पीती है, किन लोगों को वह खोखला समझती है, किस पर भरोसा करती है। पहले उसके पास Mareia को लगता था कि कोई उसे सचमुच देखता है। बाद में लगा कि उस पर नज़र रखी जा रही है। यह फ़र्क़ धीरे-धीरे आया, जैसे तूफ़ान से पहले उजाले का रंग बदलता है।

“मुझे बस तुम्हारी फ़िक्र है,” वह कहता, जब पूछता कि तुम किसके साथ थीं।

“बस नहीं चाहता कि वे तुम्हारा फ़ायदा उठाएँ,” वह कहता, जब उसके दोस्तों पर सवाल उठाता।

“मैं बस जानता हूँ कि लोग कैसे सोचते हैं,” वह कहता, जब उसे यह मनवाना चाहता कि अपनी समझ पर भरोसा करना उसका भोलापन है।

Mareia ऑरेलियाई थी। उसकी वंशशाखा पुरानी थी, पर सबसे ऊँची नहीं। Lioren कुल राजनेताओं से अधिक अपने चिकित्सकों, अभिलेखपालों और शिक्षकों के लिए जाना जाता था। बचपन से उसे सिखाया गया था कि संवेदनशीलता साहस का उलटा नहीं है। यह समझने में उसे बहुत समय लगा कि Arien के लिए उसकी संवेदनशीलता कोई वरदान नहीं थी, वह एक ऐसी जगह थी जहाँ दबाव डाला जा सकता था।

Arien से मिलने के वर्षों पहले Mareia वंशानुगत रोगों के अध्ययन के लिए रोगियों की पहचान रहित स्वास्थ्य जानकारी सुलभ कराने में लगी थी। उसे विश्वास था कि जानकारी साझा करने से उपचार की प्रतीक्षा घट सकती है। पर एक क्षेत्रीय बीमा प्रणाली ने उन कथित रूप से अनाम आँकड़ों को पतों से

मिलाकर कई परिवारों को पहचान लिया। उनके बीमार होने की पुष्टि भी नहीं हुई थी और उनका बीमा प्रीमियम बढ़ गया।

Mareia ने उन परिवारों की पुरानी शर्तें बहाल कराने में सहायता की और परियोजना की जाँच के समय गवाही दी। उसने शोध से मुँह नहीं मोड़ा। लेकिन उस दिन के बाद हर आवेदन पढ़ते समय वह यह भी देखती थी कि परिणाम का उपयोग कौन कर सकेगा, कितने समय तक उसे अपने पास रखेगा और किसे यह दिखाई देगा कि जानकारी किसने देखी। पारदर्शिता पर हुए अपने बाद के हर विवाद में वह यही सावधानी साथ लाई। वह घटना Nitra के वित्तीय इलाक़े के ऊपर उसके फ़्लैट में हुई।

बाहर बारिश हो रही थी। उनके नीचे गलियों के भीगे काँच में स्वचालित यात्री यानों की रोशनियाँ टूट रही थीं। स्वास्थ्य अभिलेखों पर बैठक लंबी खिंच जाने से Mareia देर से पहुँची थी। Arien खिड़की के पास खड़ा था। वह मुड़ा तक नहीं।

“तुम उसके साथ थीं?”

नाम लेने की ज़रूरत नहीं थी।

Mareia को ख़ुद पता चलता कि Jesair Davion ने उसके जीवन को छू लिया है, उससे पहले ही वह उन दोनों के बीच आ गया था। उसके जीवन में सबसे पहले वह एक ठहराव बनकर आया था, जिसके पास उसे अपनी अशांति और साफ़ सुनाई देने लगी थी।

“मैं बैठक में थी,” उसने कहा।

“मैंने यह नहीं पूछा।”

“तो फिर कोई बेहतर सवाल पूछो।”

Arien मुड़ा।

उसके चेहरे पर आम अर्थ में क्रोध नहीं था। वहाँ अपमान का भाव था। मानो Mareia की स्वतंत्रता उसका अधिकार नहीं, उस व्यवस्था में आई कोई ख़राबी हो जिसका स्वामी उसे होना था।

“जानती हो, Davion जैसे लोग क्या करते हैं?” उसने पूछा। “कमरे में आते हैं और सब ऐसे हो जाते हैं मानो कोई पुरानी भविष्यवाणी सुन ली हो।”

“इसके लिए Jesair ज़िम्मेदार नहीं है।”

“Jesair,” Arien ने दोहराया।

उसने नाम को बड़ी नरमी से कहा। इसी से वह और बुरा लगा।

“तुम उससे डरते हो,” Mareia ने कहा।

एक क्षण के लिए दोनों के बीच पूरी ख़ामोशी छा गई।

फिर वह उसके पास आया। तेज़ी से। कुछ ज़्यादा ही तेज़ी से। उसकी कलाई पकड़ ली।

“मैं किसी से नहीं डरता।”

उसकी पकड़ कसी।

इतनी नहीं कि हड्डी टूट जाती। इतनी कि उसे मालूम हो जाए, वह चाहे तो तोड़ सकता है।

Mareia ने उसकी आँखों में देखा।

“मुझे छोड़ो।”

“पहले सच बताओ।”

“सच यह है कि इस वक़्त मुझे तुमसे डर लग रहा है।”

उसकी पकड़ बस ज़रा-सी ढीली पड़ी।

इस वाक्य ने उसे होश में नहीं लौटाया। उसे अपमान लगा।

“तो अब मैं ज़ुल्म ढाने वाला हो गया।”

“तुम वह आदमी हो जिसने मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मुझे पकड़ रखा है।”

तब उसने उसे मारा।

Mareia खड़ी रही। कमरे में कुछ टूटा नहीं और पहली नज़र में कोई पहचान नहीं पाता कि क्या हुआ है। उसके गाल पर खुली हथेली की तपिश रह गई। एक पल को उसकी साँस थम गई।

Arien का चेहरा तुरंत सफ़ेद पड़ गया।

“Mareia—”

उसने हाथ उठा दिया।

उसे अपने हाथ से रोकने के लिए नहीं। उस कहानी को रोकने के लिए जो वह अब सुनाने वाला था।

कि वह ऐसा नहीं चाहता था।

कि उसी ने उसे उकसाया।

कि उसी ने उसे डरा दिया।

कि यह प्रेम था, बस कुछ अधिक ही प्रबल।

“नहीं,” उसने कहा।

वह कमरे का सबसे धीमा शब्द था।

और सबसे प्रबल।

उसी रात वह चली गई।

सब कुछ नहीं लिया। उतना ही लिया जितना एक थैले में और उस एक आत्मा में उठा सकती थी जिसने आख़िरकार अपने भय के लिए क्षमा माँगना छोड़ दिया था।

अगले कुछ हफ़्ते अजीब तरह से सूने थे। Arien उसे लिखता रहा, फिर चुप हो गया, फिर साझा परिचितों के हाथ संदेश भेजने लगा। एक बार उसकी काम की इमारत के सामने आ खड़ा हुआ। उसने उसके विरुद्ध शिकायत दर्ज नहीं की। दया से नहीं। इसलिए कि वह नहीं चाहती थी कि उसकी आज़ादी की पहली सार्वजनिक कहानी भी उसी की हो।

फिर Nitra में वह बहस हुई।

और Jesair आया।

उद्धारक बनकर नहीं। Mareia को इस विचार से ही चिढ़ थी कि किसी स्त्री को एक पुरुष से दूर जाने के लिए दूसरे पुरुष के हाथ बचाया जाना ज़रूरी हो। वह अपने बल पर गई थी।

Jesair कुछ और था।

वह ऐसे संसार का साक्षी था जिसमें उसके साथ रहते हुए Mareia को अपने को छोटा नहीं करना पड़ता था।

सार्वभौमिक मूल आय पर बहस के बाद वे सभागार से निकलकर संघ की परिषद के भीतरी आँगन में साथ आए। शाम के Nitra में धीमी गुनगुनाहट थी। उनके ऊपर से एक यात्री यान गुज़रा, इतना शांत कि पत्थर की नाली में बहते पानी की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

“आज आपने एक ऐसी बात कह दी जिसके लिए वे आपको माफ़ नहीं करेंगे,” Mareia ने कहा।

“कौन-सी?”

“कि इंसान की निजता की रक्षा होनी चाहिए, सत्ता की अदृश्यता की नहीं।”

Jesair रेलिंग से टिक गया।

“क्या आपको लगता है, मैं ग़लत था?”

“नहीं। बस डर है कि कुछ लोग आपके इस वाक्य का इस्तेमाल स्वास्थ्य अभिलेखों को खोलने के लिए भी करेंगे।”

“मैंने यह नहीं कहा था।”

“जानती हूँ। कल उस आयोग को भी समझा दीजिएगा जिसने मुझे अभी से तीन आवेदन भेज रखे हैं।”

Jesair ने अपने इंटरफ़ेस पर सूचनाएँ देखीं। उसे भी वे मिल चुकी थीं।

“सुबह?”

“आठ बजे। थोड़ा धैर्य साथ लाइएगा।”

Mareia ने कलाई पर अपनी आस्तीन ठीक की। “मैं ऐसे लोगों को भी जानती हूँ जो दूसरे की ज़िंदगी में हर ताक-झाँक को फ़िक्र का नाम देते हैं।”

Jesair ने कोई प्रश्न नहीं किया। यह बात उसने उसी पल देख ली। अधिकतर लोग पूछ लेते कि क्या हुआ था। कुछ चिंता से, कुछ कौतूहल से, कुछ इसलिए कि अपनी कोई राय तय कर सकें। Jesair ऐसे मौन रहा कि उसकी कहानी पर उसी का अधिकार बना रहा।

“Arien Korveth,” आख़िर उसने कहा।

Jesair ने सिर हिलाया।

“आज मैंने उसे सभागार में देखा था।”

“वह आपको देख रहा था।”

“जानता हूँ।”

“किसी विरोधी की तरह नहीं।”

“जानता हूँ।”

Mareia ने उसे देखा।

“आपको बेचैनी नहीं होती?”

“होती है। बस कोशिश करता हूँ कि अपनी बेचैनी को अपने आचरण पर हुकूमत न करने दूँ।”

वह वाक्य उसके भीतर रह गया।

बाद में वे Nitra के पुराने इलाक़े से साथ गुज़रे। ऐसा कुछ तय नहीं हुआ था। बस दोनों में से कोई दूसरी राह नहीं मुड़ा। अभिलेखों की बात हुई, Auriola के बच्चों की, इस बात की कि क्या संसार को बदलना संभव है, बिना उसे और निर्दयी बनाए।

विदा होते समय एक छोटी-सी बात हुई।

Mareia हाथ मिलाना चाहती थी, लेकिन आख़िरी पल में उसकी तीन उँगलियाँ Jesair की कलाई के भीतर की ओर छू गईं। वह जान-बूझकर नहीं हुआ। जैसे विचार के आने से पहले ही हाथ चल पड़ा हो।
दोनों एक पल के लिए चुप हो गए।

“क्षमा कीजिए,” उसने कहा।

“किसलिए?”

“मालूम नहीं।”

Jesair ने वहाँ देखा जहाँ उसने छुआ था।

“अजीब है,” उसने धीरे से कहा।

“क्या?”

पल भर को लगा जैसे वह शब्द ढूँढ़ रहा है।

“मुझे लगा कुछ याद आ रहा है। पर क्या, यह नहीं जानता।”

Mareia ने उत्तर नहीं दिया।

उसे भी ऐसा ही लगा था।

वह अनुभूति क्षीण और धुँधली थी, जैसे किसी ऐसे कमरे में गूँज सुनाई दे जिसमें उसने कभी क़दम ही न रखा हो।

विदा लेकर जब वह Nitra की रोशन सड़कों से अकेली लौटी तो एक लंबे अरसे बाद पहली बार उसे नहीं लगा कि अकेलापन कोई दंड है।
बाद में उस रात Arien ने उसे एक ही संदेश भेजा।

निजी फ़ैसले कभी निजी नहीं रहते।

Mareia देर तक उसे देखती रही।

फिर उसने उसे मिटाया नहीं।

वह नहीं जानती थी क्यों।

शायद इसलिए कि कुछ धमकियाँ पहले-पहल किसी ऐसे कथन का रूप धरकर आती हैं जिसे अभी साबित नहीं किया जा सकता।

12. पृथ्वी: पहाड़ पर यीशु

यीशु पतरस, यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने पहाड़ पर चढ़े। देर हो चुकी थी जब वे पथरीली पगडंडी पर बढ़ रहे थे। सूर्य पश्चिम को झुक रहा था और ढलान पर परछाइयाँ लंबी हो चली थीं। शिष्य चुपचाप उनके पीछे चलते रहे। वे नहीं जानते थे कि वे उन्हें वहीं क्यों ले जा रहे हैं, और एक विस्मयभरा भय ठंडी हवा की तरह उन्हें छूता था।

वे आसपास की धरती से बहुत ऊपर एक एकांत स्थान पर पहुँचे तो यीशु उनसे कुछ क़दम दूर हटे और आकाश की ओर आँखें उठाईं। वे ऊँचे स्वर में नहीं बोल रहे थे, लेकिन उनके होंठ हिलते थे और लगता था, किसी ऐसे से बात कर रहे हैं जो आँखों से ओझल है। पतरस, यूहन्ना और याकूब उनके पीछे खड़े रहे, पर यात्रा की थकान और रात के मौन ने उन्हें बाँध लिया। वे धरती पर बैठ गए और उनकी पलकें बोझिल हो गईं।

यीशु अभी प्रार्थना में थे कि उनके सामने कुछ ऐसा घटा जो मनुष्य की समझ से परे था। उनके मुख का रूप बदल गया। उनके वस्त्र ऐसी उज्ज्वल सफ़ेदी से चमक उठे जैसी पृथ्वी का कोई बुनकर नहीं जानता। वह न सन की सफ़ेदी थी, न ऊनी चोग़े की। वह एक प्रकाश था जो मानो भीतर से निकल रहा था। उनका मुख ऐसे दमक रहा था जैसे उसके पीछे सूरज खुल गया हो। फिर भी उस प्रकाश ने जाग उठने वालों की आँखों को नहीं झुलसाया।

पतरस चौंककर नींद से उठा, जैसे किसी ने उसे सपने में पुकारा हो। यूहन्ना ने आँखें खोलीं और उसकी साँस थम गई। याकूब दोनों हथेलियाँ धरती पर टेककर सामने देखता रहा। यीशु के पास दो पुरुष खड़े थे। वे न गाँवों से आए पथिकों जैसे थे, न मंदिर के आँगन में बैठे वृद्धों जैसे। वे महिमा में लिपटे थे। उनके मुख पर ऐसी गंभीरता थी जैसे वे कई युगों का आरंभ और अंत जानते हों।

वे यीशु से बात कर रहे थे। स्वर धीमे थे, पर शिष्यों को लगा कि वे उनकी बात एक साथ समझ भी रहे हैं और नहीं भी। वे उस यात्रा की बात कर रहे थे जो यरूशलेम में पूरी होनी थी, उस लहू की जो बहाया जाएगा, लोगों के भय की, याजकों की सत्ता की और उस घड़ी की जब मनुष्य का पुत्र अपने को उनके हाथों सौंप देगा जो प्रकाश को नहीं समझते।

पतरस काँपते हुए उन्हें देख रहा था। उसके हृदय में आनंद भय से घुला था। जब उसे लगा कि वे दोनों विदा होने को हैं, तो उसने यीशु से कहा,

“गुरु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है। आइए, हम तीन डेरे बनाएँ। एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।”

वह नहीं जानता था कि क्या कह रहा है। मनुष्य जब कुछ ऐसा देख ले जिसके लिए वह तैयार नहीं है, तो उसकी जीभ उसकी समझ से पहले दौड़ पड़ती है।

तब उनके ऊपर एक बादल बना। वह घाटी की धुंध की तरह नीचे से नहीं उठा था, न उसे समुद्र की हवा उड़ा लाई थी। वह ऊपर से उतरा, शांत और उजला, और उन्हें ढक लिया। शिष्य उसकी छाया में आए और उन पर बड़ा भय छा गया। क्योंकि बादल में प्रकाश था और उस प्रकाश में किसी की ऐसी उपस्थिति थी जिसके सामने मनुष्य का हृदय छोटा पड़ जाता है।

और बादल से एक स्वर निकला,

“यह मेरा चुना हुआ पुत्र है। इसी की सुनो।”

स्वर थमा तो बादल छँट गया। प्रकाश ऐसे लौट गया जैसे जल गहराइयों में लौटता है, और यीशु उनके आगे अकेले खड़े थे। उनका वस्त्र फिर किसी मनुष्य का वस्त्र था, उनके चेहरे पर देह की थकान थी। लेकिन आँखों में उन दूरियों की एक झलक रह गई थी जिन्हें शिष्य नहीं जानते थे।

देर तक उनमें से कोई नहीं बोला। वे पहाड़ से उतरे और अँधेरे में उनके पैरों तले पत्थर चरमराते रहे। पतरस ने कई बार पीछे मुड़कर देखा, मानो उसे उम्मीद हो कि चोटी पर वे दो पुरुष फिर दिखेंगे। पर अब उसे तारों से भरा आकाश ही दिखा।

अंत में वह साहस जुटाकर यीशु के पास आया।

“प्रभु,” उसने धीमे से कहा, “वे दो जो आपसे बात कर रहे थे… क्या वे एलिय्याह और मूसा थे?”

यीशु ने उसकी ओर देखा। उन्होंने तुरंत उत्तर नहीं दिया। कुछ क़दम और चलते रहे मानो एक-एक शब्द तौल रहे हों कि वह पतरस की सामर्थ्य से अधिक भार न ले आए।

“बात कुछ और पेचीदा है, शमौन,” आख़िर उन्होंने कहा।

पतरस की भौंहें सिकुड़ गईं।

“कैसे पेचीदा, प्रभु? हमने उन्हें देखा। और हमें मालूम था कि वे वही हैं।”

यीशु ठहर गए। ऊपर तारे चमक रहे थे और रात निर्मल थी। उन्होंने आकाश की ओर हाथ उठाया।

“बच्चा दीपक देखता है तो समझता है कि रोशनी दीये की मिट्टी में रहती है। आदमी तारा देखता है तो समझता है कि वह आकाश के गुंबद पर बस एक बिंदु है। पर पिता ने उससे कहीं अधिक रचा है जितने को मनुष्य नाम दे सकता है।”

पतरस ने आँखें उठाईं।

“आप स्वर्गदूतों की बात कर रहे हैं?”

“उनकी भी जिन्हें तुम स्वर्गदूत कहोगे,” यीशु ने कहा। “लेकिन जो कुछ ऊपर से आता है, उस सबके पंख नहीं होते।”

पतरस समझा नहीं। यूहन्ना और याकूब पास आ गए। उन्हें लग रहा था कि यीशु ऐसी बातें कह रहे हैं जो उन्होंने पहले कभी उनके सामने प्रकट नहीं की थीं।

यीशु ने आगे कहा,

“वे रोशनियाँ दिखती हैं? तुम समझते हो वे केवल दिन और वर्ष पहचानने के लिए दी गई हैं। पर उनमें से कई के पास ऐसे संसार हैं जिन्हें पिता ने निर्जन नहीं छोड़ा। ऐसी जगहें हैं जहाँ दूसरे सूरज के नीचे नदियाँ बहती हैं, जहाँ पौधे किसी और प्रकाश की ओर अपने पत्ते उठाते हैं और जहाँ मनुष्य जैसे प्राणी वैसे ही सत्य खोजते हैं जैसे तुम।”

पतरस का चेहरा पीला पड़ गया।

“मनुष्य?” उसने पूछा।

“मनुष्य,” यीशु ने उत्तर दिया, “भले ही सब तुम्हारे जैसे न हों। ज्ञान में कुछ तुमसे बड़े हैं। तुम्हारे पुरखे पहले नगर बनाते, उससे भी पहले कुछ ने प्रकृति के रहस्य जान लिए थे। वे उन घावों को भर सकते हैं जो तुम्हें असाध्य लगते हैं। दूरी से बिना शब्दों के बात कर सकते हैं। उन विस्तारों को पार कर सकते हैं जो तुम्हें अगम्य लगते हैं। और जब ऐसा कोई मनुष्य तुम्हारे बीच कुछ करता है, तुम उसे चमत्कार कहते हो।”

याकूब काँप उठा।

“तो चमत्कार चमत्कार नहीं है?”

यीशु हलकी मुसकान के साथ उसकी ओर मुड़े।

“बच्चे के लिए तो वह बीज भी चमत्कार है जिससे पेड़ उगता है। ज्ञानी के लिए वह जीवन का नियम है। पर क्या इससे पिता की महिमा घट जाती है? नहीं। क्योंकि जिस नियम को मनुष्य जान लेता है, वह अब

भी परमेश्वर का नियम है। और जिस रहस्य को मनुष्य खोलता है, वह फिर भी ऐसा रहस्य है जिसे खोलने की उसे अनुमति मिली है।"

पतरस चुप रहा। दूसरे संसारों की बात से उसे पहाड़ के बादल से भी अधिक डर लग रहा था।

"और वे दोनों?" उसने फिर पूछा। "अगर वे उस तरह मूसा और एलिय्याह नहीं थे जैसा हमने समझा, तो वे कौन थे?"

यीशु ने घाटी में देखा, जहाँ दूर गाँवों की आग टिमटिमा रही थी।

"वे वह थे जिसे तुम समझ सकते थे," उन्होंने कहा। "और साथ ही उससे बढ़कर भी थे। वे उन नामों में आए जिन्हें तुम्हारा हृदय जानता है। वे बिना आवरण के आते तो तुम मुँह के बल धरती पर गिर जाते और कुछ भी न समझते।"

"हमें सच बताइए," पतरस ने आग्रह किया।

यीशु ने उसे स्नेह से देखा, पर उस दृष्टि में दृढ़ता भी थी।

"शमौन, यदि मैं आज तुम्हें पूरा सत्य बता देता तो तुम उसे नहीं समझते। तुम उससे या तो एक मूर्ति बना लेते या एक डर। और दोनों में से कोई भी विश्वास नहीं है।"

पतरस ने सिर झुका लिया।

यीशु आगे बढ़े, वे उनके पीछे चले।

कुछ देर बाद उन्होंने कहा,

"इन संसारों के बीच कुछ ऐसे हैं जिन्होंने मानवजाति का संरक्षण अपने ऊपर लिया है। इसलिए नहीं कि तुमसे स्वतंत्रता छीन लें, बल्कि इसलिए कि लौ जलना सीखे उससे पहले ही दम न तोड़ दे। वे तुम्हारे क़दम देखते हैं, उन सीमाओं की रखवाली करते हैं जिन्हें पार करने का समय तुम्हारे लिए अभी नहीं आया, और कभी-कभी इतिहास को छू लेते हैं, जब वह किसी ग़लत दिशा में टूटकर मुड़ने को होता है।"

यूहन्ना ने पूछा,

"और प्रभु, आप उन्हें जानते हैं?"

यीशु ने उत्तर दिया,

"मैं उन्हें जानता हूँ। और वे मुझे जानते हैं।"

इन वचनों में कुछ था जिसे शिष्य नाम नहीं दे सके। यह किसी गुरु की नबियों के बारे में कही बात जैसी नहीं थी। जैसे किसी की स्मृति हो जो मनुष्य की राह की पहुँच से भी कहीं दूर से आया हो।

पतरस ने फिर आकाश को देखा। तारे अब उसे आकाश के गुंबद पर जड़ी छोटी-छोटी बत्तियों जैसे नहीं लगे। वे द्वार जैसे थे। और हर द्वार के पीछे कोई संसार हो सकता था जिसकी आँखें भी इस ओर देख रही हों।

“आपने हमें यह क्यों दिखाया?” उसने पूछा।

यीशु पगडंडी के किनारे रुक गए। रात शांत थी।

“क्योंकि एक घड़ी आएगी जब तुम मेरी दुर्बलता देखोगे,” उन्होंने कहा। “तुम मुझे बँधा हुआ देखोगे। मुझे पिटा हुआ और अकेला छोड़ दिया गया देखोगे। लोग जिसे नहीं समझते उसकी हँसी उड़ाएँगे, यह भी तुम देखोगे। तब इस पहाड़ को याद करना। याद करना, प्रकाश देह में छिप सकता है, पर देह उसका नाश नहीं कर सकती।”

किसी ने उत्तर नहीं दिया।

वे और नीचे उतरे तो पौ फटने लगी। उजाले की पहली छुअन पत्थरों पर पड़ी और धरती फिर अपने पहचाने रूप में लौट आई। लेकिन पतरस में कुछ भी पूरी तरह पहले जैसा नहीं रहा। वह यूहन्ना और याकूब के साथ चल रहा था, पर मन से अभी भी ऊपर था, बादल में, तारों के नीचे, उन पुरुषों के सामने जो मूसा और एलिय्याह थे और फिर भी उनसे कुछ बढ़कर थे।

और यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे किसी से इसकी चर्चा न करें।

क्योंकि हर सत्य मनुष्यों को एक ही बार में नहीं दिया जा सकता। कुछ सत्य तब तक प्रतीक्षा करते हैं जब तक मनुष्य के भीतर उन्हें धारण करने का पात्र बड़ा न हो जाए।

13. Elarion: Arien Korveth

Arien Korveth जन्म से बुरा आदमी नहीं था।

बात इतनी सरल होती तो क्या बात थी। सरल व्याख्याएँ तो इतिहास की ओर से उन लोगों पर एक कृपा हैं जो उलझे हुए सच की ज़िम्मेदारी उठाना नहीं चाहते।
सबसे पहले वह बस किसी का बेटा बनकर जन्मा था।

और दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार वह अपनी माँ से करता था।

उसकी याद में जहाँ वह पहली बार महफ़ूज़ था, वह जगह उसकी माँ थी।

बचपन में जब वह गिरता और घुटना छिल जाता, तो चंद मीटर दूर दीवार पर टँगे चिकित्सा मॉड्यूल के पास नहीं दौड़ता था। माँ के पास दौड़ता था। स्कूल में पहली बार बुरे अंक मिले तो दो घंटे पिता से छिपाए रहा, फिर माँ को दिखाए। पड़ोस के लड़के से झगड़ा हुआ तो वह अपने को बिल्कुल सही मानता हुआ ग़ुस्से में घर आया। माँ ने उसे तब तक बोलने दिया जब तक कहानी से वे सारी बातें एक-एक करके झड़ नहीं गईं जो उसने अपनी ओर से जोड़ ली थीं।
माँ को एक अनोखी बात आती थी। वे उसे टोकने में जल्दी नहीं करती थीं।

उसके पास बैठ जातीं।

सुनती रहतीं।

और जब वह वे सारे शब्द उगल चुका होता जिनकी ओट में आदमी अपना दोष ख़ुद से छिपाता है, तब कभी-कभी वे पूछतीं,
“अब बताओ, हुआ असल में क्या था?”

और Arien अक्सर उन्हें सच बता देता।

उनके सामने उससे चूक हो सकती थी। चूक उसी पल उसकी क़ीमत का फ़ैसला नहीं बन जाती थी। उसे ग़ुस्सा आ सकता था और वह फिर भी भला रह सकता था। वह रो सकता था और माँ उसे यह नहीं समझाती थीं कि रोने से क्या हल होगा।
उसके पिता अलग थे।

पिता उसे चाहते थे। इस पर लड़के को कभी कोई गहरा संदेह नहीं हुआ। बस उनका प्यार नियमों का रूप लेकर आता था।

पिता हर बात को ठीक-ठीक निभाने में विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि समझौते का मतलब तभी है जब तकलीफ़ के वक़्त भी वह क़ायम रहे। जिस बात को कह चुकने के बाद हालात देखकर ढीला किया जा सके, वह वचन नहीं, एक सुझाव है।

उनका काम क़ानूनी ढाँचों और मुद्रा-नियमन से जुड़ा था। दिन भर वे तय करते कि एक पक्ष शर्त पूरी करे और दूसरा न करे तो क्या हो, कब किसी का अधिकार बनता है, कब कोई दायित्व समाप्त हो जाता है और '*समय पर*' का ठीक-ठीक अर्थ क्या है।

यही सोच उनके साथ घर लौटती थी।

नौ बरस की उम्र में Arien को एक पुरानी यांत्रिक पहेली की धुन लग गई।

रूबिक क्यूब।

Elarion पर ऐसे खेल थे जो मनुष्य के लिए समूचे संसार रच सकते थे, युद्ध, नगर या दूसरे ग्रह सजीव कर सकते थे। फिर भी Arien हफ़्तों उस छोटे-से रंगीन घन पर झुका रहा। उसे चैन नहीं पड़ता था कि इतनी सादी चीज़ के भीतर उसका क्रम कहाँ छिपा है।

पिता का ध्यान उस पर गया।

“जिस दिन इसे बिना मदद के हल कर लोगे,” एक शाम उन्होंने कहा, “मैं तुम्हें Sarena का चिड़ियाघर दिखाने ले चलूँगा।”

Arien ने सिर उठाया।

वह कभी चिड़ियाघर नहीं गया था। माँ ने उसे उसकी रिकॉर्डिंग दिखाई थीं। तीन महाद्वीपों के जीव, विराट जलाशय, निशाचर जीवों के मंडप और एक पुराना जंगल जिसे गुंबद के नीचे लगभग अपने हाल पर बढ़ने दिया गया था।

“सच?”

“अगर इसे हल कर लोगे।”

“पूरा?”

पिता ज़रा मुस्कराए।

“आधा कहना होता तो आधा ही कहता।”

अगले कई दिन Arien इतना अभ्यास करता रहा कि उँगलियाँ दुखने लगीं।

पहले उसने चालें रटीं। फिर समझा कि तरीक़ा याद कर लेना काफ़ी नहीं है। उसे जानना था कि अलग-अलग टुकड़े अपनी जगह क्यों बदलते हैं। एक ओर की सही चाल से दूसरी ओर का क्रम क्यों बिगड़ जाता है और उसे बाद में बहाल करने के लिए अभी बिगड़ने देना क्यों ज़रूरी है।

घन ने उस पर जादू कर दिया था।

वह एक नन्ही-सी दुनिया थी जिसमें अव्यवस्था असली नहीं थी।

बस अभी तक आदमी को तरीक़ा मालूम नहीं था।

सैर पर जाने से दो दिन पहले उसने पहली बार उसे हल कर लिया।

फिर दूसरी बार।

जाने के एक दिन पहले शाम तक वह लगभग बिना सोचे चालें दोहरा सकता था।

माँ ने उसके बालों में उँगलियाँ फेरीं।

“तो कल तुम जानवरों को देखोगे।”

Arien मुस्कराया।

“अगर इसे हल कर लूँ।”

माँ ने पल भर को पिता की ओर देखा।

“पर अब तो तुम्हें हल करना आता है।”

Arien तब नहीं समझा कि उन्होंने यह क्यों कहा।

अगले दिन समझ गया।

वे चिड़ियाघर के फाटक के सामने खड़े थे।

ऊँची पारदर्शी दीवारों के पार उसे पेड़ों की फुनगियाँ दिख रही थीं। उधर से उन जीवों की आवाज़ें आ रही थीं जिन्हें वह अब तक बस रिकॉर्डिंग से जानता था। लोग बच्चों का हाथ थामे फाटकों से गुज़र रहे थे।

Arien के पाँव एक जगह टिक नहीं रहे थे।

पिता ने घन उसे थमाया।

“चलो।”

Arien हँस पड़ा।

“अभी?”

“बात तय हुई थी कि तुम इसे हल करोगे।”

“पर मैंने कल ही तो हल किया था।”

“चिड़ियाघर के बाहर हम आज खड़े हैं।”

माँ ने पिता को देखा।

“क्या अभी करना सचमुच ज़रूरी है?”

“अगर इसे आता है तो क्या परेशानी है?”

Arien ने घन थाम लिया।

पहले सब आसानी से हुआ। पहली परत। दूसरी। कोने। किनारे।

फिर उसे ख़याल आया कि पिता उसे देख रहे हैं।

उनके पीछे से दो बच्चों वाला एक परिवार गुज़रा। फाटक खुला और पल भर को पेड़ों के बीच जाती चौड़ी राह दिख गई।

Arien के हाथ तेज़ चलने लगे।

और वह चूक गया।

ज़रा-सी चूक।

आख़िरी चालों में उसने एक फलक उलटी दिशा में घुमा दिया।

जब उसे समझ आया तो उसके हाथ ठिठक गए।

घन लगभग हल हो चुका था। पाँच फलक ठीक दिख रहे थे। आख़िरी पर चंद खाने अपनी जगह नहीं थे।

“रुकिए,” उसने कहा। “मैं फिर करता हूँ।”

पिता ने समय देखा।

“नहीं।”

Arien को लगा वे मज़ाक कर रहे हैं।

“क्या?”

“तुमने इसे हल नहीं किया।”

“पर मुझे हल करना आता है।”

“अभी तुमसे नहीं हुआ।”

“बस आख़िर में ज़रा-सी भूल हो गई।”

“हाँ।”

Arien ने फाटक की ओर देखा।

फिर पिता की ओर।

“तो मैं ठीक कर देता हूँ।”

“हमारी यह बात नहीं हुई थी कि तुम इसे तब तक ठीक करते रहोगे जब तक हल न हो जाए।”

माँ दोनों के बीच आ गईं।

“तुम जानते हो कि इसे आता है। कल इसने हमें करके दिखाया था।”

पिता ने शांत स्वर में उन्हें जवाब दिया।

“तो इसे आज भी ध्यान देना चाहिए था।”

Arien की आँखें जलने लगीं।

“प्लीज़।”

पिता ने सिर हिलाया।

“अगर नतीजा देखकर किसी का मन दुखे और उसी पल समझौता ख़त्म हो जाए, तो फिर कोई समझौता हुआ ही कहाँ था?”

वे सवारी वाले मॉड्यूल की ओर मुड़ गए।

Arien वहीं खड़ा रह गया।

फाटक के उस पार बच्चे चल-फिर रहे थे। कहीं दूर एक बड़े जानवर की गहरी आवाज़ आई और लोग उसे देखने के लिए दर्शक-मंच की ओर दौड़ पड़े।

वे जीव वहीं थे।

उससे कुछ दर्जन मीटर दूर।

बस फाटक पार करना था।

माँ Arien के पास खड़ी रहीं। पिता मॉड्यूल के पास जाकर रुक चुके थे।

लड़का हाथों में लगभग सुलझा हुआ घन लिए खड़ा था। उसके गालों पर आँसू बह रहे थे।

“मुझे उनसे नफ़रत है,” उसने कहा।

माँ घुटनों के बल उसके सामने बैठ गईं।

“नहीं।”

“है।”

“इस वक़्त है।”

Arien ने आँसुओं के बीच से उनकी ओर देखा।

माँ ने घन अपने हाथ में ले लिया।

“तुम्हारे पिता कभी-कभी नियम का अक्षरशः पालन करने को ही इंसाफ़ समझ बैठते हैं।”

Arien को वह बात याद रह गई।

“अगर कोई नियम लागू होता है तो क्या वह न्यायपूर्ण नहीं है?”

“हमेशा नहीं।”

“तो नियम किसलिए हैं?”

माँ पल भर जवाब ढूँढ़ती रहीं।

“ताकि जब हमें समझ न आए क्या करें, वे फ़ैसला लेने में हमारी मदद करें। इसलिए नहीं कि उनकी आड़ में हम महसूस करना ही छोड़ दें।”

फिर उन्होंने उसे घन लौटा दिया।

“और एक बात।”

“क्या?”

“अगर तुम कोई एक काम बिल्कुल ठीक से न कर पाए, तो इससे तुम पूरे के पूरे नाकाम नहीं हो जाते।”

Arien ने उस वक़्त सिर हिला दिया था।

लेकिन उससे कहीं गहरा कुछ और उसके भीतर दर्ज हो गया।

वह फाटक, जिसके सामने आदमी खड़ा रह जाता है जबकि मंज़िल हाथ भर की दूरी पर है।

वह शर्त, जिसे पूरा करने से एक ही ग़लत चाल आदमी को रोक सकती है।

और वह दुनिया, जिसे इस बात से कोई सरोकार नहीं कि कसर कितनी थोड़ी रह गई थी।

कुछ बरस बाद उस पर ऐसी निर्ममता बीती जिसने दुनिया को देखने का उसका ढंग बुनियाद से बदल दिया।

उस दिन वह माँ के साथ अकेला था।

वे उसकी मौसी से मिलकर लौट रहे थे कि यातायात की एक परत में तालमेल बिगड़ गया। तीन स्वचालित मॉड्यूल लगभग एक साथ एक ही गलियारे में घुस आए।

पहली प्रणाली ने टक्कर टाल दी।

दूसरी नहीं टाल सकी।

बाद में Arien को टक्कर किसी आवाज़ की तरह याद नहीं थी।

उसे रोशनी याद थी।

सफ़ेद।

चकाचौंध कर देने वाली।

और फिर एक करवट उलटी हुई दुनिया।

सुरक्षा-क्षेत्र ने उसे थाम लिया। होंठ फट गया था, कंधे पर गुमचोट थी और माथे पर ख़ून था, लेकिन वह हिल सकता था।

उसकी माँ नहीं हिल सकती थीं।

मॉड्यूल के ढाँचे का एक हिस्सा उनकी कमर के नीचे का शरीर दबाए था। वे होश में थीं। छोटी-छोटी उथली साँसें ले रही थीं।

Arien रेंगकर उनके पास गया।

“माँ।”

उन्होंने उसकी ओर देखा।

और तब भी मुस्कराईं।

बाद में सबसे ज़्यादा उसी ने उसका पीछा किया।

उनके चेहरे के दर्द ने नहीं।

उस मुस्कान ने।

जैसे टूटे हुए मॉड्यूल में भी, धुएँ, सायरनों और ख़ून के बीच, वे अब भी उसका सुरक्षित किनारा थीं।

“मैं यहीं हूँ,” उन्होंने कहा।

बचावकर्मी जल्दी पहुँच गए।

Elarion की प्रणालियाँ यातायात की किसी आपदा पर इतनी जल्दी हरकत में आ जाती थीं कि तब तक आदमी को उसके घटने का एहसास भी न हुआ हो। दुर्घटनास्थल के ऊपर बचाव मॉड्यूल आ गए। चिकित्सा ड्रोन घायलों के बीच घूम रहे थे और हर शरीर के ऊपर उसकी पल-पल की दशा जगमगाने लगी थी।

Arien की नज़र केवल अपनी माँ पर थी।

एक चिकित्साकर्मी उनके पास घुटनों के बल बैठा।

दूसरा बग़ल के मॉड्यूल के मलबे की ओर मुड़ा।

वहाँ से उन्होंने एक बच्चे को निकाला।

एक लड़का, लगभग Arien की उम्र का।

कपड़े फटे थे, चेहरे पर ख़ून था और एक बाँह उसके शरीर के नीचे अजीब तरह से मुड़ी हुई थी।

उसने आँखें खोलीं तो Arien को स्वर्ण वलय दिखाई दिया।

एकदम साफ़।

मानो चमक रहा हो।

चिकित्सा प्रणाली ने फ़ौरन नई जानकारी जोड़ दी।

एक बचावकर्मी ने सामने उभरती सूचना देखी।

“ऑरेलियाई पुनर्जनन क्षमता।”

दूसरे ने सिर हिलाया।

फिर कुछ ऐसे वाक्य कहे गए जिन्हें Arien उस वक़्त पूरी तरह समझ नहीं पाया।

बचने की संभावना।

उपलब्ध समय।

भीतर भारी रक्तस्राव।

पुनर्जनन की प्रतिक्रिया।

गहन चिकित्सा के साथ ले जाने को एक वाहन उपलब्ध।

दूसरा मॉड्यूल रास्ते में।

तब तक बहुत देर हो जाएगी।

“पहले बच्चे को,” दल के प्रमुख ने कहा।

Arien ने सिर उठाया।

“नहीं।”

किसी ने उसे नहीं सुना।

“नहीं!”

बचावकर्मी लड़के को उठाकर ले चले थे।

Arien ने उनमें से एक के कपड़े पकड़ लिए।

“मेरी माँ को!”

वह आदमी उसकी ओर मुड़ा।

“दूसरा मॉड्यूल आ रहा है।”

“तो फिर मेरी माँ को ले जाइए!”

“हमें फ़ैसला इसके आधार पर करना पड़ता है कि—”

“ये मर जाएँगी!”

चिकित्साकर्मी ने पल भर आँखें मूँद लीं।

शायद तभी पहली बार Arien ने देखा कि ठीक प्रक्रिया का पालन कर रहे आदमी को भी मालूम हो सकता है कि उसके हाथों कुछ भयानक हो रहा है।
“हम दोनों को बचाने की कोशिश कर रहे हैं।”

Arien माँ की ओर मुड़ा।

उन्होंने सारी बातचीत सुनी होगी।

“लड़के को ले जाइए,” वे फुसफुसाईं।

Arien ने अविश्वास से उनकी ओर देखा।

“नहीं।”

“Arien।”

“नहीं।”

उन्होंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया।

उनकी उँगलियाँ काँप रही थीं।

उसने उन्हें थाम लिया।

“माँ, उनसे कहो।”

“मेरी तरफ़ देखो।”

“उनसे कहो कि तुम्हें ले जाएँ।”

“Arien।”

उनकी आवाज़ में वही शांति थी जिसे वह बचपन से पहचानता था।

रसोई की शांति।

शामों की शांति।

उस इंसान की शांति जिसके पास वह हमेशा चला आता था, जब दुनिया इतनी बड़ी हो जाती थी कि उससे सँभाले न सँभले।

“वे उस बच्चे को बचा सकते हैं,” उन्होंने कहा।

“तुम्हें भी।”

उन्होंने जवाब नहीं दिया।

Arien की पीठ पीछे चिकित्सा मॉड्यूल के दरवाज़े बंद हुए।

ठीक उससे पहले उसे एक बार फिर उस अनजान लड़के का चेहरा दिखा।

और उसकी आँखें।

अपारदर्शी दीवार के पीछे स्वर्ण वलय ओझल हो गया।

माँ को ले जाने वाला दूसरा वाहन कुछ मिनट बाद पहुँचा।

बाद की रिपोर्ट में ठीक-ठीक लिखा था कि कितने मिनट बाद।

बरसों तक Arien को वह संख्या ज़बानी याद रही।

अस्पताल के रास्ते में उसकी माँ की मृत्यु हो गई।

बाद में डॉक्टरों ने समझाया कि पहले वाहन में ले जाने पर भी उनके बचने की गारंटी नहीं थी। ढाँचे के नीचे दबने से श्रोणि की बड़ी रक्तवाहिकाएँ फट गई थीं। मौके पर मौजूद ड्रोन रक्तस्राव केवल धीमा कर सकते थे। घाव बंद करने के लिए एक विशेष मॉड्यूल चाहिए था। पुनर्जनन चिकित्सा के लिए स्थिर

रक्तसंचार और कई घंटे चाहिए थे, जो अब उनके पास नहीं थे। बचावकर्मियों का निर्णय नियमावली के अनुरूप था। बग़ल के मॉड्यूल के लड़के की उम्र, उसकी चोटों की प्रकृति और उसकी ऑरेलियाई पुनर्जनन क्षमता को देखते हुए गहन उपचार से उसके बच निकलने की संभावना कहीं अधिक थी।

लड़का बच गया।

Arien की माँ नहीं बचीं।

अकेले स्वर्ण वलय ने फ़ैसला नहीं किया था।

वह उन कई बातों में से एक का दिखाई देने वाला चिह्न भर था जिन्हें प्रणाली ध्यान में रखती थी।

पर Arien के लिए इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था।

बच्चों को सदमा किसी विशेषज्ञ की रिपोर्ट बनकर याद नहीं रहता।

उन्हें एक तस्वीर याद रहती है।

Arien को मलबे के बीच पड़ी माँ याद थीं।

बचाव मॉड्यूल के दरवाज़े।

और उस बच्चे की सुनहरी आँखें, जो दूसरी ओर मुँद गई थीं।

इसी तरह Arien के भीतर ऑरेलियाइयों के प्रति नफ़रत जन्मी।

उसके पास कोई तर्क नहीं था।

कोई इतिहास नहीं था।

कोई राजनीतिक सिद्धांत नहीं था।

उसका एक रंग था।

सुनहरा।

अंत्येष्टि के बाद पिता ने दुर्घटना का पूरा ब्योरा माँगा।

उन्होंने दूरमापी आँकड़े पढ़े, प्रतिक्रिया में लगा समय, घायलों की प्राथमिकता तय करने के नियम, चिकित्साकर्मियों के फ़ैसले और पूर्वानुमान के मॉडल, सब जाँचे।

Arien को उम्मीद थी कि वे दोषी को ढूँढ़ निकालेंगे।

उसे किसी दोषी की ज़रूरत थी।

आख़िर किसी से तो ग़लती हुई होगी।

किसी को तो इसकी ज़िम्मेदारी उठानी होगी।

कुछ दिन बाद पिता ने आख़िरी रिपोर्ट बंद की।

“उन्होंने वही किया जो सही था,” उन्होंने कहा।

Arien उन्हें देखता रहा।

“माँ मर गईं।”

पिता की आँखें झुक गईं।

“जानता हूँ।”

“तो जो उन्होंने किया वह सही कैसे था?”

पिता देर तक चुप रहे।

उनका चेहरा ऐसे तन गया था कि उस वक़्त Arien ने उसे निष्ठुरता समझा। बहुत बाद में उसने जाना कि कुछ लोग बाहर से टूटते नहीं दिखते तो इसलिए नहीं कि उन्हें दर्द नहीं होता। वे भीतर की ओर ढहते हैं, जहाँ उन्हें कोई नहीं देखता।

“हर सही फ़ैसले का नतीजा अच्छा नहीं होता,” पिता ने कहा।

उस वाक्य से Arien को घिन हो गई।

“तो उसके सही होने का क्या फ़ायदा?”

पिता ने जवाब नहीं दिया।

और पहली बार Arien को एक ऐसी बात का बोध हुआ जिसने फिर कभी उसका पीछा पूरी तरह नहीं छोड़ा।

प्रणाली हर काम नियम के मुताबिक कर सकती है और फिर भी कोई इंसान मर सकता है।

किसी को झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं।

किसी को क़ानून तोड़ने की ज़रूरत नहीं।

किसी की नीयत तक बुरी होने की ज़रूरत नहीं।

और नतीजे में एक क़ब्र हो सकती है।

उस दिन से वह हर तंत्र को दूसरी तरह पढ़ने लगा।

पहले उसे उनमें दिलचस्पी इसलिए थी कि चीज़ों का मर्म समझने में आनंद आता था।

अब उसे उन पर अधिकार चाहिए था।

अगर दुनिया एक ऐसा फ़ैसला करके उसकी माँ को छीन सकती थी जिसे ग़लती तक न कहा जा सके, तो अच्छा इंसान होना काफ़ी नहीं था।
सही होना काफ़ी नहीं था।

गिड़गिड़ाना भी काफ़ी नहीं था।

आदमी को समझना होगा कि दुनिया किस आधार पर फ़ैसले करती है।

और अगर वह उस तरफ़ खड़ा नहीं रहना चाहता जिसे प्रणाली इंतज़ार करने के लिए छोड़ देती है, तो फ़ैसला होने से पहले ही उसे वहाँ होना होगा जहाँ नियम बनते हैं।
इस तरह बचपन में उसने दो बातें सीखीं।

पहली यह कि दुनिया उनके हाथ में नहीं होती जो सही होते हैं। उनके हाथ में होती है जो उसके तंत्र को समझते हैं।

दूसरी यह कि जिस तंत्र को तुम देख नहीं पाते, तुम उसके चलाए चलते हो।

उसका जन्म पश्चिम के एक वेयरानी राज्य में प्रशासकों, वकीलों और मौद्रिक रणनीतिकारों के परिवार में हुआ था। माँ की मृत्यु के बाद घर वैसा ही रहा, फिर भी वह जगह उसमें कहीं नहीं बची जहाँ भागकर जाया जा सके।
पिता अब भी वहीं थे।

नियम भी।

रात का खाना अब भी साथ होता था।

मेज़ पर बाज़ार के उतार-चढ़ाव की बातें होतीं, गठबंधन के समझौतों की, नियमन की ख़ामियों की, और इस बात की कि किस राज्य को अब भी भ्रम है कि उसका केंद्रीय बैंक स्वतंत्र है।
दिल की बात लगभग कभी नहीं होती थी।

Arien ढल गया।

उसकी बुद्धि असाधारण थी। उसकी धार शल्यचिकित्सक के औज़ार जैसी सटीक थी। वह किसी समस्या की परतें चीरकर कमज़ोर जगह तक पहुँच सकता था। भाँप सकता था कि कौन पीछे हटेगा, किसे मनाया जा सकता है, किसे ख़रीदा और किसे किनारे करके निकला जा सकता है।
वेयरानी स्कूलों की नज़र में वह एक प्रतिभा था।

वित्तीय संघों की नज़र में एक निवेश।

राजनेताओं की नज़र में काम का आदमी।

अपनी नज़र में वह ऐसा आदमी था जिसे परदे के पीछे का खेल दिखता था।

किशोरावस्था में वह फिर माँ की दुर्घटना के अभिलेख पर लौटा।

एक बार नहीं।

बार-बार।

पहले उसने चिकित्साकर्मियों की ग़लती खोजी।

फिर एल्गोरिदम की।

बाद में उसने पता लगाने की कोशिश की कि नियमावली किसने मंज़ूर की थी और वह किन आँकड़ों पर बनी थी।

कोई षड्यंत्र नहीं मिला।

इससे उसे जितना ग़ुस्सा आया, षड्यंत्र मिल जाने पर भी न आता।

लड़के को इसलिए बचाया गया था कि प्रणाली ने उसके बचने की संभावना अधिक आँकी थी। उसका ऑरेलियाई जैविक स्वरूप अनेक कारकों में से सिर्फ़ एक था।

फिर भी अब Arien की नज़र हर जगह ऑरेलियाइयों पर पड़ने लगी।

समारोहों के प्रसारणों में।

वंशावली के दस्तावेज़ों में।

सबसे पुराने विद्यालयों में।

उन लोगों की कथाओं में जिनका शरीर अधिक तेज़ी से अपनी क्षति की भरपाई कर लेता था।

उन वंशों की किंवदंतियों में जिनके बारे में कहते थे कि कभी वे छूकर रोग हर सकते थे।

स्वर्ण वलय को एक सांस्कृतिक धरोहर बताया जाता था।

Arien को उसमें एक ऐसा लाभ दिखता था जो किसी को जन्म लेते ही मिल जाए।

अपने पेशे के शुरुआती दिनों में Arien ने यातायात प्रशासकों के सामने एक प्रस्ताव रखा। कई वाहनों की एक साथ दुर्घटना होने की स्थिति में गहन चिकित्सा वाले अतिरिक्त वाहन तैयार रखे जाएँ। कोई भव्य प्रदर्शन नहीं था। उसने पहुँचने में लगने वाला समय, मॉड्यूलों की तैनाती और उन्हें तैयार रखने की लागत की

गणना की थी। जब उससे कहा गया कि अधिकतर दिन ये साधन बेकार खड़े रहेंगे, तो उसने माँ की दुर्घटना की रिपोर्ट उनके सामने रखी और कहा कि वे इंतज़ार के मिनट भी हिसाब में जोड़ लें।

प्रस्ताव मंज़ूर हो गया। दो बरस बाद उसे एक टक्कर की सूचना मिली, जहाँ गहन चिकित्सा के दो मॉड्यूल एक साथ पहुँचे थे और गंभीर रूप से घायल दोनों लोग बच गए थे। उनमें एक ऑरेलियाई लड़का था। Arien ने वह सूचना सँभालकर रख ली। तब तक उसे विश्वास था कि अधिक न्यायपूर्ण नियम किसी इंसान की रक्षा कर सकता है, उसकी आँखों का रंग चाहे जो हो।

फिर भी ऑरेलियाइयों का एक सार्वजनिक उत्सव देखते हुए उसके मन में एक वाक्य उठा, जिस पर उसे अब भी थोड़ी शर्म आती थी।

मेरी माँ को भी तुमने ले लिया।

यह सच नहीं था।

उसकी बुद्धि यह जानती थी।

लेकिन उसका दर्द कोई विश्लेषक नहीं था।

आदमी बरसों यह जान सकता है कि उसकी नफ़रत की बुनियाद सही नहीं है और फिर भी उस पर अपना पूरा घर खड़ा कर सकता है। बस आगे चलकर उसे इतने तर्क मिलने चाहिए कि वह पुराने घाव का नाम बदलकर उसे अपना विश्वास कह सके।

Arien को वे तर्क मिल गए।

और फिर उसकी मुलाक़ात Mareia से हुई।

वह उसकी माँ जैसी नहीं थी।

न स्वभाव में, न जीने के ढंग में, न सोच में। Arien ऐसी तुलना को भोंडी समझता।

फिर भी उसके साथ बरसों बाद पहली बार उसे किसी ऐसी चीज़ का एहसास हुआ जिसे वह बचपन से जानता था।

पल भर के लिए दुनिया के सामने अपनी सफ़ाई देना छोड़ सकने का एहसास।

Mareia संवेदनशील थी, पर उसे अपने इशारे पर नचाया नहीं जा सकता था। स्नेही थी, पर कमज़ोर नहीं। जब वह उससे असहमत होती, तो जीतने के लिए नहीं। वह जो कुछ जितनी साफ़ निगाह से देखती थी, उसके साथ बेईमानी नहीं कर सकती थी।

शुरू में वह इस बात की क़द्र करता था।

उसके साथ कभी-कभी वह इंसान लौट आता था जिसे वह बरसों से तंत्रों के पीछे छिपाता रहा था।

फिर उसे उसी से डर लगा।

क्योंकि जिसकी आदमी को ज़रूरत होती है, उसे वह खो भी सकता है।

और Arien एक बार ऐसी जगह जान चुका था जहाँ हर चोट के बाद लौटता था, जब तक कि एक दिन दुनिया ने वह जगह उससे छीन नहीं ली।
सो वह वही करने लगा जो हर उस चीज़ के साथ करता था जिसे वह खोना नहीं चाहता था।

उसने उसे समझने की कोशिश की।

फिर पहले से जान लेने की।

फिर क़ाबू में रखने की।

वह याद रखता कि Mareia ने क्या कहा। किससे मिलती है। घर कब आती है। किन लोगों पर भरोसा करती है। किसका उस पर असर है। किन बातों से उसकी राय बदलती है।
पहले उसने ख़ुद को समझाया कि यह उसका ख़याल रखना है।

फिर कि यह उसकी फ़िक्र है।

आख़िरकार कि यह उसका अधिकार है।

और जब उसे दिखा कि किसी इंसान को वैसे सुरक्षित नहीं किया जा सकता जैसे धन के प्रवाह को, तो उसे ग़ुस्सा आने लगा।

Mareia को उसके तंत्र में किसी खाने में नहीं रखा जा सकता था।

उसे अपना माल नहीं बनाया जा सकता था।

और जब उसने जाना कि वह उसकी मिल्कियत नहीं बन सकती, तो वह उसी बात से नफ़रत करने लगा जिससे कभी उसे प्यार था।

उसके चले जाने के बाद घर कुछ ज़्यादा ही सलीके से सजा रह गया।

उसने कुछ नहीं तोड़ा। चीखी नहीं। सरेआम उसे कोई राक्षस नहीं ठहराया जिसके ख़िलाफ़ उसे अपनी सफ़ाई देने का मौक़ा मिलता।

वह चुपचाप एक 'नहीं' कहकर चली गई।

पहले कुछ दिन वह ख़ुद से कहता रहा कि वह लौट आएगी।

फिर कि किसी ने उसे बहका दिया है।

फिर उसके मन में Jesair Davion का चेहरा उभरा।

और उसके साथ वह पुराना रंग।

सुनहरा।

अजीब था कि दशकों के फ़ासले पर घटी दो घटनाएँ किसी के भीतर कितनी आसानी से एक-दूसरे को छू सकती थीं।

वह अनजान बच्चा जिसे दुर्घटनास्थल से ले जाया गया था।

वह पुरुष जो Mareia के बग़ल में खड़ा था।

दोनों ऑरेलियाई।

दोनों की आँखों में स्वर्ण वलय।

बुद्धि जानती थी कि दोनों में कारण और परिणाम का कोई रिश्ता नहीं।

घाव को ऐसे रिश्ते की ज़रूरत नहीं थी।

Arien ख़ुद से कहने लगा कि Mareia कभी सचमुच उसकी दुनिया की हो ही नहीं सकती थी। कि ऑरेलियाई अंत में अपनों को ही चुनते हैं, भले ही बातें सार्वभौमिकता, समानता और समूची सभ्यता की करें।

उसके मुताबिक निर्णायक घड़ी में वे वलय की ओर ही लौटते थे।

स्वर्ण वलय की ओर।

स्वयं से स्वीकार करने के बहुत पहले से वह उस चिह्न से नफ़रत करता था।

उसके लिए सबसे बुरा था Davion का वंश।

एक मिथक, जिस पर पढ़े-लिखे लोग हँसते थे पर जिसे कभी पूरी तरह छोड़ नहीं पाए। स्पर्श से रोग हरना। आने वाली विपत्ति भाँप लेना। ऐसी प्रकृति, जो उनकी बात सुने। जैविक कृत्रिम बुद्धि, क्वांटम सेंसरों और दूसरे ग्रह पर नगर बसा चुकी सभ्यता के लिए ये पुरानी परीकथाएँ थीं।

फिर भी संघ की परिषद के सभागार में Jesair Davion खड़ा होकर एक वाक्य भर कह दे, तो लोग चुप हो जाते थे।

बाद में Arien ने Nitra की बहस की रिकॉर्डिंग फिर चलाई।

Jesair के चेहरे पर उसे रोक दिया।

"इंसान की निजता की रक्षा होनी चाहिए। सत्ता की अदृश्यता की नहीं।"

Jesair शांत खड़ा था। उसे न विजय का प्रदर्शन चाहिए था, न अभिनय। ठीक इसी बात से Arien को चिंता होती थी।

महत्त्वाकांक्षी राजनेता को ख़रीदा जा सकता है।

जनता को बरगलाने वाले का भंडाफोड़ किया जा सकता है।

पर उस इंसान को अपने बस में करना कहीं कठिन है जिसे सत्ता की चाह नहीं और फिर भी दूसरों के विश्वास से सत्ता मिलती जाती है।

Arien ने उसकी आँखों की तस्वीर बड़ी की।

पल भर के लिए उनमें स्वर्ण वलय उभरा।

और उसके आसपास की दुनिया ग़ायब हो गई।

एक क्षण के अंश भर को उसे फिर दुर्घटनाग्रस्त मॉड्यूल से उठती जली हुई सामग्री की गंध आई।

उसे चिकित्साकर्मी की आवाज़ सुनाई दी।

ऑरेलियाई पुनर्जनन क्षमता।

उसे माँ का हाथ दिखा।

चिकित्सा मॉड्यूल के दरवाज़े।

लड़के की सुनहरी आँखें।

फिर वह वापस Nitra में था।

Jesair Davion की तस्वीर के सामने।

Arien का जी घृणा से मिचलाने लगा।

"नहीं," उसने ख़ाली कमरे से कहा।

उसे अभी ठीक-ठीक नहीं मालूम था कि उसका विरोध किससे था।

Jesair से।

Mareia से।

ऑरेलियाइयों से।

उस प्रणाली से जिसने कभी बिना किसी नफ़रत के फ़ैसला किया था और फिर भी उसकी माँ को उससे छीन लिया था।

शायद अपने ही अपमान से भी।

ये सब बातें अब उसके भीतर इतने पास-पास पड़ी थीं कि उनमें भेद करना मुश्किल होता जाता था।

और ठीक तभी उसकी काम की स्क्रीन पर एक सूचना जगमगाई।

संदेश एक निजी संचार चैनल से आया था, जिसका इस्तेमाल कोषों के वरिष्ठ प्रबंधक, राजनीतिक सलाहकार और वे लोग करते थे जो नहीं चाहते थे कि उनकी बातचीत आम अभिलेखों में दर्ज हो।
भेजने वाले का नाम नहीं था।

संदेश में एक जगह थी, समय था और बस एक वाक्य था।

श्री Thorne आज के वक्तव्य के परिणामों पर आपसे बातचीत करना चाहेंगे।

Arien ने उसे दो बार पढ़ा।

Kael Thorne के पास ऐसा कोई आधिकारिक पद नहीं था जो उसके प्रभाव के विस्तार से मेल खाता। न वह किसी सरकार का प्रमुख था, न केंद्रीय बैंक का। फिर भी जहाँ संपत्ति प्रबंधक, निवेश कोष, मीडिया, न्यास या राजनीतिक अभियान होते, वहाँ कहीं उसका नाम भी उभर आता।
लोग उसे सलाहकार कहते थे।

जो कुछ ज़्यादा जानते थे, वे उसे किसी उपाधि से नहीं पुकारते थे।

Arien ने संदेश मिटाया नहीं।

पहले उसने Jesair का भाषण फिर चलाया।

इस बार उसने Jesair को नहीं देखा।

उसने दृश्य में Kael को खोज लिया।

और फिर उसकी नज़र उस छोटे-से क्षण पर पड़ी जब Kael वक्ता की तरफ़ नहीं देख रहा था।

वह उसी की तरफ़ देख रहा था।

Arien ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

अगली शाम वे Nitra से बहुत ऊपर एक ऐसे कक्ष में मिले जो आधिकारिक रूप से अंतरराज्यीय आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने वाले एक न्यास का था।

Kael पहले से उसकी राह देख रहा था।

“श्री Korveth।”

“श्री Thorne।”

“आपके नाम से मैं काफ़ी पहले से परिचित हूँ।”

“क्या इससे मुझे ख़ुश होना चाहिए?”

“इससे आपको चौकन्ना होना चाहिए।”

Kael ने सम्मेलन की रिकॉर्डिंग खोली और Jesair के चेहरे पर रोक दी।

“जब साझा कृति का समय पक जाए, तब मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए,” उसने पढ़ा। “जो सबके काम आता है, वह सबको दिखना चाहिए।”

Arien को लगा था वह खिल्ली उड़ाएगा।

इसके बदले उसे Kael के चेहरे पर कुछ कहीं ज़्यादा दिलचस्प दिखा।

डर।

Kael Thorne उस विचार से डरता था।

पारदर्शिता उसके लिए नैतिक प्रश्न नहीं थी। उसके अस्तित्व पर ख़तरा थी। अगर Elarion में धन के सारे प्रवाह एक नक़्शे पर रखे जा सकें, तो उन पर केवल कर की चोरी नहीं दिखेगी।

दिखेंगे एक ही स्रोत से धन पाने वाले राजनीतिक दल।

वे समाचार माध्यम जो बाहर से एक-दूसरे से घृणा करते थे और भीतर एक ही पूँजी के अधीन थे।

न्यास।

बैंक।

कोष।

और Thorne घराना।

“अभी Davion का कोई संगठन नहीं है,” Kael ने कहा। “उसके पास न कोई दल है, न तंत्र, न कोई क़ानून।”

“तो आप उससे डरते क्यों हैं?”

“क्योंकि वह जो कहता है, वह लोगों को समझ आता है।”

Kael ने तस्वीर बंद कर दी।

“पेचीदा विचारों को समितियों में दफ़न किया जा सकता है। सीधे विचार अपने आप फैलते हैं।”

Arien पीठ टिकाकर बैठ गया।

“आपने मुझे यह बताने बुलाया कि आप एक ऑरेलियाई से डरते हैं?”

“मैंने आपको इसलिए बुलाया कि आप उससे डरते नहीं।”

“नहीं डरता।”

Kael एक पल चुप रहा।

“आप उससे नफ़रत करते हैं।”

Arien को अपनी गरदन की मांसपेशियाँ तनती महसूस हुईं।

“आप मेरे बारे में इतना नहीं जानते।”

“मैं जानता हूँ आप उसे किस तरह देख रहे थे।”

“किसी की नज़र कोई सबूत नहीं होती।”

“मैं सबूत नहीं ढूँढ़ रहा। मैं प्रेरणा ढूँढ़ रहा हूँ।”

Arien खड़ा हो गया।

Kael ने उसे नहीं रोका।

“Mareia Lioren वह वजह नहीं है कि आप यहाँ हैं,” उसने कहा।

Arien रुक गया।

“वह बस वह वजह है कि आपकी पुरानी नफ़रत ने फिर से बोलना सीख लिया है।”

अबकी बार Arien झटके से मुड़ा।

Kael को अंदाज़ा नहीं था कि उसका निशाना कितना सटीक था।

वह दुर्घटना के बारे में नहीं जानता था।

माँ के बारे में।

लड़के के बारे में।

बंद होते दरवाज़ों के पीछे सुनहरी आँखों के बारे में।

पर Kael जैसे लोगों को घाव की शुरुआत जानने की ज़रूरत नहीं होती। उनके लिए इतना पहचान लेना काफ़ी होता है कि कहीं कोई घाव है।

“आप मुझसे क्या चाहते हैं?” Arien ने पूछा।

“अभी कुछ नहीं।”

“तब आपको मुझे बुलाने की ज़रूरत नहीं थी।”

“मैं आपको सहायता देने का प्रस्ताव रखना चाहता हूँ।”

Arien धीरे से बैठ गया।

“किसलिए?”

Kael ने शोध और वित्त से जुड़े संस्थानों का ब्योरा खोला।

“आप व्यावसायिक संघों के साथ काम करते हैं। अलग-अलग अधिकार-क्षेत्रों, मुद्राओं और क़ानूनी व्यवस्थाओं के बीच काम करने की समझ रखते हैं। आपने जैवसुरक्षा के लिए ढाँचे तैयार किए हैं।”

“सभी वैध थे।”

“बेशक।”

Kael ने इतने शांत स्वर में वह शब्द कहा कि उसका अर्थ ही खो गया।

“जिन घरानों और न्यासों के साथ मैं काम करता हूँ, उन्हें ऐसे लोगों की तलाश है जो सभ्यता के दीर्घकालिक ख़तरों का विश्लेषण कर सकें। आर्थिक। राजनीतिक। सामाजिक। आनुवंशिक।”

Arien ने उसकी ओर देखा।

“ऑरेलियाई?”

Kael ने तुरंत जवाब नहीं दिया।

“ऑरेलियाई भी, अगर आप उन्हें ख़तरा मानते हैं।”

उस क्षण किसी योजना का ख़ुलासा नहीं हुआ।

एक दरवाज़ा खुला।

Kael उसे वित्त, वकीलों, न्यासों और शोध केंद्रों तक पहुँच दे रहा था। ऐसे लोगों तक भी, जिनके सवाल कुछ और सुनाई देते थे और उनकी असल मंशा कुछ और थी।

“और बदले में आप क्या चाहते हैं?”

“जानकारी। Jesair का विचार किस ओर जा रहा है। कौन उसके साथ है। और इससे पहले कि एक नैतिक नारा राजनीतिक कार्यक्रम बन जाए, उसे बढ़ने से रोकने की क्या गुंजाइश है।”

“आप उसकी साख गिराना चाहते हैं?”

“अगर हो सका तो।”

“और अगर न हो सका?”

Kael ने उसे गौर से देखा।

“फिर हमें और सटीक विश्लेषण की ज़रूरत होगी।”

इससे आगे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी।

उस मुलाक़ात के बाद Arien ऑरेलियाइयों की वंशानुगत विशेषताओं के बारे में पढ़ने लगा।

शुरू में उसने ख़ुद से कहा कि यह पेशेवर जिज्ञासा है।

उसने पढ़ा कि उनकी देह में पीढ़ियों के कितने अलग इतिहास दर्ज थे। उन वंशों के बारे में जिनका अतीत आपस में मिलता था। और उन कहानियों के बारे में जो आँखों के स्वर्ण वलय से जुड़ी थीं।

जीवविज्ञान।

केवल जीवविज्ञान।

बिल्कुल वैसे ही जैसे उसकी माँ की मृत्यु की रिपोर्ट में था।

जितना वह पढ़ता, उसके जीवन के वे दो हिस्से उतने पास आ जाते जिन्हें उसने अब तक अलग रखा था।

एक बच्चा जिसने अपनी माँ खो दी थी।

और एक पुरुष जिसे दुनिया की व्याख्या करनी थी, बिना यह स्वीकार किए कि अब भी उसे वही बच्चा चला रहा है।

उसने टिप्पणियाँ लिखनी शुरू कीं।

बिना चुनावी जनादेश के नैतिक अधिकार।

राजनीतिक पूँजी के तौर पर वंश की निरंतरता।

Davion — एक प्रतीक जिसे प्रतीक बनना स्वीकार नहीं, और इसीलिए जो अधिक प्रभावी है।

ऑरेलियाई नैतिक प्रभाव के साधन के रूप में पारदर्शिता।

आख़िरी वाक्य सच नहीं था।

पारदर्शिता ऑरेलियाइयों की नहीं थी। Jesair ने उसे सबके लिए एक साझी व्यवस्था के रूप में पेश किया था।

लेकिन Arien अब यथार्थ से शुरुआत नहीं करता था।

वह उस नतीजे से शुरुआत करता था जिस पर उसे पहुँचना था।

और जो बुद्धिमान आदमी पहले अपना निष्कर्ष चुन ले, वह कभी-कभी मूर्ख से भी अधिक ख़तरनाक होता है।

क्योंकि मूर्ख को अपनी भूल तक पहुँचने की निर्दोष राह बनानी नहीं आती।

Arien को आती थी।

जितना वह लिखता जाता, उतना ही उसे यह एहसास कम होता जाता कि वह ऑरेलियाइयों के बारे में नहीं लिख रहा है।

वह चिड़ियाघर के बाहर खड़े एक लड़के के बारे में लिख रहा था।

उस फाटक के बारे में, जो नहीं खुला क्योंकि उससे एक शर्त पूरी नहीं हुई।

मलबे में पड़ी माँ के बारे में।

उस चिकित्सा मॉड्यूल के बारे में जो किसी और के लिए खुला।

Mareia के बारे में, जो अपने पीछे दरवाज़ा बंद करके चली गई।

उसकी ज़िंदगी में दरवाज़े बहुत ज़्यादा थे।

और Arien ने तय कर लिया कि वह फिर कभी वह आदमी नहीं होगा जो उनके बाहर खड़ा रह जाए।

एक शाम Mareia ने उसके किसी पुराने संदेश का जवाब दिया।

Arien, मैं वापस नहीं आऊँगी। जो हुआ वह हमारे बीच कोई चूक नहीं थी। तुमने एक सीमा लाँघी थी। मैं चाहती हूँ कि किसी दिन तुम अपने आप से यह स्वीकार कर सको।

उसने बार-बार उसे पढ़ा।

सबसे ज़्यादा क्रोध उसे आख़िरी वाक्य पर आया।

ठीक इसलिए कि वह सच था।

तीन दिन बाद उसने Auriola में हुई एक सार्वजनिक चर्चा की रिकॉर्डिंग देखी। Jesair अभिलेखागारों के बारे में बोल रहा था। Mareia श्रोताओं के बीच बैठी थी।

Jesair अपनी बात पूरी कर चुका तो पल भर को दोनों की आँखें मिलीं।

उसमें कुछ भी ऐसा नहीं था जिसे सबूत की तरह इस्तेमाल किया जा सके।

फिर भी Arien को उसमें सब कुछ दिख गया।

उसने तस्वीर रोक दी।

Jesair।

Mareia।

स्वर्ण वलय।

और कहीं बहुत गहरे, इतने बरसों की पढ़ाई, प्रभाव और आत्मसंयम के नीचे, नौ बरस का एक लड़का अब भी हाथों में लगभग सुलझा हुआ घन लिए खड़ा था।

अपनी काम की स्क्रीन पर उसने शोध न्यासों की सूची खोली।

उनमें कुछ के आगे नई अनुमति चमक रही थी।

कोष प्रशासन ने विस्तृत पहुँच की स्वीकृति दी है।

Kael ने अपना प्रस्ताव निभाया था।

अब Arien रणनीतिक परियोजनाओं के प्रस्ताव दे सकता था, क़ानूनी और वित्तीय सलाह पा सकता था और अलग-अलग राज्यों के उन कार्यक्रमों को जोड़ सकता था जिनका बाहर से आपस में कोई संबंध नहीं दिखता था।

अभी तक इनमें से कुछ भी अपराध नहीं था।

जैवसुरक्षा का शोध ज़रूरी था।

विभिन्न आबादियों की आनुवंशिक विशेषताओं का अध्ययन जानें बचा सकता था।

व्यवस्था-व्यापी ख़तरों के मॉडल बनाना किसी सभ्यता के ज़िम्मेदार संचालन का हिस्सा था।

हर औज़ार का एक जायज़ इस्तेमाल था।

निर्णायक बात यह थी कि एक दिन कौन इन सबको एक साथ रखेगा।

Arien को मालूम था कि उसके हाथ में कितनी ताक़त आ गई है। वह अपनी असली मंशा छिपाना चाहता था और उसे यक़ीन था कि ऐसा करना उसकी सामर्थ्य में है।

देर तक वह अपने सामने खुली संभावनाओं को देखता रहा।

आदमी अपना पहला अपराध करते वक़्त ही अपराधी नहीं बनता।

कभी-कभी सीमा बहुत पहले पार हो जाती है।

उस पल, जब किसी दूसरे को नष्ट करने की संभावना सामने हो और आदमी यह पूछने के बजाय कि *क्या मुझे इसका अधिकार है,* यह पूछे कि *यह किया कैसे जा सकता है।*

Arien ने अभी कोई आदेश नहीं दिया था।

उसने किसी प्रयोगशाला से बात नहीं की थी।

उसके पास कोई ठोस योजना नहीं थी।

पर एक संरक्षक था।

पहुँच थी।

और यह विश्वास भी कि जिन लोगों को उसके इरादे का पता तक नहीं, उनके श्रम पर वह अपना इरादा पूरा कर सकता है।

रात को वह छत पर निकला।

नीचे Nitra जगमगा रही थी। नगर के ऊपर से यान कक्षीय वलय की ओर और वहाँ से आगे Thaeron की ओर जा रहे थे।

दुनिया सटीक थी।

परस्पर जुड़ी हुई।

नियंत्रित।

Arien को पिता याद आए।

उन्होंने वही किया जो सही था।

माँ याद आईं।

नियमों की आड़ में हम महसूस करना न छोड़ दें।

दशकों से ये दो वाक्य उसकी स्मृति में आमने-सामने खड़े थे।

अंत में उसने पिता वाला चुना।

इसलिए नहीं कि उसने पिता को क्षमा कर दिया था।

इसलिए कि उस वाक्य से काम लिया जा सकता था।

अगर लोग तंत्र के मुताबिक फ़ैसला करते हैं तो तंत्र को मुट्ठी में कर लेना काफ़ी है।

अगर संस्थाएँ अपने नियमों को ही देखती हैं, तो हर संस्था को अंत में यही लगेगा कि उसने अपना नियम निभाया।

और जब बहुत-से लोग किसी मंशा में हिस्सेदार हो जाएँ तो किसी को अकेले पूरे अपराध का बोझ महसूस नहीं करना पड़ता।

Arien ने नगर को देखा।

"व्यक्तिगत फ़ैसले जैसी कोई चीज़ नहीं होती," उसने धीमे से कहा।

उसे वह वाक्य पसंद आया।

दर्शन जैसा सुनाई देता था।

सच तो यह था कि उसके भीतर बंद फाटक के सामने खड़ा एक बच्चा अब भी रो रहा था।

उसके पीछे काम की स्क्रीन पर Thorne घराने के दफ़्तर का एक संदेश इंतज़ार कर रहा था।

वित्तीय और क़ानूनी सहायता तैयार है। परियोजना की पहली रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

Arien वापस भीतर गया।

नफ़रत जब पक जाती है तो चीखना बंद कर देती है।

वह इंतज़ाम करने लगती है।

पहला दरवाज़ा Kael ने उसके लिए खोला था।

और उस दरवाज़े के पार, विराट सूर्य के तले बसी वह विराट सभ्यता Elarion अब भी उसके सामने ज़रूरत से कहीं अधिक गलियारे खोल रही थी।

14. पृथ्वी: एक नई पीढ़ी का आरंभ

धरती पर साँझ उतर रही थी। उनके पीछे यरूशलेम ऐसे घाव-सा रह गया था जिसे अभी भरने का समय भी न मिला हो। शिष्य एक घर में बंद दरवाज़ों के पीछे बैठे थे। कोई ऊँची आवाज़ में नहीं बोल रहा था। हर एक अपने भीतर अलग तरह की लज्जा लिए था। पतरस अपने मुकरने की लज्जा, थोमा अपने अविश्वास की, और बाक़ी सब अपने भाग खड़े होने की, अपनी चुप्पी और अपने डर की।

तभी कमरे की हवा बदल गई।

न पदचाप सुनाई दी, न दरवाज़े की चरमराहट। बस अचानक वह उनके बीच खड़े थे।

यीशु।

यीशु उनके बीच खड़े थे, जीवित और शांत। इतने सजीव कि न वह कोई स्मृति हो सकते थे, न छाया, न हताशा से उपजी कोई कल्पना। अब उनके चेहरे पर आख़िरी बात पीड़ा की नहीं थी।

“तुम्हें शांति मिले,” उन्होंने कहा।

कोई हिल नहीं पाया। कुछ पीछे हटे, कुछ घुटनों पर गिर पड़े। पतरस ने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। यूहन्ना निःशब्द रोने लगा। थोमा उन्हें ऐसे देख रहा था मानो संदेह की नींव पर खड़ी की हुई उसकी सारी दुनिया एक ही क्षण में ढह गई हो।

यीशु ने अपने हाथ उठाए। कलाइयों पर कीलों के निशान थे। फिर उन्होंने अपना वस्त्र हटाकर पसलियों के पास की वह जगह दिखाई जहाँ से कुछ दिन पहले लहू और पानी बहा था।

“मैं ही हूँ,” उन्होंने धीरे से कहा। “तुम किसी स्वप्न को नहीं छू रहे हो। किसी व्यर्थ आशा को नहीं छू रहे हो। तुम उसे छू रहे हो जिसे मृत्यु भी थाम न सकी।”

थोमा ऐसे मनुष्य की तरह पास आया जिसे डर हो कि कहीं उसका जाना हुआ सच न निकल आए। वह घाव को छूना चाहता था, पर उसका हाथ हवा में ही रुक गया। उसका सारा हठीला निश्चय टूट गया।

“हे मेरे प्रभु,” वह फुसफुसाया, “हे मेरे परमेश्वर।”

यीशु ने उसे देखा। उनकी आँखों में कोई उलाहना नहीं था।

“तुमने देखा, इसलिए विश्वास किया। पर वे भी आएँगे जो देखेंगे नहीं, और फिर भी उनके भीतर यही आग जलेगी।”

फिर वह उनके बीच ऐसे बैठ गए मानो किसी छोटी-सी यात्रा से लौटे हों, मृत्यु के राज्य से नहीं। उन्होंने कुछ खाने को माँगा। शिष्यों ने उन्हें भुनी मछली का एक टुकड़ा और थोड़ी रोटी दी। वह उनके सामने धीरे-धीरे खाते रहे, एकदम साधारण ढंग से। और यही साधारणता चमत्कार से भी अधिक भय जगाती थी। क्योंकि प्रेत खाते नहीं। स्वप्न रोटी नहीं तोड़ता। स्मृति किसी की आँखों में आँखें डालकर नहीं देखती।

खाने के बाद उन्होंने शिष्यों से धर्मग्रंथों की बातें शुरू कीं। मूसा की, नबियों की, उन वचनों की जिन्हें वे जीवन भर सुनते रहे थे, पर जो अब जाकर उनके सामने फाटकों की तरह खुले। उन्होंने कहा कि मनुष्य के पुत्र को वहाँ तक उतरना ही था जहाँ दृष्टि डालने से मनुष्य सबसे अधिक डरता है, ताकि वह उन्हें दिखा सके कि वहाँ भी संसार पर से परमेश्वर का अधिकार नहीं उठा है।

“तुम्हें लगा कि क्रूस अंत है,” उन्होंने कहा। “लेकिन क्रूस वह जगह थी जहाँ मनुष्य की सत्ता अपनी आख़िरी बूँद तक चुक गई। जहाँ मनुष्य ने दिखाया कि वह परमेश्वर के साथ क्या कर सकता है, वहीं परमेश्वर ने दिखाया कि वह मनुष्य के साथ क्या कर सकता है। उसे क्षमा कर सकता है।”

बाद में वे उत्तर की ओर गए, उस जल के किनारे जहाँ कभी यीशु ने उन्हें पहली बार बुलाया था। तिबिरियास की झील शांत थी और उसके ऊपर रात गहरे घूँघट की तरह पसरी थी। पतरस ने कहा कि वह मछली पकड़ने जा रहा है, और बाक़ी भी उसके साथ हो लिए। रात भर वे जाल डालते रहे, पर हाथ कुछ नहीं आया।

भोर में एक पुरुष तट पर खड़ा था।

“बच्चो,” उसने पुकारा, “तुम्हारे पास कुछ खाने को है?”

“नहीं है,” उन्होंने जवाब दिया।

“नाव की दाहिनी ओर जाल डालो।”

उन्होंने वैसा ही किया। जाल इतनी तेज़ी से भर गया कि उनसे खींचे नहीं खिंचा। तब यूहन्ना का चेहरा सफ़ेद पड़ गया और उसने पतरस की ओर देखा।

“यह तो प्रभु हैं।”

पतरस बिना सोचे पानी में कूद पड़ा। पानी चीरता वह तट की ओर ऐसे बढ़ा मानो हर क़दम के साथ उस रात के पहले पहुँच जाना चाहता हो जब उसने तीन बार कहा था कि वह उन्हें नहीं जानता।

तट पर आग पहले से जल रही थी। अंगारों पर मछली और रोटी रखी थी। यीशु आग के पास खड़े थे और सुबह का उजाला उनके चेहरे पर पड़ रहा था। मरियम मगदलीनी उनसे थोड़ी दूर थी। वह चुप थी, पर

उसकी चुप्पी दूसरों की चुप्पी से अलग थी। उसमें न लज्जा थी न भय। उसमें कुछ मौन बोध जैसा था, मानो शुरुआत से ही वह जानती हो कि मृत्यु वह जगह नहीं है जहाँ उनकी कथा समाप्त होगी।

उन्होंने साथ खाया। किसी में उनसे पूछने का साहस नहीं हुआ, “तुम कौन हो?” क्योंकि सब जानते थे।

जब वे खा चुके तो यीशु पतरस की ओर मुड़े।

“यूहन्ना के पुत्र शमौन,” उन्होंने कहा, “क्या तुम इन सबसे बढ़कर मुझसे प्रेम करते हो?”

पतरस की नज़र झुक गई।

“प्रभु, तुम जानते हो कि मुझे तुमसे स्नेह है।”

यीशु ने सिर हिलाया।

“मेरे मेमनों को चराओ।”

आग चटकी। पतरस ने आँखें उठाईं, पर यीशु ने फिर उससे पूछा,

“यूहन्ना के पुत्र शमौन, क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?”

पतरस की आवाज़ काँप गई।

“हाँ, प्रभु। तुम जानते हो कि मुझे तुमसे स्नेह है।”

“मेरी भेड़ों को चराओ।”

तीसरी बार यीशु ने पूछा,

“यूहन्ना के पुत्र शमौन, क्या तुम्हें मुझसे स्नेह है?”

तब पतरस के भीतर हर वह चीज़ दुख उठी जो अब तक भर जाने का दिखावा कर रही थी। तीन प्रश्न उसके तीन बार मुकरने में उतरते गए। तीन घावों से तीन उत्तर उठे।

“प्रभु,” पतरस ने कहा, “तुम सब जानते हो। तुम जानते हो कि मुझे तुमसे स्नेह है।”

यीशु देर तक गंभीरता से उसे देखते रहे।

“मेरी भेड़ों को चराओ।”

और तब पतरस ने समझा कि क्षमा का अर्थ भुला देना नहीं है। इसका अर्थ है किसी ऐसे आदमी को एक काम सौंपना जो अब जानता है कि वह कितना निर्बल है।

फिर यीशु उन्हें पहाड़ पर ले गए। वहाँ ग्यारहों शिष्य खड़े थे, मरियम मगदलीनी और कुछ अन्य लोग जो गलील से यरूशलेम तक उनके पीछे आए थे। उनके नीचे धरती फैली थी, जिसे अभी बहुत समय तक

साम्राज्यों, पुरोहितों, सौदागरों, तलवारों और भय के बीच बँटे रहना था। उनके ऊपर आकाश खुला। वहाँ से निकल भागने के लिए नहीं, बल्कि मानो यह याद दिलाने के लिए कि संसार अपनी ही क्रूरताओं में बंद नहीं है।

यीशु ने कहा,

"मुझे वह अधिकार दिया गया है जिसे मनुष्य मुझसे छीन न सके, क्योंकि वह उन्होंने दिया ही नहीं था। इसलिए जाओ और जाति-जाति के लोगों को सिखाओ। तलवार से नहीं। भय से नहीं। राज करने की लालसा से नहीं। उन्हें देखना सिखाओ। उन्हें अपने लाभ से बढ़कर सत्य से प्रेम करना सिखाओ। उन्हें क्षमा करना सिखाओ, पर झूठ की सेवा करना नहीं। उन्हें ऐसे जीवन में बपतिस्मा दो जिसमें मनुष्य केवल अपना नहीं रहता।"

कुछ घुटनों पर गिर पड़े। कुछ रोए। और कुछ को अब भी संदेह था, क्योंकि चमत्कार के सामने भी मनुष्य का हृदय मनुष्य का हृदय ही रहता है।

यीशु उनके और निकट आए।

"मैं तुम्हारे साथ वैसे नहीं रहूँगा जैसे अब तक रहा," उन्होंने कहा। "पर मैं हर दिन तुम्हारे साथ रहूँगा, हर उस मनुष्य में जो अपने भय की नींद से जागेगा। मैं उस चेतना में रहूँगा जो अपने आप को पहचान लेगी। मैं हर उस व्यक्ति में रहूँगा जो समझेगा कि परमेश्वर का राज्य बादलों से उतरते महल की तरह नहीं आता, वह मनुष्य के भीतर प्रकाश की तरह आता है।"

फिर वह मरियम मगदलीनी की ओर मुड़े।

वह किसी गुरु की अपनी शिष्या के प्रति भंगिमा नहीं थी। उसमें कुछ और पुराना था, अधिक गहरा, अधिक निःशब्द। जैसे लंबी यात्रा के बाद दो नदियाँ एक ही धारा में फिर एक-दूसरे को पा लें। मरियम उनके पास आई और पल भर को उनके हाथ आपस में छू गए। पतरस ने देखा। यूहन्ना ने भी। कोई कुछ नहीं बोला।

यीशु ने अंतिम बार पतरस को देखा।

"तुम झुंड के पास रहना," उन्होंने पतरस से कहा। "जब वे बिखरने लगें तो उन्हें एक साथ रखना। उन्हें रोटी, आग और झील की याद दिलाना। उन्हें बताना कि मैं जी उठा हूँ।"

पतरस कुछ एतराज़ करना चाहता था, पर यीशु ने नज़र से उसे रोक दिया।

"और तुम," वह यूहन्ना की ओर मुड़े, "वचन तुम्हारे पास है। जो देखा है उसे सँजोना, लेकिन और भी अधिक उसे जो तुमने समझा है।"

फिर उन्होंने सबसे कहा,

“जिस काम की शुरुआत परमेश्वर से हो, वह सदा संसार की आँखों के सामने हो, यह आवश्यक नहीं। कुछ काम ओझल रहकर बढ़ते हैं। कुछ बीजों को मंदिरों से दूर गिरना होता है, सिंहासनों से दूर, उनसे दूर जो उन्हें अपनी मिल्कियत बनाना चाहेंगे।”

मरियम मगदलीनी उनके पास खड़ी थी और हवा ने उसके बाल हिलाए। उसके चेहरे पर आश्चर्य नहीं था। उसमें उस व्यक्ति की हामी थी जिसे राह पहले से मालूम थी।

“एक समय आएगा,” यीशु ने आगे कहा, “जब ऐसे मनुष्य जन्म लेंगे जो मेरे नाम को झंडे की तरह नहीं, मेरी चेतना को लौ की तरह लेकर चलेंगे। वे महलों से संसार पर शासन नहीं करेंगे। वे उसे बदलेंगे क्योंकि वे औरों से आगे तक देख पाएँगे। वे विभिन्न जातियों में, अलग-अलग युगों में, साधारण मनुष्यों की देह में जन्म लेंगे। और जब-जब संसार खाई के निकट आएगा, उनमें से कुछ को याद आ जाएगा।”

शिष्य सब कुछ नहीं समझे। शायद समझ भी नहीं सकते थे। उन्होंने जो वचन सुने थे वे उनके जीवन से बड़े थे।

आकाश में एक उजला बादल सरका। किसी रथ की तरह नहीं, जो शिष्यों की आँखों के सामने यीशु को उठा ले जाए, बल्कि उस परदे की तरह जिसे वह राह ढकनी थी जिसे जानने की अनुमति उन्हें अभी नहीं थी। यीशु ने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी।

“मेरे साक्षी बनना,” उन्होंने कहा। “पृथ्वी के छोर तक।”

फिर वह पीछे हटकर प्रकाश में चले गए।

कुछ ने देखा कि बादल ने यीशु को उनकी आँखों से ओझल कर दिया। कुछ शपथ खाकर कहते कि वह ऊपर उठ गए थे। दूसरे, ख़ासकर यूहन्ना, जीवन के अंत तक निश्चित नहीं हो पाए कि उस क्षण आकाश उनके ऊपर खुला था या उनके भीतर।

जब प्रकाश चला गया तो वे पहाड़ पर खड़े शून्य में देखते रहे।

सफ़ेद वस्त्रों में दो पुरुष उनके पास प्रकट हुए, उस प्रश्न के मौन उत्तर की तरह जिसे बोलने का साहस किसी में नहीं था।

“आकाश की ओर क्यों देखते हो?” उनमें से एक ने कहा। “जो गए हैं, वे खोए नहीं हैं। वे बस ऐसी राह पर चले हैं जिस पर चलना अभी तुम्हें नहीं आता।”

पतरस फिर बाक़ी लोगों की ओर मुड़ा। उसके चेहरे पर आँसू थे, पर एक ऐसी दृढ़ता भी थी जो पहले नहीं थी।

“चलें,” उसने कहा। “हमें उनकी भेड़ों को चराना है।”

और उनसे बहुत दूर, जहाँ राह चट्टानों और सुबह के उजाले के बीच खो जाती थी, दो आकृतियाँ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही थीं। एक पुरुष और एक स्त्री। उन लोगों की तरह नहीं जो संसार से भाग रहे हों, बल्कि उनकी तरह जो निःशब्द उसका भविष्य उठाए चल रहे हों, ताकि एक दिन संसार उसे अपने ही भीतर पा ले।

उनके पीछे यरूशलेम रह गया था, क्रूस, ख़ाली क़ब्र, किनारे की आग और पतरस को सौंपा गया झुंड।

उनके सामने वह पथ था जिसके बारे में अभी पुस्तकें नहीं लिखी जानी थीं।

और फिर भी एक दिन उसी राह से मनुष्यों की एक नई पीढ़ी जन्म लेने वाली थी। न देह में अधिक शक्तिशाली, न संपत्ति में अधिक धनवान, पर चेतना में अधिक उजली। वे लोग जिन्हें याद रहेगा, बिना यह जाने कि वह याद कहाँ से आई। वे लोग जिन्हें इतिहास की निर्णायक घड़ियों में अपने भीतर एक धीमा स्वर अनुभव होगा।

जागो।

क्योंकि राज्य का आरंभ सिंहासन पर नहीं होता।

वह उस इंसान में आरंभ होता है जिसे यह बोध हो कि उसे बोध हो रहा है, और जो इससे सही निष्कर्ष निकाले।

भाग II — एक अपराध के टुकड़े

15. 30 मुद्राएँ

पैसे की अपनी कोई मंशा नहीं होती।

उसे न नफ़रत आती है, न ईर्ष्या, न प्रतिशोध की चाह। वह नहीं जानता कि उससे रोटी ख़रीदी जा रही है, दवा, किसी राजनेता का मत या किसी की आने वाली मौत। वह सिर्फ़ दिशा जानता है, अपना मूल्य और वह खाता जिसमें वह पल भर के लिए ठहरता है।

मंशा उसे इंसान देता है।

और इंसान बहुत पहले सीख चुका है कि पैसे को अपने नाम से अलग कैसे किया जाए।

Kael Thorne ने Arien से उसी कमरे में भेंट की जहाँ वे पहली बार मिले थे। Nitra से बहुत ऊपर, गहरे रंग के शीशे की दीवार के पीछे। नीचे नगर नसों के किसी विराट जाल की तरह जगमगा रहा था। मीनारों के बीच यातायात की धाराएँ चल रही थीं, नदी रोशनियाँ लौटा रही थी और दूर क्षितिज पर कक्षीय वलय उठता था।

उनके बीच मेज़ पर कुछ नहीं था।

Kael ने उसकी सतह पर हथेली रखी।

Elarion का नक़्शा उभर आया।

चालीस राज्य।

तीस प्रचलित मुद्राएँ।

सैकड़ों बैंक।

हज़ारों कोष, न्यास, प्रबंधन कंपनियाँ, विधि कार्यालय और स्वामित्व के अभिलेख, जो एक-दूसरे को बस उतना जानते थे जितना क़ानून उन्हें जानने के लिए बाध्य करता था।

“इसमें आपको क्या दिखता है?” Kael ने पूछा।

Arien ने नक़्शे में आँखें गड़ा दीं।

“बिखराव।”

“कोई राजनेता इसे विविधता कहेगा।”

“बैंकर इसे अवसर कहेगा।”

Kael हल्के से मुस्कराया।

“इसीलिए मैंने आपको बुलाया है।”

उसने उत्तर के एक क्षेत्र को छुआ। उत्तरी गठबंधन की मुद्रा दिखाई दी। फिर उसने दक्षिणी द्वीपसमूह में एक राज्य खोला। Therinith। वहाँ के अभिलेखागार अपने नागरिकों के निजी स्वास्थ्य आँकड़ों से अधिक कड़ाई से कोषों के मालिकों का भेद रखते थे।

उनके बीच एक रेखा उभरी।

एक ही भुगतान नक़्शे पर कई जगह दर्ज था। हर जगह उसका अपना क़ानूनी परिचय था, अपना घोषित प्रयोजन। जब तक वह संघ में लौटा, उसे पहचानना कठिन था।

वही पैसा।

तीन क़ानूनी रूप।

चार प्रयोजन।

एक भी नाम नहीं।

“संघ को शुरुआत दिखती है,” Kael ने कहा। “Therinith को अपना हिस्सा दिखता है। दूसरे राज्य को अपना। लौटने पर संघ को फिर एक अलग तस्वीर दिखती है। और हर दर्ज तथ्य सही है।”

“और पूरी तस्वीर किसी को नहीं दिखती।”

“समग्रता एक ख़तरनाक धारणा है। राजनेताओं को पसंद नहीं आती।”

Kael ने हाथ घुमाकर और प्रवाह खोले। वे सैकड़ों थे। कुछ परिवहन कंपनियों की ओर जाते थे, कुछ समाचार माध्यमों, राजनीतिक न्यासों, शोध केंद्रों और बीमा कंपनियों की ओर।

एक रेखा Kars पट्टी तक जाती थी, जहाँ ऊर्जा भंडारों तक पहुँच को लेकर दो राज्यों के बीच युद्ध का तीसरा साल चल रहा था।

“आप उन्हें हथियार देते हैं,” Arien ने कहा।

Kael ज़रा भी नहीं हिला।

“एक कंपनी, जिसमें मेरे घराने के प्रबंधन वाले एक कोष की छोटी-सी हिस्सेदारी है, एक पक्ष को रक्षा उपकरण देती है।”

“और दूसरे को?”

“क्षतिग्रस्त नगरों के पुनर्निर्माण के लिए ऋण।”

Arien ने उसकी ओर देखा।

“पुनर्निर्माण तो अभी शुरू भी नहीं हुआ।”

“तभी तो शर्तें इतनी अनुकूल हैं।”

Kael ने युद्ध वाली परत बंद कर दी। न उसे लज्जा थी, न गर्व। जैसे कोई काग़ज़ उठाकर मेज़ पर एक जगह से दूसरी जगह रख दे।

“आप पर रौब जमाने के लिए मैं यह नहीं कह रहा,” उसने कहा। “मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ का माहौल समझें। सत्ता अदृश्य हो जाए तभी छिपे, ऐसा नहीं है। कभी-कभी उसकी हर अलग झलक बड़ी स्वीकार्य लगती है।”

“और मुझसे आपकी क्या अपेक्षा है?”

“एक रूपरेखा।”

“किसकी?”

“यह आप तय करेंगे।”

Arien मुड़कर नगर की ओर देखने लगा।

पहली मुलाक़ात के बाद से वह सोचता रहा था कि वह आख़िर चाहता क्या है। उसके ख़याल बार-बार Jesair, Mareia और स्वर्ण वलय की ओर लौटते थे, पर Kael के सामने उन्हें उस रूप में कह नहीं सकता था। वे छोटे सुनाई देते। निजी। हास्यास्पद।

वह चाहता था कि Mareia जाने कि जिस इंसान को वह छोड़ गई, वह उसकी समझ की हद से कहीं बड़ा था।

वह चाहता था कि Jesair लोगों के सामने ऐसे प्रश्न का नैतिक उत्तर बनकर खड़ा न रहे जिसे किसी ने अब तक ढंग से पूछा भी नहीं।

वह चाहता था कि ऑरेलियाई दुनिया को उस पुरानी कहानी की आँखों से देखना छोड़ दें जिसमें इतिहास में उनके लिए एक विशेष स्थान था।

पर सबसे बढ़कर वह चाहता था कि कुछ टूटे।

सब कुछ नहीं।

बस इतना कि लोग यह विश्वास करना छोड़ दें कि Jesair Davion उन्हें कोई ऐसी राह दिखा सकता है जिस पर वे सुरक्षित चल सकें।

“जैवसुरक्षा,” Arien ने कहा।

Kael स्थिर बैठा रहा।

“कहिए।”

“Elarion की तीनों शाखाओं में जैविक अंतर हैं। चिकित्सा उन्हें ध्यान में रखती है, पर राजनीति में उनकी चर्चा सँभलकर की जाती है। कुछ ज़्यादा ही सँभलकर। कोई नहीं जानता कि अगर किसी स्वास्थ्य-संकट का बोझ एक ही शाखा पर कहीं अधिक पड़ा तो क्या होगा।”

“आप ऐसे ख़तरे का अध्ययन करना चाहते हैं?”

Arien मुड़ा।

“मैं यह अध्ययन करना चाहता हूँ कि हमारी सभ्यता कितनी तैयार है।”

Kael मुस्कराया।

इसलिए नहीं कि उसे विश्वास था।

इसलिए कि उसे कहने का ढंग पसंद आया था।

“इसके लिए आपको शोध चाहिए।”

“हाँ, कुछ बातों का पता लगाना होगा।”

“और लोग भी चाहिए।”

“और साधन।”

“और राजनीतिक संरक्षण।”

“वे लोग अपने काम को जायज़ समझते हैं।”

Kael ने पीठ टिकाई।

“और इनका साझा उद्देश्य क्या होगा?”

Arien ज़रूरत से एक पल अधिक चुप रहा।

“उन लोगों को असली उद्देश्य मालूम नहीं होगा।”

Elarion के नक़्शे पर अब भी तीस मुद्राएँ चमक रही थीं।

हर एक का अपना मूल्य था, अपने नियम, अपना इतिहास और अपनी सीमाएँ। उनके बीच पैसा इतने रूप बदलता था कि लगता था विनिमय की हर नई दर के साथ उसके अतीत का एक हिस्सा छूट जाता है।

Kael ने नक़्शा बड़ा किया।

“जिस चीज़ को आप जन्म देना चाहते हैं,” उसने कहा, “उसका असल चेहरा इन हिसाबों में किसी को नहीं दिखाई देगा।”

“कितनी कंपनियाँ होंगी?”

“यह इस पर निर्भर है कि आपकी माँग कितनी बड़ी है।”

“और असली मालिक?”

“कहीं कोई नाम दिखाई देगा, कहीं कुछ नहीं। किसी नाम से आपको पूरे सच का पता नहीं चलेगा।”

“ज़िम्मा किसका होगा?”

“किसी का नहीं।”

Arien ने उसे देखा।

Kael ने आगे कहा,

“आप जानेंगे कि आप क्या चाहते हैं। बाक़ी लोग अपने काम को अपने विवेक की हद में ठीक समझेंगे। उनमें से किसी ने यह मंज़ूर नहीं किया होगा कि उनके काम से वह चीज़ बने जो आप बनाना चाहते हैं। और फिर भी वे सब उसका हिस्सा होंगे।”

“और अगर किसी ने ज़िम्मेदारी पूछी?”

“तो एक जाँच में उसके हाथ पूरी सच्चाई नहीं लगेगी।”

Arien ने फिर तीस मुद्राओं को देखा।

“इनमें से कितनी हमारी कहानी में होंगी?”

Kael ने कंधे उचकाए।

“इतनी कि आख़िर में पूछनेवाले को भी अपनी गिनती पर शक हो।”

पैसे की अपनी कोई मंशा नहीं थी।

पर उस रात उसे एक दिशा मिल गई।

और वह एक ऐसे घाव की ओर चल पड़ा जिसका अभी कोई नाम नहीं था।

16. घाव को बजट मिलता है

तीन दिन तक Arien घर से बाहर निकले बिना काम करता रहा।

उसने परदे नहीं खींचे। उसके सामने Nitra सुबह से शाम में, शाम से रात में और रात से फिर ठंडे उजाले में उतरती रही। मेज़ पर सिर्फ़ पीने की चीज़ों के ख़ाली पात्र जमा होते गए। बाक़ी सब उसकी काम की स्क्रीन के ऊपर परतों में था।

पहले उसने शीर्षक लिखा।

ग्रहव्यापी जैविक सहनक्षमता कार्यक्रम।

वह उसे देर तक देखता रहा, फिर मिटा दिया।

बहुत बड़ा।

बहुत एकसूत्र।

बहुत उघड़ा हुआ।

उसकी जगह स्क्रीन पर बहुत-से सवाल उभर आए।

लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल में कौन पीछे रह जाता है?

मनुष्य संकट का सामना करने की क्षमता कहाँ से पाता है?

उसे मदद की ज़रूरत हो तो क्या स्वास्थ्य सेवाएँ समय रहते जान पाती हैं?

आनुवंशिक अभिलेखों को दुरुपयोग से कैसे बचाया जाए?

जब संकट का बोझ अलग-अलग समुदायों पर बराबर नहीं पड़ता तो समाज की स्थिरता का क्या होता है?

आने वाले स्वास्थ्य-संकटों को समझने में नया ज्ञान कितनी मदद कर सकता है?

हर प्रश्न जायज़ था।

कुछ तो सचमुच ऐसे थे जो और इंतज़ार नहीं कर सकते थे।

उसके सामने तेईस परियोजनाएँ थीं।

और ग्यारह अलग-अलग क्षेत्र।

आँकड़े।

प्रतिरूपों का अध्ययन।

नैतिकता।

संगणना के साधन।

स्वास्थ्य सेवाओं का अध्ययन।

दीर्घायु पर शोध।

क़ानूनी ढाँचे।

संकट में रसद की व्यवस्था।

आनुवंशिक निजता की रक्षा।

जनता को ख़तरे की जानकारी देना।

बुनियादी ढाँचे की सहनक्षमता।

कहीं वह बात नहीं लिखी थी जो इन सबको उसके लिए एक अर्थ देती थी।

वह केवल उसके मन में थी।

चौथे दिन Thorne घराने से एक आदमी आया। उसके साथ ऐसा कोई नाम नहीं था जो Arien के लिए कुछ मायने रखता हो। उसने अपना परिचय बस वित्तीय समन्वयक के तौर पर दिया।

Arien ने जितनी उम्र की उम्मीद की थी, वह उससे कम उम्र का था। उसका चेहरा इतना साधारण था कि साधारणता ही उसकी पेशेवर योग्यता जान पड़ती थी।

"श्री Thorne को शुरू का एक अंदाज़ा चाहिए," उसने कहा।

Arien ने उसे परियोजनाओं की सूची देखने दी।

समन्वयक बिना कोई सवाल उठाए सूची पढ़ता गया। जीवविज्ञान में उसे दिलचस्पी नहीं थी। हर परियोजना पर उसके सवाल संस्थाओं, पैसे और ज़िम्मेदारी के बारे में थे। उसकी निगाह में सब कुछ लेखे-जोखे की भाषा में लिखा जा सकता था।

"यह शोध स्वास्थ्य से जुड़ा है?" एक मद पर उसने पूछा।

"हाँ।"

"एक न्यास इसके लिए पैसा देने को तैयार होगा।"

"यह उनके विषय से मेल नहीं खाता।"

"काग़ज़ पढ़ने वालों को ऐसा नहीं लगेगा।"

Arien की भौंहें सिकुड़ गईं।

“नतीजा मेरे काम आना चाहिए।”

“आपको जो चाहिए उसकी चिंता समझता हूँ। पर इसे पढ़कर मेरी तरह हर किसी के मन में वही सवाल थोड़े उठेंगे।”

अगली परियोजना पर वह रुका।

“स्वास्थ्य सेवाओं पर एक और अध्ययन। इसके लिए भी पैसा मिल जाएगा।”

“कोई इसके लिए पैसे क्यों देगा?”

“क्योंकि अनिश्चितता की भी एक क़ीमत होती है।”

“मुझे अपने प्रश्न का उत्तर चाहिए।”

“आपको मिलेगा। बाक़ी लोग जिस जवाब की राह देख रहे हैं, उन्हें वह मिल जाएगा।”

समन्वयक अगली मद पर बढ़ा।

“यहाँ बहुत बड़े संसाधन लगेंगे।”

“जैविक कृत्रिम बुद्धि।”

“Thaeron।”

“क्यों?”

“क्योंकि वहाँ आपके लिए जगह है। बाक़ी मेरी चिंता है।”

Arien देखता रहा कि कैसे उसके ख़याल लेखे की श्रेणियों में बदलते जा रहे थे।

जो चीज़ कुछ दिन पहले तक Jesair को चोट पहुँचाने की एक धुँधली इच्छा भर थी, उसके लिए अब बजट में मदें थीं, समय के अनुमान थे और क़ानूनी रूप थे।

घाव को बजट मिल रहा था।

बजट में नफ़रत नाम की कोई मद नहीं थी।

प्रतिशोध की अपनी कोई पंक्ति नहीं थी।

उसमें सेवाओं, शुल्कों और शोध के वही रूखे ब्योरे थे जो किसी भी बजट में हो सकते थे।

आदमी पूरा दस्तावेज़ पढ़ सकता था और उसे कुछ भी ऐसा न मिलता जिस पर उसे शर्म आनी चाहिए।

“कुल रकम कितनी होगी?” Arien ने पूछा।

समन्वयक ने एक संख्या बताई।

उसकी उम्मीद से बड़ी थी।

“इतना तो दिखेगा।”

“एक साथ नहीं।”

“कोई सवाल तो उठा सकता है।”

“उठा सकता है। मगर जाँच शुरू करने के लिए पहले कोई वजह भी तो चाहिए।”

“और अगर वजह मिल गई?”

“तब तक देर हो चुकी होगी।”

समन्वयक ने बिना दुर्भाव के, शांत स्वर में कहा। जैसे दो प्रणालियों के बीच समय के अंतर का वर्णन कर रहा हो।

Arien ने मुँह फेर लिया।

बग़ल की परत में Mareia का आख़िरी संदेश अब भी सहेजा था।

निजी फ़ैसले कभी निजी नहीं रहते।

उसने उसे वह वाक्य धमकी के तौर पर लिखा था, पर पिछले कुछ दिनों से उसे वह किसी नियम की तरह लगने लगा था। Mareia ने निजी फ़ैसला किया था। वह चली गई थी। उसने उसके बिना जीवन चुना था।

Jesair ने निजी फ़ैसला किया था। वह सभा में खड़ा हुआ और एक विचार को आवाज़ दे दी।

Kael ने निजी फ़ैसला किया था। उसने धन के गलियारे खोल दिए।

और अब Arien अपना फ़ैसला कर रहा था।

हर फ़ैसला दूसरे लोगों को छूता था।

फ़र्क़ केवल उसकी पहुँच का था।

“श्री Thorne का एक सवाल और है,” समन्वयक ने कहा।

“क्या?”

“किस नतीजे को स्वीकार्य समझा जाएगा?”

Arien धीरे से उसकी ओर मुड़ा।

“शोध के नतीजे को?”

“परियोजना के।”

पहली बार उसे हिचक हुई।

उसने बीमार Jesair की कल्पना की। मरा हुआ नहीं। बस कमज़ोर। उस शांत आत्मविश्वास से वंचित, जो दूसरों को अपनी ओर खींचता था। उसने कल्पना की कि ऑरेलियाइयों को राज्यों से अपनी रक्षा की भीख माँगनी पड़ रही है। जनता पारदर्शिता के बारे में पूछना छोड़कर जैविक भिन्नताओं से डरने लगी है।

उसने कल्पना की कि Mareia समझ गई है कि Jesair को भी चोट पहुँच सकती है।

"इस बात का सबूत कि वे भी असुरक्षित हैं," उसने कहा।

समन्वयक प्रतीक्षा करता रहा।

"कौन?"

"ऑरेलियाई।"

"और Jesair Davion?"

Arien चुप रहा।

इतना काफ़ी था।

समन्वयक ने दस्तावेज़ बंद किया।

"पहली रूपरेखा दस दिन में तैयार हो जाएगी।"

जब वह चला गया तो घर में सन्नाटा रह गया।

Arien ने ऑरेलियाइयों के स्वास्थ्य पर एक पुराना लेख खोला। उसमें न किसी का नाम था, न निजी ब्योरा। एक पूरे समुदाय का जीवन वहाँ बस आँकड़ों और चिकित्सकीय वर्णनों में सिमट गया था।

उसने स्वर्ण वलय के बारे में एक जैविक विशेषता की तरह पढ़ा।

उसने ऐसे स्वर्ण वलय के बारे में पढ़ा जिससे निशानी होने का अर्थ निकाल लिया गया था।

लेख में आत्मा के प्रकाश का ज़िक्र नहीं था।

बस कुछ गुण थे जिन्हें मापा जा सकता था।

इससे उसे शांति मिली।

किसी प्रतीक को चोट पहुँचाने का फ़ैसला करना आसान हो जाता है जब आदमी पहले उसे एक आँकड़े में बदल दे।

17. रक्षा के न्यास

पहला न्यास सत्रह बरस पहले बना था।

उसका नाम था भावी पीढ़ियों की रक्षा का न्यास। उसका उद्देश्य ऐसे शोध को बढ़ावा देना था जो आनुवंशिक रोगों को बच्चों तक पहुँचने से रोक सके।
जनता उसे उन परिवारों की कहानियों से पहचानती थी जिनकी चिकित्सा का ख़र्च उठाने में उसने सहायता की थी।

उसके प्रतिनिधि स्कूलों में जाते, अस्पतालों में बोलते और राजनीतिक बहसों में हिस्सा लेते थे। हर साल वह बच्चों, डॉक्टरों और शोधकर्ताओं की तस्वीरों से भरी एक रिपोर्ट प्रकाशित करता था।
उसमें कहीं Kael Thorne का नाम नहीं था।

असल में न्यास का कोई मालिक नहीं था। उसके पास प्रबंध मंडल था, आरंभिक पूँजी थी, बाहरी लेखापरीक्षक और संपत्ति के प्रबंधन का एक अनुबंध था। दस्तावेज़ों में Therinith का एक कोष भी आता था और एक विधि कार्यालय भी। किसी एक के पास सारे जवाब नहीं थे।
कड़ी के आख़िर में कोई नाम नहीं था।

वहाँ निर्णय लेने का अधिकार था।

Kael को न्यास का मालिक होने की ज़रूरत नहीं थी। इतना काफ़ी था कि उसका पैसा सँभालने वाले जानते थे कि किसका फ़ोन कभी टाला नहीं जाता।
दूसरा न्यास आने वाली महामारियों से स्वास्थ्य व्यवस्थाओं की रक्षा करता था।

तीसरा कृत्रिम बुद्धि के सुरक्षित विकास में सहयोग देता था।

चौथा आनुवंशिक आँकड़ों के नैतिक उपयोग के लिए काम करता था।

पाँचवाँ Kars पट्टी में युद्ध से तबाह इलाक़ों की मदद करता था।

हर एक का नाम अच्छा था।

सत्ता को उन शब्दों का लिबास पसंद है जिन पर आपत्ति करना कठिन हो।

संरक्षण।

सुरक्षा।

भविष्य।

बच्चे।

शांति।

‘अदृश्य प्रभाव का न्यास’ कोई नहीं बनाता।

Nerai Sael परत में बैठी एक भुगतान की प्रविष्टि देख रही थी। रकम इतनी छोटी थी कि उस पर गंभीर मामला नहीं बनता था, और बात इतनी अजीब थी कि वह उसे बंद भी नहीं कर पा रही थी।

उसका सिरा Vesta के एक प्रतिष्ठान से जुड़ता था।

सीधे नहीं।

विश्लेषण के ब्योरे ने Vesta से जुड़े कारोबारों से स्वास्थ्य-रक्षा न्यासों को किए गए तीन भुगतान चिह्नित किए थे। हर एक का उद्देश्य वैध था। Nerai का ध्यान उनके समय पर गया, और इस बात पर भी कि भुगतान करने वाले अलग थे, फिर भी तीनों में कितनी समानता थी।

“तुम्हें लगता है कोई रेस्तराँ आनुवंशिकी के शोध के लिए पैसे दे रहा है?” Taren Voss ने पूछा।

“मुझे अभी कुछ नहीं लगता।”

“तुम्हारी सबसे आम राय यही होती है।”

Nerai ने समयरेखा बड़ी की।

“यह एक भुगतान भर की बात नहीं है। दूसरे प्रतिष्ठानों को देखो।”

Taren उसके पास बैठ गया।

समयरेखा में एक और बात दोहराई जा रही थी। ऐसे हर भुगतान के कुछ समय बाद शोध का एक नया आवेदन आता था।

“Vesta बहुत-से अच्छे कामों में सहयोग करता है,” Taren ने कहा।

“Vesta सीधे किसी काम में सहयोग नहीं करता,” Nerai ने कहा। “दान वे कंपनियाँ भेजती हैं जिनका गुज़ारा उसके प्रतिष्ठानों से चलता है।”

“सार्वजनिक रिपोर्ट में यह बात उतनी अच्छी नहीं लगेगी।”

“नए शोध आवेदन ठीक इन्हीं दानों के बाद क्यों दिखाई देते हैं?”

“कर की योजना।”

“हो सकता है।”

“साख बनाना।”

“हो सकता है।”

“Vesta में किसी का ज़मीर कचोट रहा है।”

Nerai ने उसे देखा।

“अब तक की वजहों में यह सबसे कम मुमकिन है।”

Taren ने न्यासों के आँकड़े खोले।

सभी वैध थे।

जिन राज्यों में दान घोषित करना ज़रूरी था, वहाँ घोषणाएँ दर्ज थीं। दूसरे राज्यों के अभिलेखों में केवल सम्मिलित आँकड़े थे। न्यासों ने ख़र्च का प्रयोजन बताया था, पर आख़िरी प्राप्तकर्ता का नाम हमेशा नहीं था। शोध अनुदानों पर व्यापारिक और अकादमिक गोपनीयता के नियम लागू होते थे।

“हम परियोजनाओं की सूची माँग सकते हैं,” Taren ने कहा।

“सारे अनुबंध नहीं।”

“नहीं।”

“न ही यह कि उन्हें करने को क्या कहा गया था।”

“नहीं।”

“न असल दाताओं के नाम।”

“कुछ राज्यों में नहीं।”

Nerai ने पीठ टिकाई।

“तो आख़िर हमें दिखेगा क्या?”

“जो क़ानून हमें देखने देगा।”

“क़ानून हमें न्यास का नाम देखने देगा, घोषित उद्देश्य और सहायता की कुल रकम। हमें यह नहीं दिखेगा कि फ़ैसला किसने किया, भुगतान किसे हुआ और शोध को किस सवाल का जवाब देना था।”

Taren पल भर चुप रहा।

“अब भी हमारे पास अपराध मानने की कोई वजह नहीं है।”

“जानती हूँ।”

“यह भी ज़रूरी नहीं कि Vesta का पैसा अवैध हो।”

“जानती हूँ।”

“और हो सकता है न्यास ठीक वही कर रहे हों जो कहते हैं।”

“यह भी जानती हूँ।”

Taren ने हल्की मुस्कान के साथ उसे देखा।

“तो तुम्हारा चेहरा ऐसा क्यों है जैसे अभी किसी को गिरफ़्तार करने जा रही हो?”

“इसलिए कि हर बात बेक़सूर हो सकती है, पर किसी ने तो इन सबको इस तरह सजाया है।”

काम की स्क्रीन पर एक बैंक का जवाब आया। उसने भुगतानों का पूरा इतिहास देने से इनकार किया था, क्योंकि किसी गंभीर अपराध के संदेह का आधार स्थापित नहीं हुआ था।

Nerai ने संदेश दो बार पढ़ा।

उन्हें धन का प्रवाह देखना था ताकि जान सकें कि संदेह का कोई आधार है या नहीं।

और धन का प्रवाह देखने की अनुमति के लिए उन्हें संदेह का आधार चाहिए था।

Taren ने न्यास की सहायता पाने वाली एक परियोजना की ओर इशारा किया।

“देखो।”

अनुदान Auriola के एक शोध केंद्र को मिला था। वहाँ ऑरेलियाइयों के स्वास्थ्य का अध्ययन होता था।

“यह दीर्घायु पर शोध हो सकता है,” उसने कहा।

“हो सकता है।”

“आजकल सब उसी की बात करते हैं।”

चिकित्सा एक बड़े मोड़ के क़रीब थी। प्रायोगिक उपचार पहले ही बुढ़ापे की रफ़्तार काफ़ी घटा सकते थे, क्षतिग्रस्त अंगों को फिर स्वस्थ कर सकते थे और जीवन बढ़ा सकते थे। ऑरेलियाइयों की पुनर्जनन क्षमता पर होने वाला कोई भी शोध उस जीवन की ओर यात्रा का जायज़ हिस्सा हो सकता था जिसका कोई प्राकृतिक अंत न हो।

लेकिन वह दूसरा सवाल क्या था, Nerai अभी नहीं जानती थी।

“जीवविज्ञान से जुड़ी सारी परियोजनाओं को चिह्नित करो,” उसने कहा।

“किस आधार पर?”

“पैसा कहाँ से आया है, इस आधार पर।”

“वह तो एक जगह से नहीं आया।”

“काग़ज़ पर नहीं।”

“Nerai।”

“बस चिह्नित करो। हम जाँच नहीं खोल रहे। देख रहे हैं क्या दोहराया जा रहा है।”

Taren ने उसकी बात मान ली।

उनके सामने नौ परियोजनाएँ उभरीं।

लोगों का स्वास्थ्य।

बीमारों की देखभाल।

जीवन-प्रक्रियाओं का अध्ययन।

स्वास्थ्य अभिलेखों की सुरक्षा।

क्षेत्रीय स्वास्थ्य सेवाओं की तैयारी।

संगणना प्रणालियों की रक्षा।

संकट के समय संवाद।

बीमारी का आर्थिक बोझ।

आनुवंशिक आँकड़ों का नैतिक उपयोग।

अलग-अलग देखने पर उनमें कोई संबंध नहीं था।

एक साथ देखने पर लगता था कि वे किसी ऐसे प्रश्न के हिस्से हों जिसे अभी तक किसी ने बोला नहीं।

Nerai ने Vesta की फ़ाइल खोलकर नई टिप्पणी जोड़ी।

अलग माने जाने वाले न्यासों के शोध अनुदानों में संभावित संबंध। साझा उद्देश्य अज्ञात।

प्रणाली ने उससे जोखिम का अनुमान माँगा।

अनिर्धारित।

उसने पुष्टि कर दी।

“जानती हो अजीब क्या है?” Taren ने कहा।

“बहुत कुछ।”

“Kars पट्टी का राहत न्यास और जैवसुरक्षा का न्यास, दोनों का प्रबंधक एक ही है।”

Nerai ने प्रविष्टि खोली।

बात सच थी।

एक न्यास अस्थायी अस्पतालों और शरणार्थियों की सहायता का ख़र्च उठाता था।

दूसरा स्वास्थ्य सेवाओं के अनुकरण-अध्ययनों का।

दोनों की संपत्ति का प्रबंधन Therinith का एक ही कोष करता था।

“और वह कोष?” उसने पूछा।

Taren ने रजिस्टर जाँचा।

“अंतिम स्वामी की पहचान संरक्षित है।”

Nerai ने रेखाओं की उलझन देखी।

एक तरफ़ युद्ध।

दूसरी तरफ़ जैविक शोध।

बीच में ऐसा पैसा जिसका कोई नाम नहीं।

तब उसे बिलकुल अंदाज़ा नहीं था कि वह महासभा के सामने अपने भावी भाषण के दो हिस्से देख रही है।

उसे सिर्फ़ न्यास दिखे।

और हर एक का दावा था कि वह किसी चीज़ की रक्षा करता है।

18. BIO-AI, जिसके भीतर नफ़रत नहीं थी

जैविक कृत्रिम बुद्धि का कोई चेहरा नहीं था।

पुरानी फ़िल्मों में मशीनों को आँखें दी जाती थीं, आवाज़ और मनुष्य जैसी चाल भी। लोगों को बुद्धि पर भरोसा करने या उससे डरने के लिए उसे किसी प्राणी की सूरत में देखने की ज़रूरत थी।
असली प्रणालियों को अब ऐसे रंगमंच की ज़रूरत नहीं थी।

जिस BIO-AI तक Arien को पहुँच मिली थी, वह Thaeron के अलग-अलग संगणना केंद्रों में मौजूद थी। उसका न कोई एक केंद्र था, न एक ठिकाना। उसमें जीवित प्रणालियों के मॉडल, चिकित्सकीय अभिलेख, पहचानरहित आनुवंशिक आँकड़े, रोगों के इतिहास और जैविक प्रक्रियाओं के अनुकरण काम आते थे।
वह ऐसे संबंध ढूँढ़ सकती थी जिन्हें खोजने में मनुष्यों के किसी दल को बरसों लग जाते।

उसका उपयोग उपचार विकसित करने में होता था।

अंगों को फिर से स्वस्थ करने में।

वंशानुगत जोखिमों का पूर्वानुमान लगाने में।

आने वाली पीढ़ियों की रक्षा में।

वह बुरी नहीं थी।

और यही उसकी सबसे ख़तरनाक बात थी।

Arien की असली मंशा उसकी पहुँच से बाहर थी। उसके सामने बस कुछ संस्थाओं के नाम थे और उनके बताए हुए उद्देश्य।
कहीं किसी को बीमारों की चिंता थी।

कहीं शोधकर्ताओं को उम्मीद थी कि लोगों को और बरसों का स्वस्थ जीवन मिल सकता है।
कहीं बीमारी से होने वाले नुक़सान की फ़िक्र थी।

एक नैतिकता समिति को लोगों के निजी आँकड़ों के दुरुपयोग की चिंता थी।

BIO-AI अपने सामने आए सवालों के जवाब देती रही।

उसे नहीं पता था कि वे जवाब एक ही आदमी के पास जा रहे हैं।

Arien अपनी काम की स्क्रीन के सामने बैठा उनका अर्थ अपने लिए निकाल रहा था।

पहले सामान्य निष्कर्ष आए। सांख्यिकीय अंतर, आबादियों के मॉडल, अनिश्चितताएँ और नतीजों का ग़लत अर्थ लगाने के विरुद्ध चेतावनियाँ।

फिर और गहरे संबंध सामने आए।

स्वर्ण वलय के पीछे भी मनुष्य की देह का अपना जटिल इतिहास था। इसका अर्थ दुर्बलता नहीं था। अधिकतर ऑरेलियाई स्वस्थ थे और कुछ मामलों में तो दूसरी शाखाओं से अधिक सहनशील थे।

पर हर वरदान की एक सीमा होती है।

किसी भी देह से यह वादा नहीं लिया जा सकता कि वह हर विपत्ति सह लेगी।

Arien बिना हिले नतीजे पढ़ता रहा।

मशीन उसे कोई हथियार नहीं दे रही थी।

वह उनमें दूसरों की असुरक्षा का नक़्शा देख रहा था।

हर उत्तर के साथ चेतावनियाँ थीं।

आँकड़े पूरी आबादी के स्तर के हैं।

मॉडल में अनिश्चितता का स्तर ऊँचा है।

नतीजों का इस्तेमाल भेदभाव के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

किसी भी व्यावहारिक उपयोग से पहले नैतिक और क़ानूनी समीक्षा आवश्यक है।

Arien ने चेतावनियाँ मिटाईं नहीं।

बस उनके लिए उसके मन में वह जगह नहीं थी जो नतीजों के लिए थी।

बाद में उसका संपर्क एक शोध दल की प्रमुख से हुआ। उसकी छवि मेज़ के ऊपर उभरी। वह अधेड़ उम्र की एक सेलेनी स्त्री थी। उसके चेहरे पर उस इंसान की शांति थी जिसने जीवन का बड़ा हिस्सा रोगों के साथ काम करते बिताया हो और किसी निष्कर्ष को बहुत जल्दी निश्चित कहने से बचना सीख लिया हो।

“आपके सवालों का दायरा बढ़ता जा रहा है,” उसने कहा।

“परियोजना आगे बढ़ रही है।”

“शुरुआत में हमारी बात उपचार की थी।”

“अब भी बात लोगों के स्वास्थ्य की है।”

“पर क्या वही सवाल है जो आपने शुरू में पूछा था?”

“नए उपचार आते हैं तो उनके साथ नए सवाल भी आते हैं।”

वैज्ञानिक ने सिर हिलाया, पर उसके चेहरे पर विश्वास नहीं था।

“असल में यह काम किसने करवाया है?”

“भावी पीढ़ियों की रक्षा के न्यास ने।”

“वह दाता है। मैं पूछ रही हूँ कि नतीजों का इस्तेमाल कौन करेगा।”

“स्वास्थ्य प्राधिकरण।”

“कौन-से?”

“जैसी ज़रूरत होगी।”

“यह कोई जवाब नहीं है।”

Arien ने उसे देखा।

“यह पूरे ग्रह के लिए रोकथाम का शोध है। क़ानूनी समीक्षा पूरी होने के बाद नतीजे सबके साथ साझा किए जाएँगे।”

“तो हमें पूरी बात क्यों नहीं बताई गई?”

“आप जानती हैं कि इन अभिलेखों के साथ हमारी कुछ ज़िम्मेदारियाँ जुड़ी हैं।”

यह सच था।

वैज्ञानिक चुप रही।

“BIO-AI ने हमारे कुछ अनुरोध अस्वीकार कर दिए,” अंत में उसने कहा।

“क्यों?”

“उसने उन्हें बहुत संवेदनशील माना।”

“किस लिहाज़ से?”

“उनके नतीजों से एक समुदाय को नुक़सान पहुँच सकता था।”

“और अगर हम उसी समुदाय की रक्षा करना चाहते हों?”

“शायद। लेकिन प्रणाली आपकी मंशा नहीं जानती।”

Arien लगभग मुस्करा दिया।

“तो क्या मेरी नीयत पर फ़ैसला हो चुका है?”

“यह फ़ैसला किसी को तो सोच-समझकर करना होगा।”

“मैं चाहता हूँ काम चलता रहे।”

वैज्ञानिक तन गई।

“क्या कहा आपने?”

“मैं इन सवालों के जवाब चाहता हूँ। मुझे यह मंज़ूर नहीं कि यहाँ से आगे की बात ही न हो। मेरा विश्वास है कि यह शोध ज़रूरी है।”

“और इसकी ज़िम्मेदारी कौन लेगा?”

Arien ने सीधा जवाब नहीं दिया।

“क्या भविष्य के ख़तरों से Elarion की रक्षा करना ही आपका काम नहीं?”

“है।”

“जिसे समझने से आप इनकार कर देंगी, उससे उसकी रक्षा कैसे करेंगी?”

वैज्ञानिक ने नज़र झुकाकर अपने आँकड़ों को देखा।

वैज्ञानिकों को इस सवाल से चिढ़ थी। यह याद दिलाता था कि सावधानी पर कायरता का आरोप कभी भी लगाया जा सकता है और जिज्ञासा पर ग़ैरज़िम्मेदारी का।

“हमें नैतिकता पर नई राय चाहिए होगी,” उसने कहा।

“न्यास उसका इंतज़ाम करेगा।”

“स्वतंत्र राय।”

“बेशक।”

संपर्क कट गया।

दो दिन बाद नैतिकता कार्यालय ने अपना मत दिया। शोध की स्पष्ट सीमाएँ थीं। उससे आगे बढ़ने के लिए नई अनुमति लेनी होगी।

Arien ने दस्तावेज़ पढ़ा।

वह सटीक था।

वह कठोर था।

और उस इंसान के सामने वह बेबस था जिसका इन सीमाओं का सम्मान करने का कोई इरादा ही नहीं था।

BIO-AI के भीतर नफ़रत नहीं थी।

उसके पास ऑरेलियाइयों को चोट पहुँचाने का कोई कारण नहीं था।

उसे पता नहीं था कि Jesair कौन है या क्यों उसका नाम सुनकर Arien के सीने की हड्डी के नीचे कसाव उठता है।

वह बस प्रश्नों के उत्तर देती थी।

नफ़रत उसकी गणनाओं में नहीं आई थी।

वह इस चुनाव में आई थी कि प्रश्न कौन-से पूछे जाएँ।

19. बिना नक़्शे की प्रयोगशालाएँ

पहली प्रयोगशाला Aménia के समुद्रतट के पास थी। वहाँ शोधकर्ताओं ने अपना जीवन घाव भरने की प्रक्रिया को समझने में लगाया था।

दूसरी उत्तर के एक राज्य में थी, जहाँ Elarion के सबसे अच्छे चिकित्सा विश्वविद्यालयों में से एक था। उसके वैज्ञानिक स्वास्थ्य की पुरानी पहेलियाँ सुलझाते थे।

तीसरी कक्षीय वलय पर थी। उसका काम Thaeron के बंद नगरों के निवासियों की सुरक्षा से जुड़ा था।

चौथी Thaeron पर थी और संगणना के संसाधन उपलब्ध कराती थी।

पाँचवीं साधारण अर्थ में प्रयोगशाला थी ही नहीं। वह बीमा-विश्लेषण की एक कंपनी थी जो स्वास्थ्य-संकटों के आर्थिक परिणामों का अनुमान लगाती थी।

छठी का काम अज्ञात महामारी के समय आपातकालीन उपायों के क़ानूनी पहलुओं का अध्ययन करना था।

इनमें कोई भी दल महामारी बनाने पर काम नहीं कर रहा था।

कम से कम उन काग़ज़ों के मुताबिक तो नहीं जो उसके सामने थे।

Aménia के वैज्ञानिकों को लगा कि वे बीमार लोगों के काम आएँगे। अपने काम को लेकर उनके मन में यही तस्वीर थी।

उत्तर की प्रयोगशाला के वैज्ञानिक भी यही समझते थे। उन्हें मालूम नहीं था कि किसी और की नज़र में उनके निष्कर्षों का कोई दूसरा ही अर्थ था।

कक्षा में काम कर रहे दल को विश्वास था कि वह Thaeron के लोगों को बाहर से आने वाली अनजानी बीमारियों से बचा रहा है।

बीमा विश्लेषकों की चिंता अस्पतालों की क्षमता, उत्पादन में रुकावट और अलग-थलग पड़े क्षेत्रों का ख़र्च थी। जैविक आँकड़े उनकी आँखों के सामने नहीं थे।

वकील स्वास्थ्य आपातकाल में राज्यों के अधिकारों पर एक सामान्य अध्ययन तैयार कर रहे थे।

हर किसी को अपना टुकड़ा मालूम था।

नक़्शा किसी के पास नहीं था।

Arien के पास था।

उसकी काम की स्क्रीन पर नतीजे परतों में उभरते गए। अभी किसी चीज़ ने अंतिम रूप नहीं लिया था। थीं तो कुछ संभावनाएँ, कुछ सीमाएँ और कुछ ऐसी जगहें जहाँ मनुष्य असुरक्षित था।

कुछ नतीजे एक-दूसरे का खंडन करते थे।

कुछ और सटीक नहीं थे।

कुछ प्रयोगशालाओं ने अधिक जानकारी के बिना आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। कुछ ने समय माँगा।

Arien अधीर होने लगा था।

Kael नहीं।

“शोध की अपनी लय होती है,” उसने एक मुलाक़ात में कहा।

“मुझे नतीजे चाहिए, लय नहीं।”

“आपको यह भी चाहिए कि नतीजों पर आपका नाम न हो।”

Kael ने धन का नक़्शा खोला। उनकी पिछली मुलाक़ात के बाद से कंपनियों की संख्या दोगुनी हो गई थी।

“यह बेवजह इतना पेचीदा है,” Arien ने कहा।

“अदृश्य रहने की अपनी क़ीमत है।”

“इतने लोग हैं। कोई भी बोल सकता है।”

“क्या कहेगा? उसे पूरी बात मालूम कहाँ है?”

Kael ने एक न्यास की नियमित आमदनी दिखाई। उसका अप्रत्यक्ष संबंध Vesta के कारोबार से था। वह उन नगरों में भी बढ़ रही थी जहाँ रेस्तराँओं के ग्राहकों की संख्या नहीं बढ़ी थी।

“Vesta ही क्यों?” Arien ने पूछा।

“क्योंकि वहाँ से पैसा आता है। क्या आपके लिए इतना जानना काफ़ी नहीं?”

“वह पैसा आता कहाँ से है?”

Kael ने उसकी ओर देखा।

“क्या आपके लिए जानना ज़रूरी है?”

Arien थोड़ी देर चुप रहा।

“नहीं।”

“तो मत पूछिए।”

नक़्शे के अगले हिस्से में Kars पट्टी से आता हुआ प्रवाह दिखाई दिया।

“और यह?”

“मुनाफ़ा।”

“युद्ध से।”

“व्यापार से।”

“आपूर्तिकर्ता उन सरकारों को तकनीक देते हैं जिन्हें अंतरराष्ट्रीय समझौतों ने मान्यता दी है।”

“और फिर न्यास उन लोगों का इलाज करता है जो उसी तकनीक से घायल हुए।”

Kael पीछे की ओर टेक लगाकर बैठ गया।

“दुनिया को संतुलन पसंद है।”

Arien को उससे वितृष्णा हुई।

नैतिक नहीं। कुछ निजी-सी। Kael यातना के बारे में बात करता था और उसकी आवाज़ ज़रा नहीं काँपती थी, मानो मनुष्य गणना में बस एक और चर हों। Arien को अब भी ख़ुद को समझाना पड़ता था कि वह यह क्यों कर रहा है। उसे Jesair चाहिए था, Mareia, ऑरेलियाई, पुराना अन्याय और अपना अपमान। Kael को कुछ नहीं चाहिए था।

उसके लिए तंत्र ही काफ़ी था।

“परियोजना कब बंद होगी?” Kael ने पूछा।

“अंतिम मॉडल अभी हमारे पास नहीं है।”

“मैं पूछ रहा हूँ कि पैसा कब देना बंद करना है।”

“जब मुझे पता चल जाएगा कि क्या ऐसा स्वास्थ्य-संकट पैदा हो सकता है जो एक हद के भीतर रहे।”

Kael की निगाह बदल गई।

“एक हद के भीतर।”

“हाँ।”

“भौगोलिक हद?”

“लोगों की।”

Kael चुप रहा।

Arien ने आगे कहा,

"मक़सद सभ्यता का अंत नहीं है। ऐसा संकट चाहिए जो दिखा दे कि ऑरेलियाई कोई अपवाद नहीं हैं। कि उनकी जैविक विरासत ऐसा वरदान नहीं जिसकी कोई क़ीमत न हो। कि Jesair अपने लोगों को भी बचा नहीं सकता।"

"और दूसरी शाखाओं का क्या?"

"उन तक संकट नहीं पहुँचना चाहिए।"

"नहीं पहुँचना चाहिए?"

Arien की भौंहें सिकुड़ीं।

"नहीं पहुँचेगा।"

Kael ने प्रयोगशालाओं के नक़्शे को देखा।

"प्रकृति राजनीतिक उद्देश्यों का लिहाज़ करने की आदी नहीं है।"

"इसीलिए हमारे पास BIO-AI है।"

"मशीन संभावना गिन सकती है। आपकी मंशा के चारों ओर दीवार खींचकर दुनिया को उसके भीतर नहीं रख सकती।"

Arien आगे झुका।

"आप ही Jesair को रोकना चाहते थे।"

"मैं उसके विचार को रोकना चाहता था।"

"Jesair के बिना उसके पास आवाज़ नहीं होगी।"

"शहीदों की आवाज़ ज़िंदा लोगों से अधिक बुलंद होती है।"

Arien खड़ा हो गया।

"वह शहीद नहीं होगा। वह ऐसा आदमी होगा जिसने रोशनी का वादा किया और अपनी शाखा तक को न बचा सका।"

Kael उसका चेहरा पढ़ता रहा।

"अब भी आप यह उसी की वजह से कर रहे हैं।"

“मैं यह Elarion के संतुलन के लिए कर रहा हूँ।”

“बेशक।”

वह शब्द गाली की तरह सुनाई दिया।

Arien बिना विदा लिए चला गया।

उसी रात एक प्रयोगशाला में अनुकरण-अध्ययनों का एक और दौर पूरा हुआ। दल की प्रमुख ने नतीजे पढ़े और उन्हें अनिर्णायक चिह्नित किया। उसने और शोध तथा अधिक कड़ी निगरानी की सिफ़ारिश की।
उसकी रिपोर्ट न्यास को मिली।

न्यास ने उसे परामर्श कंपनी को भेजा।

परामर्श कंपनी ने काम करवाने वाले के लिए उसका संक्षिप्त रूप बनाया।

Arien तक सारणियाँ पहुँचीं।

चेतावनी परिशिष्ट में रह गई।

किसी ने झूठ नहीं कहा।

किसी ने नतीजे नहीं बदले।

सच बस इतने हाथों से होकर गुज़रा कि अंत में उतना ही बचा जितना आख़िरी सिरे पर बैठे आदमी को देखना था।
प्रयोगशालाएँ काम करती रहीं।

हर एक अपनी रोशनी में।

उनके बीच अँधेरा था।

और उस अँधेरे में नक़्शा एक ही आदमी के हाथ में था।

20. Mareia का संदेह

Mareia Lioren ने पहली अर्ज़ी पर विशेष ध्यान नहीं दिया था।

वह ऑरेलियाइयों की पुनर्जनन क्षमता से संबंधित पहचानरहित चिकित्सकीय आँकड़ों के लिए थी। शोध परियोजना को विधिवत स्वीकृति प्राप्त थी, नैतिक समीक्षा की राय साथ थी और एक प्रतिष्ठित न्यास धन दे रहा था।

ऐसी सैकड़ों अर्ज़ियाँ स्वास्थ्य अभिलेखागारों से होकर गुज़रती थीं।

चिकित्सा उसे नियंत्रित करने वाले क़ानूनों से तेज़ बदल रही थी। शोधकर्ता बुढ़ापा थामने, क्षतिग्रस्त अंगों को फिर स्वस्थ करने और जीवन को उस हद तक बढ़ाने की राह तलाश रहे थे जिसकी पिछली पीढ़ियाँ कल्पना भी नहीं कर सकती थीं।

इस शोध में ऑरेलियाइयों की वंशावलियों के आँकड़े असाधारण रूप से मूल्यवान थे।

उनके शरीर और बीमारियों का अपना इतिहास था। उनके वंशों के अभिलेख सैकड़ों बरस पीछे तक जाते थे। उन पन्नों में न जाने कितने लोगों के जीवन की स्मृति सँजोई गई थी।

Mareia ने पहली अर्ज़ी मंज़ूर कर दी।

दूसरी उसे नौ दिन बाद मिली।

वह दूसरे राज्य से आई थी और दीर्घायु के नए उपचारों के दौरान सामने आए स्वास्थ्य-संबंधी अंतर के बारे में थी।

उसके भी सारे ज़रूरी काग़ज़ पूरे थे।

तीसरी अर्ज़ी जैविक आँकड़ों की सुरक्षा से जुड़ी थी।

चौथी स्वास्थ्य-संकट में विभिन्न समुदायों के अनुभवों से।

पाँचवीं एक क़ानूनी अध्ययन था। उसमें आँकड़े नहीं माँगे गए थे। पूछा गया था कि आपातकाल में अभिलेखों की देखभाल को लेकर क्या शर्तें लागू होती हैं।

Mareia शायद इन्हें कभी एक साथ रखकर न देखती, अगर पाँचवीं अर्ज़ी में उसकी नज़र उसी अटपटे वाक्यांश पर न पड़ती जो पहली में था।

अनेक पीढ़ियों के साक्ष्य में जिसकी प्रतिध्वनि सुनाई दे।

वह विशेषज्ञ की कोई भूल नहीं थी।

कोई विलक्षण शब्द-संयोग भी नहीं था।

अजीब बात यह थी कि उसे दो ऐसी संस्थाओं ने इस्तेमाल किया था जिनमें काग़ज़ों के मुताबिक कुछ भी साझा नहीं था।

Mareia ने पुरानी अर्ज़ियाँ खोलीं।

वह वाक्यांश तीन में था।

हर बार किसी दूसरी जगह।

एक बार आँकड़ों के विवरण में।

एक बार क़ानूनी औचित्य में।

एक बार तकनीकी परिशिष्ट में।

जैसे एक वाक्य को किसी ने बाँटकर अलग-अलग दस्तावेज़ों में बिठा दिया हो।

अगले कई घंटे वह उनके साथ दर्ज विवरणों की तुलना करती रही। संरक्षित विश्लेषणों की सामग्री नहीं देखी। उसकी अनुमति उसे नहीं थी। उसे बस यह दिखता था कि आवेदन किसने किया, किस तरह की जानकारी माँगी, राय किसने दी और घोषित प्रयोजन क्या था।

कोई अदृश्य रिश्ता था जो ऑरेलियाइयों के इतिहास पर हुए शोध को किसी भावी स्वास्थ्य-संकट से जोड़ता था।

Mareia ने अपने लिए एक निजी नक़्शा बनाया।

Nerai के नक़्शे की तरह वह वित्तीय नहीं था।

वह जैविक था।

एक छोर पर वंशों के अभिलेख थे।

दूसरे पर एक काल्पनिक स्वास्थ्य-संकट।

बीच में ऐसे प्रश्न जो एक-दूसरे के पास आते थे, लेकिन कहीं छूते नहीं थे।

“आज फिर देर तक काम कर रही हो।”

पीछे से Jesair की आवाज़ आई।

Mareia चौंक गई। उसे उसके भीतर आने की आहट नहीं मिली थी।

वह अभिलेखागार की छोटी-सी अध्ययनशाला के द्वार पर खड़ा था। सादे, गहरे रंग के कपड़े पहने था और हाथ में गर्म पेय के दो प्याले थे।

“तुम यहाँ आए कैसे?”

“दरवाज़े से।”

“अभिलेखागार के संरक्षित हिस्से में।”

“मैं तो प्रवेश-कक्ष तक आया। यहाँ तुमने आने दिया।”

उसने मेज़ पर देखा। काम में डूबी वह सूचना देखना भूल गई थी।

Jesair ने उसे प्याला थमाया।

“Nerai कहती है कि जब तुम खाना भूल जाओ तो तुम्हारे लिए कुछ ऐसा लाना चाहिए जो कम-से-कम खाने का स्वाँग तो भरता हो।”

“तुम दोनों मेरे बारे में बातें करते हो?”

“ग्रह की सुरक्षा के मामलों में ही।”

Mareia हल्का-सा मुस्कराई, फिर झट गंभीर हो गई।

Jesair ने मेज़ के ऊपर तैरती परतों को देखा।

“हुआ क्या है?”

“मुझे नहीं मालूम।”

“बिलकुल Nerai की तरह कहा।”

“शायद परिवार की ख़ासियत हो।”

वह उसके सामने बैठ गया।

पिछले कुछ हफ़्तों से स्वास्थ्य और नागरिक मामलों की बैठकों में Jesair की मौजूदगी बढ़ गई थी। Nitra का उसका भाषण दूर-दूर तक पहुँच रहा था। उसे बहसों, विश्वविद्यालयों और जनसभाओं में बुलाते थे। कुछ लोग उसमें पहले ही एक ऐसे आंदोलन का नेता देखने लगे थे जिसका अभी नाम तक नहीं था।
वह इससे इनकार करता था।

जितना वह इनकार करता, लोग उस पर उतना अधिक भरोसा करते थे।

“दिखाओ,” उसने कहा।

Mareia ने उसे एक-एक अर्ज़ी समझाई। Jesair बीच में टोके बिना सुनता रहा।

“क्या इनका आपस में कोई संबंध हो सकता है?” उसने पूछा।

“कोई देर तक देखता रहे तो हर चीज़ का हर चीज़ से संबंध निकल सकता है।”

“यह जवाब नहीं था।”

“हो सकता है। पर कैसे, मैं नहीं जानती।”

“काम करवाने वाला एक है?”

“नहीं।”

“न्यास एक है?”

“नहीं।”

“प्रयोगशाला एक है?”

“नहीं।”

“तो फिर इनमें समानता क्या है?”

Mareia ने जैविक शोध वाले क्षेत्रों की ओर इशारा किया।

“दिशा।”

Jesair प्रतीक्षा करता रहा।

“सोचो,” उसने कहा, “अगर यहाँ असली सवाल कुछ और हो। जो लोग इन काग़ज़ों पर काम कर रहे हैं, उन्हें तो अपना काम समझ आता होगा। पर उन्हें क्या मालूम कि कोई और उनकी मेहनत में क्या तलाश रहा है?”

“इससे उसे मिलेगा क्या?”

“यह उस सवाल पर निर्भर है जिसे सिर्फ़ वही जानता है।”

Jesair नक़्शे को देखने लगा।

“तुम्हें लगता है कि कोई ऑरेलियाइयों की कमज़ोरी ढूँढ़ रहा है?”

Mareia ने तुरंत जवाब नहीं दिया।

“मुझे लगता है कि बहुत सारे लोगों को ऐसी चीज़ें समझने के पैसे मिल रहे हैं जिनका कोई इस तरह दुरुपयोग कर सकता है।”

“किससे?”

“वह मुझे नहीं दिखता।”

Mareia ने आँकड़ों का कुछ हिस्सा बंद किया और उसकी ओर देखा।

अध्ययनशाला के कोमल प्रकाश में उसकी आँखों का स्वर्ण वलय लगभग दिखाई नहीं देता था। बस एक महीन रेखा, ध्यान न दे तो किसी को न दिखे।

Arien उससे नफ़रत करता था।

यह ख़याल अचानक आया।

Mareia को घर में उसका चेहरा याद आया, अपनी कलाई पर उसके हाथ की पकड़, Jesair का नाम लेने का उसका ढंग।

फिर वह संदेश।

निजी फ़ैसले कभी निजी नहीं रहते।

“Mareia?”

“Arien।”

Jesair हिला नहीं।

“क्या हुआ उसे?”

“मालूम नहीं।”

“तुम्हें लगता है कि इसके पीछे उसका हाथ है?”

“मेरे पास ऐसा मानने की कोई वजह नहीं है।”

“लेकिन यह ख़याल आया।”

“हाँ।”

Jesair थोड़ी देर चुप रहा।

“इसलिए कि वह वित्तीय संस्थाओं के साथ काम करता है?”

“इसलिए कि उसे लोग भी तंत्र दिखाई देते हैं। और इसलिए कि जब उसकी आवाज़ में ग़ुस्सा सुनाई देना बंद हो गया, तब मुझे उससे और डर लगने लगा।”

Jesair ने प्याला मेज़ पर रख दिया।

“हमें Nerai को बताना चाहिए।”

“बिना सबूत?”

“आरोप की तरह नहीं।”

“मैं अपनी बहन को जानती हूँ। उसे बिना सबूत का सवाल दिखाएँगे तो वह सबूत ढूँढ़ने लगेगी।”

“शायद वही उसका काम है।”

Mareia ने उसकी ओर देखा।

“और अगर मैं ग़लत हुई?”

“तो उसे कुछ नहीं मिलेगा।”

“तलाश कभी बिल्कुल ख़ाली हाथ नहीं लौटती। थोड़ा-बहुत भरोसा तो वह हमेशा तोड़ देती है।”

Jesair ने सिर हिलाया।

“तो उसे Arien के बारे में मत बताओ। परियोजनाएँ दिखाओ।”

Mareia ने फिर नक़्शे की ओर देखा।

“और अगर सब बेक़सूर हों?”

“तो उन्हें जाँचकर फ़ाइल बंद कर देंगे। किसी रोगी का नाम लिए बिना।”

“मैं लोगों के स्वास्थ्य अभिलेखों को हर किसी के लिए सबूत की सामग्री नहीं बनाना चाहती,” Mareia ने कहा।

“मैं भी नहीं। Nerai को बस सार्वजनिक हिस्सा भेजो।”

“पर तुम्हारी कही बात अब अपने ही रास्ते चल रही है। लोग उसकी आड़ में उन चीज़ों को जायज़ ठहराते हैं जो तुम्हारा मतलब नहीं थीं।”

“जानता हूँ।”

“कुछ लोग तो राजनेताओं के स्वास्थ्य अभिलेख भी सार्वजनिक करना चाहते हैं। कुछ कहते हैं निजता बस दोषियों के छिपने की जगह है।”

Jesair ने सिर झुका लिया।

“शायद मैं वह सीमा ठीक-ठीक नहीं बता पाया।”

“तुमने बताई थी। लोग बस वह हिस्सा सुनते हैं जिसकी उन्हें ज़रूरत होती है।”

कुछ देर उनके बीच मौन रहा।

फिर Mareia ने परियोजनाओं की सूची छोड़कर बाक़ी सारी परतें बंद कर दीं।

“मैं उसे बस नाम भेजूँगी, आवेदन करने वालों के नाम और धन के जो स्रोत सार्वजनिक हैं, वे।”

“और एक सवाल।”

“क्या?”

Jesair ने बुझे हुए नक़्शे की ओर देखा।

“पैसा कौन दे रहा है कि किसी दिन ये अलग-अलग चीज़ें एक-दूसरे से मिलें?”

Mareia ने संदेश तैयार किया।

प्राप्तकर्ता: Nerai Sael।

विषय: शोध आवेदनों में संभावित संबंध।

उसने लिखा,

यह किसी अनुचित आचरण का प्रमाण नहीं है। फिर भी मुझे जानना है कि क्या इन परियोजनाओं का पैसा एक ही स्रोत से आता है, या निर्णय का अधिकार कुछ उन्हीं लोगों के पास है। अलग-अलग हर परियोजना समझ में आती है। एक साथ वे एक ऐसा सवाल पूछती हैं जिसे मैं तब तक ज़बान पर नहीं लाना चाहती जब तक जान न लूँ कि सवाल पूछा किसने है।

उसने सूची संलग्न की।

भेजने से पहले ठिठकी।

Jesair ने उसे नहीं छुआ। उसे बताया नहीं कि उसे क्या करना चाहिए।

बस वहीं बैठा रहा।

Mareia ने संदेश भेज दिया।

परत के भवन में Nerai के नाम के आगे एक सूचना चमकी।

कई हज़ार किलोमीटर दूर एक प्रयोगशाला की प्रणाली ने एक अध्ययन पूरा किया। जिस न्यास ने उसका ख़र्च उठाया था, उसके पास नतीजा अपने आप चला गया।

Thaeron पर संगणना का एक काम पूरा हुआ। उसे कराने वाले का नाम नहीं था।

Therinith में एक कोष के प्रबंधक ने एक और भुगतान मंज़ूर किया।

Vesta के एक प्रतिष्ठान में उस दिन का हिसाब बंद हुआ। बैंक की निगाह में वह भी और दिनों जैसा दिन था।

और Arien Korveth अपने घर में अकेला बैठा उन रेखाओं को अपने सामने पास आते देख रहा था जो कहीं और एक नक़्शे पर नहीं थीं।

अभी कोई बीमारी नहीं थी।

बीमारी को अभी अपना पहला बुख़ार भी नहीं मिला था।

न कोई नगर बंद हुआ था, न किसी परिवार को अस्पताल के एकांत-कक्ष की पारदर्शी दीवार के पीछे अपने किसी प्रिय को छोड़ना पड़ा था।

अभी बस पैसा था।

सवाल थे।

आँकड़े।

गणनाएँ।

और बहुत-से बेक़सूर लोग, जिनमें से हर एक ने काम का अपना एक छोटा हिस्सा किया था, बिना उस वाक्य को जाने जिसमें एक दिन उसे पिरोया जाना था।

विपदा को अभी शरीर नहीं मिला था।

लेकिन उसका बहीखाता बन चुका था।

21. अंधेपन की परीक्षा

Mareia का संदेश मिलने के सात मिनट बाद Nerai ने उसे खोला।

वह अब भी परत में थी। अधिकतर कर्मचारी चले गए थे और गलियारों में सिर्फ़ रात की पाली के विश्लेषक दल, सुरक्षा प्रणालियाँ और वे लोग रह गए थे जो ख़ुद नहीं समझा पाते थे कि कोई सवाल उन्हें घर क्यों नहीं जाने देता।

Nerai उन्हीं आख़िरी लोगों में थी।

उसने संदेश एक बार पढ़ा।

फिर दूसरी बार।

तीसरी बार पढ़ते हुए उसने Mareia का नाम हटाया और अपने सामने सिर्फ़ परियोजनाओं की सूची रहने दी।

लोगों के स्वास्थ्य पर शोध।

स्वास्थ्य के भिन्न अनुभव।

पीढ़ियों का चिकित्सकीय इतिहास।

आनुवंशिक आँकड़ों की सुरक्षा।

अलग-अलग समुदायों पर महामारी का असमान बोझ और स्वास्थ्य सेवाओं की प्रतिक्रिया।

संकट में अभिलेखों की देखभाल।

हर मद का अपना आवेदक था, अपना उद्देश्य, अपना धन। किसी एक में भी संदेह का कारण नहीं था। कुछ प्रश्न तो आधुनिक चिकित्सा के सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों में गिने जाते थे।

Nerai ने वित्तीय परतें खोलीं।

मॉडल में औपचारिक रूप से अलग-अलग भुगतानकर्ता दिखे। लेकिन हर परियोजना में ठीक वही ख़ाना ओझल रहा जो Nerai को यह तुलना करने देता कि पैसे पर फ़ैसले का अधिकार किसके पास था।

हर ख़ाली जगह की अलग क़ानूनी वजह थी। किसी शाखा को वह एक सार्वजनिक अनुबंध तक देख पाती थी, दूसरी किसी संरक्षित कोष पर रुक जाती थी। स्क्रीन उन्हें अगल-बग़ल दिखाती थी, पर जो जानकारी नहीं थी उसे अपनी ओर से जोड़ने का उसे अधिकार नहीं था।

Nerai ने उपलब्ध सारी परतें एक साथ रखीं।

मेज़ पर एक नक़्शा उभरा।

वह किसी अपराध का नक़्शा नहीं लगता था।

वह टूटे हुए काँच जैसा दिखता था।

“अभी तक यहीं हो?”

Taren Voss कंधे पर कोट डाले दरवाज़े पर खड़ा था।

“नहीं,” Nerai ने कहा। “मैं अभी घर चली गई हूँ।”

Taren भीतर चला आया।

“तो इस तरह जाती हो तुम?”

“चुप।”

उसने नक़्शे की ओर देखा।

“हम ढूँढ़ क्या रहे हैं?”

“पता नहीं।”

“बहुत ख़ूब। मेरी पसंदीदा श्रेणी।”

Nerai ने उसे Mareia की सूची भेजी, साथ की इबारत हटाकर।

Taren बैठकर धीरे-धीरे एक-एक मद पढ़ने लगा।

“सब स्वास्थ्य-संबंधी शोध है।”

“सब नहीं।”

“अच्छा। स्वास्थ्य-संबंधी शोध, क़ानूनी विश्लेषण और संकटों के मॉडल।”

“उन्हें जोड़ता क्या है?”

“ऑरेलियाई।”

“और ठीक-ठीक।”

Taren ने सोचा।

“ऑरेलियाइयों की वंशानुगत विशेषताएँ।”

“और ठीक-ठीक।”

थोड़ी देर मौन रहा।

फिर उसने समयरेखा की ओर इशारा किया।

“बात केवल उनकी विशेषताओं की नहीं है। व्यवस्था उनके साथ क्या करेगी, यह भी है।”

Nerai ने सिर हिलाया।

“कोई सिर्फ़ यह नहीं पूछ रहा कि ऑरेलियाई कैसे हैं। वह यह भी पूछ रहा है कि किसी स्वास्थ्य-संकट के दौरान सभ्यता अपने इन लोगों पर किस तरह नज़र रखेगी।”

Taren ने पीठ टिका ली।

“यह उनकी रक्षा का शोध भी हो सकता है।”

“हो सकता है।”

“दीर्घायु के उपचारों से इसका संबंध हो सकता है।”

“हो सकता है।”

“किसी प्राकृतिक महामारी का सामना करने की तैयारी भी हो सकती है।”

“हो सकता है।”

“और वह भी हो सकता है जिसे तुम कहना नहीं चाहती थीं।”

Nerai ने उसकी ओर देखा।

Taren ने Mareia के आख़िरी वाक्य की ओर इशारा किया।

“वह सवाल जिसे वह ज़बान पर नहीं लाना चाहती।”

Nerai ने संदेश बंद कर दिया।

“हमें सबसे बुरी व्याख्या से शुरुआत करने का अधिकार नहीं है।”

“पर उसे परखने का तो अधिकार है।”

“तभी, जब हमारे पास आँकड़े हों।”

“और हैं?”

Nerai ने नक़्शे की अँधेरी जगहों को देखा।

“हमारे पास यह बताने वाले आँकड़े हैं कि हमें आँकड़े दिख नहीं रहे।”

परत एक राज्य से दूसरे में होने वाली वित्तीय गतिविधियों की तुलना कर सकती थी, पर अपनी मर्ज़ी से सारे खाते नहीं खोल सकती थी। हर संरक्षित प्रवाह के लिए उसे क़ानूनी आधार चाहिए था। हर कोष के लिए अलग आवेदन। हर राज्य के लिए अलग क़ानूनी शब्दावली।

इस तरह एक सवाल टूटकर बीस अर्ज़ियाँ बन सकता था।

हर अर्ज़ी के लिए अलग औचित्य चाहिए था।

और औचित्य ठीक वही चीज़ थी जो अभी Nerai के पास नहीं थी।

“देखो, कहीं फ़ैसले का अधिकार उन्हीं लोगों के पास तो नहीं,” उसने कहा।

Taren ने प्रबंध मंडलों के सदस्यों, बाहरी सलाहकारों, लेखापरीक्षकों और कोष प्रबंधकों की तुलना शुरू की। प्रणाली को हज़ारों संबंध मिले।

कुछ मायने रखते थे।

अधिकतर नहीं।

वही लेखापरीक्षक सैकड़ों न्यासों के लिए काम करते थे। वही विधि कार्यालय आधे अंतरराष्ट्रीय कोषों का प्रतिनिधित्व करते थे। प्रबंधक कई मंडलों में बैठते थे क्योंकि यही उनका पेशा था।

जितने अधिक आँकड़े उन्होंने खोले, उतने अधिक संबंध मिले।

और जितने अधिक संबंध मिले, उतना कठिन हो गया यह पहचानना कि किसका कोई अर्थ था।

“परत की यही मुश्किल है,” Taren ने कहा। “जब तुम पूरे ग्रह को एक साथ देखती हो तो किन्हीं दो लोगों के बीच बस चंद अनुबंधों का फ़ासला रह जाता है।”

“इसीलिए हम कोई संबंध नहीं खोज रहे।”

“तो क्या?”

“दिशा।”

Nerai ने दृश्य बदला।

कंपनियों के नाम हटा दिए।

परियोजनाओं के शीर्षक हटा दिए।

राज्यों को हटा दिया।

बस ख़रीदी गई सेवाओं की क़िस्में बचीं।

अभिलेखों का अध्ययन।

गणनाएँ।

शोध दलों का काम।

देखभाल की व्यवस्था।

अस्पतालों की ज़रूरतें।

आपातस्थिति में अधिकारियों के दायित्वों की समीक्षा।

अलग-अलग समुदायों पर स्वास्थ्य-संकट का बोझ पड़ने पर समाज की प्रतिक्रिया का अध्ययन।

Taren ने मज़ाक करना छोड़ दिया।

“इस तरह तो यह और भी बुरा लगता है।”

“इस तरह यह अलग दिखता है।”

“अगर हमें पता होता कि पैसा कोई एक आदमी दे रहा है—”

“हमें नहीं पता।”

“अगर हमें पता होता कि नतीजे कोई एक साथ रख रहा है—”

“हमें नहीं पता।”

“अगर हमें पता होता कि वह उनसे करेगा क्या—”

“हमें नहीं पता।”

Nerai ने आँखें मूँद लीं।

उसके मन में सम्मेलन में कही Jesair की बात गूँजी।

आँखें मूँदकर हिस्से की गणना नहीं हो सकती।

तब वह सार्वभौमिक बुनियादी आय की बात कर रहा था।

मूल्य की।

न्याय की।

अब उसके सामने कुछ और था जिसकी गणना समाज आँखें मूँदकर करना चाहता था।

ख़तरा।

“असल मालिकों की जानकारी के लिए हम त्वरित आवेदन दें,” Taren ने कहा।

“किस आधार पर?”

“परियोजनाओं का एक साथ चलना।”

“एक साथ चलना कोई अपराध नहीं।”

“आनुवंशिक आँकड़ों के दुरुपयोग का ख़तरा।”

“हमने कोई दुरुपयोग साबित नहीं किया।”

“तो फिर हम करें क्या?”

Nerai ने जवाब नहीं दिया।

ग्रह पर तीन समय-क्षेत्र दूर Arien Korveth के सामने एक रिपोर्ट खुली थी जिसका शीर्षक इतना नीरस था कि अधिकतर लोग उसे खोलते तक नहीं।

संकट के समय जनस्वास्थ्य संस्थाओं के तालमेल का आकलन।

रिपोर्ट Xanos की संकट-प्रबंधन में विशेषज्ञ एक कंपनी ने तैयार की थी। उसके विश्लेषकों ने न जैविक नतीजे देखे थे, न ऑरेलियाइयों के वंशों के आँकड़े। उन्हें बस एक काल्पनिक परिस्थिति दी गई थी।

एक अनजान बीमारी।

कई राज्य।

कुछ समुदायों पर दूसरों से अधिक बोझ।

निजता की रक्षा की अलग-अलग परंपराएँ।

अलग-अलग स्वास्थ्य व्यवस्थाएँ।

अलग-अलग राजनीतिक संस्कृतियाँ।

उन्हें यह समझना था कि संकट की सही तस्वीर Elarion के सामने कब साफ़ होगी।

विश्लेषक अपने काम को जनसेवा मानते थे।

वे चाहते थे कि कोई असली बीमारी आए, उससे पहले ही व्यवस्था की कमियाँ दूर की जा सकें।

नतीजा असुविधाजनक था।

चिकित्सा कर्मियों के पास पहले से ही सजग उपकरण थे।

अस्पतालों की ज़िम्मेदारी अपने मरीज़ों के प्रति थी।

वंशों के अभिलेखागारों पर भी उन परिवारों के प्रति ज़िम्मेदारी थी जिन्होंने उन्हें अपना इतिहास सौंपा था।
राज्यों को जानकारी साझा करने में संकोच होता।

कुछ को रोगियों की रक्षा की चिंता थी।

कुछ को अपनी साख बचाने की।

राजनेता बिना पुख़्ता सबूत के किसी वंश का नाम सार्वजनिक करने से बचते।
भेदभाव को लेकर पुराने विवादों के बाद यह नियम समझ में आता था।

पर इस काल्पनिक परिस्थिति में गुज़रता वक़्त भी मायने रखता था।

Arien अनुमानों को पढ़ता रहा।

पहला संदेह।

पहली रिपोर्ट।

पहली साझा चिंता।

पहली बार पूरी बात का नाम लिया जाना।

पहले और आख़िरी बिंदु के बीच एक फ़ासला था।

इंतज़ार।

कुछ अनुमानों में और लंबा।

Arien ने पीठ टिका ली।

प्रणाली का हर हिस्सा ठीक वही कर रहा था जिसके लिए उसे बनाया गया था।

कृत्रिम बुद्धि दोहराते क्रम पहचान रही थी और चिकित्सक रोगियों की रक्षा कर रहे थे।

क़ानून निजता की रक्षा कर रहे थे।

चूक उनके साथ मिलकर काम करने में पैदा हुई।

मशीन क्रम पहचान रही थी।

चिकित्सक रोगी की रक्षा कर रहा था।

अभिलेखागार परिवार की रक्षा कर रहा था।

अधिकारी वैधानिकता की रक्षा कर रहा था।

राजनेता जनता को दहशत से बचा रहा था।

और इन्हीं सब सुरक्षाओं के बीच ऐसा वक़्त बीत गया जिसमें किसी को पूरा सच कहने का साहस नहीं हुआ। रिपोर्ट के हाशिए पर विश्लेषकों की चेतावनी थी।

अलग-अलग लोगों पर बीमारी का असमान असर अपने आप इस बात का प्रमाण नहीं है कि उसका कारण वंश है। किसी समुदाय का नाम समय से पहले उछालने पर उसके लोगों को कलंक, हिंसा या स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित किए जाने का सामना करना पड़ सकता है।

उस वाक्य पर Arien की निगाह रुकी।

नैतिक रूप से वह सही था।

और उपयोगी था।

Kael बिना सूचना दिए आया।

वह Arien के घर में ऐसे घुसा मानो सिर्फ़ वह जगह ही नहीं, वहाँ रहने वालों का समय भी उसका हो।

Arien ने रिपोर्ट बंद नहीं की।

Kael ने शीर्षक पढ़ा।

“प्रतिक्रिया का मॉडल?”

“सुरक्षा की लेखापरीक्षा।”

“बेशक।”

Kael नतीजे पढ़ने लगा।

उसका चेहरा नहीं बदला, पर वह अपनी आदत से धीमे पढ़ रहा था।

“स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को पता चलेगा,” उसने कहा।

“चलेगा।”

“जल्दी।”

“मशीनों को, हाँ।”

“तो आपकी योजना नहीं चलेगी।”

Arien ने अगले हिस्से की ओर इशारा किया।

“देख लेना और कुछ करना एक बात नहीं है।”

Kael समयरेखा को देखने लगा।

“तो आप बीमारी की परीक्षा नहीं कर रहे हैं।”

“नहीं।”

“आप परख रहे हैं कि जो दिखे उसका नाम लेने का साहस संस्थाओं में है या नहीं।”

Arien ज़रा मुस्कराया।

“मैं उनके नियम परख रहा हूँ।”

“नियम पिछली विफलताओं से निकले हैं।”

“और अगली विफलता का कारण बनेंगे।”

Kael उसकी ओर मुड़ा।

“ध्यान रखिएगा कि कहीं व्यवस्था की कमज़ोरी को अपनी मंशा का औचित्य न मान बैठें।”

“आपने ही मुझे सिखाया कि व्यवस्था की कोई मंशा नहीं होती।”

“उसकी नहीं होती। आपकी है।”

Arien ने रिपोर्ट बंद कर दी।

“आप आए क्यों हैं?”

Kael पल भर उसे देखता रहा।

“परत ने न्यासों से कुछ सवाल पूछे हैं।”

मेज़ के ऊपर Arien की उँगलियाँ थम गईं।

“कैसे सवाल?”

“अभी सामान्य हैं। असली मालिक। प्रबंधकों के बीच संबंध। एक साथ आए अनुदान।”

“Nerai।”

“संभवतः।”

“उसे कुछ मालूम है?”

“उसे मालूम है कि उसे दिख नहीं रहा।”

Arien खड़ा हो गया।

“इतना काफ़ी नहीं है।”

“कभी-कभी अपने अंधेपन को जान लेना ही देखने की शुरुआत होती है।”

“क्या आप उसे रोक सकते हैं?”

“जवाब मिलने में देर हो सकती है। पर किसी दफ़्तर को सवाल पूछने से मना करूँ तो यह भी बता दूँगा कि मुझे उन सवालों से डर है।”

Arien खिड़की के पास गया।

नीचे Nitra फैली थी। हज़ारों रोशनियाँ, लाखों लोग, और यातायात, ऊर्जा, उत्पादन, मौसम, स्वास्थ्य और सुरक्षा को मापने वाली व्यवस्थाएँ।

एक सभ्यता जिसे लगभग सब कुछ दिखाई देता था।

और जो नहीं जानती थी कि कोई इस वक़्त माप रहा है कि उसे अपनी ही मृत्यु समझने में कितना समय लगेगा।

“Mareia,” Arien ने कहा।

Kael ने जवाब नहीं दिया।

“उसी ने शुरू किया होगा।”

“क्यों?”

“वह वंशों के अभिलेखागारों को जानती है।”

“आपको भी जानती है।”

Arien तेज़ी से उसकी ओर मुड़ा।

Kael ने शांति से आगे कहा,

“जिसने एक हिंसक आदमी को जाना है, कभी-कभी उसे उसकी मंशा किसी विश्लेषक से पहले दिख जाती है।”

“मैं हिंसक आदमी नहीं हूँ।”

Kael ने उसे देखा।

उसकी नज़र में तिरस्कार नहीं था।

यह और बुरा था।

“नहीं हूँ,” Arien ने दोहराया।

“तो आपको इस पर आपत्ति नहीं होगी कि कोई आपके फ़ैसलों को देखे।”

“मेरे फ़ैसलों को संरक्षण प्राप्त है।”

“उसी के भरोसे तो आप बैठे हैं।”

Kael चला गया।

Arien खिड़की के सामने ही रह गया।

काम की स्क्रीन पर विश्लेषण फिर खुल गया।

वह बीतता हुआ समय।

कुछ देख लेने और उसे कह पाने की अनुमति ख़ुद को देने के बीच सभ्यता को वह समय गँवाना था।

इस बीच परत में Nerai ने पहली अर्ज़ियाँ भेज दीं।

Therinith को।

Xanos को।

Améniа के दो राज्यों को।

Thaeron के संगणना केंद्रों के प्रशासन को।

हर अर्ज़ी की क़ानूनी शब्दावली अलग थी क्योंकि संरक्षित जानकारी देने के लिए हर राज्य अलग आधार स्वीकार करता था।

पहले जवाब उसी रात आ गए।

परियोजना स्थानीय क़ानूनों के अनुरूप है।

अंतिम स्वामी की पहचान सार्वजनिक करना आवश्यक नहीं है।

व्यावसायिक संबंध संरक्षित है।

गणनाओं में ऐसी कोई जानकारी नहीं थी जिससे सीधे किसी व्यक्ति की पहचान हो सके।

तात्कालिक ख़तरा प्रमाणित नहीं है।

Taren ने उन्हें एक-एक कर पढ़ा।

“सब सही कह रहे हैं।”

“हाँ,” Nerai ने कहा।

“और फिर भी तुम्हें यक़ीन नहीं है।”

Nerai ने Mareia के जैविक नक़्शे और अपने वित्तीय नक़्शे को देखा।

दोनों अगल-बग़ल पड़े थे।

उन्हें पूरी तरह जोड़ने की अनुमति नहीं थी। उनके बीच स्वास्थ्य, संपत्ति, शोध, व्यापार और निजता की रक्षा करने वाले क़ानून खड़े थे।
हर क़ानून किसी ऐसी चीज़ की रक्षा कर रहा था जो रक्षा की हक़दार थी।

पहली बार Nerai ने ख़ुद से वह प्रश्न पूछा जिसे कुछ बरस बाद वह पूरे ग्रह के सामने दोहराएगी।

क्या होता है जब हमारी सारी सुरक्षाएँ मिलकर उसी आदमी की पनाह बन जाती हैं जिससे उन्हें हमारी रक्षा करनी थी?

जवाब मिलने में अभी समय था।

लेकिन Arien जवाब पहले ही जानता था।

मोहलत मिलती है।

बहुत नहीं।

बस उतनी जितनी चाहिए।

22. अपवाद

हर क़ानून की एक हद होती है।

और लगभग हर हद में एक दरवाज़ा।

कभी उसका नाम होता है तत्काल जनहित।

कभी शोध की अनिवार्यता।

कभी जीवन की रक्षा।

कभी राष्ट्र की सुरक्षा।

दरवाज़े इसलिए नहीं बनाए जाते कि अपराधी उनमें से गुज़रें। वे इसलिए होते हैं कि कोई भी क़ानून उन तमाम हालात का पहले से अंदाज़ा नहीं लगा सकता जहाँ उसका अक्षरशः पालन करने में भले से अधिक बुरा हो जाए।

अस्पताल जल रहा हो तो बचावकर्मी हर मरीज़ से उसकी स्वास्थ्य-सूचना दूसरे तक पहुँचाने की अनुमति नहीं माँगता।

महामारी का ख़तरा हो तो प्रयोगशालाएँ सामान्य शोधकाल की अपेक्षा तेज़ी से सूचनाएँ बाँट सकती हैं।

Thaeron पर जीवन के लिए अनिवार्य कोई तंत्र ठप हो जाए तो तकनीशियनों को कुछ समय के लिए ऐसे आँकड़े देखने की अनुमति मिल जाती है जो सामान्य दशाओं में उनकी पहुँच से बाहर होते।

अपवाद के ज़रिए क़ानून यह स्वीकार करता था कि जीवन किसी नियम से अधिक जटिल है।

Kael Thorne को दरवाज़ों की एक और ख़ूबी मालूम थी।

वे दोनों ओर से खुलते हैं।

Nitra के दक्षिणी छोर पर एक विधि कार्यालय में नौ विशेषज्ञ बैठे थे। किसी को पता नहीं था कि वे Kael के लिए काम कर रहे हैं। काग़ज़ पर उन्हें ग्रहीय स्वास्थ्य-संकट प्रतिरोधकता न्यास ने नियुक्त किया था। उन्हें भावी जैविक संकट के समय शोध संस्थाओं के बीच सहयोग की एक सामान्य रूपरेखा तैयार करनी थी।

काम बँटा हुआ था।

पहले दल के हिस्से में अभिलेखों से जुड़े अधिकार आए।

दूसरे के हिस्से में दूसरे ग्रहों के साथ शोध-सहयोग।

तीसरे के हिस्से में प्रयोगशालाओं का दायित्व।

चौथे के हिस्से में चिकित्सा प्रणालियाँ विकसित करने वालों के हितों की रक्षा।

पाँचवें के हिस्से में संकटग्रस्त इलाक़ों के प्रति राज्यों के अधिकार।

इसमें कुछ भी ग़ैरक़ानूनी नहीं था।

उलटे।

पिछली महामारियों के अनुभव के बाद ऐसे विश्लेषणों की माँग थी। Elarion के पास तकनीकों का भंडार था, मगर उसकी क़ानूनी व्यवस्थाओं की नींव अब भी उस युग की थी जब बीमारियाँ सरकारों के फ़ैसलों से धीमी रफ़्तार से चलती थीं।

विधि दल की प्रमुख थी Ilyra Senn।

वह सेलेनी थी और उसने सारी उम्र स्वास्थ्य क़ानून के अध्ययन में बिताई थी। जवानी में एक क्षेत्रीय महामारी ने उसके पिता को छीन लिया था। दो अस्पताल आँकड़े साझा करने से इसलिए मुकर गए थे कि वे ऐसा करने के क़ानूनी आधार पर सहमत नहीं हो सके थे।

उसका मानना था कि एक ख़राब नियम भी किसी बीमारी की तरह जान ले सकता है।

इसीलिए उसने यह काम स्वीकार किया था।

पहली बैठक में उसने अपनी टीम से कहा, “हमारा काम यह सुनिश्चित करना है कि संकट की घड़ी में चालीस राज्य एक-दूसरे को फ़ॉर्म भेजने में न लगे रहें जबकि लोग दम तोड़ रहे हों।”

कमरे में कोई इससे असहमत नहीं हो सकता था।

कुछ हफ़्तों बाद अस्थायी छूटों की रूपरेखा तैयार थी।

आँकड़ों तक पहुँच एक निश्चित प्रयोजन तक सीमित रहेगी।

हर इस्तेमाल का ब्योरा दर्ज होगा।

अलग-अलग आँकड़े जोड़ते हुए अनुमति की सीमा लाँघना मना होगा।

परिणामों से व्यक्तिगत पहचान हटा दी जाएगी।

परियोजना ख़त्म होने के साथ ही छूट समाप्त हो जाएगी।

Ilyra ने एक और शर्त जोड़ी।

यदि कई परियोजनाएँ किसी आबादी या उसके स्वास्थ्य पर मंडराते एक ही ख़तरे के परस्पर संबंधित पहलुओं का अध्ययन करें तो कोई ऐसा निकाय अवश्य हो जो उनके समग्र प्रयोजन की समीक्षा करे।
उसने मसौदे में यह वाक्य जोड़ा और उसे काम सौंपने वाली संस्था को भेज दिया।

दो दिन बाद दस्तावेज़ उसके पास लौट आया।

शर्त की भाषा बदल दी गई थी।

कुछ ख़ास परिस्थितियों में ही संबंधित निकाय को परियोजनाओं के सम्मिलित जोखिम की समीक्षा करने का अधिकार होगा।

Ilyra ने दोनों वाक्य अगल-बगल रखे।

अंतर मामूली था।

उसके अपने पाठ में समीक्षा का दायित्व स्पष्ट था।

नए पाठ में वह एक शर्त के अधीन था।

और उस शर्त का पूरा होना लगभग असंभव था।

“यह हिस्सा किसने बदला?” उसने पूछा।

प्रशासक ने दस्तावेज़ में हुए संशोधनों का ब्योरा खोला।

“न्यास के एक बाहरी समीक्षक ने।”

“नाम?”

“अनुबंध के तहत गोपनीय है।”

“क़ानूनविद है?”

“अंतरराष्ट्रीय निवेश का सलाहकार।”

Ilyra कुर्सी की पीठ से टिक गई।

“स्वास्थ्य-संबंधी छूटों पर निवेश वालों की राय का क्या काम?”

“उनका कहना है कि मूल शब्दावली असंबद्ध परियोजनाओं को आपस में जोड़कर स्वतंत्र शोध को नुकसान पहुँचा सकती है।”
दलील तर्कसंगत थी।

यदि मिलते-जुलते सभी शोधों को स्वतः ही एक साथ जाँच के दायरे में ले लिया जाता तो आँकड़े एक ही जगह सिमट सकते थे, चिकित्सा की प्रगति धीमी हो सकती थी, और वैज्ञानिकों पर महज़ एक ही क्षेत्र में शोध करने के कारण संदेह होने लगता।

Ilyra ने संशोधन नामंज़ूर कर दिया।

न्यास ने नए औचित्य के साथ उसे फिर भेज दिया।

Ilyra ने फिर मना कर दिया।

तीसरी बार उसे बताया गया कि विवादित हिस्से को अलग रखकर अगले चरण में लिया जाएगा।

बाक़ी रूपरेखा मंज़ूर हो गई।

सुरक्षा का उपाय हटाया नहीं गया था।

बस टाल दिया गया था।

परत के भवन में Nerai को पहली निधि की ओर से उत्तर मिला।

अंतिम स्वामी का नाम नहीं बताया जा सकता था, क्योंकि संबंधित लेन-देन की जाँच के लिए वह सूचना अनिवार्य नहीं थी।

दूसरे राज्य का उत्तर था कि वित्तपोषित परियोजनाओं के बीच का संबंध बहुत अस्पष्ट है।

Thaeron से ख़बर आई कि गणना केंद्र के पास कुछ परिणाम ज़रूर थे, पर उनसे यह मालूम नहीं होता था कि वे आख़िर किसके काम आए।

“केंद्र अपने ग्राहक को कैसे नहीं जानता?” Mareia ने पूछा।

उसकी छवि Nerai की मेज़ के ऊपर तैर रही थी। वह घर पर थी, फिर भी उसके पीछे वंशावली अभिलेखों की परतें खुली थीं। इस बार भी उसने रात भर काम किया था।

“उसके पास जो नाम है उससे हमारा सवाल हल नहीं होता,” Nerai ने कहा।

“और बाक़ी लोगों से पूछा?”

“हर किसी के पास बताने को कुछ है।”

“तो जवाब क्या है?”

“वे अपने काम के बारे में बता सकते हैं।”

“और प्रतिष्ठान?”

“उसके पास अपने प्रबंध मंडल का जवाब है।”

“Nerai।”

“मुझे नहीं मालूम।”

Mareia ने नज़रें झुका लीं।

“तो हम कहीं नहीं पहुँचे।”

“पहुँचे हैं। हमें कम से कम चार परियोजनाओं में अलग-अलग संस्थाओं के काग़ज़ों पर एक जैसी भाषा मिली है। हमें मालूम है कि कुछ पैसा उन्हीं निधियों से होकर गुज़रा जिनके नाम Vesta के सिलसिले में सामने आए थे। और कुछ गणनाएँ Thaeron पर हुई थीं।”

“और यह भी मालूम है कि इसमें किसी का दोष न भी हो सकता है।”

“हाँ।”

“Arien का नाम?”

Nerai एक पल चुप रही।

“कहीं नहीं।”

Mareia ने सिर हिलाया, पर उसके चेहरे पर राहत नहीं उभरी।

“साफ़-साफ़ बताओ कि तुम्हें उसी का ख़याल क्यों आता है,” Nerai ने कहा।

“मैंने तुम्हें लिखकर तो भेजा था।”

“तुमने लिखा था कि वह लोगों को ऐसे जानता है जैसे किसी कल-पुर्ज़े वाली मशीन को।”

“जानता है।”

“इतना काफ़ी नहीं है।”

“मुझे मालूम है।”

“मुझे कुछ ठोस बातें चाहिए।”

Mareia उठकर खिड़की के पास चली गई। उसके पीछे रात में डूबा Nitra दिख रहा था, और नदी, जिसे पुलों की रोशनियाँ खंडों में बाँट रही थीं।

"हम साथ थे तो उसे हर बात जाननी होती थी। मैं कहाँ हूँ। किसके साथ हूँ। मैंने कोई बात क्यों कही। मैं चुप क्यों रही। उसे जानकारी से मतलब नहीं था। वह चाहता था कि दुनिया में ऐसा कुछ हो ही नहीं जो उसकी बनाई तस्वीर में न समा सके।"

Nerai चुप रही।

"जब मैं चली गई तो पहले उसने मिन्नतें कीं," Mareia कहती गई। "फिर ग़ुस्सा हुआ। फिर मुझ पर इलज़ाम लगाए। और आख़िर में उसने वह सब छोड़ दिया।"

"तुमसे संपर्क करना छोड़ दिया?"

"नहीं। उसकी आवाज़ में फिर उस आदमी का स्वर नहीं था जो खोई हुई चीज़ वापस पाना चाहता है।"

"तो कैसा स्वर था?"

Mareia पलटी।

"उस आदमी का जिसने तय कर लिया है कि एक दिन मुझे समझ में आ ही जाएगा।"

Nerai ने वह वाक्य लिख लिया।

"Jesair का ज़िक्र करता था?"

"हाँ।"

"उसे धमकी दी थी?"

"सीधे तौर पर नहीं।"

"Mareia।"

"उसने कहा कि Jesair जैसे लोग जताते हैं मानो उनके फ़ैसले सबके हों, पर नतीजे भुगतने के लिए दूसरों को छोड़ देते हैं। उसने कहा कि एक दिन पता चलेगा कि ऑरेलियाइयों के असाधारण होने की क़ीमत क्या है।"

छवि की परिधि के बाहर बैठे Taren ने सिर उठाया।

Nerai ने निगाह से उसे चुप रहने को कहा।

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?" उसने पूछा।

"क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि अपने पुराने साथी पर किसी औरत का हर शक तहक़ीक़ात में बदल जाए। और मुझे डर था कि कहीं मैं अपना ही डर दूसरों की परियोजनाओं में न देख रही होऊँ।"

“डर सबूत नहीं होता,” Nerai ने कहा।

Mareia ने सिर हिलाया।

“लेकिन उससे दिशा मिल सकती है।”

“हाँ।”

Nerai ने यह शब्द बहुत सँभलकर कहा।

उसके काम में दो तरह की भूलें हो सकती थीं।

पहली, किसी ऐसे आदमी पर शक करना जिसने कुछ किया ही न हो।

दूसरी, किसी संदेह को सिर्फ़ इसलिए ख़ारिज कर देना कि वह एक ऐसे निजी अनुभव से उपजा था जिसे किसी तालिका में नहीं ढाला जा सकता।
विश्लेषण का काम पूर्वाग्रह से बचाना था।

पर उसे यह ढोंग नहीं करना था कि जब तक हिंसा बहीखाते में न उतरे, उसका मानवीय अनुभव बेमानी है।
“मैं Arien के ख़िलाफ़ जाँच नहीं खोलूँगी,” Nerai ने कहा। “अभी नहीं।”

Mareia ने होंठ भींच लिए।

“पर इन परियोजनाओं से मिलकर जो ख़तरा बनता है, उसकी समीक्षा शुरू करूँगी। उसका नाम लिए बग़ैर।”

“और अगर प्रणाली में वह न दिखा?”

“तो उतना ही जानूँगी जितना इस समय जानती हूँ।”

“कि तुम्हें दिखाई नहीं देता।”

“हाँ।”

संपर्क टूटने पर Taren थोड़ा और पास खिसक आया।

“तुम्हें लगता है कि वही है।”

“मुझे लगता है कि Mareia के पास उससे डरने के ठोस कारण हैं।”

“यह मेरे सवाल का जवाब नहीं हुआ।”

“क्योंकि जवाब मेरे पास है ही नहीं।”

Nerai ने जोखिम से जुड़े संबंधों की अस्थायी समीक्षा का आवेदन तैयार किया।

उसने वित्तीय लेन-देन से संबंधित विवरण, शोध के घोषित उद्देश्यों और ऑरेलियाई अभिलेखों तक पहुँच के बारे में सार्वजनिक सूचनाओं को एक साथ देखने की अनुमति माँगी।
आवेदन में किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य रिकॉर्ड देखने का प्रश्न ही नहीं था।

जैविक शोध के निष्कर्ष भी सुरक्षित रहते।

Nerai केवल यह जानना चाहती थी कि सवाल पूछने के लिए पैसा किसने दिया था और उनके जवाब जोड़कर देखने का अधिकार किसे मिला था।

उसने आवेदन उच्च परिषद को भेज दिया।

सुबह उत्तर आया।

अपर्याप्त क़ानूनी आधार।

विचाराधीन परियोजनाएँ अलग-अलग क्षेत्राधिकारों में आती हैं और उनका कोई साझा प्रयोजन सिद्ध नहीं हुआ है।
Nerai ने वाक्य कई बार पढ़ा।

उनका कोई साझा प्रयोजन सिद्ध नहीं हुआ है।

मगर परियोजनाओं को जोड़कर देखने का अधिकार मिले बिना वह उसी साझा प्रयोजन को सिद्ध कैसे कर सकती थी?

“एक चक्कर,” Taren ने कहा।

“नहीं।”

Nerai उठ खड़ी हुई।

“चक्कर का कम से कम एक केंद्र तो होता है। यह ऐसी व्यवस्था है जो जताती है कि केंद्र का कोई अस्तित्व ही नहीं है।”

इस बीच विधि कार्यालय में Ilyra Senn ने रूपरेखा के अंतिम पाठ पर हस्ताक्षर कर दिए।

वह उससे संतुष्ट नहीं थी।

साथ में भेजे अपने अभिमत में उसने लिखा—

सबसे बड़ा ख़तरा किसी एक छूट के दुरुपयोग से नहीं है। सबसे बड़ा ख़तरा तब है जब कई वैध छूटें साथ आ जाएँ और उनका समग्र प्रयोजन किसी भी निरीक्षक संस्था को दिखाई न दे।

अभिमत अभिलेख में रख लिया गया।

न्यास ने उसे स्वीकार किया।

क़ानूनी रूपरेखा मंज़ूर हो गई।

छूटों के दरवाज़े खुल गए।

हर एक के पीछे एक अच्छा कारण था।

पहली ने एक शोध दल की अड़चन दूर की।

दूसरी ने Thaeron और Elarion के बीच सहयोग को मंज़ूरी दी।

तीसरी एक सुरक्षा जाँच के हित में थी।

चौथी ने प्रयोगशालाओं का काम आगे बढ़ाया।

पाँचवीं ने भावी स्वास्थ्य संकट की तैयारियों को सहारा दिया।

किसी एक छूट ने विपदा की राह नहीं खोली।

राह तब खुली जब वे एक के पीछे एक खड़ी हो गईं।

एक दरवाज़ा।

उसके पीछे एक और दरवाज़ा।

उसके पीछे एक और।

और आख़िर में एक आदमी, जिसका नाम किसी भी चाबी पर नहीं लिखा था।

23. आख़िरी भुगतान

आख़िरी भुगतान सबसे छोटा था।

आख़िरी भुगतान का मक़सद और भी मामूली था।

पैसा न किसी प्रयोगशाला को मिला, न किसी गणना केंद्र को, न किसी आनुवंशिक अभिलेख के संरक्षक को।

उससे न जैविक शोध कराया गया, न क़ानूनी समीक्षा, न स्वास्थ्य की निगरानी के यंत्र ख़रीदे गए।

वह सामान्य कामकाज का मामूली-सा शुल्क था।

रक़म Vesta के किसी बड़े प्रतिष्ठान की एक दिन की आमदनी से भी कम थी।

भुगतान Saranstan में पंजीकृत एक कंपनी ने भेजा था।

पाने वाला कक्षीय वलय पर परिवहन का काम सँभालता था।

प्रयोजन वैध था।

एक भावी स्वास्थ्य सेवा के लिए।

अस्पताल, बीमा कंपनियाँ, राज्य और न्यास अक्सर ऐसी व्यवस्था रखते थे। इससे भरोसा रहता था कि संकट के वक़्त उपकरण, दवाएँ, जाँच की मशीनें या कर्मचारी तेज़ी से भेजे जा सकेंगे।
इसमें कुछ भी असाधारण न था।

सिवाय इसके कि इसके बिना Arien के नक़्शे का आख़िरी टुकड़ा अपनी जगह न बैठता।

Thorne घराने के वित्तीय संयोजक ने उसे पुष्टि भेजी।

सभी अनुबंध प्रभावी हो गए हैं।

Arien ने संदेश पढ़कर बंद कर दिया।

वह उस घर में बैठा था जिसमें कभी Mareia के साथ रहता था।

Mareia के जाने के बाद उसने उसकी पसंद की ज़्यादातर चीज़ें हटवा दी थीं। एक साथ नहीं। पहले पौधे। फिर खिड़की के पास की तस्वीर। फिर वह नीची मेज़ जिससे वह बार-बार टकराता था, हालाँकि Mareia कहती थी कि दोष मेज़ का नहीं, उसका है कि सामने देखकर चलना नहीं आता।

एक बर्तन बचा था।

सादा, गहरा नीला, टेढ़ी-मेढ़ी कोर वाला। Mareia ने उसे पुराने Nitra के बाज़ार से ख़रीदा था। कहती थी उसे इसीलिए भाता है कि जैसा भी अधूरा-बेढंगा है, उस बात को छिपाने की कोशिश नहीं करता।

Arien ने कभी उसका इस्तेमाल नहीं किया।

उसे वहीं छोड़ रखा था, मानो यह सबूत हो कि वह ऐसी चीज़ के पास जी सकता है जो उसे Mareia की याद दिलाए।

दरअसल वह ठीक उलटी बात का सबूत था।

दीवार पर एक सूचना चमकी।

Mareia Lioren आपसे मिलना चाहती हैं।

Arien देर तक उसे देखता रहा।

फिर मुस्कराया।

उसने संदेश खोला।

ऑरेलियाइयों से जुड़ी शोध परियोजनाओं के बारे में तुमसे बात करनी है। उत्तरी तट के सार्वजनिक उपवन में मिलें। कल सूर्यास्त के बाद।

उसमें कोई विनती नहीं थी।

न डर था।

Arien ने संदेश फिर पढ़ा।

वह हमेशा क़ायल रहा था कि Mareia कैसे ऐसा वाक्य लिख लेती है जिसमें कहीं कोई कमज़ोर जोड़ न हो। जैसे एक-एक शब्द अपने सामने रखकर उसे हर ओर से देखती हो और तब किसी दूसरे को देखने देती हो।

उसने हामी भर दी।

अगले दिन उत्तरी तट का उपवन लगभग ख़ाली था।

वहाँ Elarion के कोने-कोने से लाए गए पेड़ उगते थे। किसी को कृत्रिम ढंग से तैयार मिट्टी चाहिए थी, किसी को ठीक एक निश्चित स्तर की नमी या वहाँ की सर्दी से बचाव। उपवन इस बात का प्रमाण था कि सभ्यता ऐसी चीज़ों के लिए भी एक साझी जगह बना सकती है जो प्रकृति में कभी अगल-बगल न उगतीं।

Mareia जलाशय के पास इंतज़ार कर रही थी।

Arien पास आ रहा था, तो उसकी नज़र उसके हाथों पर थी।

मुट्ठियाँ भिंची नहीं थीं।

उसे कोई जल्दी नहीं थी।

चेहरे पर वही भाव था जिससे उसे सबसे ज़्यादा डर लगता था। उस आदमी की शांति जिसे इस पल कुछ भी ज़बरदस्ती हासिल करने की ज़रूरत नहीं रही, क्योंकि उसे यक़ीन है कि वक़्त उसका काम कर रहा है।

"Mareia।"

"Arien।"

वह उससे कुछ क़दम दूर रुक गया।

"उम्मीद नहीं थी कि तुम मुझसे फिर कभी मिलने को कहोगी।"

"मुझे भी नहीं।"

"Jesair को पता है कि तुम यहाँ हो?"

Mareia ने महसूस किया कि उसका बदन तन गया है।

अचानक नहीं।

उसी पुराने ढंग से।

त्वचा की अपनी स्मृति से।

"मैं Jesair के बारे में बात करने नहीं आई।"

"बेशक।"

"स्वास्थ्य अभिलेखों में ऑरेलियाइयों के आरोग्य और असमान ढंग से फैलती महामारी पर शोध करने वाली परियोजनाएँ सामने आई हैं।"

Arien के माथे पर ज़रा-सा बल पड़ा।

"तो?"

"उनमें से कुछ को ऐसे न्यास पैसा देते हैं जो उन वित्तीय संस्थाओं से जुड़े हैं जहाँ तुमने काम किया था।"

"मैं ऐसी सैकड़ों संस्थाओं में काम कर चुका हूँ।"

"वही तो।"

"यह इलज़ाम है?"

“सवाल।”

“पूछो।”

Mareia ने उसकी आँखों में देखा।

“क्या ऑरेलियाई वंशों पर शोध के लिए पैसा तुम दे रहे हो?”

“नहीं।”

जवाब कुछ ज़्यादा ही जल्दी आ गया।

किसी ऐसे शख़्स की तरह नहीं जिसे हैरानी हुई हो।

किसी ऐसे शख़्स की तरह जो अपने आप से यह सवाल पहले ही पूछ चुका हो।

“परोक्ष रूप से तुम पैसा दे रहे हो?”

“मैंने जिन-जिन निधियों के लिए कभी काम किया, वे सब किसे पैसा देती हैं, मुझे नहीं मालूम।”

“किसी रक्षा न्यास में तुम्हें फ़ैसला लेने का अधिकार है?”

“नहीं।”

यह सच था।

Mareia जान गई।

और ठीक इसीलिए पीछे नहीं हटी।

“जिनके पास वह अधिकार है, उन पर तुम्हारा असर है?”

Arien मुस्कराया।

“बड़ी विचित्र क़ानूनी श्रेणी है यह।”

“मैं क़ानून का सवाल नहीं पूछ रही।”

“तो किसके बारे में पूछ रही हो?”

“तुम्हारे बारे में।”

उसके चेहरे से मुस्कान उतर गई।

“आख़िरकार।”

“मैं बीती बातों पर लौटने नहीं आई।”

“नहीं। तुम यह देखने आई हो कि क्या मैं इतना बुरा बन चुका हूँ कि पीछे मुड़कर देखो तो तुम्हारा जाना ज़रूरी लगे।”

“जिस दिन तुमने मुझ पर हाथ उठाया, उसी दिन जाना ज़रूरी हो गया था।”

Arien ने निगाह फेर ली।

“तुम सारी बात को हमेशा उसी एक पल में समेट देती हो।”

“नहीं। तुम हमेशा उस पल को उससे पहले और उसके बाद की हर चीज़ में घोल देना चाहते हो।”

“क्योंकि आदमी एक पल से नहीं बनता।”

“पर कुछ पल दिखा देते हैं कि वह है कौन।”

उपवन में हवा चली। अलग-अलग महाद्वीपों से आए पेड़ों के पत्ते एक साथ हिले, हर एक की सरसराहट अलग थी।

Arien थोड़ा पास आया।

Mareia पीछे नहीं हटी, मगर अनजाने ही उसका हाथ अपने संचार यंत्र की ओर बढ़ गया।

उसकी नज़र पड़ गई।

“तुम अब भी मुझसे डरती हो।”

“हाँ।”

जवाब ने उसे चोट पहुँचाई।

उसे विरोध की उम्मीद थी।

आरोप की उम्मीद थी।

शायद तिरस्कार की भी।

इतने सीधे सच की नहीं।

“फिर भी तुम अकेली आई हो।”

“मैं अकेली नहीं हूँ।”

Arien ने चारों ओर देखा।

“Jesair?”

“नहीं।”

Mareia ने उपवन, सार्वजनिक सुरक्षा व्यवस्था और दूर दिखते लोगों की ओर इशारा किया।

“दुनिया।”

Arien हल्का-सा हँसा।

“तुम दोनों की ठीक यही बात मुझसे बर्दाश्त नहीं होती।”

“क्या?”

“यह यक़ीन कि दुनिया तुम्हारी तरफ़ है।”

“दुनिया किसी की तरफ़ नहीं होती।”

“मगर तुम दोनों ऐसे बर्ताव करते हो जैसे लोगों की नज़रों में होना ही तुम्हारी हिफ़ाज़त कर देगा।”

“करनी चाहिए।”

“जो दिखता है, वह सब लोगों को समझ नहीं आता।”

“इसीलिए पूछ रही हूँ।”

Arien का स्वर सख़्त हो गया।

“पूछने में बहुत देर कर दी तुमने।”

Mareia हिली नहीं।

“क्या पूछने में?”

“कि निजी फ़ैसले क्या सचमुच निजी रह जाते हैं।”

“यह बात तुम मुझे पहले भी लिख चुके हो।”

“और तुम अब तक समझी नहीं।”

“तो समझाओ।”

Arien उसे देखता रहा।

उसकी आँखों में पछतावा नहीं था।

उनमें यह चाह थी कि आख़िरकार वह दुनिया को उसकी नज़र से देख ले।

“तुम चली गईं,” उसने कहा। “तुमने Jesair को चुना। फिर तुम दोनों कहने लगे कि मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए, कि जो कुछ बड़ा है उसे सबकी नज़र के सामने होना चाहिए, कि मुझ जैसे लोगों को अपने हाथ सबको दिखाने चाहिए।”

“Jesair ने तुम्हारी बात नहीं की थी।”

“ज़रूरत नहीं थी।”

“और इसका ऑरेलियाइयों पर हो रहे शोध से क्या संबंध है?”

Arien चुप रहा।

“क्या कर रहे हो तुम?” Mareia ने पूछा।

“ऐसा कुछ भी नहीं जिसकी इजाज़त तुम्हारी व्यवस्थाएँ न देती हों।”

“यह जवाब नहीं हुआ।”

“तुम्हें बस इसी जवाब की ज़रूरत है।”

“Arien।”

“सारी उम्र अपने उस स्वर्ण वलय को देखते रहे हो तुम लोग, और उसमें अपने असाधारण होने का प्रमाण ढूँढ़ते रहे हो।”

“मुझे उसमें ऐसा कुछ कभी नहीं दिखा।”

“तुम्हें देखने की ज़रूरत नहीं थी। तुम्हारी ओर से दूसरे देखते थे।”

“कौन?”

“जो Jesair की बाट ऐसे जोहते हैं जैसे उसके रूप में कोई पुराना सत्य लौट आया हो। जिन्हें लगता है तुम्हारे वंश को हक़ है कि पूरे ग्रह को बताए वह कैसे जिए।”

“Jesair हर उस आदमी को मना करता है जो उसे मिथक बनाना चाहता है।”

“और ठीक इसीलिए वे उसे और चाहते हैं।”

Mareia को ठंड महसूस हुई।

उसमें कोई एक बात नहीं थी जिस पर उँगली रख सके।

बस कुछ ज़्यादा ही तैयारी थी।

कुछ ज़्यादा ही वाक्य ऐसे थे जो किसी ऐसी बातचीत के निष्कर्ष से लगते थे जिसका शुरू होना तक उसे अभी मालूम नहीं था।

“क्या होने वाला है?” उसने पूछा।

एक पल के लिए Arien का ख़ुद पर क़ाबू छूट गया।

“जब तुम्हारे घर एक-एक करके बंद होने लगेंगे तो शायद आख़िरकार तुम समझोगी कि निजी फ़ैसले नाम की कोई चीज़ नहीं होती।”
उस वाक्य के बाद सन्नाटा गहरा और संपूर्ण था।

Mareia को पानी सुनाई दिया।

हवा।

अपनी साँस।

Arien की चूक।

“वे बंद क्यों होने लगेंगे?” उसने पूछा।

Arien के चेहरे का भाव बदला।

बस तनिक-सा।

पर वह उसे जानती थी।

“मैं आम तौर पर कह रहा हूँ।”

“नहीं।”

“समाज पर पड़ने वाले असर की बात कर रहा हूँ।”

“तुमने कहा, तुम्हारे घर।”

“ऑरेलियाई राजनीतिक घराने। वंशगत संस्थाएँ।”

“एक-एक करके।”

“कहने का एक ढंग है।”

“तुम्हारा नहीं।”

Arien और पास आ गया।

“सँभलकर रहना, Mareia।”

इस बार वह पीछे हटी।

कमज़ोरी से नहीं।

इसलिए कि दोनों के बीच फिर कुछ दूरी बन जाए।

“धमकी दे रहे हो?”

“चेतावनी।”

“किस बात की?”

Arien ने मुँह खोला।

फिर बंद कर लिया।

एक पल उसके चेहरे पर वही पुराना, जाना-पहचाना आदमी दिखाई दिया। वह आदमी जिसे बर्दाश्त नहीं था कि Mareia की नज़र में उसकी जो सूरत है उस पर उसका पूरा बस न चले। वह आदमी जो अपनी कही बात वापस अपने भीतर खींच लेना चाहता था क्योंकि वह समझ गया था कि वह अब दिखाई देने लगी है।

“तुम लोग जो दुनिया बना रहे हो, उसके नतीजों की,” उसने अंत में कहा।

Mareia कुछ देर और उसे देखती रही।

“मुझे नहीं पता तुम क्या कर रहे हो,” उसने कहा। “मगर इतना जानती हूँ कि तुम्हें अब भविष्य से डर नहीं लगता। तुम उसकी बात ऐसे करते हो जैसे तुम उसे जानते हो।”

वह मुड़ गई।

“Mareia।”

वह रुकी, लेकिन पलटी नहीं।

“Jesair तुम्हें हर चीज़ से नहीं बचा पाएगा।”

“उसने कभी ऐसा दावा नहीं किया।”

“जब वह घड़ी आए जब वह अपने ही लोगों को बचा न सके, याद करना, मैंने तुमसे कहा था।”

Mareia फिर चल पड़ी।

वह भागी नहीं।

पेड़ों का पहला झुरमुट पार कर लेने पर ही, जब Arien उसे देख नहीं सकता था, उसके हाथ काँपने लगे।

उसने Nerai से संपर्क किया।

उसने उसके कुछ कहने तक इंतज़ार नहीं किया।

“तुम ठीक थीं,” Nerai ने अभिवादन की जगह कहा। “तुम्हें वहाँ अकेले नहीं जाना चाहिए था।”

“उसने कहा कि ऑरिलियाई घर एक-एक करके बंद होने लगेंगे।”

दूसरी ओर चुप्पी छा गई।

“हूबहू।”

“उसके ठीक-ठीक शब्द क्या थे?”

Mareia ने वह वाक्य दोहराया।

फिर दूसरा भी।

Jesair तुम्हें हर चीज़ से नहीं बचा पाएगा।

जब वह अपने ही लोगों को बचा न सके।

Nerai ने दोनों बातें लिख लीं।

“कोई रिकॉर्डिंग है?”

“नहीं। सार्वजनिक सुरक्षा प्रणाली ख़तरे का संकेत देने वाला व्यवहार दर्ज करती है, निजी बातचीत नहीं, जब तक हिंसा न हो।”

“उसने तुम्हें छुआ?”

“नहीं।”

“धमकी दी?”

“उसने कहा कि वह मुझे आगाह कर रहा है।”

“गिरफ़्तारी के लिए यह काफ़ी नहीं।”

“मैं चाहती भी नहीं कि तुम उसे गिरफ़्तार करो।”

“तो क्या चाहती हो?”

Mareia दक्षिणी द्वीपसमूह से लाए गए एक पेड़ के नीचे रुक गई। उसके चौड़े पत्ते रोशनी थाम लेते थे और नीचे लगभग अँधेरा था।

“पैसे का पता लगाओ।”

Nerai ने संपर्क बंद किया और परत को अब तक मिले सारे जवाब तत्काल खोल लिए।

Taren उसकी मेज़ तक आया।

“क्या हुआ?”

“हमें फ़ौरन कोई क़दम उठाना होगा।”

“किसलिए?”

“जब तक इन परियोजनाओं का साझा प्रयोजन तय न हो, इन्हें कुछ वक़्त के लिए रोकना होगा।”

“एक आदमी की कही हुई किसी बात पर?”

“ऐसे आदमी की कही हुई बात पर जिसका उन्हें मिलने वाले धन से कोई छिपा हुआ संबंध हो सकता है।”

“हो सकता है।”

“हाँ।”

Taren ने Mareia का संदेश पढ़ा।

“उच्च परिषद इसे मंज़ूरी नहीं देगी।”

“तो स्वास्थ्य निरीक्षण विभाग के पास जाएँगे।”

“वहाँ कहेंगे कि जैविक जोखिम का कोई प्रमाण नहीं है।”

“आचार आयोग।”

“कहेगा कि परियोजनाओं को मंज़ूरी मिल चुकी है।”

“अंतरराज्यीय अभियोजन कार्यालय।”

“कहेगा कि हम किसी अपराध की पहचान नहीं कर पाए हैं।”

Nerai ने उसकी ओर देखा।

“तो कोई विपदा अपराध बने, उससे पहले उसे लेकर कहाँ जाएँ?”

Taren ने जवाब नहीं दिया।

Nerai ने एक आपात निवेदन तैयार किया।

साथ में परियोजनाओं का नक़्शा रखा।

उनके वित्तीय संबंध।

Mareia का बयान।

उनसे मिलकर बन सकने वाले ख़तरे का विश्लेषण।

उसने निवेदन उच्च परिषद, स्वास्थ्य निरीक्षण विभाग और आनुवंशिक अधिकार संरक्षण कार्यालय को भेज दिया।

उसने ऑरेलियाइयों के आँकड़ों तक पहुँच की नई अनुमतियाँ कुछ समय के लिए स्थगित करने और अब तक न दी गई रक़में रोकने का अनुरोध किया।

प्रणाली ने निवेदन स्वीकार किया।

उसे अत्यावश्यक श्रेणी में डाल दिया।

प्रारंभिक समीक्षा बहत्तर घंटे के भीतर होनी थी।

उधर कक्षीय वलय पर आख़िरी भुगतान अपने ठिकाने पर पहुँच गया।

प्रणाली ने मुद्रा का सत्यापन किया।

विनिमय दर के हिसाब से गणना की।

प्रतिबंध-सूचियाँ जाँचीं।

सीधे भुगतान करने वाले का परिचय सत्यापित किया।

उसे मना करने का कोई कारण नहीं मिला।

ग्यारह सेकंड में भुगतान हो गया।

सभी अनुबंध प्रभावी हो गए हैं।

उपवन से लौटने के कुछ ही समय बाद Arien को पुष्टि मिल गई।

वह उस गहरे नीले बर्तन के सामने खड़ा था जिसे कभी Mareia उसके घर लाई थी।

हाथ की एक झपट से उसने उसे मेज़ से गिरा दिया।

वह फ़र्श से टकराया।

टूटा नहीं।

उछला, उलटा और करवट पड़ा रह गया।

Arien उसे देखता रहा, भीतर ग़ुस्सा बढ़ता गया।

उसकी चोट से उस बर्तन का टेढ़ापन तक सलामत रह गया था।

उसने बिना बुलावे के Kael से संपर्क खोला।

काम की मेज़ के ऊपर Kael की छवि उभरी।

“Mareia जानती है।”

“क्या जानती है?”

“कि कुछ होने वाला है।”

“दोनों बातों में फ़र्क़ है।”

“वह परत गई थी।”

“यह हमें पता है।”

“मैं उससे मिला था।”

Kael का चेहरा शांत बना रहा।

“क्यों?”

“उसे जवाब चाहिए थे।”

“और आपने दे दिए?”

“नहीं।”

“आपने उससे कहा क्या?”

Arien चुप रहा।

Kael ने सवाल दोहराया।

इस बार धीमे।

Arien ने उसे घरों के बंद होने वाला वाक्य बताया।

Kael ज़रा भी नहीं हिला।

“आप मूर्ख हैं।”

“वह कुछ साबित नहीं कर सकती।”

“कोई बात जानने के लिए आदमी के पास सबूत होना ही इकलौता रास्ता नहीं है।”

“परियोजना तैयार है।”

“यह जवाब नहीं हुआ।”

“आख़िरी भुगतान हो चुका है।”

Kael उसे देखता रहा।

“रोक दीजिए इसे।”

Arien सन्न रह गया।

“क्या?”

“जो कुछ बाक़ी है, सब रोक दीजिए। मामला ठंडा होने दीजिए।”

“हम ऐसा नहीं कर सकते।”

“पैसा डूब जाए तो डूब जाए।”

“कुछ चीज़ें अब वापस लेने की कोशिश करेंगे तो और ज़्यादा सवाल उठेंगे।”

Kael ने आँखें मूँद लीं।

जब से Arien उसे जानता था, पहली बार वह थका हुआ दिखा।

“आपने किस हद तक जाने की मंज़ूरी दी?”

“मैंने कोई हद मंज़ूर नहीं की।”

“मेरे साथ खेल मत खेलिए।”

“मॉडलों की अपनी सीमाएँ हैं।”

“क्या सीमाएँ?”

“मक़सद एक संकट खड़ा करना है।”

“कितने लोग?”

“ठीक-ठीक बताना मुमकिन नहीं।”

Kael छवि की ओर झुका।

“कितने?”

Arien ने कोई जवाब नहीं दिया।

उस ख़ामोशी में Kael जितना समझना चाहता था उससे कहीं अधिक समझ गया।

पैसे की राहें उसी ने खोली थीं।

न्यास उसी ने मुहैया कराए थे।

Arien की मंशा कितनों की निगाह से ओझल रही, इसमें उसी का हाथ था।

वह ख़ुद को समझाता आया था कि वे एक ऐसा संकट तैयार कर रहे हैं जो Jesair की राजनीतिक ताक़त तोड़ देगा और पारदर्शिता को क़ानून बनने से पहले ही रोक देगा।

उसने जानते-बूझते एक ऐसे आदमी का साथ दिया था जिसके भीतर नफ़रत थी।

वह बस यह मानने से इनकार करता रहा था कि नफ़रत को बजट, गणना की ताक़त और वक़्त मिले तो वह कितनी दूर जा सकती है।

"रोक दीजिए इसे," उसने दोहराया।

"नहीं।"

"यह अनुरोध नहीं था।"

"अब नक़्शा सिर्फ़ आपके पास नहीं है।"

Kael का चेहरा सख़्त हो गया।

"मेरे लोग न होते तो आपके पास कुछ भी नहीं होता।"

"आपके लोग अपना काम कर चुके हैं।"

Kael को एक आख़िरी बात समझ आ गई।

Arien को अब उसकी ज़रूरत नहीं थी।

संपर्क टूट गया।

परत के भवन में Nerai का आपात निवेदन चमक रहा था।

उसे क़ानूनी समीक्षा की प्रतीक्षा थी।

पास ही मेज़ पर धन के बहाव का नक़्शा पड़ा था, जिस पर बहुत-से छोटे भुगतान थे। अलग-अलग देखो तो हर एक का स्पष्टीकरण था।

Nerai जानती थी कि यदि वह ग़लत है तो शोध, संस्थाओं और निर्दोष लोगों को नुकसान पहुँचा सकती है।

अगर वह ग़लत नहीं थी तो बहत्तर घंटे बहुत लंबे हो सकते थे।

उसे नहीं मालूम था कि क्या होने वाला है।

कहाँ, वह भी नहीं जानती थी।

कैसे, यह भी नहीं।

वह सिर्फ़ इतना जानती थी कि जिस आदमी ने कभी Mareia की कलाई जकड़ी थी, उसने बंद ऑरेलियाई घरों की बात ऐसे वक़्त की थी जब किसी के पास वे घर बंद करने का कोई कारण नहीं था।
और ग्रह के बहीखातों में कहीं, अभी-अभी, आख़िरी भुगतान हो चुका था।

24. पहला बुख़ार

लड़के का नाम Elan था।

वह छह बरस का था, और उसकी आँखों में स्वर्ण वलय तभी दिखता था जब वह रो रहा हो या किसी चीज़ पर बहुत ध्यान लगाए हो।

माँ कहती थी कि उसने उसे पहली बार बच्चे के जन्म के कुछ ही समय बाद देख लिया था। डॉक्टरों ने कहा कि यह संभव नहीं, क्योंकि बच्चों में ऑरेलियाई चिह्न प्रायः बाद में उभरता है।

मगर उसे पूरा यक़ीन था।

माओं को उन बातों का भी यक़ीन होता है जिन्हें सिद्ध नहीं किया जा सकता।

वे Auriola के छोर पर एक छोटे-से शहर में रहते थे। वह कोई प्रसिद्ध पुश्तैनी हवेली नहीं थी, न ऐसी जगह जहाँ पुरानी ऑरेलियाई कथाओं के निशान ढूँढ़ते हुए लोग आते। वह एक साधारण-सा घर था, जिसमें उजली रसोई थी, छोटा-सा बाग़ था, और एक दीवार थी जिस पर माँ-बाप के बार-बार मना करने के बावजूद Elan मालवाहक यानों की तस्वीरें बनाता रहता था।

उस सुबह वह उठना नहीं चाहता था।

माँ ने उसे चादर में दुबका पाया।

“Elan।”

लड़के ने आँखें खोलीं।

स्वर्ण वलय चमक रहा था।

रोज़ की तरह महीन और हलका नहीं।

पुतली के चारों ओर एक अखंड लकीर दमक रही थी।

“मुझे ठंड लग रही है,” उसने कहा।

उसकी त्वचा तप रही थी।

घर की स्वास्थ्य प्रणाली ने बुनियादी जाँच की। तापमान बढ़ा हुआ। नब्ज़ तेज़। सूजन के सूचकों में मामूली बदलाव।

सलाह में घबराहट का कोई संकेत नहीं था।

तरल पदार्थ।

आराम।

दो घंटे बाद दोबारा जाँच।

इलाक़े में कुछ सामान्य मौसमी बीमारियाँ फैली हुई थीं। Elan में कोई ऐसा लक्षण नहीं था जिससे तुरंत किसी गंभीर बात का संदेह होता।

फिर भी उसकी माँ ने स्थानीय डॉक्टर को फ़ोन किया।

“इसकी आँखों का वलय बहुत चमक रहा है,” उसने कहा।

डॉक्टर मुस्कराई।

“बुख़ार में ऐसा होता है।”

“इस तरह नहीं।”

“हर बार बुख़ार का रंग कुछ अलग हो सकता है।”

“यह ऑरिलियाई है।”

“जानती हूँ।”

“दोनों बातों का कोई संबंध नहीं हो सकता?”

डॉक्टर एक पल चुप रही।

“किन दोनों बातों का?”

माँ को जवाब नहीं सूझा।

उसके पास बीमारी का नाम नहीं था।

दूसरे मरीज़ों का कोई पता नहीं था।

केवल अपना बच्चा था, जिसे वह ख़ुद से भी बेहतर जानती थी।

डॉक्टर ने थोड़ी विस्तृत जाँच लिख दी।

दो घंटे बाद Elan और कमज़ोर था।

स्वास्थ्य प्रणाली ने निगरानी का स्तर बढ़ा दिया।

चार घंटे बाद उसने अस्पताल ले जाने की सलाह दी।

चिकित्सा वाहन बिना शोर किए आया। दोनों स्वास्थ्यकर्मी सुरक्षात्मक पोशाक पहने थे, मगर इसलिए नहीं कि उन्हें किसी अनजान संक्रमण का डर था। अज्ञात कारण से बुख़ार वाले हर मरीज़ के पास वे ऐसी ही पोशाक में जाते थे।

Elan की माँ उसके साथ गई।

पिता दरवाज़े पर खड़ा वाहन को जाते देखता रहा।

बच्चे के कमरे की दीवार पर नीले रंग के यान रह गए।

अस्पताल में Elan को एक केस पहचान संख्या मिली।

AUR-N-77104।

शुरुआती अक्षरों का अर्थ ऑरेलियाई नहीं था।

वे इलाक़े और अस्पताल के संकेत थे।

यह उन छोटी-छोटी विडंबनाओं में से एक थी जो लोगों को बहुत बाद में पीछे मुड़कर ही दिखाई दीं।

चिकित्सकीय एआई ने उसकी दशा का मिलान पिछले लाखों मामलों से किया।

कोई मामला हूबहू नहीं मिला।

यह असामान्य नहीं था।

मानव शरीर में लगभग अनगिनत तरह के अंतर दिखाई देते थे और ज़्यादातर का अर्थ कोई नई बीमारी नहीं था।

प्रणाली ने फ़िलहाल एक श्रेणी तय की—

अवर्गीकृत तीव्र शोथ प्रतिक्रिया।

उसने मामला क्षेत्रीय निगरानी विभाग को भेज दिया।

चेतावनी की तरह नहीं।

एक आँकड़े की तरह।

एक सौ अस्सी किलोमीटर दूर, उसी दिन एक बुज़ुर्ग औरत बुख़ार में जागी।

वह ऑरेलियाई थी।

अकेली रहती थी।

उसकी घरेलू प्रणाली ने इसे सामान्य संक्रमण पाया और आराम की सलाह दी।

Nitra में एक युवक अचानक बहुत कमज़ोरी महसूस होने पर अस्पताल पहुँचा। उसकी माँ मिश्रित वंश की थी और पिता ऑरेलियाई। उसकी आँखों में स्वर्ण वलय कभी-कभार ही दिखता था।

स्वास्थ्यकर्मियों ने उस पर ध्यान नहीं दिया।

Sarur में दो बहनें बीमार पड़ीं।

एक अन्य राज्य में काम के सिलसिले में यात्रा से लौटा एक आदमी।

मामले किसी एक जगह के नहीं थे।

न उनका अस्पताल एक था।

न उनका डॉक्टर।

हर प्रणाली में वे अलग-अलग थे।

चिकित्सकीय एआई को उनके लक्षण दिखते थे।

वंशावली अभिलेख उनका मूल जानते थे।

परिवहन प्रणालियाँ उनकी यात्राएँ जानती थीं।

बैंक उन परियोजनाओं से जुड़े भुगतान जानते थे जिनका विषय ऑरेलियाई वंश था।

मगर किसी को अधिकार नहीं था कि ये सारे आँकड़े एक साथ रखकर देखे।

अभी नहीं।

परत में Nerai अपना आपात निवेदन सामने खोले बैठी थी।

उसे भेजे दस घंटे बीत चुके थे।

तीन में से एक विभाग ने अतिरिक्त जानकारी माँगी थी।

दूसरे ने प्राप्ति की पुष्टि की थी।

तीसरे ने समिति की बैठक बुलाने की सूचना दी थी।

Taren ने पेय के दो प्याले मेज़ पर रखे।

“जाकर सो जाओ।”

“नहीं।”

“तुम्हारे निवेदन पर विचार हो रहा है।”

“विचार होना फ़ैसला होना नहीं है।”

“और तुम्हारे यहाँ बैठने से क़ानूनी मियादें घट नहीं जाएँगी।”

“इसीलिए तो वे ग़लत हैं।”

“हो सकता है तुम्हें वे इसलिए ग़लत लग रही हों कि वे लोगों को तुमसे बचाती हैं।”

Nerai ने उसकी तरफ़ देखा।

Taren बैठ गया।

“किसी ऐसे अधिकारी से जिसका मन ज़ोर देकर कुछ कहता है और जो उसकी ख़ातिर सारे खाते खोलकर देखना चाहता है।”

“मैं सारे खाते खोलकर नहीं देखना चाहती।”

“जानता हूँ। मगर क़ानून यह मानकर नहीं चल सकता कि कल तुम्हारी कुर्सी पर जो भी बैठेगा वह तुम ही होगी।”

Nerai ने प्याला उठा लिया।

“ठीक इसीलिए यह दिखाई देना चाहिए कि आँकड़े देख कौन रहा है।”

“तुम Jesair की तरह बोल रही हो।”

“मैं उस इंसान की तरह बोल रही हूँ जो दस घंटे से इंतज़ार कर रहा है कि अलग-अलग संस्थाएँ आपस में तय कर लें कि क्या उसे यह पता लगाने की इजाज़त है कि एक तिहाई आबादी की संभावित कमज़ोरी पर शोध के पैसे कौन दे रहा है।”

Taren ने बैंकों की ताज़ा रपटें खोलीं।

“एक नया लेन-देन मिला है।”

Nerai ने आँखें उठाईं।

“न्यासों से जुड़ा हुआ?”

“शायद।”

“Taren।”

“Vesta के सिलसिले में जिस कंपनी का नाम देखा था, उसने वलय पर एक परिवहन संयोजक को छोटी-सी रक़म भेजी है।”

“किसलिए?”

"आपात चिकित्सा सेवा आरक्षित करने के लिए।"

"किस परियोजना के लिए?"

"गोपनीय व्यापारिक सूचना है।"

Nerai ने समयक्रम खोला।

भुगतान Mareia और Arien की मुलाक़ात से कुछ पहले हुआ था।

"यह सामान्य तैयारी हो सकती है," Taren ने कहा।

"हो सकती है।"

"न्यास स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए ही काम करते हैं।"

"जानती हूँ।"

"और पिछली महामारियों के बाद से ऐसी सेवाएँ आरक्षित करना आम है।"

"जानती हूँ।"

"तो तुम उसे इस नज़र से क्यों देख रही हो?"

Nerai ने नक़्शे को फैलाया।

अभिलेख।

शोध।

संस्थाएँ।

क़ानूनी राय।

अनुमान।

और अब यह भुगतान।

"क्योंकि अब शुरू से आख़िर तक सब एक ही तरफ़ जा रहा है।"

Taren चुप रहा।

"हमारे सामने कोई बीमारी नहीं है," अंत में उसने कहा।

"नहीं।"

"कोई स्वास्थ्य चेतावनी नहीं है।"

"नहीं।"

“कोई सबूत नहीं कि ये सब बातें एक-दूसरे से जुड़ी हैं।”

“नहीं।”

“तो हमारे पास रोकने के लिए कुछ नहीं है।”

Nerai की नज़र नक़्शे पर टिकी रही।

“हमारे पास एक के बाद एक उठाए ऐसे क़दम हैं जिन्हें किसी दूसरी व्यवस्था ने ख़तरे के रूप में दर्ज कर लिया होता।”

“किस दूसरी व्यवस्था ने?”

“एक ऐसी व्यवस्था ने जो अभी बनी नहीं है।”

बिना किसी पूर्वसूचना के Mareia का संपर्क खुल गया।

उसकी छवि हिल रही थी, मानो वह चल रही हो।

“Nerai।”

“क्या हुआ?”

“वंशावली अभिलेखागार में एक आपात अनुरोध आया है।”

“किससे?”

“Auriola के अस्पताल से। एक बच्चे को अनजान बुख़ार है।”

Taren छवि की ओर झुका।

“एक बच्चा?”

“अभी तक।”

“वंशावली के आँकड़े क्यों माँग रहे हैं?”

“उसका स्वर्ण वलय असामान्य रूप से चमकीला है और जाँच में कुछ ऐसे बदलाव आए हैं जिन्हें डॉक्टर किसी श्रेणी में नहीं रख पा रहे।”

Nerai को लगा उसके दिमाग़ के सारे ख़याल ठहर गए हैं।

“इसकी कितनी ही वजहें हो सकती हैं,” Taren ने कहा।

Mareia ने सिर हिलाया।

“जानती हूँ।”

“ऑरेलियाई बच्चों में बुख़ार के समय चिह्न और उभर आते हैं।”

“जानती हूँ।”

Nerai ने वक़्त देखा।

“यह मामला कब सामने आया?”

Mareia ने समय बताया।

आख़िरी भुगतान के कुछ घंटे बाद।

समय की निकटता से कुछ सिद्ध नहीं होता था।

Nerai यह जानती थी।

Elarion पर हर घंटे अरबों भुगतान होते और हज़ारों लोग बीमार पड़ते थे। कोई दो काफ़ी बड़े नक़्शे एक-दूसरे पर रखे तो हमेशा कुछ घटनाएँ एक-दूसरे के आसपास घटती नज़र आ ही जाएँगी।

“अस्पताल से कहो कि मामला अंतरराज्यीय निगरानी विभाग को भेजे,” उसने कहा।

“वह क्षेत्रीय विभाग को भेज चुका है।”

“अंतरराज्यीय विभाग को।”

“एक मरीज़ के आधार पर प्रणाली इसकी इजाज़त नहीं देगी।”

“तो वंशावली अभिलेखागार विशेष अनुमति माँगे।”

Mareia ने उसकी ओर देखा।

“इलाक़े से बाहर मरीज़ की वंशगत पहचान बताने का हमारे पास कोई क़ानूनी आधार नहीं है।”

वाक्य उनके बीच ठहरा रहा।

Nerai को वे तमाम छूटें याद आईं जिनके सहारे बीते महीनों में अनाम परियोजनाएँ ऑरेलियाई वंशगत लक्षणों का अध्ययन कर पाई थीं।

अब जब एक ऑरेलियाई बच्चा अनजान बुख़ार में अस्पताल में पड़ा था, क़ानून उसके वंश की ख़बर उस प्रणाली से छिपाए रख रहा था जो दूसरे मामलों की तलाश कर सकती थी।

यह सुरक्षा उचित थी।

बच्चा कोई सार्वजनिक आँकड़ा नहीं था।

उसका वंश राज्य की संपत्ति नहीं था।

उसकी बीमारी उसकी पूरी वंशशाखा की निगरानी करने का बहाना नहीं बननी चाहिए थी।

और फिर भी Nerai को लगता था कि उनसे पहले कोई इसी हद को नापकर गया है।

“आवेदन दे दो,” उसने कहा। “उसके समर्थन में मैं अपना वित्तीय विश्लेषण दूँगी।”

“वित्तीय विश्लेषण का मरीज़ से कोई लेना-देना नहीं है।”

“यही तो हम नहीं जानते।”

“Nerai, बिना सबूत इस संदिग्ध वित्तपोषण को एक ऑरेलियाई बच्चे की बीमारी से जोड़ देंगे तो दहशत फैल सकती है।”

“और अगर नहीं जोड़ें तो?”

Mareia ने जवाब नहीं दिया।

Auriola के अस्पताल में Elan सो रहा था।

उसकी माँ कमरे की पारदर्शी दीवार के पास बैठी थी। डॉक्टरों ने अभी उसे बेटे से पूरी तरह अलग नहीं किया था, पर सुरक्षात्मक घेरे में रहने को कहा था।

Elan जाग गया।

“माँ।”

उसने दीवार पर हथेली रखी।

“यहीं हूँ।”

“अंदर आओ।”

“थोड़ी देर में।”

“मुझे ठंड लग रही है।”

“जानती हूँ।”

“मैं घर क्यों नहीं जा सकता?”

माँ उस तरह मुस्कराई जैसे माँ-बाप तब मुस्कराते हैं जब वे बच्चे को वह भरोसा देना चाहते हैं जो उन्हें ख़ुद नहीं होता।

“बस, इन्हें पता लगाना है तुम्हें हुआ क्या है।”

Elan ने अपना हाथ देखा।

“इसलिए कि मैं सुनहरा हूँ?”

माँ की साँस रुक गई।

“नहीं।”

“स्कूल में कहते हैं, वलय कभी-कभी बीमार होता है।”

“किसने कहा?”

“किसी ने।”

“वलय कोई बीमारी नहीं है।”

“तो इतना चमक क्यों रहा है?”

उसे मालूम नहीं था।

उसने अपना दूसरा हाथ भी दीवार पर रख दिया।

“क्योंकि तुम्हारा शरीर लड़ रहा है।”

“जीतेगा?”

“हाँ।”

उसने फ़ौरन जवाब दिया।

माओं को उन बातों का भी यक़ीन होता है जिनका फ़ैसला अभी होना बाक़ी है।

इस बीच क्षेत्रीय चिकित्सकीय एआई के पास चौथा मामला आया।

फिर पाँचवाँ।

अलग शहर।

अलग उम्र।

एक जैसे असामान्य लक्षण।

प्रणाली को एक क्षीण सांख्यिकीय संबंध दिखाई दिया।

संभवतः कोई साझा वंशानुगत लक्षण।

फिर भी उसने यह सूचना सार्वजनिक चेतावनी के रूप में नहीं भेजी।

पहले यह तय करना था कि कहीं भौगोलिक या पर्यावरणीय अंतर, या अलग-अलग निदान पद्धतियाँ, परिणाम को प्रभावित तो नहीं कर रही हैं।

अतीत में भेदभाव के मामलों के बाद केवल चंद उदाहरणों के आधार पर किसी वंशशाखा को जोखिम का कारक घोषित करना प्रतिबंधित था।

इसलिए प्रणाली ने और आँकड़े माँगे।

एक अस्पताल ने दे दिए।

दूसरा मरीज़ की सहमति की प्रतीक्षा कर रहा था।

तीसरे के आँकड़ों का मानक अलग था।

चौथा एक ऐसे राज्य में पड़ता था जो सीमाओं के आर-पार आनुवंशिक विशेषताओं के स्वचालित मिलान की अनुमति नहीं देता था।

मशीन को धुँधली आकृति दिख रही थी।

क़ानून उसे रेखा खींचने की इजाज़त नहीं देता था।

देर रात Jesair को Auriola से संदेश मिला।

वह Elan के परिवार को जानता था। बहुत क़रीब से नहीं, पर इतना कि उसे वह लड़का याद था जिसने कभी वंशसभा में उससे पूछा था कि क्या स्वर्ण वलय को साधारण आँखों की अपेक्षा ज़्यादा अच्छी चीज़ें दिखती हैं।

तब Jesair ने कहा था कि आँखें अपने रंग के हिसाब से नहीं देखतीं, उतना देखती हैं जितना देखने का आदमी में साहस हो।

अब वह Davion घराने की हवेली की खिड़की पर खड़ा Elan की माँ को सुन रहा था।

“मुझे उसके पास जाने नहीं देते,” उसने कहा।

“उसे अलग रखा है?”

“अभी सिर्फ़ एहतियात के तौर पर।”

“डॉक्टर क्या कहते हैं?”

“कि उन्हें पता नहीं।”

उसकी आवाज़ में Jesair ने कुछ पहचाना।

दहशत नहीं।

उससे ठीक पहले की जगह।

“मैं आऊँगा,” उसने कहा।

“नहीं।”

जवाब झटके से आया।

“तुम ऑरेलियाई हो।”

Jesair चुप रहा।

“माफ़ करना,” उसने कहा। “मैं बस... अगर यह कुछ ऐसा हुआ तो... हमें पता नहीं।”

“मैं समझता हूँ।”

“Elan तुम्हारे बारे में पूछ रहा था।”

“उसे कहना, मैं उसके साथ हूँ।”

“मगर तुम हो नहीं।”

Jesair ने खिड़की के शीशे को छुआ।

बाहर Auriola अँधेरे में डूबा था। पुराने घर, घाटियाँ, वंशावली के अभिलेख और वे रास्ते जिन पर स्वर्ण वलय वाले लोग पीढ़ियों से चलते आए थे।

“कभी-कभी आदमी जहाँ खड़ा होता है, वहीं से किसी दूसरे के साथ हो सकता है,” उसने कहा।

संपर्क बंद हुआ तो वह अकेला रह गया।

पल भर को उसकी आँखों के आगे एक दृश्य उभरा।

इस बार उस झलक में न अस्पताल था न Elan।

उसके आगे एक लंबा गलियारा खुला था, पारदर्शी दीवारों से बँटा हुआ।

हर दीवार के पीछे एक इंसान लेटा था।

हर दीवार के पीछे एक इंसान लेटा था।

बिस्तरों के ऊपर स्वर्ण वलय चमक रहे थे।

हज़ारों।

फिर लाखों।

दृश्य ओझल हो गया।

Jesair ने खिड़की का चौखटा थाम लिया।

“नहीं,” उसने ख़ालीपन से कहा।

उसे नहीं मालूम था वह किसे जवाब दे रहा है।

परत में स्वास्थ्य-संबंधी एक सूचना चमकी।

सार्वजनिक नहीं।

प्रारंभिक।

क्षेत्रीय प्रणाली को कुछ मामलों में एक असामान्य समानता दिखी थी जिसका संबंध किसी वंशानुगत लक्षण से हो सकता था। आगे पुष्टि आवश्यक थी।

Nerai ने उसे नहीं देखा।

वित्त विभाग को प्रारंभिक स्वास्थ्य सूचनाएँ देखने का अधिकार नहीं था।

Mareia उसे केवल आंशिक रूप से देख पाई।

वंशावली अभिलेखागार से इस बात की पुष्टि माँगी गई थी कि क्या मरीज़ परस्पर संबंधित वंशों से हैं।

अस्पतालों को अपने-अपने रोगी दिख रहे थे।

हर प्रणाली को उसका अपना टुकड़ा मिला था।

Nerai की मेज़ पर तैयारियों के लिए जुटाए धन का नक़्शा चमक रहा था।

Mareia की मेज़ पर जैविक सवालों का नक़्शा।

स्वास्थ्य नेटवर्क में पहले मरीज़ों का नक़्शा।

उनके बीच खड़े थे क़ानून, अलग-अलग क्षेत्राधिकार, अनुमतियाँ और वे अच्छे कारण जिनके चलते किसी एक को सब कुछ नहीं देखना था।

सुबह भी Elan का बुख़ार नहीं उतरा था।

अज्ञात कारण वाले मामलों की संख्या बढ़कर सात हो गई।

दोपहर को बारह।

Elarion का सूरज ढलने से पहले एक दूसरे राज्य में पहला बच्चा बीमार पड़ा।

प्रणाली में वह एक अलग मामला दर्ज था।

अपने परिवार में उसका एक नाम था।

इतिहास में अब तक कोई नहीं।

बाद में लोग उस क्षण को ढूँढ़ेंगे जब तिहाई शुरू हुई थी।

वे पहली सार्वजनिक घोषणा की ओर उँगली उठाएँगे।

Auriola की नाकेबंदी की ओर।

उस दिन की ओर जब स्वास्थ्य नेटवर्क ने ऑरेलियाइयों का नाम लिया।

पारदर्शी दीवार के पीछे चले गए पहले शहर की ओर।

पर विपदाएँ तब शुरू नहीं होतीं जब समाज उन्हें कोई नाम देता है।

वे पहले ही शुरू हो जाती हैं।

एक सवाल में, जिसे कोई निर्दोष लोगों के बीच बाँट देता है।

एक भुगतान में, जिसे हर बैंक अपनी जगह सही आँकता है।

जीवन की रक्षा के लिए रची गई एक छूट में।

उस मशीन में जिसे ढाँचा दिखाई देता है, मगर उसके आँकड़े आपस में जोड़ने का अधिकार नहीं है।

उस एक आदमी में जो पूरा नक़्शा जानता है।

और एक बच्चे के बुख़ार में, जिसमें अभी किसी को इतिहास बनता नहीं दिखता।

Elan ने आँखें खोलीं।

उनमें स्वर्ण वलय पहले से भी अधिक उजला था।

पारदर्शी दीवार के पीछे उसकी माँ खड़ी थी।

उसने उस पर तीन उँगलियाँ रखीं।

लड़के ने अपना हाथ उठाकर दूसरी ओर से वही किया।

दोनों की त्वचा के बीच शीशा रह गया।

पहली दीवार।

पहला बंद घर अभी अस्तित्व में नहीं आया था।

मगर पहला कमरा बंद हो चुका था।

भाग III — स्वर्ण वलय की महामारी

25. Auriola के घर

सुबह तक उनकी संख्या तेईस हो गई थी।

तेईस लोग ऐसे बुख़ार में पड़े थे जिसे स्वास्थ्य प्रणालियाँ ठीक-ठीक पहचान नहीं पा रही थीं।

उनमें से इक्कीस ऑरेलियाई थे।

एक के पिता ऑरेलियाई थे, मगर उसकी आँखों में स्वर्ण वलय कभी साफ़ नहीं उभरा था।

आख़िरी औरत के बारे में वंशावली अभिलेखागार को कुछ नहीं मालूम था। वह Auriola के बाहर जन्मी थी और उसने कभी अपनी वंशगत पहचान सार्वजनिक नहीं की थी।

हर अस्पताल में मामलों की सूरत अलग थी।

एक में एक बच्चा लेटा था।

दूसरे में एक बूढ़ी औरत।

तीसरे में दो सहोदर।

चौथे में एक आदमी, जिसने कुछ दिन पहले कक्षीय वलय पर काम किया था।

स्वास्थ्य प्रणालियाँ मामलों को नाम, जाति या वंशावली के आधार पर नहीं जोड़ती थीं। वे लक्षण, परिवेश, समय और ज्ञात जोखिम देखते हुए उन्हें जोड़ती थीं। Elarion पर वंशगत पहचान सबसे संवेदनशील जानकारियों में गिनी जाती थी और उसे तभी इस्तेमाल में लाया जा सकता था जब कोई स्पष्ट चिकित्सकीय कारण हो।

अभी उस कारण की पुष्टि नहीं हुई थी।

इसलिए प्रणाली उसे पहले से सच नहीं मान सकती थी।

Auriola के अस्पताल में Elan ने बोलना बंद कर दिया।

वह सोया नहीं था। आँखें खुली थीं, छत की रोशनी देख रहा था, पर सवालों के जवाब उँगलियाँ हिलाकर ही देता था। एक का मतलब था हाँ। दो का नहीं।

उसकी माँ पारदर्शी दीवार के पीछे खड़ी थी।

“मेरी आवाज़ सुन रहे हो?”

एक उँगली।

“कहीं दर्द हो रहा है?”

दो।

“ठंड लग रही है?”

एक।

उसकी जाँच के नतीजे बदलते तो स्वास्थ्यकर्मी इलाज बदलते। हर उपाय का प्रणाली आकलन करती, लाखों मामलों से उसका मिलान होता और डॉक्टर उसकी जाँच करता।

कोई आँख मूँदकर काम नहीं कर रहा था।

फिर भी कोई नहीं जानता था कि वे किससे लड़ रहे हैं।

Elan ने हाथ उठाया।

तीन उँगलियाँ दीवार पर रख दीं।

उसकी माँ ने भी वही किया।

उनके बीच थे शीशा, हवा और वह नियम जो उसे अंदर जाने की अनुमति नहीं देता था।

“मैं यहीं हूँ,” उसने कहा।

लड़के ने आँखें मूँद लीं।

उस दिन पहले कुछ घर बंद होने लगे।

राज्य के आदेश पर नहीं।

शुरू में अपनी इच्छा से।

ऑरेलियाइयों की पुरानी पुश्तैनी हवेलियों के अपने स्वास्थ्य नियम थे। कुछ नियम तब बने थे जब बीमारियाँ धीमे फैलती थीं और लोगों को विश्वास था कि घराने की दीवारें अपनी शुद्धता को शेष दुनिया से अलग रख सकती हैं। आधुनिक समय में उन नियमों का अधिकतर सांकेतिक महत्व ही रह गया था।

अब उनके पुराने फाटक सचमुच बंद हो गए।

परिवारों ने बच्चों को स्कूल भेजना बंद कर दिया।

काम करने वाले घर पर रह गए।

घरेलू प्रणालियाँ तापमान, रक्त के सूचक और स्वर्ण वलय में होते बदलाव मापती थीं।

सार्वजनिक नेटवर्कों पर आँखों की पहली छवियाँ उभरीं।

परितारिकाओं की तस्वीरें।

बड़ी करके दिखाई गई सुनहरी लकीरें।

लोग उन्हें मिलाते, अंतर ढूँढ़ते और उन जगहों पर निशान लगाते जहाँ वलय कुछ चौड़ा, अधिक चमकीला या कहीं से टूटा जान पड़ता था।

स्वास्थ्यकर्मी बार-बार आगाह करते थे कि केवल आँख देखकर बीमारी का भरोसेमंद निदान नहीं हो सकता।

कोई उनकी नहीं सुनता था।

डर को वे चिह्न बहुत भाते हैं जो आँख से दिखाई दें।

Mareia दोपहर से पहले ही Auriola पहुँच गई।

Jesair Davion घराने की हवेली के सामने उसका इंतज़ार कर रहा था। उसने सुरक्षात्मक पोशाक नहीं पहनी थी, बस स्थानीय नियमों के अनुरूप हलके रंग का एक सादा मास्क था।

“तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था,” उसने कहा।

“मैं यहीं रहता हूँ।”

“जानते हो, मेरा क्या मतलब है।”

Jesair ने घाटी में बंद घरों की ओर देखा।

“अगर ठीक इसी वक़्त मुझे यहाँ से चला जाना है, तो यह घर कभी मेरा था ही नहीं।”

“बात घर की नहीं है।”

“जानता हूँ।”

“बात तुम्हारी है।”

“मैं भी ऑरेलियाई हूँ।”

“ठीक इसीलिए।”

Mareia उसके और पास आई।

“अगर निशाना हमारा वंश है तो तुम्हें सबसे ज़्यादा ख़तरा है। तुम उस घराने के वंशज हो जो ज्ञात घरानों में सबसे पुराना है। हमें नहीं पता कि इस बात का ठीक-ठीक क्या मतलब निकलता है।”

“शायद कुछ नहीं।”

“और शायद सब कुछ।”

Jesair शांति से उसे देखता रहा।

“Nerai ने तुमसे कहा है कि मुझे मनाओ?”

“Nerai ने कहा कि अगर मैंने तुम्हें नहीं मनाया तो वह ख़ुद आकर तुम्हें घसीट ले जाएगी।”

“यह तो मैं देखना चाहूँगा।”

“मैं नहीं।”

उसके चेहरे से मुस्कान उतर गई।

Mareia ने मुड़कर Auriola की ओर देखा।

“Arien ने घरों के बंद होने की बात उससे पहले की थी जब हमें एक भी मामले का पता नहीं था।”

“जानता हूँ।”

“अगर इससे उसका कोई लेना-देना है—”

“हमें शक है।”

“मेरे पास शक से कुछ ज़्यादा है।”

“तुम एक आदमी को जानती हो।”

“क्या यह कम है?”

“नहीं। मगर दुनिया को रोकने के लिए इतना काफ़ी नहीं था।”

Mareia ने आँखें झुका लीं।

Jesair ने उसका हाथ छुआ।

“यह तुम्हारा दोष नहीं है।”

“मैंने देखा था, बात किस तरफ़ जा रही है।”

“और तुमने बताया भी था।”

“बहुत देर से।”

“पहले बुख़ार से पहले।”

“फिर भी बहुत देर से।”

Jesair जानता था कि उससे बहस करने का कोई फ़ायदा नहीं। इसलिए नहीं कि वह सही थी, बल्कि इसलिए कि ऐसे में अपराधबोध सच देखकर अपना ठिकाना नहीं चुनता। वह देखता है कौन कितना नज़दीक था।

Arien के सबसे नज़दीक Mareia रही थी।

इसीलिए उसे लगता था सबसे दूर तक उसी को देख लेना चाहिए था।

Davion घराने की हवेली को समन्वय केंद्र बना दिया गया।

अस्पताल नहीं।

वहाँ न नई बीमारी के इलाज के लिए उपकरण थे न डॉक्टर। वहाँ जगह थी, संचार केंद्र थे, ऊर्जा के अपने साधन थे और भूमिगत पुराने कक्ष थे जिन्हें बाक़ी घर से अलग किया जा सकता था।

वंश परिषद ने प्रस्ताव दिया कि हवेली केवल सबसे पुराने वंशों के सदस्यों के लिए सुरक्षित कर दी जाए।

Jesair ने इसे ठुकरा दिया।

“अगर हम फाटक सिर्फ़ उनके लिए खोलेंगे जिनके पास सही नाम है,” उसने कहा, “तो हम उन नामों में से एक के भी योग्य नहीं हैं जो हमारी दीवारों पर टँगे हैं।”

ऐसे परिवार हवेली आने लगे जिनके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं थी।

सभी बीमार नहीं थे।

कुछ केवल डरे हुए थे।

एक माँ अपने दो बेटों के साथ, जिसके पड़ोसियों ने उसे साझा आवासीय इमारत छोड़ने को कहा था।

एक बूढ़ा आदमी जिसके लिए अस्पताल जाने का इंतज़ाम रद्द हो गया था, क्योंकि दूसरे राज्य ने Auriola से मरीज़ लेना बंद कर दिया था।

एक युवती, जिसकी गर्भावस्था के आख़िरी महीने थे। उसका साथी सेलेनी था। आनुवंशिक जाँचों के अनुसार उसके गर्भ में पल रहा बच्चा लड़का था।

एक ऑरेलियाई लड़का।

वह Davion परिवार के पुराने पुस्तकालय में पेट पर दोनों हाथ रखे बैठी थी।

“सारी उम्र मैंने एक बेटा चाहा,” उसने Mareia से कहा। “अब लगता है विरासत में उसे एक सज़ा दे दी।”

“तुमने उसे जीवन दिया है।”

“और एक निशान।”

“निशान कोई बीमारी नहीं है।”

“तो जाकर उनसे कहो जो उसे देखने से भी डरेंगे।”

Mareia उसके सामने बैठ गई।

“हमें अभी पता नहीं क्या हो रहा है।”

“इसीलिए तो डरती हूँ।”

औरत ने Davion घराने के चित्रों को देखा।

“तुम्हें लगता है इन्होंने कभी सोचा होगा कि एक दिन इनके वलय का मतलब मौत होगा?”

“नहीं।”

“तो फिर वह था ही क्यों?”

Mareia ने बहुत पहले गुज़र चुके लोगों की आँखों में चित्रित स्वर्ण वलय देखे।

“शायद किसी ख़ास वजह से नहीं।”

औरत ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

“हर चीज़ का कोई प्रयोजन हो, यह ज़रूरी नहीं,” Mareia ने कहा। “हमें जो विरासत में मिलता है, वह सब किसी बात का संदेश नहीं होता। कभी वह सिर्फ़ हमारे शरीर का हिस्सा होता है। हमारे सफ़र का एक टुकड़ा।”

“और अगर वह सफ़र हमें यहाँ ले आए तो?”

Mareia के पास कोई जवाब नहीं था।

देर शाम Nerai पहुँची।

सुरक्षा प्रणाली ने तीन जाँचों के बाद ही उसे Auriola में प्रवेश दिया। वह सेलेनी थी, मगर उसकी माँ ऑरेलियाई थी और सीमित जानकारी के सहारे प्रणाली भरोसे से तय नहीं कर सकती थी कि मिश्रित वंशावली में कोई जोखिम है या नहीं।

“तो अब मैं इनकी नज़र में कम से कम इतनी ऑरेलियाई हूँ कि मेरी जाँच हो,” Davion घराने की हवेली में दाख़िल होते हुए उसने कहा।

“बचपन में तुम्हें इससे ख़ुशी होती,” Jesair ने कहा।

“बचपन में मैं बेवक़ूफ़ थी।”

“बचपन में तुम चाहती थीं कि तुम्हें अपना मानें।”

“अक्सर दोनों एक ही बात होती हैं।”

वे बस एक पल गले मिले।

Nerai ने फ़ौरन काम की परतें खोल लीं।

“अठहत्तर मामलों की पुष्टि हो चुकी है। दो सौ से ज़्यादा अभी वर्गीकरण के इंतज़ार में हैं। अधिकतर Auriola में हैं, लेकिन सभी नहीं।”

“कितने ऑरेलियाई हैं?” Mareia ने पूछा।

“ठीक-ठीक पता नहीं।”

“हमें यह कैसे पता नहीं?”

“हर किसी की वंशगत पहचान सार्वजनिक नहीं है। सभी राज्य उसे एक ही तरीक़े से दर्ज नहीं करते। कुछ अस्पताल मरीज़ की सहमति के बिना उसे बता नहीं सकते।”

“और प्रणाली ने अब तक किसी आनुवंशिक संबंध की घोषणा नहीं की?”

“क्षेत्रीय प्रणाली ने संभावना जताई है।”

“और अंतरराज्यीय प्रणाली ने?”

“उसके पास पर्याप्त पुष्ट आँकड़े नहीं हैं।”

Mareia रोष में हँस पड़ी।

“उसे कितने चाहिए?”

“सिर्फ़ संख्या पर नहीं, गुणवत्ता पर भी निर्भर है।”

“लोग बुख़ार में जल रहे हैं और मशीनें गुणवत्ता परख रही हैं।”

“मशीनें वही कर रही हैं जो हमने उनसे चाहा था,” Nerai ने कहा। “हम नहीं चाहते थे कि दस मरीज़ देखें और एक पूरी जाति को स्वास्थ्य के लिए ख़तरा घोषित कर दें।”

“अब लगभग अस्सी हो गए हैं।”

“और कुछ घंटों में आठ सौ हो सकते हैं।”

कमरे में चुप्पी छा गई।

Jesair ने अपनी बहन की ओर देखा।

“तुम्हें ऐसा लगता है?”

“मुझे लगता है कि यह जो कुछ भी है, आज शुरू नहीं हुआ।”

Nerai ने नक़्शा सामने किया।

पहले ज्ञात मामले एक-दूसरे से बहुत दूर-दूर थे।

कुछ के बीच आवागमन के केंद्र साझे थे।

कुछ के बीच वंश का नाता था।

और कुछ में कोई संबंध दिखाई नहीं पड़ता था।

“यह Auriola के बाहर पहुँच चुकी है,” उसने कहा। “बस हमने अब तक माना नहीं है।”

Davion हवेली की बग़ल की दीवार पर स्थानीय समाचार प्रसारण खुला। “अधिकारियों ने अज्ञात बुख़ार के अठहत्तर मामलों की पुष्टि की है,” समाचारवाचिका ने कहा। “स्वास्थ्यकर्मियों ने इस दावे का खंडन किया है कि स्वर्ण वलय को देखकर ही संक्रमण की पहचान हो सकती है।”

एक छोटी-सी रिकॉर्डिंग में बंद स्कूल के सामने खड़ी माँ पूछ रही थी कि बच्चे में कोई लक्षण नहीं तो उसे घर पर क्यों रखे। एक अन्य अभिभावक ने ऑरेलियाई घर के दरवाज़े की ओर इशारा करके माँग की कि उस पर पहरा बैठना चाहिए।

Jesair ने आवाज़ धीमी कर दी। “दोनों को अपने बच्चों का डर है,” उसने कहा। Nerai ने जवाब नहीं दिया। उसके अपने नक़्शे पर अब समाचारवाचिका की गिनाई जगहों से कहीं ज़्यादा जगहें थीं।

तभी अस्पताल से ख़बर आई।

Elan की हालत बिगड़ गई थी।

Jesair उठ खड़ा हुआ।

“मैं जा रहा हूँ।”

“नहीं,” Mareia और Nerai एक साथ बोलीं।

उसने दोनों की ओर देखा।

“उसकी माँ अकेली है।”

“वहाँ स्वास्थ्यकर्मी हैं,” Nerai ने कहा।

“एक बात नहीं है।”

“अगर तुम्हें संक्रमण हो गया तो किसी की मदद नहीं कर पाओगे।”

“और अगर यहाँ रहा तो?”

“लोगों से बात कर सकते हो। मदद का इंतज़ाम कर सकते हो। बचाव के उपाय अपनाने के लिए उन्हें राज़ी कर सकते हो।”

“यानी मुझे एक आवाज़ होना है, इंसान नहीं।”

“तुम्हें जीते रहना है।”

Jesair ने Auriola के नक़्शे को देखा।

फिर अपनी हवेली के बंद फाटकों को।

“इतने साल से लोग मुझे बताते आए हैं कि मेरे पुरखे क्या-क्या कर सकते थे। छूकर रोग ठीक कर देते थे। जिन घरों में और लोग जाने से डरते, उनमें जाते थे। बीमारों के पास खड़े रहते थे।”

“और शायद इसीलिए सब मर गए,” Nerai ने कहा।

Jesair ने उसकी ओर आँखें उठाईं।

इसमें कोई निर्दयता नहीं थी।

केवल एक बहन का डर था जो अभी उसे भी आँकड़ों में नहीं लिख लेना चाहती थी।

“तुम्हें यह साबित करने की ज़रूरत नहीं है कि तुम Davion हो,” उसने कहा।

“मुझे कुछ भी साबित नहीं करना।”

“तो रुक जाओ।”

Jesair बैठ गया।

अस्पताल में Elan की माँ ने शीशे पर तीन उँगलियाँ रखीं।

लड़के ने इस बार हाथ नहीं उठाया।

आधी रात तक तैंतालीस और ऑरेलियाई घर बंद हो गए।

सुबह तक उनकी गिनती हज़ार से ऊपर थी।

शुरू में वे ख़ुद अपने दरवाज़े बंद करते थे।

कुछ दिनों बाद उन्हें दूसरे बंद करने लगेंगे।

26. पूरी तस्वीर से अनजान प्रणालियाँ

Saira Oren जानती थी कि मशीनें आपस में कैसे बात करती हैं।

शब्दों में नहीं।

अधिकारों में।

हर सूचना प्रणाली उतना ही कह सकती थी जितना कहने की इजाज़त उसे क़ानून देता था। उसके भीतर क्या दर्ज है, इससे ज़्यादा अहम था कि उसे क्या आगे बताने की अनुमति है।

Saira अंतरराज्यीय सूचना नेटवर्कों की वास्तुकार थी। वह अस्पतालों, बीमा कंपनियों, स्वास्थ्य अभिलेखों और शोध केंद्रों के बीच संपर्क के माध्यम बनाती थी। उसने सारी उम्र इस कोशिश में बिताई थी कि सूचनाएँ एक संस्था से दूसरी में पहुँच सकें और इंसान की ज़िंदगी सार्वजनिक संपत्ति न बन जाए।
उसे सीमाओं में विश्वास था।

उसे अधिकारों के बँटवारे में विश्वास था।

उसे विश्वास था कि किसी एक प्रणाली को किसी इंसान के बारे में सब कुछ जानने का हक़ नहीं होना चाहिए।

इसीलिए Nerai ने उसे बुलाया था।

वे संघ के संकट प्रबंधन केंद्र में मिलीं।

दीवारों पर पाँच नक़्शे चमक रहे थे।

मरीज़ों का नक़्शा।

वंशगत संबंधों का नक़्शा।

अस्पतालों की क्षमता का नक़्शा।

आवागमन का नक़्शा।

संदिग्ध वित्तपोषण का नक़्शा।

एक भी पूरा नहीं था।

और बिना अनुमति के किन्हीं दो को भी पूरी तरह एक-दूसरे पर नहीं रखा जा सकता था।

Saira देर तक उनका मुआयना करती रही।

“तुम चाहती हो मैं इन्हें जोड़ दूँ,” उसने कहा।

“मैं जानना चाहती हूँ, क्या इन्हें जोड़ा जा सकता है?”

“तकनीकी तौर पर, हाँ।”

“क़ानूनी तौर पर?”

“नहीं।”

“आपात स्थिति में भी नहीं?”

“पूरे ग्रह पर अभी स्वास्थ्य आपातकाल घोषित नहीं हुआ है। संघ अपने आँकड़े जोड़ सकता है, दूसरे राज्यों के अभिलेख नहीं। वंशावली अभिलेखों की सुरक्षा की व्यवस्था अलग है। वित्तीय सूचनाओं की अलग।”

Nerai ने स्वास्थ्य के नक़्शे की ओर इशारा किया।

“मैं बस यह पता लगाना चाहती हूँ कि क्या मरीज़ उन्हीं वंशशाखाओं से हैं जिनके बारे में किसी ने शोध परियोजनाओं में जानकारी माँगी थी।”

“बस?”

“मुझे नाम नहीं चाहिए।”

“बिना नाम की समानता भी उनके बारे में जानकारी ही है।”

“और उस शख़्स के बारे में जानकारी का क्या जिसने शोध के पैसे दिए?”

“वित्तीय परत उसे नहीं जानती।”

“ठीक यही तो।”

Saira नक़्शों के क़रीब आई।

“मैं एक अस्थायी सेतु बना सकती हूँ। हर प्रणाली पहचान का एक अनाम संकेत बनाएगी और हम केवल यह देखेंगे कि उनमें कौन-से मेल खाते हैं।”

“तो बनाओ।”

“मुझे अधिकार नहीं है।”

“किसे है?”

“सबको।”

Nerai के माथे पर बल पड़ गए।

“यह जवाब नहीं हुआ।”

“उलटे, बहुत सटीक जवाब है। हमें स्वास्थ्य निरीक्षण विभाग, वंशावली अभिलेखागारों, अंतरराज्यीय परिषद, कम से कम बारह राज्यों और दूसरे ग्रहों के आँकड़ों के संरक्षक की सहमति चाहिए। अगर वित्तपोषण को जोड़ना है, तो अदालत की अनुमति भी।”

“कितना वक़्त?”

“सामान्य प्रक्रिया में कई महीने।”

“और आपात स्थिति में?”

“अगर सब सहमत हुए तो कुछ घंटे।”

“तो चलो उन्हें मिलाएँ।”

Saira ने उसकी ओर देखा।

“लोगों को या प्रणालियों को?”

“दोनों को।”

सोलह मिनट बाद आपात बैठक शुरू हुई।

एक तरफ़ स्वास्थ्य विभागों के प्रतिनिधि बैठे थे।

दूसरी तरफ़ वंशावली अभिलेखागारों के संरक्षक।

आगे क़ानूनविद, बैंक पर्यवेक्षक, राज्यों के प्रतिनिधि और नागरिक अधिकारों के पक्षधर।

हर कोई समस्या का कोई अलग हिस्सा जानता था।

और हर किसी को किसी अलग विपदा का डर था।

स्वास्थ्यकर्मियों को महामारी का।

वंश परिषदों को भेदभाव का।

राज्यों को अपना नियंत्रण खोने का।

क़ानूनविदों को एक नज़ीर बन जाने का।

अधिकारों के रक्षकों को ऐसी प्रणाली का जो एक दिन हर इंसान के बारे में सब कुछ एक साथ जोड़ सके।

"हम केवल कुछ समय के लिए सहसंबंध जाँचने की अनुमति माँग रहे हैं," Saira ने कहा। "बिना नामों के। किसी की व्यक्तिगत जानकारी उजागर किए बिना। हमें बस यह देखना है कि मरीज़ों में और हाल की कुछ शोध परियोजनाओं में अध्ययन की गई आनुवंशिक विशेषताओं में कोई सांख्यिकीय मेल है या नहीं।"
"परिणाम किसे दिखेगा?" Therinith के प्रतिनिधि ने पूछा।

"स्वास्थ्य संकट दल को।"

"और परत को?"

Nerai ने जवाब दिया—

"वित्तीय विश्लेषकों को केवल इतना पता चलेगा कि हम जिन परियोजनाओं की जाँच कर रहे हैं उनका मौजूदा ख़तरे से कोई संबंध है या नहीं।"
"तो आप वित्तीय जाँच में स्वास्थ्य-संबंधी आँकड़े इस्तेमाल करेंगी।"

"हम ख़तरे की पुष्टि का इस्तेमाल यह पता लगाने के लिए करेंगे कि उसका पैसा किसने दिया।"

"यह एक ख़तरनाक नज़ीर होगी।"

"ख़तरनाक नज़ीर पहले ही अस्पतालों में पड़ी है।"

Daren Voltr उत्तरी गठबंधन की मुद्रा परिषद के प्रतिनिधि के नाते बैठक में था। स्वास्थ्य-संबंधी सूचनाओं पर उसका सीधा अधिकार नहीं था, पर अंतरराज्यीय संकटों के समय वह ऐसे राज्यों के समूह की नुमाइंदगी करता था जिनकी वित्तीय और बीमा प्रणालियों को ख़र्च का एक हिस्सा उठाना था।
"Nerai," उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि वक़्त कम है। मगर आनुवंशिकी, स्वास्थ्य और धन को जोड़ने वाली व्यवस्था ठीक वही है जिसके बारे में Jesair के विरोधियों ने आगाह किया था।"
"Jesair चाहता था कि सत्ता सबको दिखाई दे, यह नहीं कि लोगों के स्वास्थ्य का ब्योरा सार्वजनिक हो।"

"हर केंद्रीकृत व्यवस्था यह कहकर शुरू होती है कि उसे सिर्फ़ सत्ता पर नज़र रखनी है।"

"तो हम केंद्रीकृत व्यवस्था न बनाएँ।"

"फिर क्या बनाएँ?"

Saira ने जवाब दिया—

"अलग-अलग केंद्रों के बीच कुछ समय के लिए प्रमाणों के आदान-प्रदान की व्यवस्था। आँकड़े जहाँ हैं वहीं रहेंगे। हर अभिलेख उत्तर में सिर्फ़ हाँ, नहीं या कोई सांख्यिकीय मान देगा। हर सवाल दर्ज होगा। बाद में मरीज़ देख सकेगा कि आपात जाँच में उसकी जानकारी शामिल की गई थी।"

“और क्या वह इनकार कर सकता है?” नागरिक अधिकारों की प्रतिनिधि ने पूछा।

“बाद में नहीं।”

“तब उसकी सहमति का कोई अर्थ ही नहीं है।”

“अगर हम हर बेहोश व्यक्ति की निजी सहमति की राह देखते रहे तो हमें कुछ भी पता नहीं चलेगा।”

“इसी तरह तो वह आपात व्यवस्था शुरू होती है जो कभी ख़त्म नहीं होती।”

Nerai को अपने भीतर ग़ुस्सा बढ़ता महसूस हुआ।

किसी ख़ास आदमी पर नहीं।

सबकी चिंताएँ वाजिब थीं।

सबसे बुरी बात यही थी।

अगर वे नासमझ होते तो उन्हें समझाया जा सकता था।

भ्रष्ट होते तो उन्हें बेनक़ाब किया जा सकता था।

पर वे सचमुच की क़ीमती चीज़ों की रक्षा कर रहे थे।

निजता।

अधिकार।

संप्रभुता।

विश्वास।

और जब वे अलग-अलग उनकी रक्षा कर रहे थे, बीमारी उनके बीच से निकलती जा रही थी।

“सुरक्षा के उपाय सुझाइए,” Nerai ने कहा। “सिर्फ़ इनकार मत कीजिए।”

“कैसे उपाय?” Voltr ने पूछा।

“हर सवाल सभी भागीदार संस्थाओं को दिखाई देगा। आँकड़ों का हर इस्तेमाल दर्ज रहेगा। संकट ख़त्म होने पर नतीजों की समीक्षा होगी। जो कोई निर्धारित प्रयोजन की हद पार करेगा वह व्यक्तिगत रूप से जवाबदेह होगा।”

“इससे भी इंसान को राज्य से सुरक्षा नहीं मिलेगी।”

“नहीं। मगर जब राज्य किसी को देखेगा, तब वह ख़ुद अदृश्य नहीं होगा।”

Voltr कुछ देर चुप रहा।

यह विचार उसे Jesair के भाषण से याद था।

जिसकी निगरानी हो रही है, उसे निगरानी करने वाला दिखाई दे।

यह हर सवाल का जवाब नहीं था।

लेकिन गुपचुप पहुँच से बेहतर था।

बैठक जारी रही।

इस बीच मामलों की संख्या हज़ार से ऊपर निकल गई।

संघ की चिकित्सकीय एआई अब वंशानुगत संबंध को अत्यधिक संभावित बता चुकी थी। मगर उसका निष्कर्ष संघ के आँकड़ों तक सीमित था। दो और राज्यों में परिणाम मिलते-जुलते थे। तीन में अब भी पुष्ट रोगियों की संख्या पर्याप्त नहीं थी।

हर प्रणाली एक हिस्सा जानती थी।

कोई पूरा वाक्य नहीं कह सकती थी।

Saira ने प्रणाली का तकनीकी खाका खोला।

“मशीनें अंधी नहीं हैं,” उसने कहा। “उनकी आँखों पर पट्टियाँ बँधी हैं। और हर पट्टी किसी इंसान ने किसी अच्छे कारण से बाँधी थी।”

“क्या हम थोड़ी देर के लिए पट्टी खोल सकते हैं?” Voltr ने पूछा।

“हम देखने भर को एक पतला झरोखा बना सकते हैं।”

“और वह कितना चौड़ा हो, कौन तय करेगा?”

“आप।”

Nerai ने सिर हिलाया।

“नहीं। यह नियम तय करेंगे। इस कमरे में बैठे लोग नहीं।”

“नियम भी किसी को लिखने होंगे।”

“और सबको दिखना चाहिए कि उन्हें किसने लिखा।”

पाँच घंटे बाद उन्होंने सीमित दायरे में आँकड़ों का मेल देखने के लिए सेतु की मंज़ूरी दी।

बारह राज्य उसी वक़्त साथ हो गए।

नौ कुछ शर्तों के साथ।

चार ने मना किया।

बाक़ी ने और क़ानूनी समीक्षा माँगी।

वंशावली अभिलेखागारों ने केवल समेकित आँकड़ों की तुलना पर सहमति दी।

वित्तीय नक़्शे को सीधे नहीं जोड़ा जा सकता था।

Nerai को नतीजे में सिर्फ़ यह मालूम होना था कि जाँच के अधीन परियोजनाओं में वही आनुवंशिक विशेषताएँ शामिल थीं या नहीं जो मरीज़ों में दिख रही थीं।

सेतु चालू हुआ।

उसने सवाल भेजने शुरू किए।

सेतु को नाम नहीं मिलते थे।

स्वास्थ्य के पूरे निजी ब्योरे सुरक्षित रहे।

केवल मेल के गणितीय प्रमाण भेजे जा रहे थे।

पहले नतीजे नौ मिनट में आए।

वंशानुगत संबंध प्रबल था।

दूसरे उत्तर ने पुष्टि की कि कुछ शोध परियोजनाओं और मरीज़ों की वंशगत विशेषताओं में संयोग से कहीं बढ़कर मेल था।

तीसरे ने दिखाया कि यह संबंध ऐसी ऑरेलियाई वंशशाखाओं तक फैला था जिन्हें आपस में दूर का रिश्तेदार माना जाता था।

Nerai ने वित्तीय नक़्शा सामने खोला।

न्यास।

शोध।

संस्थाएँ।

छूटें।

जाँच के काग़ज़।

सेवाओं का ख़र्च।

अब उसके हाथ पहली ऐसी चीज़ थी जो उन्हें बीमारी से जोड़ती थी।

अपराध का सबूत नहीं।

दिशा का सबूत।

“इसे अभियोजन कार्यालय को भेजिए,” उसने कहा।

“किस श्रेणी में?” Taren ने पूछा।

“समूची व्यवस्था पर आसन्न ख़तरा।”

“हम अब भी अपराधी को नहीं जानते।”

“हमें ख़रीदों का पता है।”

“दोनों एक बात नहीं हैं।”

“नहीं। मगर जिन लाशों को हम देख रहे हैं, ये ख़रीदें उनसे पहले हुई थीं।”

Nitra के दूसरे छोर पर Kael Thorne भी वही स्वास्थ्य समाचार देख रहा था जो आम लोग।

सारे नहीं।

उसके पास बीमा कंपनियों और आर्थिक संघों के निजी अनुमानों तक भी पहुँच थी। ये राजनीतिक बयानों से अधिक सटीक थे, क्योंकि धन की दुनिया तब से विपदा की तैयारी कर रही थी जब राज्यों को अभी उसका नाम तक लेने की इजाज़त नहीं थी।

उनका अनुमान था कि कुछ दिनों में लाखों लोग बीमार होंगे।

शायद दसियों लाख।

Kael ने Arien को बुलाया।

इस बार कोई छवि सामने नहीं आई।

सिर्फ़ आवाज़।

“हमें शोध के सारे नतीजे उपलब्ध कराने होंगे,” Kael ने कहा।

“क्यों?”

“क्योंकि स्वास्थ्यकर्मियों को उनसे मदद मिल सकती है।”

“वे नतीजे अलग-अलग जगह हैं।”

“तो उन्हें इकट्ठा कीजिए।”

“सारे मेरे पास नहीं हैं।”

Kael ने आँखें बंद कर लीं।

“शोध तो आपने करवाया था।”

“काम कई लोगों ने सौंपा था।”

“अपनी बनाई व्यवस्था की आड़ मत लीजिए।”

“कुछ नतीजों पर दूसरों का अधिकार है। कुछ को किसी नए काम में इस्तेमाल करने की इजाज़त नहीं है।”

“तो आपने एक ऐसा ख़तरा पैदा किया है जिसे उसका रचयिता भी नहीं समझता।”

Arien बहुत देर चुप रहा।

“सबको नहीं मरना था,” आख़िर उसने कहा।

Kael ने आँखें खोलीं।

“किसे नहीं मरना था?”

“नतीजे और सटीक होने चाहिए थे।”

मेज़ के किनारे उसकी उँगलियाँ बचपन से याद एक चाल चलीं। घन के पाँच फलक ठीक दिख रहे थे। आख़िरी पर कुछ खाने अपनी जगह से बाहर रह गए थे।

चिड़ियाघर के फाटक पर उसने मिन्नत की थी कि उसे फिर से शुरू करने दें। अब वह अस्पतालों का नक़्शा देख रहा था। अब कोई अगली चाल मृतकों को घर नहीं लौटा सकती थी।

“आपने कितने सोचे थे?”

“काफ़ी।”

“यह कोई संख्या नहीं है।”

“पहले आपको संख्याओं से कोई सरोकार नहीं होता।”

Kael उठ खड़ा हुआ।

“पहले आपने मुझसे कहा था संकट सीमित रहेगा।”

“आप चाहते थे कि Elarion को Jesair की दुनिया से डर लगे।”

“मैं उसे रोकना चाहता था।”

“यह उसे रोक देगा।”

Kael ने अस्पतालों के नक़्शे की ओर देखा।

“नहीं। यह उसे वही बना देगा जिसका आपको डर था।”

Arien ने संपर्क तोड़ दिया।

स्वास्थ्य के नक़्शे पर और बिंदु चमकने लगे।

प्रणालियाँ अब उन्हें जोड़ने लगी थीं।

देर से।

मगर पहली बार एक साथ।

27. वह नाम जिसे लेने से वे डरते थे

Elarion नाम देने की ताक़त जानता था।

नाम किसी इंसान की रक्षा कर सकता था।

उसे अधिकार दे सकता था, अपनापन, इतिहास और समाज में एक जगह दे सकता था।

लेकिन नाम निशाना भी बन सकता था।

कुछ पीढ़ियाँ पहले दो राज्यों में नौकरी और स्वास्थ्य बीमा देने के फ़ैसले वंशावली के आधार पर लिए जाते थे। कुछ वंशानुगत विशेषताओं के कारण ऑरेलियाइयों को अधिक ख़र्चीला मरीज़ माना जाता था। सेलेनियों को सुरक्षा बलों में यह कहकर नहीं लिया जाता था कि वे हद से ज़्यादा संवेदनशील हैं। प्रशासन और वित्तीय संस्थाओं में वेयरानी लोगों को तरजीह मिलती थी, क्योंकि उनके बारे में कहा जाता था कि व्यवस्था सँभालने की उनमें जन्मजात योग्यता है।

बाद में वे नियम रद्द कर दिए गए थे।

पर उनके पीछे अविश्वास रह गया था।

इसीलिए स्वास्थ्य अधिकारी तब तक ऑरेलियाई शब्द बोलने से डरते थे जब तक यह संबंध संदेह से परे न हो जाए।

जब ग्रहीय स्वास्थ्य परिषद की बैठक हुई तो पुष्ट मामलों की संख्या दो लाख से ऊपर थी।

लगभग सभी रोगी ऑरेलियाई थे, या ऐसे लोग जिनका ऑरेलियाई वंश से रिश्ता प्रमाणित था।

“सांख्यिकीय संबंध स्पष्ट है,” संघ की मुख्य महामारी विशेषज्ञ ने कहा। “लेकिन इसके पीछे की वजह स्पष्ट नहीं।”

“आम लोग आँकड़ों के मेल और कारण में फ़र्क़ नहीं करते,” Vokorwyn के प्रतिनिधि ने आपत्ति की। “अगर हमने कहा कि यह ऑरेलियाई बीमारी है तो लोग हर ऑरेलियाई को इसका स्रोत मानने लगेंगे।”

“अगर हम नहीं कहेंगे,” Mareia ने जवाब दिया, “तो उन्हें पता नहीं चलेगा कि ख़तरे में कौन है।”

“ख़तरा सबको है।”

“एक बराबर नहीं।”

“हमें नहीं मालूम कि ऑरेलियाइयों से यह बीमारी दूसरों के मुक़ाबले ज़्यादा फैलती है या नहीं।”

“हम तो यह दावा भी नहीं कर रहे कि वे इसे फैलाते हैं।”

“लोग वह बात नहीं सुनेंगे।”

Nerai, Saira के पास बैठी, एक साथ दो बहसें देख रही थी।

एक कमरे में लोग सही शब्दों की बात कर रहे थे।

उधर अस्पतालों में तय हो रहा था कि बिस्तर किसे मिलेगा।

“मैं एक शब्दावली सुझाता हूँ,” Daren Voltr ने कहा। “एक अज्ञात रोग जिसका प्रकोप एक वंशानुगत जनसमूह में असमान रूप से अधिक है।”

Mareia ने उसकी ओर देखा।

“यह ऑरेलियाई कहने का ऐसा ढंग है जिससे आपको ऑरेलियाई कहना न पड़े।”

“यह सटीक शब्दावली है।”

“नहीं। यह सुविधाजनक शब्दावली है।”

“Mareia, शब्द जान ले सकते हैं।”

“उनका न होना भी।”

परिषद की अध्यक्षा ने हाथ उठाया।

“हमें दो सवाल अलग रखने होंगे। बीमारी की चपेट में कौन आ रहा है और उसे फैला कौन सकता है।”

“लोग दोनों को अलग नहीं रखेंगे,” Vokorwyn के प्रतिनिधि ने फिर कहा।

“तो हमें उन्हें सिखाना होगा,” Nerai ने कहा।

“दहशत के बीच?”

“और कब? जब ऑरेलियाइयों को उनके घरों में बंद कर दिया जाएगा?”

“कुछ घरों ने ख़ुद दरवाज़े बंद किए हैं।”

“क्योंकि राज्य चुप रहे।”

Daren Voltr उसकी ओर मुड़ा।

“और तुम्हारा सुझाव क्या है?”

"पूरा सच कहें। कि यह बीमारी ज़्यादातर ऑरेलियाइयों को चपेट में ले रही है। कि अभी इसका कोई प्रमाण नहीं कि किसी का ऑरेलियाई होना भर उससे संक्रमण फैलने की आशंका बढ़ा देता है। कि भेदभाव से लोग अपनी बीमारी बताने से कतराते हैं और इससे सबका ख़तरा बढ़ जाता है।"

"और कल कुछ और मालूम हुआ तो?"

"तो कल वह बताएँगे।"

"भरोसा रोज़-रोज़ नहीं बदला जा सकता।"

"सच के बारे में हमारा सबसे अच्छा अनुमान कभी-कभी हर घंटे बदलता है।"

परिषद में सहमति नहीं बनी।

उसने एक बयान जारी किया जिसमें ऑरेलियाई शब्द नहीं था।

उसमें आबादी के विभिन्न समूहों में असमान स्वास्थ्य जोखिम, स्वैच्छिक जाँच की ज़रूरत और अधिक मामलों वाले क्षेत्रों में आवाजाही कुछ समय के लिए सीमित करने की बात थी।

लोगों ने उसका मतलब ख़ुद निकाल लिया।

नेटवर्कों पर एक नाम फैलने लगा—स्वर्ण वलय की महामारी।

किसी को पता नहीं था सबसे पहले यह नाम किसने लिया।

शायद किसी पत्रकार ने।

शायद किसी डरे हुए अभिभावक ने।

शायद किसी ऐसे आदमी ने जो पहले से ऑरेलियाइयों से नफ़रत करता था और बस ऐसे किसी शब्द की राह देखता था जो नफ़रत की वजह जैसा लगे।

नाम आधिकारिक हिदायतों से भी तेज़ी से फैल गया।

Sarur में एक यात्री वाहन के चालक ने एक ऑरेलियाई परिवार को चढ़ाने से मना कर दिया।

"आप लोगों से मेरी कोई निजी दुश्मनी नहीं है," उसने कहा।

पिता ने संक्रमण की जाँच निगेटिव होने का प्रमाण दिखाया।

"हमारे पास अनुमति है।"

"घर में मेरे बच्चे हैं।"

"मेरे भी।"

“इसीलिए तो आपको समझना चाहिए।”

परिवार प्लेटफ़ॉर्म पर रह गया।

बाक़ी यात्री चुप थे।

एक ने उनका पक्ष लिया।

वह वेयरानी था।

“या तो आप इन्हें ले चलें, या हम सब उतर जाएँगे।”

सब नहीं उतरे।

तीन उतरे।

एक दूसरे शहर में कुछ लोग एक ऑरेलियाई घर के बाहर जमा हुए और उसे बंद करने की माँग करने लगे। घरवालों ने बत्तियाँ बुझा दीं तो भीड़ तालियाँ बजाने लगी।

Nitra के सेलेनी मोहल्ले में उन परिवारों के लिए एक सामुदायिक केंद्र खोला गया जिनके सिर पर छत नहीं रही थी।

प्रवेश द्वार पर किसी वंश का चिह्न नहीं था।

केवल एक वाक्य था—

बीमारी के शिकार होते हैं। डर अपने शिकार ख़ुद बनाता है।

Auriola के अस्पताल में एक युवती ने बेटे को जन्म दिया।

बच्चा स्वस्थ था।

उसने आँखें खोलीं तो स्वर्ण वलय दिखाई नहीं दिया।

माँ ने राहत की साँस ली।

फिर उसे अपनी ही राहत पर शर्म आई।

“मैं बहुत बुरी हूँ,” उसने स्क्रीन पर उससे बात करती Mareia से कहा।

“नहीं।”

“मैंने दुआ की थी कि इसके पास वह न हो।”

“तुमने दुआ की थी कि यह जिए।”

“क्या दोनों एक बात हैं?”

Mareia ने जवाब नहीं दिया।

बच्चा हिला और तेज़ रोशनी पड़ने पर उसकी पुतली के चारों ओर एक महीन सुनहरी रेखा उभर आई।

माँ रोने लगी।

इसलिए नहीं कि उसके लिए उसका प्यार कुछ कम हुआ था।

इसलिए कि वह जानती थी कि पहले ही पल से दुनिया उसके बेटे को एक सवाल की तरह देखेगी।

Nitra में Nerai ने परत के प्रमुखों से मुलाक़ात की।

परियोजनाओं के असली मालिकों तक पहुँचने वाली कड़ियाँ तत्काल उजागर करने की उसकी माँग फिर आंशिक रूप से ख़ारिज हो गई।

आसन्न स्वास्थ्य संकट के आधार पर कुछ खातों की गतिविधि रोकी जा सकती थी।

मगर उस आधार पर सभी राज्यों में अंतिम स्वामियों के नाम अपने आप नहीं खोले जा सकते थे।

“पुष्टि हो चुकी है कि उनके शोध में और रोगियों की वंशगत विशेषताओं में मेल है,” Nerai ने कहा।

“हमारे पास एक सहसंबंध है,” विधि सलाहकार ने उसे टोका।

“उस सहसंबंध का पैसा किसने दिया?”

“हम पता लगा रहे हैं।”

“कितनी देर लगेगी?”

“जवाब देने के लिए Therinith के पास तीस दिन हैं।”

Nerai हँसी।

उस हँसी में ख़ुशी का लेश नहीं था।

“तीस दिन बाद शायद जवाब सुनने के लिए कोई बचे ही नहीं।”

“हर बार कोई ख़तरा दिखे तो हम क़ानून रद्द नहीं कर सकते।”

“मैं क़ानून रद्द करने को नहीं कह रही। मैं कह रही हूँ कि क़ानून अंत्येष्टि करने वालों से पहले हरकत में आने के क़ाबिल हो।”

“अगर हमने अभी सारी संरक्षित निधियों का ब्योरा खोल दिया तो एक नज़ीर बन जाएगी।”

“शायद हमें एक नज़ीर चाहिए।”

“संकट में ऐसी बातें कहना आसान है।”

Nerai उसकी ओर झुकी।

“और आपकी राय में किसी व्यवस्था की कमज़ोरियाँ सामने लाने का वक़्त कौन-सा है? जब चारों ओर शांति हो और किसी को उनमें कोई दिलचस्पी न हो?”

शाम को स्वास्थ्य परिषद फिर बैठी।

मामलों की संख्या बीस लाख से ऊपर निकल गई थी।

इस बार Thaeron से भी ख़बर आई।

एक बंद गुंबद में काम करने वाले तीन कर्मचारियों में वही लक्षण थे।

दो ऑरेलियाई थे।

तीसरे के पिता ऑरेलियाई थे।

अध्यक्षा ने तैयार किया हुआ बयान खोला।

उसमें अब भी एक शब्द नहीं था।

Mareia खड़ी हुई।

“अगर आप यह बताने से डरते हैं कि बीमारी किसे मार रही है तो आप हमें भेदभाव से नहीं बचा रहे। आप ख़ुद को जवाबदेही से बचा रहे हैं।”

“यह कहना ठीक नहीं,” Voltr ने कहा।

“यह भी ठीक नहीं कि माओं को सच अजनबियों के संदेशों से पता चले और राज्य आबादी में असमानता की बात करते रहें।”

“नाम लेने से हिंसा भड़क सकती है।”

“हिंसा शुरू हो चुकी है।”

“वह और बिगड़ सकती है।”

“चुप्पी उसे अंधा बना देती है।”

Jesair Davion घराने की हवेली से बैठक में जुड़ा।

अब तक वह नहीं बोला था।

“नाम लीजिए,” उसने कहा।

सब उसकी छवि की ओर मुड़ गए।

“Jesair,” अध्यक्षा ने कहना शुरू किया, “हमें विचार करना होगा कि—”

“मैं ऑरेलियाई हूँ। Mareia ऑरेलियाई है। अस्पतालों में पड़े लोग ऑरेलियाई हैं। हमें एक विवरण में बदलकर आप हमारी हिफ़ाज़त नहीं कर रहे।”

“और अगर समाज आप लोगों को ख़तरा समझने लगा तो?”

“तो साफ़ कहिए कि हम ख़तरे में पड़े लोग हैं, ख़तरा नहीं।”

Daren Voltr Jesair को देखता रहा।

“और अगर इतना काफ़ी न हुआ?”

“अक्सर सच काफ़ी नहीं होता। झूठ तो उससे भी कम।”

परिषद ने बयान संशोधित किया।

आधी रात से कुछ पहले Elarion की मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी सभी सार्वजनिक चैनलों पर दिखाई दी। उसने बीमारी की पहचान केवल उसके वर्णन से की।

फिर उसने लोगों का नाम लिया।

“अब तक मिले आँकड़े बताते हैं कि इस अज्ञात रोग की चपेट में आने वालों में ऑरेलियाइयों और कुछ ख़ास ऑरेलियाई वंशगत संबंध रखने वालों का अनुपात बहुत अधिक है।”

इसके बाद स्पष्टीकरण आया।

संक्रमण फैलने के बारे में।

अनिश्चितता के बारे में।

भेदभाव पर पाबंदी के बारे में।

तत्काल जाँच और बचाव की ज़रूरत के बारे में।

पर ज़्यादातर लोगों को पहला वाक्य याद रहा।

पूरे ग्रह पर स्क्रीनों पर सुनहरी आँखें उभर आईं।

दुनिया ने आख़िरकार पीड़ितों का नाम लिया था।

और उसी के साथ उन पर निशान भी लगा दिया था।

28. शीशे के पीछे स्वर्ण वलय

शीशा वह पदार्थ बन गया जिससे इस महामारी के दिन बने थे।

वह अस्पतालों में था।

मोहल्लों की सीमाओं पर।

यातायात के केंद्रों में।

बच्चों और उनके माँ-बाप के बीच।

बीमारों और उनकी मदद करना चाहने वालों के बीच।

वह पारदर्शी था, फिर भी अलग करता था।

इसीलिए वह था।

शुरुआती दिनों की पुरानी तस्वीरों में अलगाव कक्षों की दीवारों से सटे चेहरे दिखते थे। दोनों ओर हाथ। बिना छुए हिलते होंठ। आँखों में स्वर्ण वलय, जिन्हें शीशे से लौटती अस्पताल की रोशनी और उभार देती थी। जो चिह्न कभी बस कभी-कभार दिखता था, बुख़ार में अधिकाधिक दिखाई देने लगा था।

डॉक्टर नहीं जानते थे कि यह बीमारी का हिस्सा है या सिर्फ़ शरीर की प्रतिक्रिया।

लोगों को इस फ़र्क़ से कोई सरोकार नहीं था।

दुकानों के प्रवेश द्वारों पर आँख की परितारिका जाँचने वाले यंत्र लगने लगे।

आधिकारिक तौर पर वे तापमान और कुछ बुनियादी स्वास्थ्य सूचक मापते थे।

कुछ निजी प्रतिष्ठानों ने उनमें ऐसे बदलाव करवाए कि वे ऑरेलियाई चिह्न देखकर संकेत देने लगे।

यह ग़ैरक़ानूनी था।

संचालकों का कहना था कि वे अपने ग्राहकों की रक्षा कर रहे हैं।

एक राज्य में सरकार ने ऐसे यंत्रों पर पाबंदी लगा दी।

दूसरे में कुछ वक़्त के लिए उनकी अनुमति दे दी।

तीसरे में उसने ऐसे बर्ताव किया मानो उसे उनके होने की ख़बर ही न हो।

चालीस राज्य।

एक ही डर के चालीस जवाब।

Auriola में Elan को स्वास्थ्य चैनल पर Jesair से बात करने की अनुमति मिली।

लड़के का चेहरा Jesair की याद में बसे चेहरे से छोटा हो गया था। बुख़ार ने उसके गालों का बचपन हर लिया था। उसकी आँखें खुली थीं और उनमें स्वर्ण वलय इतनी तेज़ी से चमक रहा था कि अप्राकृतिक लगता था।

"मैं याद हूँ?" Jesair ने पूछा।

Elan हिला।

एक उँगली।

"तुम्हारी माँ तुम्हारे पास है।"

लड़के ने शीशे की तरफ़ देखा।

"उसने मुझे बताया कि तुम वलय के बारे में पूछ रहे थे।"

Elan के होंठ हिले।

आवाज़ क्षीण थी।

"देखता है?"

Jesair और पास झुका।

"क्या?"

"क्या और अच्छा देखता है?"

उसे उनकी बरसों पहले की बात याद आई।

"नहीं," उसने कहा। "वलय नहीं।"

Elan इंतज़ार करता रहा।

"इंसान उतना ही देखता है जितना देखने का साहस उसमें हो।"

लड़के ने आँखें बंद कर लीं।

"मैं नहीं देखना चाहता।"

"क्या नहीं देखना चाहते?"

"माँ को रोते हुए।"

Jesair को कोई जवाब नहीं सूझा।

शीशे के उस पार Elan की माँ मुँह पर हाथ रखे खड़ी थी।

“तुम डर भी सकते हो,” Jesair ने कहा। “हर वक़्त बहादुर रहना ज़रूरी नहीं है।”

“तुम डरते हो?”

“हाँ।”

“किस बात से?”

Jesair ने लड़के की माँ को देखा।

उसकी जाँच के नतीजों को।

स्क्रीन में अपनी परछाईं को।

“कि मैं मदद नहीं कर पाऊँगा।”

Elan कुछ देर चुप रहा।

“तो हम एक जैसे हैं।”

Jesair हलका-सा मुस्कराया।

“हाँ।”

स्वास्थ्यकर्मियों ने संपर्क बंद कर दिया।

Elan को एक और चिकित्सकीय प्रक्रिया से गुज़रना था।

Jesair ख़ाली स्क्रीन के सामने बैठा रह गया।

उसके हाथ मेज़ पर पड़े थे।

Davion घराने के हाथ।

वे हाथ जिनके बारे में पुराने ग्रंथों में लिखा था कि वे बुख़ार को शांत कर देते थे।

अब वे एक बच्चे को छू तक नहीं सकते थे।

Mareia एक कटोरा गरम शोरबा लेकर आई। Jesair का ध्यान नहीं गया।

“कुछ खा लो। सुबह से यहीं हो।”

“Elan ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसकी मदद करूँगा।”

“और तुमने क्या कहा?”

“कि मैं संपर्क पर बना रहूँगा।”

“तुम रहे भी।”

“इससे उसके फेफड़े तो ठीक नहीं होंगे।”

“नहीं। मगर उसकी माँ ने मुझे बताया कि उसके बाद उसने डॉक्टरों को इलाज के लिए अपनी तैयारी करने दी।”

Jesair ने चम्मच उठाया। वह उसके हाथ में इतना काँपा कि उसने फिर रख दिया।

“जब लोग किसी Davion से चमत्कार की उम्मीद लगाते हैं तो मुझे ग़ुस्सा आता है,” उसने कहा। “आज एक पल के लिए मैं भी उसी चमत्कार की बाट देखता रहा।”

Mareia उसके पास बैठ गई। “मैं उसकी माँ के पास जाऊँगी। तुम थोड़ा-सा ही सही, खाने की कोशिश करो।”

भोर से पहले Elan की मृत्यु हो गई।

उसकी माँ उस वक़्त उसके पास नहीं बैठ पाई थी।

मगर स्वास्थ्यकर्मियों ने उसे शीशे के पास रहने दिया था।

यंत्र शांत होने के बाद भी उसकी तीन उँगलियाँ बहुत देर तक शीशे पर टिकी रहीं।

कुछ ही मिनट बाद Jesair को उसकी मृत्यु की ख़बर मिली।

उसने कोई सार्वजनिक बयान नहीं दिया।

उसने उस पहले बच्चे के बारे में कुछ नहीं कहा जिसे वह ख़ुद जानता था।

वह बस Davion घराने के बाग़ में चला गया और वहाँ तब तक खड़ा रहा जब तक Elarion का सूरज नहीं निकल आया।

उस दिन आठ हज़ार और लोग मरे।

Elan अकेला था जिसका नाम Jesair जानता था।

बड़ी विपदाओं की यह सबसे क्रूर बातों में से एक है।

संख्याएँ बढ़ती जाती हैं।

दर्द हमेशा किसी एक का होता है।

एक बिस्तर।

एक माँ।

शीशे पर एक हाथ।

सार्वजनिक नेटवर्कों पर एक ऑरेलियाई लड़की की तस्वीर आई जो एक संगरोध केंद्र की पारदर्शी दीवार के पीछे खड़ी थी। उसकी उम्र कोई दस साल थी। किसी ने उसके बाल काट दिए थे ताकि स्वास्थ्यकर्मियों को काम में आसानी रहे, और उसकी आँखों में वलय साफ़ दिखाई दे रहा था।

उस पार एक सेलेनी स्वास्थ्यकर्मी खड़ा था।

लड़की ने शीशे पर हथेली रखी।

उसने भी ठीक सामने अपनी हथेली रख दी।

तस्वीर पूरे ग्रह में फैल गई।

कुछ के लिए वह करुणा का प्रतीक थी।

कुछ औरों के लिए इस बात का सबूत कि ऑरेलियाइयों को अलग रखना चाहिए।

एक ही तस्वीर प्यार और नफ़रत दोनों को बल दे सकती थी।

यह इस पर निर्भर था कि उसे देखने से पहले इंसान अपने साथ क्या लेकर आया था।

Arien Korveth ने तस्वीर देखी।

उसने लड़की की आँखें बड़ी करके देखीं।

स्वर्ण वलय।

ऐसा ही निशान Mareia की आँखों में उभरता था जब उसे ग़ुस्सा आता, डर लगता या उसका ध्यान किसी बात में इतना डूब जाता कि आसपास की सुध न रहती।

पल के एक अंश भर को उसकी आँखों के आगे क्षतिग्रस्त यात्री वाहन खुला। सफ़ेद रोशनी। उसकी हथेली में माँ की उँगलियाँ। स्वास्थ्यकर्मी की आवाज़—ऑरेलियाई पुनर्जनन प्रोफ़ाइल।

चिकित्सा वाहन के दरवाज़े किसी दूसरे के बच्चे को भीतर लेकर बंद हो गए थे। Arien को बरसों तक याद रहा कि वह किस ओर खड़ा रह गया था।

तस्वीर में अब शीशे के पीछे एक और बच्ची खड़ी थी। आँखों में वही वलय था। Arien ने उस लड़के का चेहरा याद करने की कोशिश की जिसे बरसों पहले ले जाया गया था। उसकी जगह उसे सिर्फ़ वह डरी हुई लड़की दिखाई दी।

उसने अपने आप से कहा कि वह इस बच्ची को जानता तक नहीं।

कि किसी एक तस्वीर को सभ्यता के लक्ष्य पर हावी नहीं होने देना चाहिए।

कि हर बड़े परिवर्तन की एक क़ीमत होती है।

फिर उसने तस्वीर बंद कर दी।

कुछ मिनट बाद उसने उसे फिर खोला।

लड़की अब भी जीवित थी।

यह और भी बुरा था।

मृतक पलटकर नहीं देखते।

Kael ख़ुद आया।

Arien ने उसे अंदर नहीं बुलाया, पर Kael के पास अब भी प्रवेश के वे अधिकार थे जिन्हें रद्द करने की कभी ज़रूरत नहीं समझी गई थी।

दरवाज़ा खुल गया।

“शोध के अभिलेख स्वास्थ्य परिषद को सौंपने होंगे,” उसने कहा।

“मैं आपको जवाब दे चुका हूँ।”

“अब मैं आपकी योजना की बात नहीं कर रहा। इलाज की बात कर रहा हूँ।”

“जो नतीजे हैं, उनसे पूरा जवाब नहीं मिलता।”

“कोई तो उन्हें एक साथ पढ़ सकता होगा।”

“BIO-AI।”

“कहाँ है वह?”

“उसके काम का कोई एक ठिकाना नहीं है।”

“मॉडल कहाँ है, Arien?”

Arien ने उसकी ओर देखा।

“कोई एक मॉडल नहीं है।”

Kael बिना हिले खड़ा रह गया।

“उसे भी आपने टुकड़ों में छोड़ दिया।”

“मुझे इसी में कम ख़तरा दिखता था।”

“किसके लिए?”

Arien ने जवाब नहीं दिया।

“आप चाहते थे कि किसी को पूरी तस्वीर न दिखे,” Kael कहता गया। “न प्रयोगशालाओं को। न बैंकों को। न अधिकारियों को। और अब वह आपको भी नहीं दिखती।”

“मुझे नतीजा दिखता है।”

“आपको लाशें दिखती हैं।”

Kael ने सार्वजनिक स्वास्थ्य नक़्शे की ओर इशारा किया।

“यह कोई क़ाबू में रखा हुआ संकट नहीं है।”

“मैंने कभी नहीं कहा था कि इसमें किसी की जान नहीं जाएगी।”

“यह ऑरेलियाइयों तक सीमित नहीं है।”

Arien अकड़ गया।

“परोक्ष मौतें। मरीज़ों से पटे अस्पताल। दवाओं की कमी। आवाजाही बंद। हर वंशशाखा के लोग।”

“यह बीत जाएगा।”

“और ऑरेलियाइयों पर जो बीत रही है, वह नहीं?”

“वे समस्या की जड़ हैं।”

Kael उसके पास आया।

“नहीं। समस्या की जड़ मेरे सामने खड़ी है।”

Arien की आँखें सिकुड़ गईं।

“मेरे खाते आपने खोले थे।”

“हाँ।”

“छूटें आपने दिलवाईं।”

“हाँ।”

“रुकावटें आपके लोगों ने हटाईं।”

“हाँ।”

Kael ने हर बात शांति से स्वीकार की।

बिना सफ़ाई दिए।

“और इसीलिए मैं जानता हूँ कि मैंने क्या किया।”

“बदला क्या है?”

“पैमाना।”

Arien कड़ुवाहट से मुस्कराया।

“तो आपकी नज़र में नैतिकता बस गिनती की बात है।”

“नहीं। गिनती ने तो बस आपसे अपने आप से यह झूठ कहने का रास्ता छीन लिया है कि आप जो कर रहे हैं वह राजनीति है।”

Arien शीशे के पीछे खड़ी लड़की की तस्वीर की ओर मुड़ा।

“Jesair इससे एक नया मिथक गढ़ेगा।”

“शायद।”

“लोग उसकी ओर मुड़ेंगे।”

“मुड़ने लगे हैं।”

“तो देख लीजिए।”

Kael ने उसे कुछ ऐसी निगाह से देखा जिसमें दया का-सा भाव था।

“आपको इस पूरे समय डर था कि Jesair लोगों को पैग़ंबर जैसा लगेगा। और इसीलिए आपने उसके लिए प्रलय रच दी।”

वह चला गया।

Arien अकेला रह गया।

स्क्रीन पर लड़की शीशे को छू रही थी।

उसे नहीं मालूम था कि वह बची या नहीं।

वह पता लगाना भी नहीं चाहता था।

Auriola में Jesair शाम को ही घर लौटा।

देहरी पर Elan की माँ उसका इंतज़ार कर रही थी।

उसे उसके पास आने की अनुमति नहीं थी। वह घर में पृथकवास में थी।

दोनों एक-दूसरे से कई मीटर दूर खड़े थे।

“उसने तुमसे बात की,” उसने कहा।

“हाँ।”

“वह डरा था।”

“हाँ।”

“तुमने उससे सच कहा?”

“कोशिश की।”

औरत ने सिर हिलाया।

“तो तुमने हम सबसे ज़्यादा किया।”

Jesair ने सिर झुका लिया।

“नहीं।”

“मुझसे यह मत छीनो।”

उसने आँखें उठाईं।

“मुझे विश्वास करना है कि वह अकेला नहीं गया,” उसने कहा।

Jesair को वंशग्रंथ की एक पंक्ति याद आई।

अकेले मत जाना।

Elan शीशे के पीछे था।

माँ दूसरे शीशे के पीछे।

वह ख़ुद स्क्रीन पर।

और फिर भी आख़िरी घड़ी में उनके बीच कुछ ऐसा बन गया था जिसे कोई दीवार पूरी तरह अलग नहीं कर सकी थी।

“वह अकेला नहीं गया,” Jesair ने कहा।

इस बार उसे नहीं पता था कि यह सच है या नहीं।

वह बस इतना जानता था कि यह बात उसे कहनी ही है।

29. Jesair की आवाज़ और एकीकृत एलार का सेतु

जब साझा भाषा साथ छोड़ देती है, लोग एक आवाज़ ढूँढ़ने लगते हैं।

जब साझा भाषा साथ छोड़ देती है, तब ज़रूरी नहीं कि लोग सबसे समझदार आवाज़ ढूँढ़ें।

या सबसे सटीक।

वे एक ऐसी आवाज़ ढूँढ़ते हैं जिसे सुनकर पल भर को यह लगना बंद हो जाए कि दुनिया एक-दूसरे को काटती हिदायतों में बिखर रही है।
स्वास्थ्य अधिकारी अलग रखने की बात कहते थे।

राजनेता स्थिरता की।

बैंक नकदी की उपलब्धता की।

कुल-परिषदें ऑरेलियाइयों की हिफ़ाज़त की।

सुरक्षा बल व्यवस्था की।

हर कोई अपनी संस्था की भाषा ठीक-ठीक बोलता था।

उस समूचे डर की भाषा कोई नहीं बोलता था।

Jesair कुछ कहना नहीं चाहता था।

Elan की मृत्यु के बाद वह तीन बार लोगों के सामने बोलने से इनकार कर चुका था। उसका कहना था कि उसे किसी बच्चे की मौत को भाषण बना देने का हक़ नहीं। जब Elan की माँ की आँखों के सामने अब भी शीशे से सटी अपने बेटे की हथेली थी, वह कैमरों के आगे खड़ा नहीं होना चाहता था। किसी और के दुख से अपने शब्दों का वज़न बढ़ाना उसे मंज़ूर नहीं था।
Mareia ने उसे खानदान के पुराने सभाकक्ष में पाया।

वह Aser Davion के चित्र के नीचे बैठा था। उनके बारे में लिखा था कि बहुत पहले, जब बुखार फैला था, वे घर-घर जाते थे। कुछ कहते थे कि वे बीमारों को चंगा कर देते थे। कुछ कहते, वे बस उनके पास तब भी बैठे रहते थे जब बाक़ी सब उन्हें छूने से डरने लगते थे।
“लोग जानना चाहते हैं कि वे क्या करें,” Mareia ने कहा।

“उसके लिए डॉक्टर हैं।”

“कुछ लोग अब डॉक्टरों पर यक़ीन नहीं करते।”

“तो उनकी जगह मैं यक़ीन कर लूँ?”

“तुम उनसे कहो कि वे डॉक्टरों पर यक़ीन करें।”

Jesair उठ खड़ा हुआ।

“मैं ही क्यों?”

“क्योंकि जब नेता कहते हैं कि घर में रहो, तो लोगों को हुक्म सुनाई देता है। जब बैंकर कहते हैं कि शांत रहो, तो उन्हें सुनाई देता है कि किसी को बाज़ारों की फ़िक्र है। तुम कहोगे तो शायद उन्हें किसी इंसान की आवाज़ सुनाई दे।”

“इसी से तो मैं सारी ज़िंदगी बचता रहा हूँ।”

“किससे?”

“कि लोग मुझे वह बना दें जो मैं हूँ ही नहीं।”

“तो बता दो कि तुम क्या हो।”

Jesair ने उसकी ओर देखा।

“और मैं क्या हूँ?”

“एक डरा हुआ ऑरेलियाई, जो किसी को छूकर उसकी जान नहीं बचा सकता।”

इतने पर भी वह मुस्करा दिया।

“कुछ ख़ास हौसला बढ़ाने वाली शुरुआत तो नहीं लगती।”

“सच तो है।”

Jesair ने पहली बार लोगों को संबोधित किया तो वह किसी सभागृह में नहीं था।

वह Davion परिवार के घर के बगीचे में खड़ा था।

उसके पीछे न झंडे थे, न राज्यों के चिह्न, न कुल की मुहरें। सिर्फ़ पेड़ थे, पुरानी दीवारें और वह घाटी जिसमें कुछ और घरों के दरवाज़े बंद हो रहे थे।

“मेरा नाम Jesair Davion है,” उसने कहना शुरू किया। “मैं ऑरेलियाई हूँ। और मुझे डर लगता है।”

घंटे भर में यह बात पूरे ग्रह पर फैल गई।

इसलिए नहीं कि उसमें कोई उदात्तता थी।

इसलिए कि ऐसी बात कहने की गुंजाइश थी।

लाखों लोग डरे हुए थे और हफ़्तों से बस ऐसी आवाज़ें सुन रहे थे मानो डर लोगों तक बात पहुँचाने की कोई तकनीकी चूक हो। नामी लोगों में Jesair पहला था जिसने न डर की व्याख्या की, न उसे मिटाने की कोशिश, न उस पर परदा डाला।

उसने मान लिया कि वह डरा हुआ है।

"मुझे अस्पतालों में पड़े लोगों की फ़िक्र है। बिछड़े हुए परिवारों की। उन बच्चों की, जो अपनी ही आँखों में देखते हैं और पूछते हैं कि क्या सज़ा का फ़ैसला उनके जन्म के साथ ही हो गया था। मुझे उन लोगों से भी डर लगता है जो डर के मारे अपने पड़ोसियों को ही बीमारी समझने लगे हैं।"

वह कुछ पल चुप रहा।

"हम कोई बीमारी नहीं। न हम कोई निशान हैं। हम इंसान हैं।"

उसकी आँखों का स्वर्ण वलय साफ़ दिखाई दे रहा था।

उसने उसे छिपाया नहीं।

"स्वास्थ्य संबंधी हिदायतें मानिए। जहाँ जाने की मनाही है, वहाँ मत जाइए। अपनी और दूसरों की हिफ़ाज़त कीजिए। मगर हिफ़ाज़त और अपमान के बीच फ़र्क़ रखिए। बीमार को अलग रखना ज़रूरी हो सकता है। किसी इंसान को इसलिए ठुकराना कि वह क्या बनकर जन्मा, कायरता है।"

कुछ स्वास्थ्य अधिकारियों को डर था कि Jesair की बातों से अनुशासन ढीला पड़ेगा।

हुआ कुछ और।

उसके बोलने के बाद ज़्यादा ऑरेलियाई ख़ुद आगे आकर अपने लक्षण बताने लगे।

बंद इलाक़ों से भागने वालों की संख्या घटी।

ज़्यादा परिवार अपने बीमारों को अस्पताल भेजने पर राज़ी हुए। उन्होंने पहली बार सुना था कि कोई एहतियात मान लेने का अर्थ अपना दोष स्वीकार करना नहीं होता।

कुछ शहरों में हिंसा घट गई।

हर जगह नहीं।

कोई भी एक आवाज़ हर आदमी के भीतर के डर को थाम नहीं सकती।

मगर कुछ देर को उस डर का रुख़ बदल गया।

Jesair नियमित रूप से लोगों से मुख़ातिब होता रहा।

उसने इन्हें कभी भाषण नहीं कहा।

वह लोगों से बात करता था।

उस माँ से, जिसने तीन बच्चे खोए थे।

उस वेयरानी डॉक्टर से, जिसके अपने समुदाय ने उस पर इल्ज़ाम लगाया था कि वह दूसरों का हक़ मारकर ऑरेलियाइयों की मदद कर रहा है।

उस सेलेनी महिला से, जो अंत्येष्टि सेवा में काम करती थी और जिसने नाम गिनने छोड़ दिए थे क्योंकि अब उसमें ताक़त नहीं बची थी।

उस बूढ़े ऑरेलियाई से, जिसका कहना था कि महामारी पुरानी परंपराएँ छोड़ने की सज़ा है।

“तो क्या बच्चों को भी सज़ा दी जा रही है?” Jesair ने उससे पूछा।

बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया।

“अगर दुख का कारण बताने के लिए हमें ईश्वर को बच्चों का हत्यारा बनाना पड़े, तो शायद बेहतर है कि हम कारण बताने न बैठें।”

लोग Jesair के शब्द सहेजने लगे, उन्हें लिखकर आगे भेजने लगे।

वह जितना किंवदंती बनने से इनकार करता, उतना ही किंवदंती बनता गया।

कम-से-कम एक बात Arien ने ठीक समझी थी।

संकट ने Jesair की बात का नैतिक वज़न बढ़ाया था।

मगर कैसे, इस बारे में उसका अनुमान ग़लत था।

लोग उसके कुल के कारण उसके पीछे नहीं चले।

वे इसलिए उसके पीछे चले कि उसने डर की बात की और उसका फ़ायदा नहीं उठाया।

उसकी आवाज़ के साथ एक विचार भी फैलता गया जिसे उसने कुछ समय पहले Nitra में व्यक्त किया था।

मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए।

तब यह एक अमूर्त बात लगी थी।

एक सार्वजनिक मंच पर कही गई पंक्ति, जिस पर अर्थशास्त्री, क़ानूनविद् और बैंकर बहस करते थे। Elarion के अधिकांश निवासियों के लिए उसकी अहमियत रोटी की क़ीमत, मकान के किराए या खाते में बची रक़म से कम थी।

महामारी ने उस बात को देह दे दी।

अस्पतालों में सामान चुकता जा रहा था।

इसलिए नहीं कि Elarion में उत्पादन की क्षमता कम थी। स्वचालित कारख़ाने बहुत जल्दी उत्पादन बढ़ा सकते थे। Thaeron के कारख़ाने चौबीसों घंटे चल सकते थे, और माल ढोने के रास्ते अब भी खुले थे। मुश्किल थी सामान को उस जगह पहुँचाने में जहाँ उसकी ज़रूरत थी।

संकट केंद्र की दीवार पर स्थानीय समाचार प्रसारित हो रहे थे। साँस लेने में मदद देने वाले उपकरणों से लदे चालकहीन वाहन सीमा पर खड़े थे। उधर अस्पताल में बचे-खुचे उपकरण ज़रूरतमंदों को बाँटे जा रहे थे। “ये उपकरण कल ही बन गए थे,” संवाददाता ने कहा। “परिवहन प्रणाली रास्ता जानती है। लेकिन निपटान केंद्र भुगतान की पुष्टि नहीं कर रहा।”

तस्वीर के नीचे कारण चमक रहा था—विनिमय दर में बदलाव का जोखिम कौन उठाएगा, इस पर सहमति शेष।

आपूर्तिकर्ता को डर था कि मुद्रा गिरी तो सामग्री पर उसने जो ख़र्च किया है, उतना भी नहीं मिलेगा। राज्य पूरा जोखिम अपने सिर लेने को राज़ी नहीं था। दोनों प्रणालियों ने पल भर में हिसाब लगा लिया था, पर हर पक्ष दूसरे की ज़िम्मेदारी तय होने की प्रतीक्षा में था।

“गाड़ियाँ आगे कब जाएँगी?” संवाददाता ने अस्पताल की प्रमुख से पूछा।

“जब कोई दस्तख़त करके दाम का फ़र्क़ चुकाने की ज़िम्मेदारी लेगा,” उसने कहा। “मेरे दस्तख़त से सिर्फ़ यह तस्दीक़ हो सकती है कि सामान मिल गया।”

Saira ने आवाज़ धीमी कर दी। संकट के नक़्शे पर उसे तैयार माल दिख रहा था, खुले रास्ते दिख रहे थे, और एक फ़ैसला दिख रहा था जिसका अधिकार किसी भी निपटान प्रणाली के पास नहीं था। मशीनों की रफ़्तार से उसमें कुछ नहीं बदलता था।

लोग सवाल उठाने लगे।

जब सीमा के उस पार अस्पताल में एक भी उपकरण ख़ाली नहीं बचा, तो ये उपकरण सीमा पर क्यों खड़े हैं?

फ़ैसले के इंतज़ार में जो घंटे बीतते हैं, उनकी क़ीमत कौन चुकाता है?

रोकी गई खेपों, बेहिसाब शुल्क और ख़ाली गोदामों की ख़बरों के नीचे Jesair की बात दिखने लगी।

मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए।

लोग उसे अपने शब्द देने लगे।

अगर पैसों के कारण दवा रुकती है, तो हमें दिखना चाहिए कि पैसे कहाँ रुके।

चर्चा समूह बने, नागरिक पहलें उठीं, स्वास्थ्यकर्मियों, प्रोग्रामरों और अर्थशास्त्रियों के अनौपचारिक समूह जुड़े। कुछ ने हर सार्वजनिक भुगतान के खुलासे की माँग की। कुछ ने प्रस्ताव रखा कि कंपनियों के असली मालिकों के रजिस्टर सबके लिए खुले हों। दूसरों का कहना था कि हर नागरिक देख सके कि उसके वित्तीय ब्योरे किसने, कब खोले।

उन प्रस्तावों में Nerai अपने ही शब्द पहचानती थी।

अब वे उसके नाम से नहीं फैल रहे थे।

न ही Jesair के नाम से।

वे लोगों के बीच बँट गए थे और अपनी अलग ज़िंदगी जीने लगे थे।

पारदर्शिता का विचार इसलिए लोकप्रिय नहीं हो रहा था कि Elarion के निवासी अचानक नैतिक दृष्टि से कहीं अधिक परिपक्व हो गए थे।

वह इसलिए लोकप्रिय हो रहा था कि अब अपारदर्शिता चुभने लगी थी।

तब तक सेतु नाम की एक कंपनी को बने कई बरस हो चुके थे।

महामारी से पहले कम ही लोगों ने उसका नाम सुना था।

Lera Vain ने उसे भुगतान प्रणालियों के दो प्रोग्रामरों, एक पूर्व बैंक विश्लेषक, क्रिप्टोग्राफ़िक अभिलेखों के एक विशेषज्ञ और एक वकील के साथ मिलकर स्थापित किया था। वह वकील पहले सीमा-पार भुगतान के निपटान के नियमों पर काम कर चुकी थी।

मूल इरादा कोई नई मुद्रा बनाने का नहीं था।

वे Elarion के राज्यों के बीच और Elarion तथा Thaeron के बीच भुगतान आसान बनाना चाहते थे।

सामान्यतः सीमा-पार भुगतान कई बैंकों से होकर गुज़रता था। हर बैंक सिर्फ़ अपना हिस्सा जानता था। भेजने वाले को अपनी भेजी हुई रक़म दिखती थी और कभी-कभी उसे यह भी ठीक से मालूम नहीं होता था कि अंत में दूसरे के हाथ कितना पहुँचेगा।

सेतु को इन प्रणालियों के बीच दुभाषिए का काम करना था।

भुगतान की पुष्टि करने से पहले व्यक्ति को कुल क़ीमत दिखनी थी।

विनिमय दर दिखनी थी।

शुल्क।

रक़म पहुँचने का समय।

और पाने वाले को कितनी रक़म मिलेगी, यह भी।

मगर महामारी से पहले ही पारदर्शिता पर चल रही सार्वजनिक बहसों से इस परियोजना का रूप बदलने लगा था।

Lera ने Nitra में Jesair का संबोधन देखा था। बाद में उसने Nerai Sael की एक विश्लेषणात्मक टिप्पणी पढ़ी। उसमें लिखा था कि वित्तीय शक्ति सबको दिखाई देनी चाहिए और उस पर निगाह रखने वाला हर व्यक्ति भी।

धीरे-धीरे सेतु की टीम ने पूरी प्रणाली नए सिरे से तैयार की।

हर भुगतान का ऐसा रिकॉर्ड बनना था जिसे मिटाया न जा सके।

हर इंसान की हर निजी ख़रीद का सार्वजनिक रिकॉर्ड नहीं।

वैसा करने पर आम आदमी का निजी जीवन ही मिट जाता।

सार्वजनिक रूप से दिखने थे प्रणाली के नियम, कंपनी के आरक्षित कोष, धन के बड़े प्रवाह, मालिकाना रिश्ते और वे लेन-देन जो सामाजिक शक्ति की तय सीमाएँ पार करते थे।

निजी भुगतान निजी रहते।

मगर जब भी कोई उपयोगकर्ता का ब्योरा देखता, उपयोगकर्ता को दिख जाता था कि उसे किसने खोला, किस अधिकार से और कब।

अगर बैंक भुगतान रोकता तो उसे कारण बताना होता।

अगर स्वचालित प्रणाली किसी भुगतान को चिह्नित करती तो उसका लागू किया हुआ नियम मालूम होना चाहिए था।

अगर किसी को खुलासे से छूट मिलती तो यह दर्ज हो जाता कि उसे किसने मंज़ूर किया और वह कब तक लागू थी।

अकेली किसी सरकार के हाथ में पूरे नेटवर्क का नियंत्रण नहीं होना था।

प्रोटोकॉल खुला था।

कई स्वतंत्र केंद्र अभिलेख सत्यापित करते थे। उन्हें अलग-अलग राज्यों में बैंक, विश्वविद्यालय, नागरिक संगठन और लेखापरीक्षा संस्थाएँ चलाती थीं।

सेतु की अपनी निगरानी परिषद थी, पर वह न पुराने भुगतानों का इतिहास बदल सकती थी, न अपने ही किसी फ़ैसले का रिकॉर्ड मिटा सकती थी।

Lera अपनी कल्पना सीधे शब्दों में समझाती थी।

“हम ऐसी आँख नहीं बनाना चाहते जो सबको देखती हो और ख़ुद किसी को दिखाई न दे।”

निवेशक उसे जवाब देते कि लोगों को दर्शन नहीं चाहिए।

उन्हें सहूलियत चाहिए।

बैंकों का कहना था कि आरक्षित निधियों, शुल्कों और मालिकाना रिश्तों का खुलासा उनके कारोबारी रहस्य भंग करेगा।

नियामक आगाह करते थे कि किसी निजी कंपनी को यह आभास नहीं देना चाहिए कि वह पूरे ग्रह की वित्तीय व्यवस्था है।

सो सेतु लंबे समय तक छोटा ही रहा।

उसे इस्तेमाल करने वालों में प्रौद्योगिकी कंपनियाँ, Thaeron के चंद व्यापारी और ऐसे लोग थे जो नियमित रूप से राज्यों के बीच पैसे भेजते थे।

प्रणाली काम करती थी, मगर उसके फैलने की कोई वजह नहीं थी।

फिर महामारी आई।

पहले नए उपयोगकर्ता न सरकारें थीं, न बड़े अस्पताल।

वे स्वयंसेवक थे।

एक नागरिक समूह बंद ऑरेलियाई इलाक़ों के अस्पतालों के लिए सुरक्षात्मक फ़िल्टर ख़रीदने को चंदा जुटा रहा था। सात राज्यों से छह मुद्राओं में चंदा आ रहा था।

सामान्य प्रक्रिया में उन्हें कई खाते रखने पड़ते, बार-बार मुद्रा बदलनी पड़ती और बिचौलिया बैंकों की पुष्टि का इंतज़ार करना पड़ता।

सेतु के ज़रिए वे सारे भुगतान एक ही खाते में जमा कर सकते थे।

प्रणाली उस खाते का शेष एलार में दिखाती थी।

शुरुआत में एलार कोई स्वतंत्र मुद्रा नहीं थी।

वह सेतु नेटवर्क की एक इकाई थी। उसका आधार ऊर्जा, कच्चे माल और Elarion की प्रमुख मुद्राओं का एक समूह था, जिसकी संरचना सार्वजनिक थी। किसी एक राज्य या केंद्रीय बैंक का फ़ैसला उसका मूल्य तय नहीं करता था।

हर एलार के बदले सेतु मौजूदा मुद्राओं और अल्पकालीन, आसानी से नकदी में बदल सकने वाली परिसंपत्तियों में भंडार रखता था।

इस भंडार का ब्योरा सार्वजनिक था।

कोई भी जाँच सकता था कि चलन में जितने एलार हैं, उनके पीछे उतनी वास्तविक संपत्ति है या नहीं।

स्वयंसेवक को सौ एलार दिखते थे।

दाता अपनी स्थानीय मुद्रा में दे सकता था।

फ़िल्टर बनाने वाला अपनी मुद्रा ले सकता था या एलार रख सकता था।

उपयोगकर्ता के लिए वह एक भुगतान था।

पर्दे के पीछे अब भी कई वित्तीय प्रणालियाँ आपस में जुड़ती थीं, पर उनकी उलझनों का बोझ अब काउंटर पर खड़े आदमी को नहीं उठाना पड़ता था।

पहली चंदा-मुहिम चंद घंटों में पूरी हो गई।

हर दाता देख सकता था कि कितने एलार आए।

उसे कुल रक़म दिखती थी।

फ़िल्टरों का ऑर्डर दिखता था।

निर्माता, क़ीमत, शुल्क और सामान पहुँचने की पुष्टि, सब दिखता था।

बीमारों के नाम और दूसरे लोगों के छोटे-छोटे निजी दान उसे नहीं दिखते थे।

साझे पैसे की राह दिखती थी।

उस चंदे की ख़बर फैल गई।

एक और संगठन ने Thaeron पर दवाएँ ख़रीदने के लिए सेतु का इस्तेमाल किया।

फिर डॉक्टरों के एक दल ने विदेशी स्वास्थ्यकर्मियों के ठहरने का इंतज़ाम करने के लिए।

बाद में एक छोटे अस्पताल ने, जो आपूर्तिकर्ता को उसकी माँगी हुई मुद्रा में भुगतान नहीं कर पा रहा था।

सेतु ने पहले वहाँ जगह बनाई जहाँ सामान्य प्रणालियाँ चूक रही थीं।

इसलिए नहीं कि लोग बैंकों से ज़्यादा उस पर भरोसा करते थे।

इसलिए कि वह उन्हें वह सब दिखाता था जो बैंक नहीं दिखाते थे।

भुगतान करने की लागत।

उसका रास्ता।

उसके पहुँचने का समय।

पाने वाले को मिलने वाली रक़म।

और अगर उसे किसी ने रोका, तो किसने।

जब सुरक्षात्मक पोशाकों की एक खेप में देर हुई, खुले रिकॉर्ड से पता चला कि भुगतान न विक्रेता ने रोका था, न माल ढोने वाले ने। उसे एक बिचौलिए बैंक ने रोका था, जिसे पैसे के स्रोत का अतिरिक्त प्रमाण चाहिए था।

बैंक यह नहीं कह सकता था कि गड़बड़ी कहीं और हुई है।

उस फ़ैसले के साथ एक नाम था, एक वक़्त था, एक कारण था।

बैंक ने घंटे भर में काग़ज़ पूरा कर दिया।

भुगतान आगे बढ़ गया।

एक और ख़रीद में पता चला कि आपूर्तिकर्ता ने ऑर्डर की पुष्टि से ठीक पहले दाम बढ़ा दिया था। उसका कहना था कि उसकी मुद्रा की विनिमय दर बदल गई थी।

सेतु के रिकॉर्ड ने दिखाया कि दर अपनी जगह से लगभग हिली ही नहीं थी।

आपूर्तिकर्ता ने पुराना दाम बहाल कर दिया।

इसलिए नहीं कि वह पहले से ज़्यादा ईमानदार हो गया था।

इसलिए कि उसकी सफ़ाई की जाँच हो सकती थी।

धीरे-धीरे बड़े संगठन नेटवर्क से जुड़ने लगे।

पहले परोपकारी निधियाँ।

फिर एक-एक क्षेत्र के अस्पतालों के समूह।

फिर वे निर्माता जो दर्जनों मुद्राओं के अलग-अलग खाते सँभालना नहीं चाहते थे।

व्यापारी को सहूलियत थी कि वह एलार में एक क़ीमत लिख सकता था और चुन सकता था कि भुगतान एलार में ले या स्थानीय मुद्रा में।

अस्पताल को सहूलियत थी कि वह बार-बार विनिमय दरों का हिसाब लगाए बिना आपूर्तिकर्ताओं के दामों की तुलना कर सकता था।

दान देने वालों के लिए यह अहम था कि उन्हें दिखता था कि सबका इकट्ठा किया हुआ पैसा कहाँ गया।

अस्पताल के प्रशासकों को यह नागवार था कि उनके फ़ैसले दर्ज रहते थे।

लेकिन इसी बात से दूसरों का भरोसा बढ़ता था।

कुछ राज्यों ने सेतु पर पाबंदी लगाने की कोशिश की।

उनका तर्क था कि कोई निजी कंपनी ऐसी इकाई नहीं बना सकती जो सरकारी मुद्रा की प्रतिद्वंद्वी होने लगी हो।

लेकिन पाबंदी के सामने एक व्यावहारिक मुश्किल आ खड़ी हुई।

सेतु राज्यों से अपनी मुद्राएँ छोड़ने को नहीं कहता था।

व्यापारी अब भी अपनी घरेलू मुद्रा ले सकता था।

कर अब भी स्थानीय क़ानूनों के मुताबिक़ चुकाए जाते थे।

निपटान के काम में बैंक अब भी शामिल थे।

सेतु तो बस उपयोगकर्ताओं को मूल्य की एक साझी इकाई अपने पास रखने और भेजने देता था और खुले तौर पर दिखाता था कि उसके साथ क्या होता है।

जब एक राज्य ने उसे बंद किया तो अस्पतालों ने याद दिलाया कि वे विदेश से आने वाले अपने कुछ सामान की ख़रीद इसी नेटवर्क पर करते हैं।

स्वयंसेवी संगठनों ने तुलनात्मक ब्योरा प्रकाशित किया।

साधारण हस्तांतरण में दो दिन लगते थे और रक़म का चार प्रतिशत घट जाता था।

सेतु से भुगतान कुछ सेकंड में पहुँच जाता था और उसका पूरा ख़र्च पहले से मालूम होता था।

तीन दिन बाद पाबंदी में फेरबदल हुआ और स्वास्थ्य संबंधी लेन-देन को अस्थायी छूट दे दी गई।

दूसरी जगहों पर भी ऐसी छूटें मिलने लगीं।

उन्हें मुद्रा सुधार के रूप में स्वीकृति नहीं मिली थी।

वे संकट से निपटने के उपायों के रूप में स्वीकार की गई थीं।

एक छूट ने अस्पतालों को एलार स्वीकार करने की अनुमति दी।

दूसरी ने बीमा कंपनियों को सीमा-पार चिकित्सा सेवाओं के लिए सेतु से भुगतान करने दिया।

किसी और ने सार्वजनिक राहत कोषों को नेटवर्क पर सहायता के वितरण का ब्योरा प्रकाशित करने दिया।

यह फ़ैसला किसी ने नहीं किया था कि एलार समूचे ग्रह की मुद्रा बनेगा।

एक-एक करके सिर्फ़ सामने आए व्यावहारिक मसले तय हुए।

हर फ़ैसले से एक रुकावट हट गई।

Jesair ने पहली बार सेतु की बात तब की जब लाखों लोग उसका इस्तेमाल करने लगे थे।

वह अपना नाम किसी निजी कंपनी का विज्ञापन नहीं बनाना चाहता था। फिर भी वह देख रहा था कि जिन बातों को उसने Nitra में उठाया था, उनमें से बहुत-सी बातें इस प्रणाली में साकार हो रही थीं।

“मैं नहीं जानता कि पूरे ग्रह की समस्या का जवाब कोई एक कंपनी हो सकती है या नहीं,” उसने लोगों से कहा। “हर शक्ति के सामने उसे संतुलित रखने वाली एक शक्ति चाहिए। उसके सामने भी जो अपने को पारदर्शी कहती है।”

फिर उसने सीधे कैमरे में देखा।

“मगर ज़रा देखिए तो, लोग सेतु का इस्तेमाल क्यों करते हैं। इसलिए नहीं कि उन्हें एक और बैंक की चाह है। वे इसका इस्तेमाल इसलिए करते हैं कि उन्हें क़ीमत, नियम, शुल्क और फ़ैसले सब दिखते हैं। कोई उनका भुगतान रोकता है तो अपने पीछे सिर्फ़ चुप्पी नहीं छोड़ जाता।”

वह पल भर रुका।

“सेहत ठीक हो तो हम मूल्य को छाया में चलने देते हैं और इसे सहूलियत कहते हैं। अब, जब हर उपकरण का मतलब एक साँस है और हर खेप का मतलब कुछ और वक़्त, हम देखना चाहते हैं कि मूल्य कहाँ रुक गया। शायद हमें हमेशा से यही चाहना चाहिए था।”

सेतु के उपयोगकर्ताओं की संख्या एक बार फिर बढ़ी।

मगर सिर्फ़ Jesair की बातों से नहीं।

प्रणाली के पास अब अपना सबूत था।

वे खेपें जो जल्दी पहुँच गई थीं।

वे चंदे जिनमें पैसा कहीं गुम नहीं हुआ था।

वे अस्पताल जो एक ही इकाई में सामान ख़रीद सकते थे।

वे आपूर्तिकर्ता जिन्हें दिनों इंतज़ार किए बिना अपना भुगतान मिल गया था।

अस्पतालों की भोजनशालाओं ने सेतु अपनाया तो उन्हें राशन पहुँचाने वाले भी जुड़ गए।

राशन पहुँचाने वाले जुड़े तो उनके कर्मचारी एलार स्वीकार करने लगे।

जब स्वास्थ्यकर्मियों को आपातकालीन काम के मेहनताने का कुछ हिस्सा एलार में मिलने लगा तो वे पूछने लगे कि इन्हें कहाँ ख़र्च कर सकते हैं।

सबसे पहले अस्पतालों के पास की दुकानों ने इन्हें लेना शुरू किया।

फिर परिवहन सेवाओं ने।

मुसाफ़िरख़ानों ने।

दवा की दुकानों ने।

छोटे व्यापारी को अब हर मुद्रा में एक खाता नहीं चाहिए था। सेतु से जुड़ना काफ़ी था। वह दाम स्थानीय मुद्रा और एलार, दोनों में लिख सकता था और प्रणाली उसकी पसंद के मुताबिक़ बिक्री की रक़म अपने आप उसके खाते में जमा कर देती थी।

शुरू में ज़्यादातर व्यापारी एलार फ़ौरन बदलवा लेते थे।

बाद में वे कुछ एलार अपने पास रखने लगे।

वे जानते थे कि अगली बार विदेश से कुछ ख़रीदेंगे तो ये काम आएँगे।

इस तरह एलार प्रणाली से होकर गुज़रने भर की इकाई नहीं रहा।

वह उसके भीतर चलने लगा था।

लोग अब भी स्थानीय मुद्रा जमा रख सकते थे।

उसी में तनख़्वाह पा सकते थे।

उसी में कर चुका सकते थे।

मगर दूसरे राज्य जाते समय अब उन्हें पैसे नहीं बदलने पड़ते थे।

वे सेतु खोलते।

वही रक़म देखते।

एलार में भुगतान करते।

व्यापारी को एलार मिलते या उसकी अपनी घरेलू मुद्रा।

Nitra में, Sarur में और Thaeron के गुंबदों के नीचे, हर जगह एक ही तरह भुगतान होता था।

क़ानून की नज़र में वह अभी Elarion की एकमात्र मुद्रा नहीं बनी थी।

राज्य उसे जारी नहीं करते थे।

केंद्रीय बैंक उसे संचालित नहीं करते थे।

कई सरकारें अब भी उसे निजी नेटवर्क की एक भुगतान इकाई भर कहती थीं।

पर काउंटर पर खड़े इंसान के लिए इस फ़र्क़ का अर्थ धीरे-धीरे मिटता जा रहा था।

उसके लिए एक क़ीमत थी।

एक शेष रक़म।

एक भुगतान।

और पुरानी प्रणालियों से यहाँ एक फ़र्क़ था। वह उन नियमों को देख सकता था जिनके तहत उसका पैसा उससे दूसरे इंसान तक पहुँचता था।

सेतु इसलिए भी बढ़ा कि उसने कभी संपूर्ण होने का दावा नहीं किया।

उसके संस्थापकों ने कंपनी के स्वामित्व की पूरी संरचना सार्वजनिक कर दी।

निवेशकों के नाम।

उनकी हिस्सेदारी।

बैंकों से किए क़रार।

एलार के पीछे रखे भंडार की संरचना।

प्रबंधन के सदस्यों का पारिश्रमिक।

और शुल्क तथा आरक्षित संपत्तियों के समूह का मूल्य तय करने वाले नियमों में हुआ हर बदलाव भी।

जब एक ऐसी निधि ने नेटवर्क से जुड़ना चाहा जिसके अंतिम मालिक की पहचान मालूम नहीं थी, तो सेतु ने उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

निधि ने भेदभाव का मुक़दमा कर दिया।

सेतु ने अपने फ़ैसले की वजह सार्वजनिक कर दी।

उसने निधि को इसलिए अस्वीकार नहीं किया था कि वह धनी थी।

उसने उसे इसलिए अस्वीकार किया था कि यह पता लगाना मुमकिन नहीं था कि उसकी आड़ में शक्ति किसके हाथों में जा रही है।

पूरे ग्रह की निगाहें इस विवाद पर थीं।

बहुतों ने पहली बार एक ठोस मिसाल से जाना कि निजता और छिपी हुई शक्ति के बीच क्या अंतर है।

एक साधारण इंसान दवा ख़रीद सकता था और ज़रूरी नहीं था कि पूरी दुनिया उसका नाम जाने।

लेकिन अस्पताल ख़रीदने वाली निधि चौदह कंपनियों के पीछे अपने मालिक को नहीं छिपा सकती थी।

इस तरह Jesair और Nerai के विचार अब सिर्फ़ लिखे हुए शब्द नहीं रहे।

उन्होंने एक प्रणाली का रूप ले लिया था।

रिकॉर्ड पर पड़ने वाली हर निगाह अपना निशान छोड़ती थी।

हर बड़ी वित्तीय शक्ति का एक अंतिम मालिक था।

हर छूट के साथ उसे देने वाले का नाम था और उसके ख़त्म होने का वक़्त था।

छोटे निजी भुगतान निजी रहते थे।

दूसरों की ज़िंदगी को प्रभावित करने वाले धन के बड़े प्रवाह दिखाई देते थे।

नियम खुले थे।

नेटवर्क का संचालक ख़ुद निगरानी में आए बिना दूसरों पर निगाह नहीं रख सकता था।

लोगों को चीज़ें इस तरह साफ़ दिखाई देने की आदत होने लगी।

पहले महामारी के सिलसिले में।

फिर खाने-पीने की चीज़ों में।

ऊर्जा में।

परिवहन में।

परोपकार के लिए जुटाए गए चंदों में।

Elarion और Thaeron के बीच की ख़रीदारी में।

धीरे-धीरे वे पूछने लगे कि ऐसे ही नियम पुराने बैंकों पर क्यों लागू नहीं होते।

राज्य उनकी आमदनी की हर मद दिखा सकता है, तो सरकारी ठेके का पैसा आख़िर किसे मिलता है, यह क्यों नहीं दिखा सकता?

सेतु अपने भंडार का हिसाब रोज़ खोल सकता है, तो केंद्रीय बैंक अपने कुछ फ़ैसले महीनों बाद ही क्यों बताते हैं?

एलार में भुगतान करने पर पूरा शुल्क उन्हें पहले ही दिखाई देता है, तो पारंपरिक हस्तांतरण में कुछ ख़र्च सामने क्यों तभी आते हैं जब पैसा दूसरे सिरे पर पहुँचता है?

पारदर्शिता अब केवल एक नैतिक माँग नहीं रह गई थी।

लोग उसे ख़ुद आज़मा चुके थे।

Kael Thorne अपने अध्ययनकक्ष से सेतु को बढ़ते देख रहा था। कमरे की सारी खिड़कियों का शीशा अपारदर्शी कर दिया गया था।

Vesta अब तक इस प्रणाली में कहीं दिखाई नहीं दी थी।

धन के पुराने प्रवाह उन बैंकों, निधियों और राज्यों में छिपे हुए थे जो मालिकों की पहचान पर परदा रखते थे।

सेतु केवल उस मूल्य को देख सकता था जो उसके नेटवर्क से गुज़रता था।

मगर लोगों को एक ऐसी चीज़ की आदत पड़ रही थी जो Kael के लिए किसी जाँच से भी ज़्यादा ख़तरनाक थी।

तुलना की।

जिसने एक बार पूरा शुल्क देख लिया, वह पूछने लगा कि दूसरी जगह उसे वह क्यों नहीं दिखता।

जिसने एक बार किसी के असली मालिक का नाम जान लिया, उसे उन कंपनियों पर शक होने लगा जो उस नाम को छिपाती थीं।

जिसने एक बार हर राज्य में एक ही इकाई से भुगतान किया, वह पूछने लगा कि उसे तीस मुद्राएँ क्यों चाहिए।

जाँच की रफ़्तार धीमी की जा सकती थी।

आयोगों को काम के ढेर तले दबाया जा सकता था।

अदालतों को आपत्तियों में उलझाया जा सकता था।

राजनेताओं को प्रतीक्षा करने के लिए मनाया जा सकता था।

मगर एक बार पड़ी आदत इतनी आसानी से नहीं छूटती थी।

अगर सेतु सिर्फ़ स्वास्थ्यकर्मियों और स्वयंसेवकों का साधन बना रहता तो शायद महामारी के बाद मिट जाता।

पर अब वह सिर्फ़ उनका साधन नहीं था।

उसे परिवार इस्तेमाल कर रहे थे।

व्यापारी।

निर्माता।

माल ढोने वाले।

Thaeron पर काम करने वाले।

ऐसे लोग जिन्होंने Jesair का भाषण कभी पढ़ा ही नहीं था और Nerai Sael का नाम तक नहीं जानते थे।

वे एलार इसलिए नहीं इस्तेमाल करते थे कि उसमें पारदर्शिता का दर्शन था।

वे उसे इसलिए इस्तेमाल करते थे कि वह काम करता था।

बाद में कहीं उन्हें एहसास हुआ कि वह काम करता ही इसलिए था कि पुरानी प्रणालियाँ जो कुछ छिपा लेती थीं, उसमें से बहुत कुछ उसने आँखों के सामने रख दिया था।

Kael समझ गया कि Arien ने सिर्फ़ एक विपत्ति को जन्म नहीं दिया था।

उसने वे परिस्थितियाँ पैदा कर दी थीं जिनमें Jesair का विचार रोज़मर्रा के काम का साधन बन सकता था।

उसने लोगों को अँधेरे की क़ीमत दिखा दी थी।

और उन्हें एक ऐसी प्रणाली आज़माने पर मजबूर कर दिया था जिसे वे शांति के दिनों में शायद बेहद दुस्साहसी, कुछ ज़्यादा ही खुली या पुरानी व्यवस्था के लिए बहुत ख़तरनाक मानकर ठुकरा देते।

कभी-कभी इंसान भविष्य को मिटाने की कोशिश करता है और ऐसा करते हुए वही सब कुछ हटा देता है जो अब तक उसे जन्म लेने से रोकता आया था।

30. तिहाई

पहले मामले गिने जाते थे।

फिर बिस्तर।

फिर ऑक्सीजन की प्रणालियाँ, दवाओं का भंडार, अलग रखने के लिए बचे कमरे और वे लोग जिनमें अब भी काम करने की ताक़त थी।

अंत में रह गए मृतक।

जब तक वे थोड़े थे, उनकी ठीक-ठीक गिनती बताई जाती थी।

सात सौ बयालीस।

ग्यारह हज़ार नौ सौ आठ।

चौबीस लाख।

हर संख्या अब भी मन को यह विश्वास दिला सकती थी कि वह मनुष्यों की गिनती है।

फिर करोड़ों आए।

दसियों करोड़।

और देहों की जगह एक वक्र रेखा ने ले ली।

ऊपर जा रही है।

नीचे आ रही है।

और तेज़ हो रही है।

उत्तर की ओर बढ़ रही है।

Vasýria पहुँच गई।

Thaeron को चपेट में ले लेगी।

मनुष्य का मन एक अरब अलग-अलग मौतों का भार नहीं उठा सकता।

उसे एक अरब बिस्तरों की कल्पना करनी होगी।

एक अरब आख़िरी साँसों की।

एक अरब दरवाज़ों की, जिनके पीछे कोई उस इंसान की राह देखता खड़ा रह गया जो अब लौटेगा नहीं।

सिरहाने रखे एक अरब बर्तनों की, जिनमें कुछ पीने को अधूरा रह गया।

एक अरब वाक्यों की, जिनकी बाक़ी बात सुबह होनी थी।

इसलिए मन ने उन्हें एक संख्या में बदल दिया।

और संख्या को एक लकीर में।

महामारी Auriola से फैलकर Elarion के सभी राज्यों में जा पहुँची।

हर जगह एक-सी नहीं।

जिन इलाक़ों ने स्वास्थ्य प्रणालियों को आँकड़े साझा करने दिए, उन्हें कुछ दिनों की मोहलत मिली। डॉक्टरों को पता था कि रसद कहाँ बची है। वे उन अस्पतालों में इलाज के नतीजे देख सकते थे जो ग्रह के दूसरे सिरे पर थे। एल्गोरिदम लाखों लोगों में बीमारी की दशा की तुलना कर रहे थे, उन लोगों के नाम जाने बिना।

धीरे-धीरे डॉक्टर यह भी समझ गए कि उनके हिसाब भर से काम क्यों नहीं चल रहा। कई लोगों में बीमारी ऐसी तीखी प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया जगा देती थी कि रक्तवाहिनियों को क्षति पहुँचती और अंगों को किसी तरह स्थिर करते ही वे फिर चपेट में आ जाते। कभी-कभी पहले चेतावनी संकेत और रक्तसंचार बंद होने के बीच बस कुछ घंटे होते थे, जिसके बाद कुछ भी सुधारा नहीं जा सकता था। ऊतकों को फिर से बनाने वाले उपचारों के लिए स्थिर मरीज़ चाहिए था और कई दिन चाहिए थे। साझा आँकड़ों ने कुछ लोगों को थोड़ा वक़्त दिलाया। जो वक़्त जा चुका था, उसे वे किसी को लौटा नहीं सके।

कुछ राज्यों ने अपने आँकड़े बंद रखे।

वे संप्रभुता की बात करते थे।

नागरिकों की सुरक्षा की।

इस ख़तरे की कि महामारी के बाद आपातकालीन ढाँचा संघ के हाथों में ही रह जाएगा।

इनमें से कुछ आशंकाएँ वाजिब थीं।

मगर बीमारी को क्या परवाह कि उसकी राह के आँकड़े किस क़ानूनी दलील से बंद किए गए हैं।

उन देशों में वह कुछ दिन और अँधेरे में आगे बढ़ती रही।

और तिहाई के दिनों में कुछ दिन एक पूरे युग के बराबर थे।

Thaeron पर शुरुआती मामले उन गुंबदों में सामने आए जो कक्षा से आने वाली रसद पर निर्भर थे।

प्रशासकों ने तुरंत परिवहन मार्ग बंद कर दिए।

मगर Thaeron एक ऐसा संसार था जिसका वजूद मनुष्य और मशीन के बीच हर पल निभते एक समझौते पर टिका था।

गुंबदों में पानी चाहिए था।

जैविक कच्चा माल।

कल-पुर्ज़े।

ऊर्जा सेल।

फ़िल्टर।

रासायनिक मिश्रण।

जिस रास्ते को वे बीमारी के सामने बंद करते थे, उसी रास्ते से ज़िंदा रहने के लिए कुछ ज़रूरी भी आता था।

Elarion पर कोई गाँव राज्य की सुध भुलाकर भी कुछ दिन जी सकता था।

Thaeron पर एक पंप को भी भुला देना मुमकिन नहीं था।

इसीलिए वहाँ आपातकाल में एलार को मातृ ग्रह से भी जल्दी अपना लिया गया।

हर खेप का सार्वजनिक रिकॉर्ड था।

हर फ़ैसले के पीछे एक नाम था।

हर इनकार की एक वजह।

शुरू में गुंबदों के प्रशासकों ने विरोध किया। उनका कहना था कि प्रणाली सामरिक महत्त्व के भंडारों का भेद खोल देती है।

फिर सामने आया कि एक प्रशासक ने पानी एक निजी रिहाइशी क्षेत्र की ओर मोड़ दिया था, जहाँ उसका परिवार और उसकी परिषद से जुड़े लोग रहते थे।
यह रिकॉर्ड हर कोई देख सकता था।

विरोध के स्वर धीमे पड़ गए।

इधर Elarion पर सिर्फ़ स्वास्थ्य सेवाओं का जाल ही नहीं टूट रहा था।

मूल्य मापने का पुराना तरीक़ा भी बिखर रहा था।

किसी एक बड़े ध्वंस में नहीं।

हज़ारों छोटी-छोटी विफलताओं में।

जिन राज्यों में ऑरेलियाइयों का अनुपात अधिक था, उनकी मुद्राएँ तेज़ी से गिर रही थीं। जो लोग मरने वाले थे, उन्हें अस्पतालों से पहले बाज़ार गिन लेते थे। उन्हें उम्मीद थी कि उत्पादन गिरेगा, करों की आमद घटेगी, बजट में घाटा होगा और ख़र्च बढ़ेगा।

कमज़ोर मुद्रा ने विदेश से आने वाली दवाएँ महँगी कर दीं।

महँगी दवाओं ने राज्य पर क़र्ज़ बढ़ा दिया।

बढ़े हुए क़र्ज़ ने मुद्रा को और कमज़ोर कर दिया।

जितने ज़्यादा लोग मरते थे, उन्हें बचाने के लिए उतना ही ज़्यादा पैसा चाहिए था।

और जितना ज़्यादा पैसा चाहिए था, उसकी क़ीमत उतनी ही कम होती जाती थी।

संकट के लिए बनाई गई खुली परत धीरे-धीरे दिखाने लगी कि किसने खेप ठुकराई, किसने क़ीमत बदली और कौन विनिमय दर का अंतर चुकाने के लिए भंडार खोल सकता था। खेप की राह देखते अस्पताल में जनता उस फ़ैसले का परिणाम देख सकती थी। विवाद मिटे नहीं, मगर अब वे भुगतान की स्थिति बताने वाली किसी बेनाम इबारत के पीछे छिपे नहीं थे।

सब कुछ दिखाई देने से वह दवा नहीं बन सकती थी जिसका अभी किसी ने आविष्कार ही नहीं किया था।

उससे स्वास्थ्यकर्मी लौट नहीं आए।

ख़ाली टंकी में ऑक्सीजन नहीं भर गई।

लोग ऐसे प्राणी नहीं बन गए जिनमें न लालच हो, न डर, न स्वार्थ।

हाँ, एक वाक्य ज़रूर मिट गया जिसकी ओट में सदियों से व्यक्ति, कंपनियाँ और सरकारें छिपती आई थीं।

हमें पता नहीं था।

पहला महीना बीतने पर एलार से चिकित्सा उपकरणों के अलावा भी चीज़ें ख़रीदी जाने लगीं।

पहले अस्पतालों की ऊर्जा का भुगतान हुआ।

फिर बंद इलाक़ों के लिए खाने का।

फिर कामगारों को लाने-ले जाने का।

फिर जैविक कच्चे माल का।

मुद्रा परिषदों ने विरोध किया।

Daren Voltr ने संयुक्त सभा को संबोधित किया।

कुछ हफ़्ते पहले के मुक़ाबले उसके चेहरे का रंग और उड़ा हुआ था। उसके परिवार में भी अब लोग मर चुके थे।

“आपातकालीन निपटान के एक साधन को हम मुद्रा बना रहे हैं,” उसने कहा। “बिना केंद्रीय बैंक के। बिना जनादेश के। क्षेत्रों की स्थिरता पर कोई समझौता किए बिना। और यह उस डर के बीच कर रहे हैं जब लोग लगभग हर उस चीज़ के लिए हाँ कर देंगे जिस पर बचाव का नाम लिख दिया जाए।”

Nerai उसके सामने बैठी थी।

“इसीलिए हर नियम सबके सामने है।”

Voltr ने सिर हिलाया।

“दिखाई देने भर से कोई चीज़ वैध नहीं हो जाती।”

“नहीं होती,” उसने जवाब दिया। “मगर जब हमें यह तक न दिखे कि नियम कौन बदल रहा है, तब हम उसकी वैधता को परखें भी कैसे?”

“मूल्य की एक ही इकाई कमज़ोर इलाक़ों को तबाह कर सकती है।”

Nerai ने तीन रिकॉर्ड खोले।

तीन खेपें।

मुद्राओं की अदला-बदली में अटके तीन भुगतान।

“मूल्य का टुकड़ों में बँटा होना आज ही उन्हें तबाह कर रहा है।”

“यह लफ़्फ़ाज़ी है।”

उसने आँकड़े सबके सामने स्क्रीन पर डाल दिए।

“ये रहे हिसाब।”

Voltr देर तक उन्हें देखता रहा।

उसकी आपत्तियाँ मिट नहीं गईं।

और मिटनी भी नहीं चाहिए थीं।

Nerai जानती थी कि जिस दुनिया में एक सही तर्क के आगे हर विरोध गायब हो जाए, वह उतनी ही ख़तरनाक होगी जितनी वह दुनिया जिसे वह बदलना चाहती थी।

“महामारी के बाद एलार को कौन चलाएगा?” Voltr ने पूछा।

Nerai कुछ देर चुप रही।

“शायद कोई नहीं।”

“‘कोई नहीं’ जैसी चीज़ होती ही नहीं।”

इन शब्दों ने उसे ठिठका दिया।

बात सही थी।

हर प्रणाली के पीछे कोई इंसान रहता था।

या इंसानों का कोई समूह।

या कोई नियम, जिसे कभी किसी ने लिखा था।

“तो हमें इसे इस तरह बनाना होगा,” उसने कहा, “कि कोई एक इंसान इसका मालिक न बन सके।”

Saira ने प्रस्ताव खोला।

अलग-अलग राज्यों में बँटे नेटवर्क केंद्र।

मूल्य की सार्वजनिक गणना।

बदलावों का पूरा इतिहास।

विनिमय दर में कोई गुप्त फेरबदल नहीं।

किसने ब्योरा देखा, इसका पता लगाने की सुविधा।

अधिकारों का बँटवारा।

मुद्रा परिषदों के फ़ैसलों पर जनता की निगरानी।

एक आपातकालीन प्रारूप।

अधूरा।

मृतकों के बीच जन्म लेता हुआ।

और फिर भी उसकी नींव में कुछ ऐसा उभर रहा था जिसे Elarion ने पहले नहीं जाना था।

मूल्य, जिसे अँधेरे में चलने की मजबूरी नहीं थी।

और शक्ति, जिसे इस असहज एहसास की आदत पड़ने लगी थी कि कोई उसे देख रहा है।

इस बीच Jesair लोगों से अपनी बातचीत जारी रखे हुए था।

अपनी थकान को वह ख़ुद मानता, उससे पहले Mareia उसे देख चुकी थी।

एक प्रसारण के बाद वह बुझी हुई स्क्रीन के सामने खड़ा रह गया।

बिलकुल निश्चल।

"Jesair?"
वह उसकी तरफ़ ऐसे मुड़ा मानो बहुत दूर से लौट रहा हो।

"क्या हुआ?"

"यही तो मैं पूछ रही हूँ।"

"बस थक गया हूँ।"

"तुम्हें आराम करना चाहिए।"

"करता तो हूँ।"

"कब?"

वह मुस्कराया।

"दो आफ़तों के बीच।"

Mareia नहीं मुस्कराई।

बाहर बारिश हो रही थी।

बारिश Davion परिवार के घर की ऊँची खिड़कियों पर बह रही थी और उसकी बूँदों में टूटकर घाटी की रोशनियाँ लंबी, पतली धारों में बह रही थीं।

"मेरे साथ Nitra चलो।"

Jesair ने बाहर देखा।

"और यहाँ के लोग?"

"उनसे संपर्क बना रहेगा।"

“Elan से भी संपर्क बना हुआ था।”

Mareia चुप हो गई।

Jesair ने फ़ौरन नज़रें झुका लीं।

“माफ़ करना।”

“इसकी ज़रूरत नहीं।”

“मुझे ऐसा नहीं कहना था।”

“मगर तुम सोचते तो यही हो।”

उसने सिर हिलाया।

“इंसान में और उसकी तस्वीर में फ़र्क़ होता है।”

“और अगर ख़ुद वहाँ होना तुम्हारी जान ले ले?”

इस बार जवाब देने में उसे देर लगी।

“तो शायद मेरा फ़ैसला ग़लत रहा होगा।”

Mareia ने उसे भर नज़र देखा।

“फिर यह कहने के लिए भी तुम किसी के पास नहीं रहोगे।”

वह उसके क़रीब आई।

“मैं तुमसे लोगों की मदद करना छोड़ने को नहीं कह रही। बस इतना चाहती हूँ कि तुम यह न मान बैठो कि लोगों से प्यार करने का मतलब है कि उनके लिए मरना तुम्हारा फ़र्ज़ है।”

Jesair चुप रहा।

“फिर तुम मुझसे क्या चाहती हो?”

“कि तुम रहो।”

“कहाँ?”

Mareia ने उसकी आँखों में देखा।

“मेरे साथ।”

उस पल दुनिया सिमट गई।

बिना राजनीतिक परिषदों के।

बिना कुल-खानदानों के।

बिना महामारी के।

बिना उस ग्रह के जो अपने प्रतीक के रूप में एक आदमी पर धीरे-धीरे अधिकार जमाता जा रहा था और अब उसकी अगली बात की बाट जोह रहा था।

केवल एक स्त्री थी जो पहले एक ऐसे आदमी को छोड़कर जा चुकी थी जिसके हाथों प्यार मालिकाना हक़ बन सकता था।

और अब वह दूसरे को इसलिए नहीं खोना चाहती थी कि उसने प्यार को सबके प्रति अपना फ़र्ज़ बना लिया था।

Jesair ने उसकी कलाई पर हाथ रखा।

"मैं यहीं हूँ।"

Mareia ने तीन उँगलियों से उसका हाथ थाम लिया।

एक पल को दोनों चुप हो गए।

वह हरकत अनायास हुई थी।

और फिर भी कुछ ज़्यादा ही सहज थी।

Jesair के भीतर एक अनजानी टीस दौड़ गई।

कोई छवि नहीं।

कोई शब्द नहीं।

केवल किसी ऐसी चीज़ का एहसास जिसे उसकी स्मृति में होना चाहिए था और जो वहाँ थी नहीं।

तीन उँगलियाँ।

कोई और रोशनी।

धूल।

एक औरत का हाथ।

और किसी ऐसे के लिए शोक जिसे इस जीवन में उसने कभी खोया ही नहीं था।

Mareia ने उसका हाथ छोड़ दिया।

“क्या हुआ?”

“मुझे नहीं पता।”

इस बार यह सच था।

उसे कुछ ऐसा याद आया था जिसे उसने अभी जिया ही नहीं था।

उस शाम संकट केंद्र में एक नया पूर्वानुमान आया।

Saira ने पहले उसे प्रकाशित करने से इनकार कर दिया।

आँकड़े अधूरे थे।

कुछ राज्य अब भी मामलों की ख़बर देर से दे रहे थे। जिन इलाक़ों में स्वास्थ्य व्यवस्था ढह गई थी, वहाँ से लगभग कोई भरोसेमंद आँकड़ा नहीं आ रहा था।

उन्होंने मॉडल से दोबारा गणना की।

और फिर एक बार और।

इनपुट बदले।

मृत्यु-दर का अनुमान।

अस्पतालों की क्षमता।

इलाज विकसित होने की रफ़्तार।

हर रास्ता उसी एक संख्या के पास पहुँचता था।

Nerai उसे देखती रही।

33.1%।

“इसे अब तक किसने देखा है?”

“विश्लेषक दल ने।”

“राजनीतिक नेतृत्व ने?”

Saira हिचकिचाई।

“उसे संभावित नतीजों का एक चौड़ा दायरा बताया गया है।”

“क्यों?”

“क्योंकि अभी बहुत कुछ अनिश्चित है।”

“नतीजा इससे कम हो सकता है?”

“हाँ।”

“इससे ज़्यादा?”

Saira ने कोई जवाब नहीं दिया।

स्क्रीन पर गणना का नतीजा चमक रहा था।

कुल मिलाकर लगभग तीन अरब मौतें।

लगभग पूरी ऑरेलियाई शाखा।

दूसरी शाखाओं के भी करोड़ों-करोड़ लोग।

“हमें इसे सार्वजनिक करना होगा,” Nerai ने कहा।

“अगर हमने कह दिया एक तिहाई, तो दहशत फैल जाएगी।”

“और नहीं कहा, तो राज्य दसवें हिस्से की तैयारी करके बैठेंगे।”

“यह पूर्वानुमान है।”

“तो कह दो कि यह पूर्वानुमान है।”

वह शब्द पहली बार एक अंदरूनी दस्तावेज़ में आया।

तिहाई।

उसी रात दस्तावेज़ बाहर चला गया।

किसके पास पहुँचा, यह कभी पता नहीं चला।

सुबह तक वह शब्द पूरे ग्रह की ज़बान पर था।

Nerai को दस्तावेज़ के बाहर आने का पता सबसे पहले रात के समाचार चैनल की सुर्ख़ी से लगा—एक तिहाई आबादी की जान जा सकती है। समाचार-वाचिका ने केवल सबसे ऊँची रेखा नहीं, अनुमान में अनिश्चितता की पूरी सीमा दिखाई। “यह कुल संभावित मृतकों का पूर्वानुमान है,” उसने दोहराया। “इसका अर्थ यह नहीं कि इतने लोग पहले ही मर चुके हैं।”

अगले दृश्य में एक राज्य का गवर्नर शांत रहने की अपील कर रहा था। Auriola की एक डॉक्टर ने उसे जवाब दिया कि शांत रहने के लिए रसद भी चाहिए और खुले आँकड़े भी। तस्वीर के नीचे अपने परिजनों को ढूँढ़ते लोगों के संदेश उभर रहे थे।

Nerai स्क्रीन के पास तब तक खड़ी रही जब तक समाचार-वाचिका अगली ख़बर पर नहीं चली गई। इस तरह एक अंदरूनी गणना एक ऐसे वाक्य में बदल गई जो अब परिवारों को खाने की मेज़ पर कहना होगा।

उसे किसी बीमारी के नाम की तरह नहीं बोला जाता था।

वह आने वाले कल का नाम था।

अगर तिहाई आई।

तिहाई से पहले।

तिहाई के बाद।

मानो वह सरहद पहले से मौजूद थी जिस पर लोग दो हिस्सों में बँट जाएँगे—वे जिनकी ज़िंदगी आगे चलेगी और वे जो सिर्फ़ भूतकाल में रह जाएँगे।

कुछ शहरों में अशांति फूट पड़ी।

लोगों ने गोदामों के ताले तोड़ दिए।

खातों से पैसे निकाल लिए।

शहरों से भागने लगे, यह जाने बिना कि जाएँगे कहाँ।

दूसरी जगहों पर स्वयंसेवकों की कतारें लग गईं।

बुज़ुर्गों ने अपने ऑक्सीजन उपकरण अपने से छोटों को दे दिए।

होटल मालिकों ने स्वास्थ्यकर्मियों के लिए कमरे खोल दिए।

जिन परिवारों में बरसों से बातचीत बंद थी, उन्होंने एक-दूसरे को फ़ोन किया।

कुछ ने दरवाज़े बंद कर लिए।

दूसरों ने पहली बार खोले।

विपत्ति इंसान का कोई एक सच्चा चेहरा नहीं दिखाती।

वह उसके वे अनगिनत चेहरे दिखाती है जो अब तक उसके भीतर चैन से सो सकते थे।

दूसरा महीना बीता तो मरने वालों का आँकड़ा एक अरब पार कर गया।

तीसरा बीता तो दो अरब।

ऑरेलियाइयों के शहर ख़ाली होने लगे।

जो पुश्तैनी घर युद्ध, आग और राज्यों का अंत झेल गए थे, उनके लिए अब कोई वारिस नहीं बचा।

एक परिवार में सभी पुरुष मर गए।

उनकी वंशावली का एक हज़ार साल से भी अधिक पुराना लेखा अभिलेखागार में था।

वहाँ काम करने वाली एक महिला ने आख़िरी आदमी का ब्योरा दर्ज किया।

प्रणाली ने स्थिति के खाने में अपने आप भर दिया—

वंश समाप्त।

वह औरत उन दो शब्दों को देखती रही।

हफ़्तों से वह लाखों मृतकों की सूचनाएँ दर्ज करती आई थी।

वह रोई नहीं थी।

एक अकेला ख़ाना देखकर वह रो पड़ी।

जिस दिन Jesair को बुखार आया, उसी दिन आख़िरी बार उसने पूरे ग्रह को संबोधित किया।

Mareia कैमरे की पहुँच से बाहर खड़ी थी।

प्रसारण से पहले ही उसे उसका चेहरा पीला लगा था।

Jesair ने कैमरे की ओर देखा।

“जब मरने वालों की संख्या बढ़ती है, हम अपने भीतर उन्हें छोटा करने लगते हैं। यह हमारा बचाव है। वरना हम इतना सह नहीं पाएँगे।”

वह रुका।

“लेकिन कोई इंसान इसलिए छोटा नहीं हो जाता कि वह एक अरब लोगों में से एक हो गया है।”

उसने एक पल को मेज़ का सहारा लिया।

Mareia एक क़दम आगे बढ़ी।

Jesair ने आँखों से उसे जताया कि वह ठीक है।

“मरने वाला हर इंसान किसी छोटी-सी दुनिया का केंद्र था। उसका नाम था। कोई जगह थी जहाँ वह लौटता था। उसके हँसने का अपना ढंग था। कोई उसके क़दमों की आहट पहचानता था। किसी को मालूम था कि वह खाने की कौन-सी चीज़ थाली में छोड़ देता है। कोई उसकी आवाज़ का इंतज़ार करता था।”

स्क्रीनों के सामने बैठे लाखों लोग चुप हो गए।

“हमने ऐसी सभ्यता बनाई जो एक और दुनिया बसा सके। हमने नदियों के रास्ते बदले। पराए आसमान के नीचे जंगल उगाए। मशीनों को सिखाया कि डॉक्टरों से पहले बीमारी पहचान लें।”

उसने साँस ली।

दर्द हुआ।

“और अपने ही खातों से गुज़रता हुआ एक इरादा हमें दिखाई नहीं दिया।”

यह वाक्य सुनकर Nerai ने सिर उठाया।

“एक दिन हम पूछेंगे कि यह किसने किया। हमें पूछना ही होगा।”

Jesair रुका।

“लेकिन अगर जवाब में सिर्फ़ एक आदमी का नाम रह गया तो समझिए हमने कुछ नहीं समझा। एक आदमी नफ़रत ला सकता है। कोई योजना ला सकता है। बुराई ला सकता है।”

उसने सीधे कैमरे में देखा।

“मगर रास्ता सभ्यता देती है। या फिर नहीं देती।”

वह बात Nerai को याद रह गई।

एक साल बाद वह महासभा के सामने उसे दोहराएगी।

उस पल उसे अंदाज़ा भी नहीं था कि अपने भाई के मुँह से वह कुछ ऐसे शब्द सुन रही है जो सबके सामने कहे उसके आख़िरी शब्दों में होंगे।

प्रसारण ख़त्म होते ही Mareia उसके पास आई।

“तुम्हारा बदन तप रहा है।”

“यहाँ गर्मी है।”

“नहीं है।”

उसने उसके माथे पर हथेली रखी।

Jesair ने आँखें मूँद लीं।

“कब से?”

“सुबह से।”

Mareia ने अविश्वास से उसे देखा।

“और तुमने कुछ कहा तक नहीं?”

“मुझे लगा थकान है।”

उसने स्वास्थ्य सेवा से संपर्क जोड़ा।

Jesair ने उसका हाथ पकड़ लिया।

“रुको।”

“किसलिए?”

“बस एक पल।”

“Jesair, अब हमारे पास एक पल भी नहीं है।”

पहली बार उसकी आवाज़ में डर सुनाई दिया।

Elarion के लिए डर नहीं।

एक औरत का डर, एक अकेले इंसान के लिए।

Jesair ने आँखें खोलीं।

स्वर्ण वलय और चमक रहा था।

Mareia ने उसे देखा।

और उसकी आँखों के भाव से समझ गई कि उसने भी उसे देख लिया है।

“Nerai,” उसने संपर्क जुड़ते ही कहा। “Davion परिवार के घर में अलग रखने का इंतज़ाम चाहिए।”

दूसरी ओर ख़ामोशी छाई रही।

“Jesair?”

Mareia ने जवाब नहीं दिया।

ज़रूरत ही नहीं थी।

“मैं आ रही हूँ।”

“नहीं,” Jesair बोल उठा।

Nerai ने उसे सुन लिया।

“मुझे मना करने की हिम्मत भी मत करना।”

“हो सकता है तुम ख़तरे से बाहर हो।”

“मेरी माँ ऑरेलियाई थी।”

“इसीलिए तो हमें कुछ मालूम नहीं है।”

“मैं आऊँगी।”

“Nerai।”

उसकी आवाज़ और धीमी थी।

“वहीं रहो जहाँ अब भी कुछ कर सकती हो।”

“तुम मेरे भाई हो।”

Jesair पल भर के लिए मुस्कराया।

“इसीलिए।”

Nerai ने संपर्क काट दिया।

वह दौड़ पड़ी थी।

Mareia ने Jesair को सँभालकर घर के उस हिस्से तक पहुँचाया जहाँ बीमारों को अलग रखने का इंतज़ाम था।

“तुम बाहर रहोगी,” उसने कहा।

“नहीं।”

“Mareia।”

उसने बस एक नज़र देखा।

Jesair समझ गया कि इससे आगे कुछ कहने का कोई अर्थ नहीं है।

“तुम अकेले नहीं जाओगे,” उसने कहा।

Jesair काँप उठा।

इस बार बुखार से नहीं।

वह वाक्य।

वह उसे जानता था।

जैसे बहुत दूर से चलकर वह उस तक आया हो।

किसी ऐसी जगह से, जहाँ वह कभी गया नहीं।

किसी ऐसे जीवन से, जो उसने कभी जिया नहीं।

एकांत कक्ष का दरवाज़ा बंद हो गया।

दोनों के बीच शीशा रह गया।

Mareia ने तीन उँगलियाँ पारदर्शी दीवार पर रखीं।

Jesair ने हथेली उठाई।

इससे पहले कि दूसरी तरफ़ से उसकी हथेली शीशे को छूती, Mareia को ठंड लगी।

फिर कमज़ोरी महसूस हुई।

उसने दीवार का सहारा लिया।

“Mareia?”

उसने सिर हिलाया।

वह कहना चाहती थी, कुछ नहीं हुआ।

मगर उसके घुटने जवाब दे गए।

स्वास्थ्य प्रणाली ने दूसरे व्यक्ति के शरीर का बढ़ा हुआ तापमान दर्ज किया।

कुछ ही मिनटों में वह बग़ल के एकांत कक्ष में लेटी थी।

बीच का दरवाज़ा खोलने की मनाही थी।

दो बिस्तर।

दो स्वर्ण वलय।

एक पारदर्शी दीवार।

सैंतीस मिनट बाद Nerai वहाँ पहुँची जहाँ से Auriola में प्रवेश बंद था।

प्रणाली ने उसे भीतर जाने की अनुमति नहीं दी।

उसने अपने अधिकार दिखाए।

उन लोगों को फ़ोन किया जिनके नाम से दूसरे दिनों में परत का हर दरवाज़ा खुल जाता था।

किसी चीज़ से फ़र्क़ नहीं पड़ा।

उसके सामने संगरोध की बाधा खड़ी थी।

उसके उस पार उसका भाई मर रहा था।

सड़क के ऊपर मृतकों की संख्या चमक रही थी।

2 999 999 997।

संख्या बदली।

2 999 999 998।

Nerai साँस रोके स्क्रीन देख रही थी।

2 999 999 999।

फिर—

3 000 000 000।

उसी सेकंड पूरे ग्रह पर साझा आँकड़ा बदल गया।

Elarion का एक तिहाई हिस्सा मर चुका था।

Nerai को Davion परिवार के घर से कॉल आई।

स्क्रीन पर उसने Jesair को देखा।

Mareia को।

और उनके बीच का शीशा।

विपत्ति को उसका नाम मिल गया था।

तिहाई आ गई थी।

बस अभी उसका काम पूरा नहीं हुआ था।

31. शीशे के उस पार

चौथे दिन Jesair मर गया।

स्वास्थ्य प्रणाली ने उस क्षण को पूरी सटीकता से दर्ज किया।

समय।

नब्ज़।

रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा।

तापमान।

हृदय की आख़िरी विद्युत गतिविधि।

जो कुछ मापा जा सकता था, उसने सब दर्ज कर लिया।

जो ज़रूरी था, वह नहीं।

एकांत कक्षों के माइक्रोफ़ोन हर वक़्त नहीं सुनते थे। बीमारों की गरिमा की रक्षा का यह पुराना नियम था। डॉक्टर ज़रूरत पड़ने पर संपर्क जोड़ सकता था। शरीर के जीवन-संकेत बदलते तो प्रणाली सचेत कर सकती थी। मगर किसी को यह हक़ नहीं था कि किसी इंसान के आख़िरी घंटों को सार्वजनिक रिकॉर्ड बना दे।

इसीलिए किसी को पता नहीं चला कि Jesair ने Mareia से क्या कहा।

Nerai ने बाद में वह दृश्य कई बार चलाकर देखा।

बिना आवाज़ के।

Jesair अब खड़ा नहीं हो सकता था।

बैठ भी नहीं सकता था।

वह शीशे के पास फ़र्श पर लेटा था।

दूसरी तरफ़ Mareia लेटी थी।

उनके चेहरों के बीच कुछ सेंटीमीटर की दूरी और एक ऐसी चीज़ थी जो वायरस को, स्पर्श को और एक आख़िरी आलिंगन को रोक सकती थी।

Jesair ने हाथ हिलाया।

इससे ज़्यादा ताक़त उसमें नहीं थी।

उसने हथेली फ़र्श पर रख दी।

Mareia ने तीन उँगलियाँ उठाईं।

Jesair के होंठ हिले।

एक छोटा-सा वाक्य।

शायद दो शब्द।

किसी ने नहीं सुने।

Mareia ने सुने।

और मुस्कराई।

बाद में लोगों ने उस मुस्कान के कई अर्थ निकाले।

मृत्यु की स्वीकृति।

मन का समझौता।

प्रेम की आख़िरी अभिव्यक्ति।

पर Nerai को उसमें हमेशा इससे भी कुछ विचित्र दिखा।

Mareia की मुस्कान बिछड़ती हुई स्त्री की मुस्कान नहीं थी।

एक क्षण को वह ऐसी स्त्री लग रही थी जिसने एक बहुत, बहुत लंबे अरसे के बाद किसी को पहचान लिया हो।

मानो Jesair के चेहरे के पीछे एक और चेहरा खुल आया हो।

मानो शीशे की दूसरी ओर एक पल को एकांत कक्ष नहीं, कोई दूर का बगीचा हो।

कोई और आकाश।

कोई और जीवन।

एक स्मृति, जिसे स्मृति बन पाने का वक़्त ही न मिला हो।

Jesair ने आँखें मूँद लीं।

उसकी हथेली शीशे के पास पड़ी रही।

Mareia उसे देखती रही।

सात घंटे।

फिर उसकी साँसें छोटी होने लगीं।

एक साँस।

ख़ामोशी।

एक साँस।

और लंबी ख़ामोशी।

और अंत में सिर्फ़ ख़ामोशी।

Jesair के सात घंटे बाद उसका दिल भी रुक गया।

Nerai Auriola की बंद सीमा के सामने अपनी सवारी के केबिन में बैठी थी।

उनसे कई किलोमीटर दूर।

Saira उसके बग़ल में बैठी थी।

उसने उसे छुआ नहीं।

यह भी नहीं कहा कि उसे अफ़सोस है।

कुछ वाक्य इतने छोटे पड़ जाते हैं कि कहना अपमान लगता है।

संपर्क जुड़ा और एक स्वास्थ्य अधिकारी दिखाई दिया।

“हमें तय करना है कि पार्थिव देहों का क्या किया जाए।”

Nerai ने उसकी ओर देखा।

आदमी ने नज़रें झुका लीं।

“क्षमा कीजिए। मैं जानता हूँ कि—”

“आप नहीं जानते।”

चुप्पी।

“क्या विकल्प हैं?”

"जैविक सुरक्षा के नियमों के मुताबिक़, उन्हें वहाँ से हटाए बिना तुरंत नष्ट कर देना उचित होगा। कुल-परिषदें चाहती हैं कि जैविक नमूने सुरक्षित रखे जाएँ। जनता अंत्येष्टि समारोह चाहती है।"

"जनता?"

"ख़बर बाहर चली गई है।"

Nerai ने नेटवर्क खोला।

Jesair Davion का निधन।

बाद में एक और ख़बर आई—

Mareia Lioren का निधन।

Nerai ने समाचार चैनल की आवाज़ चालू की। समाचार-वाचक Jesair की मृत्यु पर कुल-परिषदों की प्रतिक्रिया माँगने भी लगा था। Mareia के मामले में संपादकीय विभाग को अभी परिवार से पुष्टि नहीं मिली थी। संपर्क पर मौजूद स्वास्थ्यकर्मी ने उनके चिकित्सीय रिकॉर्ड के बारे में कुछ भी कहने से इनकार कर दिया।

"परिवार को अभी इतना वक़्त भी नहीं मिला है कि वह तय कर सके कि उसे क्या कहना है," उसने कहा। निजता के इस सवाल पर उसका भाई क्या जवाब देता, Nerai जानती थी। उसने चैनल को अपने बिना बोलते रहने दिया।

फिर तस्वीरें आईं।

Nitra के मंच पर Jesair।

बीमारों के बीच Jesair।

अपने आख़िरी संबोधन में Jesair।

अभिलेखागार में Mareia।

बगीचे में Mareia।

तीन उँगलियों से Jesair की कलाई थामे Mareia।

उनके शरीर अभी ठंडे भी नहीं पड़े थे और दुनिया उनसे एक कहानी गढ़ने लगी थी।

लोग उन्हें शहीद कहने लगे।

पुरानी दुनिया के आख़िरी ऑरेलियाई।

एक प्रमाण।

एक संकेत।

कुछ लोग उनकी मौत को हर उस बात के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर रहे थे जो Jesair ने कभी कही थी।

अगर उसके पास कोई वरदान था तो उसने ख़ुद को क्यों नहीं बचाया?

अगर वह असाधारण था तो Mareia को क्यों नहीं बचाया?

तीन अरब लोगों को क्यों नहीं बचाया?

Nerai ने स्क्रीन बंद कर दी।

“हम वहीं उनका दाह-संस्कार करेंगे।”

अधिकारी ने सिर हिलाया।

“और नमूने?”

“केवल उतने, जितने शोध के लिए चाहिए।”

“कुल-परिषदों की माँग है—”

“कोई पवित्र अवशेष नहीं रखेगा।”

उसकी आवाज़ धीमी थी।

“उनकी देहों का मालिक कोई नहीं होगा।”

कुछ पल बाद अधिकारी ने सिर हिलाया।

“और समारोह?”

Nerai ने वाहन के सामने वाले शीशे से उस तरफ़ देखा जहाँ Davion परिवार का घर था, हालाँकि वहाँ से वह उसे देख नहीं सकती थी।

“बाद में।”

मगर वह ‘बाद में’ बहुत दिनों तक नहीं आया।

लोग अब भी मर रहे थे।

अस्पतालों में अब भी पूरी-पूरी रात रोशनी रहती थी।

परिवहन यान अब भी देहों को ऐसी जगहों पर ले जाते थे जहाँ कोई उनकी राह नहीं देख रहा था।

महामारी तीन अरब दस करोड़ से भी अधिक लोगों को ले गई।

तब कहीं वक्र की ढलान बदलनी शुरू हुई।

कोई एक चमत्कारी दवा नहीं बनी।

दर्जनों छोटी-छोटी जीतें मिलीं।

शरीर की प्रतिक्रिया को ज़्यादा असरदार ढंग से क़ाबू करना।

नाज़ुक घंटों की बेहतर पहचान।

औषधीय पदार्थों के नए संयोजन।

पूर्वानुमान के मॉडल।

सबसे ज़्यादा जोखिम उठाने वालों की हिफ़ाज़त के तरीक़े।

हर जीत ने कुछ लोगों को बचाया।

मिलकर उन्होंने मौत का सिलसिला रोक दिया।

जब नए मामलों की संख्या पहली बार आधी हुई, किसी ने उत्सव नहीं मनाया।

जब वह दसवें हिस्से पर आ गई, चौकों पर बोतलें नहीं खोली गईं।

जब आख़िरी बड़े अस्पताल ने घोषणा की कि उसके पास फिर से ख़ाली बिस्तर हैं, वहाँ की निदेशक घोषणा के बाद अपने दफ़्तर में बंद होकर घंटे भर रोती रही।

Elarion बच गया।

ख़बरों में यही लिखा था।

मगर किसी ग्रह के पास कोई दिल नहीं होता जिसकी धड़कन मापी जा सके।

बचे हुए लोगों को ही आगे जीना था।

और लगभग हर तीसरा इंसान वहाँ नहीं था।

32. वे जो आते हैं

कुछ मौतें होती हैं जिन पर एक जीवन ख़त्म होता है।

और फिर कुछ मौतें होती हैं जिन पर केवल एक नाम ख़त्म होता है।

Jesair के मरने के वक़्त Elarion को अभी इसका भान भी नहीं था कि उसके बाद क्या-क्या बाक़ी रहेगा।

उसकी देह उन अरबों देहों में से एक थी जिन्हें तिहाई बिना पूछे ले गई।

उन कमरों में उसकी आवाज़ सुनाई देना बंद हो गई जहाँ लोग सत्य, मूल्य और शक्ति पर बहस करते थे।

उसकी बाँहों ने फिर किसी को नहीं घेरा।

उसकी आँखें फिर किसी सुबह में नहीं खुलीं।

Elarion के लिए वह मर चुका था।

और यह सच था।

बस पूरा सच नहीं था।

ब्रह्मांड नामों से भी पुराना है।

सरहदों से पुराना।

राष्ट्रों से पुराना।

उन ग्रहों से पुराना जिन्हें अपनी तरुणाई में विश्वास होता है कि उनका इतिहास समूचे अस्तित्व के केंद्र में है।
संसार बहुत थे।

कुछ नीले तारों की परिक्रमा करते थे।

दूसरे बूढ़े सूर्यों की लाल रोशनी में जीते थे।

कुछ में जीवन किलोमीटरों गहरे महासागरों के नीचे छिपा था और पूरी की पूरी सभ्यताओं ने कभी तारे नहीं देखे थे।
कहीं ऐसे ऊँचे शहर खड़े हो गए थे कि उनकी ऊपरी मंज़िलें उस आकाश से अलग आकाश जानती थीं जिसे नीचे की गलियाँ देखती थीं।

कुछ सभ्यताओं ने कभी धन का आविष्कार नहीं किया।

दूसरों ने उसके लिए अपना लगभग सब कुछ बलि चढ़ा दिया।

लेकिन हर सभ्यता कभी-न-कभी एक ऐसी हद पर पहुँची जिसे और बड़ी मशीन से पार नहीं किया जा सकता था।

न और तेज़ जहाज़ से।

न ऊर्जा के किसी नए स्रोत से।

न ज्ञान के एक और पुस्तकालय से।

क्योंकि सारी कठिनाइयाँ बुद्धि की कमी से नहीं जन्मतीं।

कुछ उससे जन्मती हैं जो बुद्धि अभी अपने बारे में नहीं समझ पाई है।

और तब, कभी-कभी, कोई जन्म लेता था।

राजा बनकर लगभग कभी नहीं।

वह किसी कारीगर की संतान हो सकता था।

किसी शिक्षक की बेटी।

किसी ऐसी स्त्री का बेटा जिसका नाम इतिहास ने सहेजा नहीं।

कभी वह ग़रीबों के बीच आता।

कभी विद्वानों के बीच।

कोई चौराहों पर बोलता था।

कोई बरसों प्रायः मौन रहता और बस कुछ वाक्य पीछे छोड़ जाता।

कभी उसके शब्द उसी के जीते-जी दुनिया को बदल देते।

कभी उन्हें सदियाँ लग जातीं।

नाम बदलते थे।

चेहरे बदलते थे।

भाषाएँ बदलती थीं।

उनके ऊपर के तारे भी।

दायित्व लगभग वही रहता था।

दुनिया को एक क़दम आगे ले जाना।

मंज़िल तक नहीं।

बस कुछ आगे।

कोई एक मनुष्य पूरे ग्रह को नहीं बचा सकता था।

अगर दूसरों के फ़ैसले के बिना एक अकेला इंसान दुनिया को बचा सकता, तो वह स्वतंत्र जीवों की दुनिया नहीं होती।

इसलिए वे बस दिशा दिखा सकते थे।

एक ऐसा विचार कह सकते थे जिसे फिर पूरी तरह भुलाया न जा सके।

एक दरवाज़ा खोल सकते थे।

और बाक़ियों को यह फ़ैसला करने दे सकते थे कि वे उससे होकर गुज़रेंगे या नहीं।

किसी संसार में पहली बार यह कहना ज़रूरी था कि दूसरे की कमज़ोरी बलवान को उसका मालिक होने का हक़ नहीं देती।

किसी और में, यह कि ज्ञान का कोई स्वामी नहीं होता।

कहीं अपने देवताओं की अलग-अलग छवियों के लिए पूरी क़ौमें एक-दूसरे को मार रही थीं और उनके बीच कोई यह विचार लेकर आया कि जिस देवता को इंसानी नफ़रत चाहिए, वह शायद पवित्र शब्दों का जामा पहनी हुई इंसानी नफ़रत ही हो।

कहीं लोगों को क्षमा करना सीखना था।

कहीं संदेह करना।

और कुछ संसारों पर ऐसा वक़्त आया जब कहना ज़रूरी हो गया कि आँखों से ओझल शक्ति देर-सवेर अपनी ही सेवा करने लगती है।

Elarion ऐसा ही एक ग्रह था।

Jesair एक संपूर्ण दुनिया बनाने का नुस्ख़ा लेकर नहीं आया था।

उसने बस कुछ वाक्य ऐन उस वक़्त कहे जब Elarion उन्हें सुनना शुरू कर सकता था।

कि मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए।

कि शक्ति को उन लोगों की निगाह सहनी होगी जिनके ऊपर वह खड़ी है।

कि स्वामित्व ज़िम्मेदारी का निशान भी है।

कि किसी इंसान की संपत्ति को उस दुनिया से पूरी तरह अलग नहीं किया जा सकता जिसने उसका बनना संभव किया।

वे आज्ञाएँ नहीं थीं।

वे बीज थे।

और बीजों के लिए यह ज़रूरी नहीं कि उन्हें बोने वाला इंसान पेड़ की छाया में बैठ पाए।

लेकिन Jesair मरना नहीं चाहता था।

तिहाई वह क़ीमत नहीं थी जो ब्रह्मांड ने उसके संदेश के बदले माँगी थी।

न ही Mareia की मौत किसी आदर्श समीकरण का हिस्सा थी।

वह जीना चाहता था।

वह उसके साथ बूढ़ा होना चाहता था।

शायद किसी दिन Davion परिवार के घर में जागना चाहता था और पहली बार यह पाना चाहता था कि दरवाज़े के बाहर कोई उससे जवाब माँगने को खड़ा नहीं है।

शायद किसी मामूली-सी बात पर उससे झगड़ना चाहता था।

शायद कुछ घंटे बाद उस बात को भुला देना चाहता था।

शायद बगीचे के पास बैठे रहना चाहता था जब तक उन दोनों के हाथ बूढ़े न हो जाएँ।

यह सब उससे छीन लिया गया था।

विचार को उसकी मृत्यु की ज़रूरत नहीं थी।

मगर जब वह मर गया, वह विचार दूसरों के हाथों में रह गया।

और उसके साथ एक सवाल।

क्या उन्होंने उस इंसान से प्रेम किया था?

या जो वह कहने की कोशिश कर रहा था, उसे भी समझा था?

अगर सब कुछ Jesair की मौजूदगी पर टिका था तो सब कुछ उसी के साथ शीशे के पास मर सकता था।

लेकिन अगर उसके शब्दों का कुछ अंश दूसरों के भीतर उतर गया था तो उनके जीवित रहने के लिए अब उसकी साँस ज़रूरी नहीं थी।

तीस प्रकाश-वर्ष दूर एक छोटा नीला ग्रह अपने तारे की परिक्रमा कर रहा था।

अपनी कहानी में वह कुछ कम उम्र का था।

उसके लोग अभी Elarion को नहीं जानते थे।

सेतु की उन्हें कोई ख़बर नहीं थी।

न Auriola की।

न Nerai की।

न उस आदमी की जिसने पारदर्शी शीशे के पास फ़र्श पर अपनी हथेली रखी थी।

एक दिन वहाँ एक और मनुष्य जन्म लेने वाला था।

उसे यीशु के नाम से पुकारा जाना था।

उसे धूल भरे रास्तों पर उन गाँवों के बीच चलना था जिन्हें ब्रह्मांड की ऊँचाई से ढूँढ़ पाना भी मुश्किल होता।

उसे मछुआरों के साथ खाना था।

बीमारों को छूना था।

उन लोगों से बात करनी थी जिनसे दूसरे मुँह फेर लेते थे।

उसे शक्तिशाली लोगों से भी मिलना था और उनसे भी जिनके पास लगभग कुछ नहीं था।

बिना सेना के।

बिना किसी पद के।

बिना राज्य की मुहर के।

ऐसे हाथ लिए जिनसे रोटी तोड़ी जा सकती थी।

और फिर भी उसके बाद कुछ ऐसा रह जाना था जो साम्राज्यों से अधिक जिएगा।

कि तुम्हारे सामने खड़े इंसान का तब भी अपना मूल्य है जब उसके पास तुम्हें देने को कुछ नहीं है।

कि दया का स्थान क़ानून के अंधे पालन से ऊँचा हो सकता है।

कि महानता का अर्थ सेवा हो सकता है।

कि शत्रु का हमेशा शत्रु बने रहना ज़रूरी नहीं।

आने वाली सदियों में लोग इस बात पर बहस करेंगे कि वह कौन था।

उसके लिए उपासनागृह बनाएँगे।

उसके चेहरे के चित्र बनाएँगे।

हर क़ौम उसे अपना थोड़ा-सा चेहरा देगी।

कुछ लोग उसमें ईश्वर देखेंगे।

कुछ एक नबी।

कुछ एक शिक्षक।

और ऐसे भी होंगे जो उसके नाम पर ठीक वही करेंगे जिसका उलटा उसने सिखाया था।

क्योंकि बड़े विचार इतिहास में सीधी राह नहीं चलते।

एक पीढ़ी उन्हें शब्द देती है।

अगली उन्हें अपनी ज़रूरतों के मुताबिक़ मोड़ लेती है।

उससे अगली उन्हें फिर खोज निकालती है।

और सदियों बाद जो बात कभी किसी एक इंसान का ख़तरनाक सपना लगती थी, वह लाखों लोगों के लिए इतनी स्वाभाविक हो सकती है कि उस पर सोचना भी न पड़े।
संसार ऐसे ही आगे बढ़ते हैं।

एक-एक सीढ़ी चढ़कर।

किन्हीं दो सीढ़ियों के बीच कभी ऐसे लोग आते हैं जिन्हें बाद में नबी कहा जाता है।

उद्धारक।

मनीषी।

सुधारक।

विधर्मी।

पागल।

ब्रह्मांड को उन सबके लिए एक ही नाम की ज़रूरत नहीं थी।

वे ऐसे दूतों जैसे थे जो कोई चिट्ठी लेकर नहीं चलते।

वे ख़ुद चिट्ठी थे।

मगर जिस दुनिया में वे आए थे, उसके अपने हो सकें, इसके लिए उन्हें कुछ समय तक सब भुलाना पड़ता था।

अगर वे सब कुछ जानते तो उनका जीवन मानवीय जीवन नहीं होता।

वह एक भेंट भर होती।

इसीलिए उन्हें दर्द महसूस होता था।

भूख।

डर।

अकेलापन।

चाह।

क्रोध।

प्रेम।

संदेह।

वे असफल हो सकते थे।

कुछ ऐसा कह सकते थे जिसका उन्हें बाद में अफ़सोस हो।

वे जीते रहने की इच्छा रख सकते थे।

क्योंकि किसी दुनिया के जीवों के अनुभव के भीतर से उनसे तब तक कोई बात नहीं कर सकता जब तक वह कुछ समय के लिए ही सही, उन्हीं में से एक न हो जाए।

और जब उनका जीवन पूरा होता, देह उस ग्रह के पास रह जाती।

नाम इतिहास के पास।

शब्द लोगों के पास।

जो कुछ और गहरे छिपा था, वह आगे चलता रहा।

ऐसे जीवनों के बीच का अंतराल पंचांग से नहीं नापा जाता था।

कोई शरीर अगली सुबह की बाट नहीं जोहता था।

कोई हृदय धड़कनें नहीं गिनता था।

एक ग्रह पर हज़ारों साल बीत सकते थे, तब कहीं किसी दूसरे पर वह घड़ी पकती थी जिसमें प्रवेश किया जा सके।

इस बीच कहीं दूर कोई सभ्यता जन्म ले रही होती थी।

उसने आग खोजी।

फिर लिपि।

ज़मीन बाँटी।

क़ानून बनाए।

मंदिर खड़े किए।

हथियार बनाए।

पैसे का आविष्कार किया।

और काफ़ी वक़्त बीत जाने पर वह यक़ीन करने लगी कि जिस तरह उसने दुनिया की व्यवस्था की है, दुनिया को व्यवस्थित करने का वही एक रास्ता है।
यहाँ तक कि वह अपनी सीमा के क़रीब आ पहुँची।

तब यात्रा फिर से शुरू हो सकती थी।

दूसरा तारा।

दूसरा ग्रह।

दूसरी देह।

दूसरा नाम।

दायित्व भी वही हो, यह ज़रूरी नहीं था।

प्रतिशोध में डूबती दुनिया को क्षमा की बात सुनने की ज़रूरत थी।

जो दुनिया आज्ञापालन को ही अच्छाई समझती थी, उसे संदेह की ज़रूरत थी।

मनमानी सत्ता के नीचे कुचली हुई सभ्यता को व्यक्ति के अधिकार की रक्षा चाहिए थी।

और जिस संसार के लोग यह भूल चुके थे कि वे दूसरों की बदौलत ही जीवित हैं, उसे शायद एक दिन समूचे समाज के प्रति अपना कर्तव्य याद दिलाने की ज़रूरत पड़ती।
शब्द बदलते थे।

दिशा में कुछ साझा था।

डर से समझ की ओर।

हिंसा से सहयोग की ओर।

छिपी हुई शक्ति से जवाबदेही की ओर।

अलग-थलग होने की धारणा से इस बोध की ओर कि कोई भी जीव अपने आप जन्म नहीं लेता।

Jesair उन्हीं में से एक था।

शायद कभी उसका कोई और नाम रहा हो।

शायद किसी ऐसे ग्रह के आकाश के नीचे खड़े होकर, जिसका अस्तित्व बहुत पहले मिट चुका है, उसने उन प्राणियों से बात की हो जिनके चेहरों को Elarion या पृथ्वी का कोई मनुष्य चेहरा तक न कह पाता।
शायद वहाँ उसने बिलकुल अलग वाक्य कहा हो।

उसी यात्रा का कोई और अंश।

और शायद छोटे नीले ग्रह पर उसकी यात्रा अभी शुरू होनी बाक़ी थी।

एक दूसरी देह में।

उस नाम के साथ जिसकी झलकियाँ उसे कभी-कभी पहले ही लौट आती थीं, हालाँकि वह उनका अर्थ नहीं जानता था।

आत्मा को हस्ताक्षर की ज़रूरत नहीं होती।

हस्ताक्षर इतिहास को चाहिए।

और शायद कुछ आत्माएँ संसारों से होकर अकेली नहीं गुज़रतीं।

कुछ निकटताएँ नाम मिट जाने पर भी बची रहती हैं।

पहले वे बस किसी अजनबी के लिए अनोखे विश्वास के रूप में लौटती हैं।

किसी स्मृति के बिना बसे शोक की तरह।

हाथ की उस हरकत की तरह जो समझ से पहले हो जाती है।

कलाई पर तीन उँगलियाँ।

एक वाक्य जो इंसान के यह समझने से पहले निकल जाए कि उसने उसे क्यों कहा।

अकेले मत जाना।

Mareia की आख़िरी मुस्कान Nerai के पास एक सवाल की तरह रह गई।

रिकॉर्डिंग से पता नहीं चल सकता था कि Jesair ने क्या कहा था।

न ही यह पता चल सकता था कि आख़िरी पल में Mareia ने क्या देखा था।

बस एक स्त्री की छवि रह गई, जो मरते हुए आदमी को देखकर ऐसे मुस्कराई थी मानो अनंत समय बाद उसकी याद लौट आई हो।
जब Jesair का दिल धड़कना बंद हुआ, तारों ने अपने रास्ते नहीं बदले।

आकाश नहीं खुला।

Elarion पर कोई निशान प्रकट नहीं हुआ।

ग्रह अपनी परिक्रमा करता रहा।

शहर अपने मृतक गिनते रहे।

घरों की खिड़कियों के पास बर्तन रखे रह गए।

खूँटियों पर कपड़े।

अधपढ़ी किताबें।

बिस्तर, जिनसे फिर कोई सुबह उठकर खड़ा नहीं हुआ।

और फिर भी कहीं कुछ हिला था।

लोगों के भीतर।

Jesair के शब्द उसके बिना फैलने लगे।

कुछ ने उन्हें बिगाड़ दिया।

कुछ ने उन्हें आसान बना लिया।

कुछ ने उनमें से बस उतना चुन लिया जितना उनके काम का था।

कुछ ने उनमें ऐसे निहितार्थ देखे जिन पर Jesair को ख़ुद अंत तक सोचने का समय नहीं मिला था।

अपने रचयिता से अधिक जीने वाले हर विचार का यही भाग्य है।

वह उसका नहीं रह जाता।

उसके अध्ययनकक्ष में दस्तावेज़ बचे रह गए।

उनमें जीवितों के हिस्से का प्रस्ताव भी था।

हाशियों में टिप्पणियाँ।

बिना जवाब के सवाल।

ख़ाली जगहें।

दुनिया को उस इंसान से बातचीत जारी रखना सीखना था जिसकी कुर्सी ख़ाली रह गई थी।

और कहीं बहुत दूर, एक ऐसे तारे के पास जिसे Elarion के किसी बाशिंदे ने कभी नहीं देखा था, एक और ग्रह परिक्रमा कर रहा था।

उसके महासागर गहरे रंग की धातु जैसे थे।

रात में उनके ऊपर तीन चाँद चलते थे।

स्थलखंडों पर अभी पहले शहर आकार ले रहे थे।

उनके निवासियों ने लिपि खोज ली थी।

व्यापार करने लगे थे।

ज़मीन बाँटने लगे थे।

वे धीरे-धीरे दो हिस्सों में बँटते जा रहे थे—एक वे जो मालिक हैं, दूसरे वे जो हुक्म मानते हैं।

उनके सामने अभी हज़ारों साल थे।

उनकी घड़ी अभी नहीं आई थी।

ब्रह्मांड को जल्दी नहीं थी।

मगर एक दिन उनके बीच एक बच्चा जन्म लेगा।

उसे एक नाम मिलेगा जो Elarion पर कभी नहीं सुनाई देगा।

पृथ्वी पर भी नहीं।

वह हँसेगा।

रोएगा।

ग़लतियाँ करेगा।

शायद प्रेम में पड़ेगा।

शायद उसे मृत्यु से डर लगेगा।

और एक दिन वह एक वाक्य कहेगा जिसके बाद उसकी दुनिया पूरी तरह वैसी नहीं रह सकेगी जैसी वह थी।

वहाँ कोई Jesair को नहीं जानेगा।

कोई यीशु को नहीं जानेगा।

और इसकी ज़रूरत भी नहीं होगी।

महान आत्माएँ अपना नाम बचाने के लिए ब्रह्मांड में यात्रा नहीं करतीं।

नाम संसारों के होते हैं।

वे अपने साथ सिर्फ़ दिशा लिए चलती हैं।

और जब एक जगह उनका काम पूरा हो जाता है तो वे ऊपर नहीं जातीं।

न कहीं दूर।

बस आगे।

भाग IV — तिहाई के बिना Elarion

33. जिन हाथों की कमी थी

जब वह वक्र रेखा आख़िर थमी, कक्षा से देखने पर Elarion लगभग पहले जैसा ही लगता था।

समुद्र अपनी जगह पर थे।

महाद्वीप हिले नहीं थे।

रात को शहर जगमगाते थे।

परिवहन के गलियारे अब भी ग्रह के ऊपर रोशनी की महीन नसों का जाल बुनते थे।

Thaeron अपनी परिक्रमा करता रहा।

कोई बहुत दूर से ग्रह को देखता तो शायद पहचान भी नहीं पाता कि यहाँ कोई विपत्ति आई थी।

उसे क़रीब आना पड़ता।

किसी एक मेज़ के पास।

एक बिस्तर के पास।

एक काम की जगह के पास।

क्योंकि लगभग हर तीसरा इंसान ग़ायब था।

सबसे पहले घरों में उनकी कमी महसूस हुई।

बिस्तर का एक आधा हिस्सा ख़ाली।

एक प्याला जो पूरा पिया नहीं गया।

एक कपड़ा उसी जगह पड़ा जहाँ से अब कोई उसे उठाने नहीं आया।

एक संदेश जिस पर लिखा रह गया कि वह पहुँचा नहीं।

उन बच्चों के खिलौने जिनसे उनके माता-पिता कई दिनों तक कह ही नहीं सके कि अब उन्हें सुलाने कोई नहीं आएगा।

फिर दुनिया को भी मृतकों की कमी खलने लगी।

उत्तरी Aménia के एक अस्पताल में ऑक्सीजन नेटवर्क सँभालने वाले तीन लोगों में से दो की मौत हो गई।

नेटवर्क अपने आप में चालू था।

उसे ऑक्सीजन बनानी आती थी।

उसे शुद्ध करना।

उसका वितरण करना।

खपत का पहले से अनुमान लगाना।

मगर क्षमता में कोई बड़ा बदलाव करने के लिए क़ानून के मुताबिक़ दो लाइसेंसधारी विशेषज्ञों की मंज़ूरी चाहिए थी।

एक मर चुका था।

दूसरा बेहोश पड़ा था।

तीसरा चालीस घंटे से बिना सोए काम कर रहा था।

उससे एक चूक हुई।

Sarur के गोदामों में कई महीनों के लिए पर्याप्त अनाज रखा था।

चालकहीन वाहन कतारों में खड़े थे।

उन्हें रास्ता मालूम था।

वे बंद रास्तों की स्थिति परख सकते थे।

दूसरा मार्ग ढूँढ़ सकते थे।

लेकिन किसी इंसान की मंज़ूरी के बिना माल पहुँचाने की मंज़िल नहीं बदल सकते थे।

जिस आदमी को बदलाव की मंज़ूरी देनी थी, वह मर चुका था।

और इस तरह एक शहर का पेट भरने के लिए तैयार मशीनें उस इंसान के दस्तख़त का इंतज़ार करती रहीं जिसका अब कोई हाथ नहीं था।

Thaeron के एक गुंबद में एक ऐसी स्त्री मर गई जो अकेली जानती थी कि पानी को दोबारा इस्तेमाल लायक बनाने की प्रणाली में बरसों पहले क्या-क्या फेरबदल हुए थे।

इसका लिखित ब्योरा मौजूद था।

पूरा नहीं था।

रखरखाव की कृत्रिम बुद्धि जानती थी कि तीन वाल्व नक़्शे में दिखाए गए ढंग से अलग व्यवहार करते हैं।

वह नहीं जानती थी, क्यों।

वह स्त्री जानती थी।

वर्षों से अपने आप से कहती आई थी कि एक दिन इसे लिख देगी।

अब तक ज़रूरत पड़ने पर एक सहकर्मी को समझा देती थी।

वह सहकर्मी उससे एक हफ़्ते पहले मर गया।

तिहाई ने Elarion से सिर्फ़ देहें नहीं छीनीं।

उसने स्मृति का एक विशाल अंश छीन लिया जो कभी मशीनों में रखा ही नहीं गया था।

हाथों की स्मृति।

आदतों की स्मृति।

उस इंसान की स्मृति जो सुबह प्रणाली के पास आकर बिना सोचे तीन छोटे-से काम कर देता था क्योंकि बीस साल से उसे मालूम था कि इनके बिना शाम तक कुछ बिगड़ जाएगा।

जीवित लोगों ने पहले मृतकों की जगह लेने की कोशिश की।

डॉक्टरों ने गोदामों में हाथ बँटाया।

शिक्षकों ने खाने का सामान पहुँचाया।

अधिकारियों ने चिकित्सा इकाइयों की सफ़ाई की।

शोधकर्ताओं ने अंत्येष्टि सेवाओं में हाथ बँटाया।

इंजीनियर ऊर्जा केंद्रों के पास सोए।

पूरे-पूरे शहर उस दशा में काम कर रहे थे जिसे कभी आपातस्थिति कहा जाता।

तिहाई के बाद यह भी स्पष्ट नहीं रह गया था कि आपातस्थिति किसे कहेंगे।

सदमे से जूझते छह अरब से भी कम लोगों से यह नहीं कहा जा सकता था कि वे नौ अरब का काम भी करें और जिन्हें प्यार करते थे, उन्हें दफ़नाएँ भी।

इसलिए संकट परिषद ने वह किया जिस पर महामारी से पहले दशकों से बहस होती आई थी।

उसने हर क़दम पर इंसानी मंज़ूरी की अनिवार्यता हटानी शुरू की।

सबसे पहले खाद्य आपूर्ति में।

फिर ऊर्जा में।

परिवहन में।

बुनियादी उत्पादन में।

शहरों के रखरखाव में।

कृत्रिम बुद्धि प्रणालियों को उत्पादन योजनाएँ बदलने, सामग्री इधर-उधर भेजने और उपलब्ध क्षमता के कुछ हिस्से बाँटने का अधिकार मिल गया। हर फ़ैसले पर उन्हें किसी इंसान का इंतज़ार नहीं करना था।
जिस दस्तावेज़ से यह मुमकिन हुआ उसका नाम ही लगभग आधी पंक्ति लंबा था।

लोग उसे बस इतना कहते थे—

काम जारी रखने की अनुमति।

क्योंकि मशीनों को यही तो मिला था।

जहाँ इंसान नहीं था, वहाँ काम जारी रखने की अनुमति।

अलग-अलग प्रणालियों को जोड़ने वाले दल की अगुआई Saira कर रही थी।

उसके सामने पूरे ग्रह के उत्पादन का नक़्शा था।

तिहाई से पहले ऐसा नक़्शा हो ही नहीं सकता था।

राज्य अपने ऊर्जा भंडार का भेद सँभालकर रखते थे।

उद्योग अपनी उत्पादन क्षमता का।

वितरक अपने गोदामों का।

हर कोई यथार्थ के किसी हिस्से को अपनी रणनीति का रहस्य मानता था।

तिहाई के बाद उन्होंने आँकड़े खोलने शुरू किए।

किसी बोधोदय के कारण नहीं।

इसलिए कि उनके बिना प्रणाली को मालूम नहीं होता था कि मदद किसे चाहिए।

“पश्चिमी Vasýria में पोषण मिश्रण ज़रूरत से ज़्यादा हैं,” विश्लेषक ने कहा।

“कहाँ इनकी ज़रूरत है?”

“उत्तर-पूर्व में। अस्पतालों के तीन क्षेत्रों में।”

“परिवहन?”

“क्षमता मौजूद है।”

“तो भेज दीजिए।”

विश्लेषक वहीं खड़ा रहा।

“एक दिक़्क़त है।”

Saira ने नज़र उठाई।

“क्या?”

“रास्ता तीन राज्यों से होकर जाता है।”

“तो?”

“चार मुद्राएँ।”

Saira पीछे टिक गई।

“तीन राज्य। चार मुद्राएँ।”

“माल ढोने वाली कंपनी अपना बिल Therinith से जारी करती है।”

“क्यों?”

“वहाँ की कर व्यवस्था।”

Saira ने पल भर के लिए आँखें मूँद लीं।

“बेशक।”

चार पक्ष चार मुद्राओं में हिसाब रखते थे। निपटान केंद्र पलक झपकने से भी कम समय में रक़म बदल सकते थे। अड़चन थी अलग-अलग गारंटी नियमों और अस्पताल के सीमित अधिकार की, जिनसे अंतिम मंज़ूरी रुकी थी।

खाना मौजूद था।

वाहन मौजूद थे।

रास्ते मौजूद थे।

लोग भूखे थे।

खेप रवाना होने का अनुमानित समय—तीस घंटे।

“सेतु,” Saira ने कहा।

विश्लेषक ने उसकी ओर देखा।

“अस्पताल को रोज़मर्रा का काम चलाने के लिए एलार स्वीकार करने का अधिकार नहीं है।”

“उसे आपातकालीन छूट मिली है।”

“चिकित्सा सामग्री के लिए।”

Saira ने रिकॉर्ड पर नज़र डाली।

“जिस इंसान की बिना खाए जान चली जाएगी, उसके लिए खाना आपके हिसाब से क्या है?”

विश्लेषक चुप रहा।

“इसे सेतु के ज़रिए भेज दीजिए।”

“छूट को मंज़ूरी कौन देगा?”

Saira ने मेज़ के पास की ख़ाली कुर्सी देखी।

अभी नौ दिन पहले उस पर उपप्रमुख बैठा था।

“मैं।”

पाँच मिनट में भुगतान हो गया।

निर्माता को ऑर्डर दिखा।

माल ढोने वाली कंपनी को क़ीमत।

बीमा कंपनी को जोखिम।

अस्पताल को सामान पहुँचने का अनुमानित समय।

जनता को दिखा कि कितना चुकाया गया और किसे।

मरीज़ों के नाम नहीं दिखे।

पुरानी प्रणाली जितनी देर में पहली मुद्रा बदल पाती, उससे पहले चालकहीन वाहन रवाना हो चुके थे।

ऐसे मामले बढ़ने लगे।

सेतु धीरे-धीरे संकट के समय के भुगतान साधन से स्वचालित अर्थव्यवस्था के तंत्रिका तंत्र में बदल रहा था।
मशीनों को चीज़ें बनानी आती थीं।

मगर उन्हें जानना था कि बनाना क्या है।

वे रसद इधर से उधर भेज सकती थीं।

उन्हें जानना था कि सचमुच कहाँ उसकी कमी है।

वे सबसे कारगर रास्ता तय कर सकती थीं।

उन्हें जानना था कि ऑर्डर वास्तव में दिया गया है या नहीं, और उसकी ज़िम्मेदारी किसकी है।

मूल्य का प्रवाह उन ज़रियों में एक बन गया जिनसे मशीनें मनुष्यों की दुनिया को पढ़ती थीं।

और जब वह प्रवाह दिखाई देने लगा तो ऐसी चीज़ें उभरने लगीं जो अब तक अलग-अलग पड़ी थीं।

कमी के दिनों में एक थोक व्यापारी ने दवाएँ जारी करना बंद कर दिया।

उसने कहा कि वह परिवहन की प्रतीक्षा कर रहा है।

सेतु ने दिखाया कि गोदाम माल भेजने के लिए तैयार थे।

उसने कहा कि अस्पताल पर्याप्त क़ीमत देने को तैयार नहीं थे।

रिकॉर्ड ने उलटा दिखाया।

इसी बीच उसके मालिकाना समूह से जुड़ी कंपनियाँ ऐसे अनुबंध ख़रीद रही थीं जिनका मूल्य संकट के लंबा खिंचने के साथ बढ़ता था।

एक और खाता भंडारों को अनिवार्य रूप से खोलने के विरुद्ध चल रहे अभियानों को पैसा दे रहा था।

अकेले इनमें से हर तथ्य से बहुत कम सिद्ध होता था।

एक साथ रखे तो वे एक अलग कहानी कहते थे।

भंडार खोल दिए गए।

उस फ़ैसले के पीछे एक नाम था।

और उसे करने वाला जानता था कि उसका फ़ैसला दर्ज होगा।

कुछ महीने बाद स्वचालित कारख़ाने लगभग उतना ही बनाने लगे जितना तिहाई से पहले बनाते थे।

फिर उससे भी ज़्यादा।

मशीनें बीमार नहीं पड़ीं।

ऊर्जा क्षेत्रों को बुखार नहीं आया।

रोबोटों की उत्पादन कतारों ने माता-पिता नहीं खोए।

उत्पादन क्षमता का एक बड़ा हिस्सा महामारी से अछूता बच गया था।

कमी मुख्यतः उसके इर्द-गिर्द लिए जाने वाले फ़ैसलों की थी।

दस्तख़तों की।

अनुमतियों की।

अलग-अलग प्रणालियों में उसी ब्योरे की बार-बार की जाने वाली पुष्टि की, क्योंकि क़ानून ने उनके बीच ब्योरा साझा करने की मनाही कर रखी थी।

उन जाँचों की जिनका अकेला उद्देश्य यह प्रमाणित करना था कि पिछली जाँच किसी इंसान ने की थी।

तिहाई ने लोगों को इतनी निर्दयता से हटा दिया था कि दिखने लगा कि अर्थव्यवस्था के किन हिस्सों को सचमुच उनकी ज़रूरत थी।

आर्थिक परिषदों ने पहले आँकड़े जारी किए तो समाज हिल गया।

काम करने वालों की संख्या एक तिहाई से भी ज़्यादा घट चुकी थी।

उत्पादन में गिरावट बस कुछ प्रतिशत की थी।

कुछ क्षेत्रों में तो उत्पादन पहले से बढ़ चुका था।

इन संख्याओं में एक असहज सवाल छिपा था।

अगर काफ़ी कम इंसानी मेहनत से समाज लगभग उतनी ही चीज़ें बना पा रहा था, तो अब तक जिन तमाम नौकरियों को उसने अनिवार्य मान रखा था, उनका ठीक-ठीक काम क्या था?

जवाब असहज करने वाला था।

कुछ काम इसलिए पैदा नहीं हुआ था कि कोई ज़रूरी चीज़ बनाई जाए।

वह इसलिए पैदा हुआ था कि इंसान को पैसे पाने का हक़ मिल सके।

पुरानी प्रणाली ने जीने के साधनों को उत्पादन में मिली जगह से बाँध दिया था।

अब उत्पादन कुछ लोगों के बिना भी चल सकता था।

मगर बिना आमदनी के लोग नहीं चल सकते थे।

उद्यम मृतकों को मज़दूरी नहीं देते थे।

परिवार अपने कमाने वाले खो रहे थे।

लाखों और लोगों ने बच्चों, बीमारों और बुज़ुर्गों की देखभाल के लिए रोज़गार छोड़ दिया।

दूसरों की जगह उन प्रणालियों ने ले ली जिनके लिए महामारी ने दरवाज़े खोले थे।

उत्पादन बढ़ रहा था।

घरेलू खातों में रक़म घट रही थी।

Saira ग्रह भर का एक पूर्वानुमान लेकर Nerai के पास आई।

“अगर हमने कुछ नहीं किया तो तीन महीने के भीतर आधे से ज़्यादा परिवार आपात सहायता पर निर्भर होंगे।”

वे उस कमरे में बैठी थीं जो कभी Jesair का अध्ययनकक्ष था।

एक हफ़्ता पहले Davion परिवार के घर से संगरोध हटाया गया था।

मशीनों ने घर साफ़ कर दिया था।

चीज़ें वहीं छोड़ दी थीं जहाँ वे थीं।

Jesair के बैठने की जगह पर पानी का बर्तन।

खिड़की के पास Mareia की किताब।

बगीचे की ओर मुँह किए दो आरामकुर्सियाँ।

Nerai उन्हें छूती नहीं थी।

“हम कितने लोगों के लिए काम ढूँढ़ सकते हैं?” उसने पूछा।

“सबके लिए।”

Nerai ने Saira को देखा।

“उपयोगी काम।”

Saira ने वापस पूर्वानुमान पर नज़रें झुका लीं।

“मुझे नहीं मालूम।”

“अंदाज़ा?”

“आधे वयस्कों के लिए। शायद उससे भी कम।”

“अगर हम स्वचालन रोक दें?”

“तो ज़्यादा के लिए।”

“और अगले संकट में फिर इंसानी दस्तख़तों का इंतज़ार करेंगे?”

Saira चुप रही।

“तो फिर हम इसे नहीं रोकेंगे।”

उसने एक और दस्तावेज़ खोला।

पूरे ग्रह के लिए अस्थायी बुनियादी हिस्से का प्रस्ताव।

इस नाम से Nerai परिचित नहीं थी।

विचार से थी।

उसे Nitra याद आया।

तिहाई से पहले की एक बातचीत।

Jesair ने तब कहा था कि भत्ता वह है जो सत्ता ऊपर से इंसान को देती है।

हिस्सा दूसरी बात है।

हिस्सा कहता है कि सामूहिक उपज का एक अंश व्यक्ति का इसलिए है कि वह उस सभ्यता का सदस्य है जो इसे उपजाती है।

तब लगा था जैसे बहुत दूर के भविष्य की बात हो रही हो।

भविष्य बिना दस्तक दिए आ गया था।

“इसे किसने तैयार किया?”

“सेतु के आर्थिक दल ने। कुछ राज्यों ने। क्षेत्रीय परिषदों ने।”

Nerai ने दस्तावेज़ खोला।

“इसे बाँटने का उनका इरादा क्या है?”

Saira के होंठों पर एक बेख़ुश मुस्कान आई।

“एक दिक़्क़त है।”

“क्या?”

“तीस मुद्राएँ।”

Nerai ने आँखें मूँद लीं।

बस हँसने ही वाली थी।

बस।

“इसीलिए वे एलार का प्रस्ताव रख रहे हैं।”

दस्तावेज़ के पहले पन्ने पर एक वाक्य लिखा था—

सिर्फ़ इसलिए किसी इंसान से जीने का अधिकार नहीं छिनना चाहिए कि समाज को अब उसके श्रम की ज़रूरत नहीं है।

Nerai ने उसे पढ़ा।

फिर एक बार और।

उसने खिड़की के पास की ख़ाली कुर्सी को देखा।

“Jesair कहता, इतना काफ़ी नहीं है।”

“क्यों?”

“क्योंकि हम नहीं जानते कि हिस्सा किस कुल रक़म के आधार पर निकालें।”

“उत्पादन का अधिकाधिक अंश सेतु को दिखाई दे रहा है।”

“अधिकाधिक का मतलब पूरा तो नहीं।”

“नहीं।”

Nerai ने खिड़की से बाहर देखा।

Davion परिवार के घर का बगीचा जंगली होता जा रहा था।

घास पगडंडियों के किनारे पार कर चुकी थी।

पेड़ों में फूल आए थे।

एक डाल बहुत नीचे झुक आई थी और किसी ने उसे काटा नहीं था।

प्रकृति को मालूम नहीं था कि एक तिहाई दुनिया मर गई है।

वह अपना काम करती रही।

शायद इसीलिए Nerai उससे नफ़रत नहीं कर पाती थी।

उसने दस्तावेज़ बंद कर दिया।

“तो फिर हमें और ज़्यादा देखना होगा।”

Saira ने आँखें उठाईं।

“उत्पादन?”

“मूल्य।”

Nerai कुछ देर और बगीचा देखती रही।

“अगर हमें उसमें से न्यायसंगत हिस्सा बाँटना है तो जानना होगा कि वह कहाँ पैदा होता है, कहाँ जाता है और उसका मालिक कौन है।”

Saira ने सिर हिलाया।

Nerai ने दस्तावेज़ उसे थमा दिया।

“आर्थिक परिषद की बैठक बुलाओ।”

“कब?”

“अभी।”

“Nerai, तुम सोई तक नहीं हो।”

Nerai हलके से मुस्कराई।

“तिहाई से पहले सोई थी।”

Saira दरवाज़े पर ठहर गई।

“तुम्हारा भाई कभी नहीं चाहता कि तुम अपने को इस तरह मिटा लो।”

Nerai ने उसकी ओर देखा।

“मेरा भाई यह भी नहीं चाहता था कि तीन अरब लोग मर जाएँ।”

Saira चली गई।

दरवाज़ा बंद हो गया।

Nerai अकेली रह गई।

वह देर तक बैठी रही।

फिर उठी और Jesair की कुर्सी के पास गई।

घर लौटने के बाद आज पहली बार उसने उसे छुआ।

उसने कुर्सी की पीठ पर अपनी हथेली रखी।

“मशीनों ने उनकी जगह नहीं ली,” उसने ख़ाली कमरे से कहा।

उसकी आवाज़ काँप गई।

“उन्होंने हमें बस इतना दिखाया कि कितने काम वे न जाने कब से हमारे बिना कर सकती थीं।”

और तब, आख़िरकार, वह रो पड़ी।

दुनिया के एक तिहाई के लिए नहीं।

कोई एक साथ तीन अरब लोगों का शोक नहीं मना सकता।

वह एक भाई के लिए रोई।

एक स्त्री के लिए।

कलाई पर रखी तीन उँगलियों के लिए।

दो हाथों के लिए जिनके बीच जीवन के आख़िरी घंटों में चंद सेंटीमीटर का पारदर्शी शीशा रहा।

बाहर Auriola के ऊपर Elarion का सूरज उग रहा था।

उसने घरों की छतों पर उजाला किया।

बगीचे पर।

ख़ाली कुर्सी पर।

और उस दुनिया पर जो आगे चल रही थी।

क्योंकि विपत्तियों के बाद दुनिया हमेशा आगे चलती है।

सवाल बस इतना रहता है कि अपने साथ क्या ले जाती है।

34. जीवितों का हिस्सा

पहले बुनियादी हिस्से को किसी नई सामाजिक व्यवस्था की तरह स्वीकार नहीं किया गया था।

उसे नब्बे दिनों के लिए मंज़ूर किया गया था।

Elarion पर लगभग हर बड़ा बदलाव ऐसे ही शुरू होता था।

अस्थायी रूप से।

अपवाद के तौर पर।

बस तब तक जब तक हालात फिर सामान्य न हो जाएँ।

मगर अब सामान्य नाम की कोई चीज़ बची नहीं थी।

प्रस्ताव हर क्षेत्र में जीवनयापन की लागत पर आधारित था। हर राज्य, शहर और आबाद क्षेत्र में बरसों से बुनियादी आवास, भोजन, ऊर्जा, परिवहन और स्वास्थ्य सेवा की क़ीमत का हिसाब रखा जाता था।
तिहाई से पहले इन आँकड़ों को सामाजिक भत्ते तय करने, वेतन पर बातचीत करने और न्यूनतम आमदनी के फ़ैसले करने में इस्तेमाल किया जाता था।
अब वे हिस्से का आधार बन गए।

जिसकी कोई और आमदनी नहीं थी उसे अपने क्षेत्र की बुनियादी जीवन-लागत के बराबर रक़म मिली।

जिसकी अपनी आमदनी थी, उसके पहली कमाई करते ही उसका हिस्सा नहीं छिनता था। वह धीरे-धीरे घटता था और उसका मिलना तभी बंद होता था जब आमदनी स्थानीय जीवन-लागत से दोगुनी से भी अधिक हो जाती।
योजना में कमियाँ थीं।

क्षेत्रों के बीच आँकड़ों पर विवाद था।

शहरों का कहना था कि राज्य के आँकड़े जितनी लागत दिखाते हैं, वहाँ रहना उससे कहीं महँगा है।

ग्रामीण इलाक़ों की आपत्ति थी कि उनके यहाँ परिवहन और ऊर्जा पर ज़्यादा ख़र्च होता है।

परिवार चाहते थे कि बच्चों की संख्या को ध्यान में रखा जाए।

दिव्यांग लोगों ने बताया कि औसत ख़र्च और उनके ख़र्च एक नहीं हैं।

मगर प्रणाली में एक ख़ासियत थी जो पहले के भत्तों में नहीं थी।

हर व्यक्ति देख सकता था कि उसका हिस्सा किस आधार पर निकाला गया है।

उसे अपने क्षेत्र का सूचकांक, नियम, हिसाब में ली गई आमदनी, आँकड़ों का स्रोत और अंतिम रक़म की सटीक वजह दिखती थी।

गणना बदलती तो उसके पीछे किसी का नाम होता था।

प्रणाली ग़लत जानकारी इस्तेमाल करती तो इंसान देख सकता था कि वह कहाँ से आई है।

कोई अधिकारी व्यक्तिगत दस्तावेज़ खोलता तो उनके मालिक को देखे जाने का रिकॉर्ड मिल जाता था।

पूरे ग्रह पर एक साथ पहला भुगतान सेतु के ज़रिए किया जाना था।

तभी सामने आया कि तीस मुद्राएँ केवल संप्रभुता का प्रतीक नहीं थीं।

वे यह कहने के तीस अलग-अलग ढंग थे कि एक इंसान को जीने के लिए कितना चाहिए।

एक राज्य ने हिस्सा अपनी मुद्रा में तय किया और दो दिन बाद उस मुद्रा का मूल्य गिरा दिया ताकि बजट पर असली बोझ घट जाए।

दूसरे ने विनिमय दर स्थिर कर दी।

तीसरे ने नागरिकों को लाइसेंसधारी बैंकों के बाहर एलार रखने से मना कर दिया।

चौथे ने घोषणा की कि वह सहायता केवल उन लोगों को देगा जो साबित कर सकें कि वे पिछले दो साल उसके भूभाग में रहे हैं।

मगर तिहाई के बाद लाखों लोग अपने घर छोड़ चुके थे।

वे अपने रिश्तेदारों के पास गए थे।

ख़ाली मकानों की तलाश में।

काम के लिए।

देखभाल के लिए।

कोई परिवार एक राज्य में रह सकता था, दूसरे से पेंशन ले सकता था, तीसरे में मकान रख सकता था और चौथे से आया खाना ख़रीद सकता था।

पुरानी मुद्राएँ ऐसे संसारों के लिए बनाई गई थीं जो दिखावा करते थे कि उनकी सीमाएँ वास्तविक हैं।

तिहाई ने दिखाया कि हवा, बीमारी, भोजन और मृत्यु में से कोई भी उन सीमाओं को नहीं पहचानता।

मुद्रा परिषद की बैठक में Daren Voltr, Nerai के सामने बैठा था।

Nitra के उस मंच को बरसों बीत चुके थे।

तब उसने Jesair के सामने मौद्रिक संप्रभुता की हिमायत की थी। कहा था कि मुद्रा राज्य की पतवार है और कमज़ोर क्षेत्रों को जीवित रहने के लिए अपनी विनिमय दर चाहिए।

अब उसके चेहरे पर थकान थी।

तिहाई में उसकी पत्नी और एक बेटे की मौत हुई थी। उसने कभी सार्वजनिक रूप से उनका ज़िक्र नहीं किया। Nerai को बस इसलिए पता था कि उसने मृतकों की सूची में उनके नाम देखे थे।

“एक साझे मौद्रिक प्राधिकरण के बिना साझे एलार में भुगतान नहीं हो सकता,” Voltr ने कहा।

“सेतु ऐसा भुगतान कर भी रहा है,” Saira ने जवाब दिया।

“सेतु भंडारों की गारंटी वाली एक निपटान इकाई जारी करता है। किसी राज्य की मुद्रा नहीं।”

“जो उससे अपने घर का किराया देता है, उसके लिए यह किताबी फ़र्क़ है।”

Voltr ने उसकी ओर देखा।

“ठीक ऐसी ही बातें मौद्रिक विपत्तियाँ पैदा करती हैं।”

Nerai ने पहले प्रायोगिक भुगतान का नक़्शा खोला।

“विपत्ति तो हमारे यहाँ पहले ही आ चुकी है।”

नक़्शे पर भुगतान में हुई देर दिख रही थी।

सबसे ज़्यादा देर ग़रीब क्षेत्रों में नहीं हुई थी।

वह मौद्रिक प्रणालियों की सीमाओं पर हुई थी।

“एक इलाक़े में लोगों को उनका हिस्सा चार दिन देर से मिला,” Nerai ने कहा। “हमें धन का पता था, पाने वालों का भी। लेकिन तीन मुद्राओं के बीच रकम का हिसाब लगाने और दो केंद्रीय बैंकों से पुष्टि मिलने में देर लगी।”

Voltr ने आँकड़े देखे।

“अगर सब कुछ एलार में देंगी तो विनिमय दर का जोखिम कौन उठाएगा?”

“पाने वालों में से कोई नहीं।”

“यानी सेतु।”

“भंडार का ब्योरा सार्वजनिक है।”

“भंडार असीम तो नहीं हैं।”

“लोगों का धीरज भी नहीं।”

Voltr पीछे टिक गया।

“मैं समझता हूँ कि समय कम है। लेकिन साझी मुद्रा एक साझी शक्ति पैदा करेगी। आप अब भी उसका नाम लेने को तैयार नहीं हैं।”

“हम उसका नाम ले रहे हैं,” Nerai ने कहा। “इसीलिए चाहते हैं कि वह दिखाई दे।”

“दिखाई देने वाली शक्ति भी शक्ति ही रहती है।”

“हाँ।”

Voltr की भौंहें उठीं।

उसे लगा था वह बचाव करेगी।

Nerai ने बात जारी रखी।

“पारदर्शिता शक्ति को मिटाती नहीं। वह दिखाती है कि उसे इस्तेमाल कौन कर रहा है। यह संपूर्णता से कम है। मगर अँधेरे से ज़्यादा।”

Voltr ने एलार के चिह्न की ओर देखा।

“और वे राज्य जो इसे ठुकरा देंगे?”

“वे अपनी मुद्रा में हिस्सा दे सकते हैं।”

“तो फिर यह पूरे ग्रह का नहीं होगा।”

“नियम पूरे ग्रह के होंगे। भुगतान का तरीक़ा कुछ समय के लिए स्थानीय रहेगा।”

“कुछ समय के लिए।”

उसने उन शब्दों को ऐसी सटीकता से बोला मानो वह उनमें आने वाले इतिहास की आहट पहले ही सुन पा रहा हो।

विवादों के बावजूद पहला भुगतान हुआ।

Sarur में Elina Vass नाम की एक औरत अपने चार बच्चों के साथ रहती थी।

तिहाई से पहले वह छोटे अस्पतालों के एक समूह में आपूर्ति का समन्वय करती थी। उसका पति चालकहीन परिवहन यानों की मरम्मत करता था।

दोनों बीमारी से बच गए।

मगर उसके पति के फेफड़े क्षतिग्रस्त रह गए थे और उसे लंबे समय तक देखभाल की ज़रूरत थी। उसकी देखभाल के लिए Elina ने नौकरी छोड़ दी।

इस बीच उसकी जगह एक स्वचालित प्रणाली ने ले ली।

किसी दुर्भावना से नहीं।

उसके लौटने तक अस्पताल इंतज़ार नहीं कर सकते थे।

जब उसने पुरानी सामाजिक सहायता माँगी तो राज्य ने प्रमाण माँगा कि वह बेरोज़गार है, सक्रिय रूप से काम ढूँढ़ रही है और पेश की गई नौकरी ठुकराकर अपनी निर्भरता को लंबा नहीं खींच रही।

प्रणाली ने उसे दूसरे शहर में काम की पेशकश की।

पति को छोड़कर जाए बिना वह उसे ले नहीं सकती थी।

इसलिए प्रणाली ने उसकी सहायता अस्वीकार कर दी।

बुनियादी हिस्सा लेने के लिए उसे अपनी उपयोगिता साबित नहीं करनी पड़ी।

प्रणाली ने उसकी आमदनी मालूम कर ली।

क्षेत्रीय ख़र्च।

आश्रित बच्चों की संख्या।

घर की स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरतें।

उसके खाते में एलार में एक रक़म आ गई।

Elina ने हिसाब खोलकर देखा।

उसे हर वह आँकड़ा दिखाई दिया जो इस्तेमाल हुआ था।

पति की स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरत के आगे एक सुरक्षित रिकॉर्ड का संदर्भ दिया था। बीमारी का निदान किसी ऐसे को नहीं दिखा जिसे उसे जानने की ज़रूरत नहीं थी। प्रणाली ने बस यह पुष्टि की कि देखभाल का ख़र्च सामान्य से अधिक था।

Elina ने किराया चुकाया।

मकान मालिक स्थानीय मुद्रा लेता था। सेतु ने मुद्रा अपने आप बदल दी।

उसने ऊर्जा का बिल चुकाया।

घर के लिए खाना मँगाया।

हिस्से का कुछ अंश बच गया।

तिहाई की शुरुआत के बाद पहली बार उसे यह तय नहीं करना पड़ा कि कौन-सा बच्चा कम खाएगा।

उस शाम उसने सार्वजनिक चर्चा में एक बात लिखी—

मुझे अपनी नाकामी का भत्ता नहीं चाहिए। मुझे उस दुनिया में अपना हिस्सा चाहिए जिसका काम तब भी चलता है जब मैं काम नहीं कर सकती।

कुछ ही दिनों में लाखों लोगों ने उसकी बात दोहराई।

सब सहमत नहीं थे।

स्वचालित उद्योगों के मालिकों का कहना था कि समाज कुशलता को दंड दे रहा है। उन्होंने मशीनों में निवेश किया था, जोखिम उठाया था, और अब उनसे उम्मीद थी कि नतीजों में उन लोगों को भी हिस्सा दें जिनकी जगह मशीनें ले चुकी थीं।

मगर Jesair की दलील बार-बार लौटती थी।

मशीनें शून्य से नहीं उपजी थीं।

उन्हें उस शोध का लाभ मिला था जिसका ख़र्च पिछली पीढ़ियों ने उठाया था।

राज्यों के बनाए ऊर्जा नेटवर्कों का।

अरबों लोगों के आँकड़ों का।

परिवहन के बुनियादी ढाँचे का।

क़ानूनी व्यवस्था का।

ग्रह के बाहर से आए संसाधनों का, जिन्हें किसी ने अपने हाथों नहीं बनाया था।

बड़े से बड़ा निजी उद्यम भी ऐसे फ़र्श पर खड़ा था जिसे उसने अकेले नहीं बनाया था।

इसलिए ग्रह की परिषद ने स्वचालित उत्पादन पर एक शुल्क लागू किया।

रोबोटों की संख्या के हिसाब से नहीं।

वरना उद्यमों को मशीनें छिपाने या मानव श्रम का दिखावा करने का प्रोत्साहन मिलता।

शुल्क का हिसाब उस मूल्य पर लगाया जाता था जो न्यूनतम मानवीय भागीदारी से बना था, और इस पर कि साझा बुनियादी ढाँचे का कितना उपयोग हुआ था।

हिसाब जटिल था।

इसीलिए उसका सार्वजनिक होना ज़रूरी था।

उद्यम देख सकता था कि उसकी देय रक़म प्रणाली ने कैसे निकाली।

नागरिक देख सकता था कि उसके बुनियादी हिस्से का कितना अंश स्वचालित उत्पादन से आया, कितना करों से, कितना साझी संपत्ति की कमाई से और कितना भंडार से।

इसी शुल्क को लागू करते समय Elarion की एक पुरानी कमज़ोरी सामने आई।

कोई ठीक-ठीक नहीं बता सकता था कि मुनाफ़ा पैदा कहाँ हुआ।

कारख़ाना संघ में था।

उसकी मालिक Vasýria की एक कंपनी थी।

पेटेंट Therinith की एक निधि के थे।

कंप्यूटिंग सेवाओं के बिल Thaeron के अधिकार-क्षेत्र से जारी होते थे।

लाइसेंस शुल्क दक्षिण के एक द्वीप को जाता था।

साल के अंत में उद्यम का दावा होता था कि जिस राज्य में उसने वास्तव में उत्पादन किया, वहाँ उसे लगभग कुछ भी मुनाफ़ा नहीं हुआ।

बहुत-सी अत्यंत सफल कंपनियाँ इसी तरह चलती थीं।

मूल्य कारख़ाने में पैदा होता था।

मुनाफ़ा काग़ज़ पर वहाँ जन्मता था जहाँ लगभग न कर्मचारी थे, न ग्राहक, न मशीनें।

छोटे द्वीपीय राज्यों ने मूल्य को क़ानूनी तौर पर एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने पर पूरी अर्थव्यवस्थाएँ खड़ी कर ली थीं।

वे कम कर की पेशकश करते थे।

मालिकों की पहचान की सुरक्षा।

ऐसी निधियाँ जिनका ब्योरा सार्वजनिक नहीं था।

लेखांकन की विशेष व्यवस्थाएँ।

ऐसे क़ानून जिनके तहत जानकारी देने से इनकार करना सहयोग में बाधा डालना नहीं, ग्राहक की सेवा करना था।

बड़े राज्यों ने जवाब में कर बढ़ाए।

उन्हें अस्पतालों, स्कूलों, परिवहन, तिहाई के बाद के पुनर्निर्माण और बुनियादी हिस्से को चलाने के लिए धन चाहिए था।

कर जितने ऊँचे होते गए, उनसे बच निकलने का लाभ उतना ही बढ़ता गया।

जितना ज़्यादा पैसा हाथ से निकलता गया, जो रह गए थे उनके लिए दरें उतनी ही बढ़ानी पड़ीं।

करों का चक्र घूमता गया।

कर ऊँचे थे क्योंकि बहुत-से लोग उन्हें नहीं देते थे।

बहुत-से लोग उन्हें नहीं देते थे क्योंकि वे ऊँचे थे।

और जो चुकाते थे, उन्हें यह विश्वास होता जा रहा था कि उन्हें इसलिए दंडित किया जा रहा है कि वे बच निकलने भर की ताक़त नहीं रखते।

सेतु पुराने बहीखातों को पीछे जाकर नहीं बदल सकता था।

मगर एलार में हुए नए लेन-देन दिखाते थे कि मूल्य वास्तव में कहाँ बना, कौन-सी सेवाएँ दी गईं और अंतिम लाभार्थी कौन था।

अब भुगतान के वक़्त उसकी क़ीमत और उसकी राह को यूँ ही अलग नहीं किया जा सकता था।

हर महत्त्वपूर्ण लेन-देन के साथ मालिकाना रिश्तों, समझौते के आधार और लागू कर व्यवस्था का संदर्भ होता था।

हर जानकारी हर किसी के लिए सार्वजनिक नहीं थी।

मगर कोई भी महत्त्वपूर्ण बात पूरी तरह बेनाम नहीं थी।

अस्थायी बुनियादी हिस्सा लागू हुए छह महीने बीते तो पता चला कि ग्रह की प्रणाली ने कम दरों पर भी पुराने राज्यों की ऊँची दरों से अधिक राजस्व जुटाया था।

इसलिए नहीं कि लोग अचानक करों से प्यार करने लगे थे।

कर से बच निकलने की राह का कुछ अँधेरा छँट गया था।

आर्थिक परिषद ने बुनियादी हिस्सा एक और साल तक जारी रखने का प्रस्ताव रखा।

Daren Voltr ने पक्ष में मत दिया।

बैठक के बाद गलियारे में Nerai ने उसे रोक लिया।

“मुझे लगा आप विरोध करेंगे।”

“मैं विरोध में हूँ।”

“आपने मत तो पक्ष में दिया।”

“क्योंकि दूसरा रास्ता और बुरा है।”

“लगता है हर सुधार ऐसे ही शुरू होता है।”

Voltr ने पारदर्शी दीवार के उस पार Nitra की ओर देखा।

शहर अब भी ख़ाली पड़े मकानों से भरा था।

“एक बात में Jesair सही था,” उसने कहा।

Nerai ने उसकी ओर देखा।

“कौन-सी बात?”

“जो मूल्य किसी को दिखाई ही नहीं देता, उसमें से हिस्सा नहीं निकाला जा सकता।”

“सिर्फ़ एक बात में?”

Voltr के होंठों तक मुस्कान आते-आते रह गई।

“जो जा चुके हैं, उनके खाते में एक साथ इतनी जीतें मत लिखिए।”

फिर वह गंभीर हो गया।

“मगर अब भी इसका नतीजा आपको दिखाई नहीं दे रहा।”

“क्या नतीजा?”

“एक ही हिसाब। करों की एक ही परत। एक ही हिस्सा। निपटान की एक ही मुद्रा।”

“हाँ।”

“यह अब सहायता नहीं रही।”

“नहीं रही।”

“यह राज्य की नींव है।”

Nerai ने नदी के ऊपर दिखते सेतु के चिह्न को देखा।

“शायद।”

“और उस राज्य को चलाएगा कौन?”

“इस सवाल का जवाब हमें देना होगा, इससे पहले कि कोई हमारी ओर से जवाब दे दे।”

Voltr चला गया।

Nerai खिड़की के पास खड़ी रही।

उसकी कार्य-स्क्रीन पर एक सूचना उभरी।

इतिहास का विश्लेषण करने वाली प्रणाली ने तिहाई से जुड़े वित्तीय प्रवाहों का पहला पुनर्निर्माण पूरा कर लिया था।

उसने उसे खोला।

स्क्रीन पर हज़ारों भुगतान उभरे।

परोपकारी न्यास।

प्रयोगशालाएँ।

कंप्यूटिंग क्षमता।

परिवहन की बुकिंग।

क़ानूनी छूटें।

वंशों से जुड़े आँकड़े।

बीमा मॉडल।

राजनीतिक निधियाँ।

वह सब कुछ जो तिहाई से पहले उसने अलग-अलग देखा था।

अब वह एक ही नक़्शे पर बिछा था।

बीच में एक ख़ाली जगह रह गई थी।

इसलिए नहीं कि वहाँ कुछ था ही नहीं।

इसलिए कि किसी ने वहाँ कोई नाम न आने देने के लिए बहुत मेहनत की थी।

Nerai ने दृश्य बड़ा किया।

“हमें कंकाल मिल गया,” उसने कहा।

पास खड़े Taren की नज़र उस रेखा पर टिकी थी जो Vesta को शोध के न्यासों से जोड़ती थी।

“और शरीर?”

“वह अब भी साँस ले रहा है।”

35. महामारी का वित्तीय ढाँचा

तिहाई की जाँच किसी संदिग्ध की गिरफ़्तारी से शुरू नहीं हुई।

उसकी शुरुआत आँकड़ों को बचाने से हुई।

महामारी के पहले कुछ हफ़्तों में हज़ारों कंपनियाँ मिट गई थीं। कुछ इसलिए कि उनके मालिक मर गए थे। कुछ इसलिए कि उनके काम का कोई अर्थ नहीं रह गया था। और कुछ इसलिए कि उन्हें चलाने वाले अफ़रा-तफ़री का लाभ उठाकर ग़ायब हो गए थे।

बहीखातों के अभिलेखागार बंद हो रहे थे।

बैंक अपनी प्रणालियाँ मिला रहे थे।

सर्वरों से सामग्री मिटाई जा रही थी।

पट्टे की अवधि समाप्त होते ही शोध की अस्थायी सुविधाएँ बंद की जा रही थीं।

सामान्य दिनों में स्थानीय नियमों के अनुसार तय अवधि तक अभिलेख सँभालकर रखे जाते।

मगर तिहाई के बाद यह तय नहीं था कि कौन-से अभिलेख कारोबारी दस्तावेज़ थे और कौन-से Elarion के इतिहास के सबसे बड़े अपराध के सबूत।

Nerai ने पूरे ग्रह के लिए एक आदेश मंज़ूर कराया। जैविक अनुसंधान, वंश-अभिलेखों, आपदा-आपूर्ति और परत में सामने आए न्यासों से जुड़े सभी रिकॉर्ड जहाँ थे, वहीं सुरक्षित रखे जाने थे।

तेईस राज्यों ने आदेश का विरोध किया।

कुछ सचमुच अपने नागरिकों के अधिकारों की रक्षा कर रहे थे।

कुछ अपने मुवक्किलों की।

Therinith ने कहा कि किसी बाहरी जाँच को ऐसे लोगों की संपत्ति और खातों के अभिलेखों पर एकमुश्त रोक लगाने का अधिकार नहीं, जिन पर कोई ठोस संदेह ही न हो।

जवाब में Nerai ने लापता अभिलेखों की सूची जारी कर दी।

उनके भीतर की सामग्री नहीं।

सिर्फ़ यह कि क्या-क्या होना चाहिए था और अचानक नहीं था।

महामारी के पहले महीने में सात कोषों ने अपने प्रबंधक बदल लिए थे।

चार न्यासों ने खाते बंद कर दिए थे।

दो विधि कार्यालयों ने अपने अभिलेखों को हुए नुकसान की सूचना दी थी।

Vesta ने स्वामित्व का एक हिस्सा ऐसी कंपनी को सौंप दिया था जो बीमारी की पहली सार्वजनिक ख़बरों के तीन दिन बाद बनी थी।

हर क़दम की अपने-आप में कोई निर्दोष वजह हो सकती थी।

एक साथ देखने पर लगता था कि कोई भाग रहा था।

जनता के दबाव में Therinith को झुकना पड़ा।

फिर भी एक मुश्किल थी।

सारे अभिलेखों की भाषा एक नहीं थी।

बैंकों और राज्यों ने एक ही लेन-देन को कहीं दान, कहीं ऋण, कहीं लाइसेंस कहा था। अदालत से नए अधिकार मिलने पर अब परत समय की मुहरें, प्रबंधकों के हस्ताक्षर और मूल पहचान-संकेत मिला सकती थी, तब भी जब लेन-देन का क़ानूनी नाम बदल चुका हो।

मगर इस बार उसके सामने सिर्फ़ इंसान नहीं थे।

पुनर्निर्माण के दौरान जिन विश्लेषण प्रणालियों ने भंडार को उत्पादन से जोड़ा था, उन्हें एक नया काम मिला।

अपराधी ढूँढ़ना नहीं।

मेल ढूँढ़ना।

एक ही प्रबंधक।

संचार की एक ही कड़ी।

घटनाओं का एक ही क्रम।

एक ही क़ानूनी साँचा।

आख़िर में मिलने वाला एक ही आर्थिक लाभ।

Nerai ने एआई को लोगों के दोषी होने की संभावना के अंक देने से मना कर दिया।

“मशीन दिखा सकती है कि दो रास्ते कहाँ मिले,” उसने अपनी टोली से कहा। “वह यह तय नहीं कर सकती कि लोग उन रास्तों पर क्यों चले।”

“जोखिम नहीं आँकेंगे तो लाखों कड़ियाँ सामने आएँगी,” एक विश्लेषक ने आपत्ति की।

“तो आने दो।”

“इतनी कड़ियाँ इंसान जाँच ही नहीं सकते।”

“तो मशीन से सबूतों को क्रम में रखवाओ, इंसानों को नहीं।”

“ज़रा-सा ही तो फ़र्क़ है।”

“उस इंसान के लिए नहीं, जिस पर तुम दोषी होने की मुहर लगा दोगे।”

इसलिए प्रणाली ने घटनाओं को आधार बनाया।

भुगतान।

अनुबंध।

मालिक का बदलना।

किसी सुविधा का किराये पर लिया जाना।

छूट की मंज़ूरी।

आँकड़ों तक पहुँच।

जब घटनाओं की कड़ियाँ जुड़ गईं, तभी जाँचकर्ताओं ने उनसे जुड़े लोगों की पड़ताल की।

पहला पक्का सिरा वहाँ से मिला जहाँ से किसी को कुछ निर्णायक मिलने की उम्मीद नहीं थी।

एक बीमा कंपनी से।

तिहाई से पहले एक न्यास ने उससे एक आकलन माँगा था कि आबादी के कुछ वर्गों पर असमान असर डालने वाली बीमारी से कितना आर्थिक नुकसान होगा।
बीमा कंपनी के सामने एक काल्पनिक स्थिति रखी गई थी।

उसे मालूम नहीं था कि इसका संबंध एक वास्तविक जैविक परियोजना से है।

उसने अपनी अंतिम रिपोर्ट एक सुरक्षित भंडार के ज़रिए सौंपी थी। फ़ाइल खोली गई तो उसे खोलने वाले उपकरण का ब्योरा दर्ज हो गया था।
उपकरण किसी व्यक्ति के नाम पर पंजीकृत नहीं था।

वह Nitra में निजी आवासों की देखरेख करने वाली एक कंपनी का था।

कंपनी एक कोष की थी।

कोष का प्रबंध Therinith का एक कार्यालय करता था।

कार्यालय अपने अंतिम मुवक्किल की पहचान गोपनीय रखता था।

पुरानी प्रणाली यहीं आकर रुक जाती।

इस बार घटनाक्रम को फिर से जोड़ते हुए उपकरण का मिलान ऊर्जा की खपत, इमारतों में आने-जाने के रिकॉर्ड और दूसरे डाउनलोड किए गए दस्तावेज़ों से किया गया।

उसी उपकरण पर ये दस्तावेज़ खोले गए थे—

स्वास्थ्य संस्थाओं की प्रतिक्रिया में हुई देरी का विश्लेषण,

पहचान-रहित आनुवंशिक आँकड़ों के इस्तेमाल पर क़ानूनी राय,

संकटकालीन आपूर्ति पर एक रिपोर्ट,

जैविक मॉडलिंग का एक निष्कर्ष,

और ‘अंधेपन की परीक्षा’ नाम का एक दस्तावेज़।

सारी फ़ाइलें एक ही आवास पर आकर मिलीं।

वह आवास Arien Korveth का था।

Taren ने नतीजा तीन बार जाँचा।

“इससे अभी यह साबित नहीं होता कि फ़ाइलें उसी ने खोली थीं।”

“नहीं,” Nerai ने कहा।

“उपकरण किसी और ने भी इस्तेमाल किया हो सकता है।”

“हाँ।”

“उस घर में कर्मचारी भी थे।”

“थे।”

“और मेहमान भी आते थे।”

“हाँ।”

Taren ने उसकी तरफ़ देखा।

“एक बार तो ख़ुश हो सकती हो?”

“जब हमारे पास सबूत होगा।”

अगला सबूत वंश-अभिलेखों से मिला।

तिहाई से पहले Mareia ने Arien के साथ अपनी मुलाक़ात दर्ज कराई थी। बातचीत का ब्योरा नहीं। निजी बातचीत चुपके से रिकॉर्ड करने का अधिकार उसे नहीं था।

फिर भी प्रणाली में मुलाक़ात का समय, उसका प्रवेश, Arien की ओर से आने की पुष्टि और उसके बाद संरक्षित शोध-अभिलेख खोले जाने का समय दर्ज था।

Mareia के जाने के कुछ ही मिनट बाद Arien ने ऑरेलियाई वंशों की सेहत से जुड़ा एक गोपनीय दस्तावेज़ खोला था।

घंटे भर बाद उसने Kael Thorne से संपर्क किया।

अगले दिन अंतिम भुगतान हो गया।

घटनाओं का क्रम अपने-आप में अब भी मंशा का सबूत नहीं था।

फिर उन्हें प्रयोगशाला से आया एक संदेश मिला।

जैविक शोध के एक हिस्से पर काम कर रही एक शोधकर्ता के मन में संदेह था। उसने उस मध्यस्थ को सवाल भेजा था जिससे उसे काम मिला था।

उसने पूछा था कि कहीं इन नतीजों का इस्तेमाल किसी ख़ास आबादी को ख़तरे में डालने के लिए तो नहीं किया जाएगा।

जवाब छोटा था—

उसे आश्वासन दिया गया था कि किसी समुदाय को नुकसान पहुँचाना परियोजना का उद्देश्य नहीं है। काम जारी रखने को कहा गया था।

संदेश पर हस्ताक्षर की जगह सिर्फ़ परियोजना का कोड था।

लिखने के ढंग में Arien के संदेशों से समानता मिली।

Nerai ने इसे मुख्य साक्ष्य मानने से इनकार कर दिया।

“भाषा का मेल हस्ताक्षर नहीं होता।”

Taren ने तकनीकी ब्योरा खोला।

“मगर संदेश भेजने की कुंजी हस्ताक्षर है।”

कुंजी Arien के आवास में बनाई गई थी।

उसी पल उसका नाम महज़ एक संदेह नहीं रह गया।

Nerai ने तलाशी लेने, उपकरण ज़ब्त करने और उसकी आवाजाही पर रोक लगाने की अनुमति माँगी।

न्यायिक प्रणाली ने जवाब दिया कि संबंधित व्यक्ति दो महीने से अपने दर्ज पते पर नहीं था।

Arien का आवास खाली था।

ऐसा नहीं कि कोई घबराहट में उसे छोड़ गया हो।

एक-एक सामान समेटकर उसे ख़ाली किया गया था।

निजी सामान ग़ायब था।

खाते हस्तांतरित हो चुके थे।

प्रवेश की अनुमतियाँ रद्द थीं।

एक दीवार पर हल्का-सा आयत बचा था जहाँ से कोई तस्वीर उतारी गई थी।

अलमारी में बस गहरे नीले रंग का एक पात्र रह गया था।

साबुत।

करवट पड़ा हुआ।

Nerai ने Mareia की पुरानी तस्वीरों से उसे पहचान लिया।

वह उसी का था।

उसने उसे हाथों में उठाया।

किनारे पर हल्की-सी खरोंच थी।

और कुछ नहीं।

Arien ने उसे तोड़ना चाहा था और उससे इतना भी नहीं हुआ था।

“वह कब निकला?” उसने पूछा।

जाँचकर्ता ने घर के रिकॉर्ड खोले।

“महामारी के पहले महीने में।”

“कहाँ गया?”

“उसका निजी यान कक्षीय वलय की तरफ़ गया था।”

“और फिर?”

“मंज़िल का कोई रिकॉर्ड नहीं है।”

Nerai ने उसकी ओर देखा।

“यान हवा में ग़ायब नहीं हो जाते।”

“उड़ान के बीच इसका मालिक बदल गया। नया मालिक Thaeron पर पंजीकृत था।”

“कौन?”

“Therinith का एक कोष।”

Nerai को जैसे एक थकी-सी हँसी आने को हुई।

भागते हुए भी Arien पुरानी दुनिया के तौर-तरीक़ों से वफ़ादार रहा था।

उसे विश्वास था कि उसकी मंज़िल कभी किसी के सामने नहीं आएगी।

सेतु को अभी पुरानी निजी उड़ानों के रिकॉर्ड दिखाई नहीं देते थे।

मगर Thaeron की ऊर्जा और आपूर्ति प्रणालियाँ पहले ही पुनर्निर्माण का हिस्सा बन चुकी थीं।

हर गुंबद पानी, ऊर्जा, ऑक्सीजन और भोजन की खपत का हिसाब देता था।

विश्लेषण प्रणाली को एक ऐसी जगह मिली जहाँ खपत लंबे समय से दर्ज निवासियों की संख्या के हिसाब से कहीं अधिक थी।

उत्तरी बस्ती के छोर पर एक निजी गुंबद।

सरकारी रिकॉर्ड में खाली।

आपूर्ति नियमित।

मालिक एक और कोष।

Nerai नक़्शा देखती रही।

“Thaeron से उसे हिरासत में लेने को कहो।”

Taren झिझका।

“Thaeron के प्रशासन का जवाब आ चुका है।”

“हमने कब पूछा था?”

“हमने पूछा ही नहीं। प्रणाली ने आवाजाही पर रोक वाले व्यक्ति से मेल पाया तो अपने-आप उन्हें सूचना भेज दी।”

“और?”

“उनका कहना है कि निजी गुंबद में दाख़िल होने का पर्याप्त क़ानूनी आधार उनके पास नहीं है।”

Nerai ने धीरे से Mareia का पात्र मेज़ पर रख दिया।

“तीन अरब मौतें पर्याप्त क़ानूनी आधार नहीं हैं?”

“उनके मुताबिक हमारे पास पैसों के लेन-देन और आँकड़ों के सबूत हैं। इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है कि Arien ने उस जैविक ख़तरे को पैदा किया या उसे दुनिया में छोड़ा।”

“हमारे पास उसका उपकरण है। उसकी कुंजी। उसके दिए हुए पैसे। उसके भागने का सबूत।”

“हमारे पास ढाँचा है।”

“उसके पास पूरी तस्वीर थी।”

“हमें यह साबित करना होगा।”

Nerai ने गुंबद के नक़्शे को देखा।

“तो उसे बोलने दो।”

Thaeron के अधिकारियों ने सबके सामने कार्रवाई करने से इनकार कर दिया।

दो घंटे बाद परत ने साक्ष्यों के नक़्शे का एक हिस्सा सार्वजनिक कर दिया।

किसी के निजी स्वास्थ्य का ब्योरा दिए बग़ैर।

जीवविज्ञान की तकनीकी बारीकियाँ दिए बग़ैर।

उसने उतना ही दिखाया जितना ज़रूरी था।

न्यास।

भुगतान।

शोध के लिए सौंपे गए काम।

उपकरण।

Arien का आवास।

उसका पलायन।

और वह निजी गुंबद जिसका मालिक अब भी पर्दे के पीछे था।

अदालत से पहले जनता ने इन कड़ियों के साथ एक नाम जोड़ लिया।

गुंबद के सामने लोग जुटने लगे।

हथियारबंद लोग नहीं।

अपने प्रियजनों को खो चुके लोग।

वे मारे गए लोगों की तस्वीरें लाए।

उन्हें प्रवेश-द्वार के सामने रखते गए।

एक-एक करके।

हिंसा रोकने के लिए Thaeron के प्रशासन ने सुरक्षा-दल भेजे। वहाँ उन्हें हमले की जगह ख़ामोशी मिली। एक पराए ग्रह की ज़मीन पर रखे हज़ारों चेहरे।

तीसरे दिन अदालत ने अनुमति दे दी।

सुरक्षा-दल गुंबद में दाख़िल हुए।

Arien Korveth मेज़ पर बैठा था।

वह भागा नहीं था।

उसके सामने बाहर जुटी भीड़ का सीधा प्रसारण चल रहा था।

वह तस्वीरें देख रहा था।

उसे खड़े होने को कहा गया तो वह खड़ा हो गया।

“तिहाई तक ले जाने वाली घटनाओं की तैयारी और उनके वित्तपोषण में शामिल होने के संदेह में आपको हिरासत में लिया जाता है।”

Arien हल्का-सा मुस्कुराया।

“तिहाई पैसों ने नहीं की थी।”

दल का प्रमुख चुप रहा।

Arien ने हथकड़ी के लिए हाथ आगे कर दिए।

“इंसानों ने की थी।”

“यह अदालत तय करेगी।”

“नहीं,” Arien ने कहा। “अदालत मेरा फ़ैसला करेगी।”

उसने एक बार फिर गुंबद के सामने रखी तस्वीरों को देखा।

“और इसी से बाक़ी सब बेदाग़ हो जाएँगे।”

36. वह आदमी जिसके पास नक़्शा था

Arien को Nitra नहीं ले जाया गया।

इसमें ख़तरा था।

उसके लिए नहीं।

शहर के लिए।

परत की इमारत के सामने दसियों हज़ार लोग जुट रहे थे। कुछ खुला मुकदमा चाहते थे। कुछ उसकी तत्काल मौत। माँगें उठने लगीं कि सभी वेयरानियों को निकाल दिया जाए, उनके वित्तीय घराने बंद कर दिए जाएँ और उनकी संपत्ति ज़ब्त कर ली जाए।

सार्वजनिक प्रसारण में Arien के चेहरे के बग़ल में मृतकों की संख्या दिखाई दे रही थी। संचालक उसकी गिरफ़्तारी और वित्तपोषण के सबूतों की बात कर रहा था। एक अतिथि अभी से सज़ा सुनाने की माँग कर रहा था, दूसरा सभी वेयरानी न्यासों को बंद करने की। नीचे उन लोगों के नाम चल रहे थे जिनकी तलाश अब भी जारी थी।

Nerai ने कुछ सेकंड तक देखा। उसने गिरफ़्तारी का ग़लत समय ठीक करवाया और कार्यालय से कहा कि जितना सचमुच प्रमाणित हो चुका है, उतना प्रकाशित करे। पर्दे पर तो समूची विभीषिका का अब एक ही चेहरा बनता जा रहा था—Arien का। मगर उससे पूछताछ के बाद भी जाँच जारी रहनी थी।
Nerai ने उसकी हिरासत की जगह बताने से इनकार कर दिया।

Arien जानता था कि उसकी ज़िंदगी इस पर भी टिकी थी कि वह जगह गुप्त रहे।

पहली पूछताछ सुरक्षित संपर्क पर हुई।

एक तरफ़ बिना खिड़कियों वाले सफ़ेद कमरे में Arien बैठा था।

दूसरी तरफ़ Nerai, दो जाँचकर्ता, महासभा का क़ानूनी प्रतिनिधि और Arien का वकील।

Nerai पूछताछ में रहना नहीं चाहती थी।

मरने वालों में उसका भाई भी था।

उसकी मौजूदगी से जाँच की निष्पक्षता पर सवाल उठ सकता था।

और वित्तीय नक़्शे को उससे बेहतर कोई नहीं जानता था।

Arien ने ख़ुद उसे बुलाने को कहा था।

"मैं सिर्फ़ उसी से बात करूँगा," उसने कहा।

"जाँचकर्ता चुनने का अधिकार आपको नहीं है," क़ानूनी प्रतिनिधि ने कहा।

"तो मैं कुछ नहीं कहूँगा।"

Nerai मान गई।

उसकी इच्छा पूरी करने के लिए नहीं।

वह जानना चाहती थी कि उसने उसी को क्यों चुना।

संपर्क खुला तो Arien देर तक उसे देखता रहा।

"मैंने सोचा था आपकी शक्ल उससे ज़्यादा मिलती होगी।"

"किससे?"

"Jesair से।"

"आप उसे जानते थे?"

"नहीं।"

"आपने उसे मार डाला।"

Arien का वकील अपनी जगह हिला।

"मेरे मुवक्किल—"

"कहने दीजिए," Arien ने कहा।

Nerai ने Mareia का गहरा नीला पात्र अपने सामने रख दिया।

Arien की नज़र उस पर पड़ी।

उसका चेहरा बदल गया।

पल भर के लिए।

"यह हमें आपके घर से मिला।"

"यह Mareia का था।"

"जानती हूँ।"

“आप इसे क्यों लाईं?”

“ताकि जब आप झूठ बोलें तो आपकी आँखों के सामने कुछ हो।”

वकील ने फिर टोका।

“पूछताछ का यह तरीक़ा—”

“क्या मैं जा सकता हूँ?” Arien ने पूछा।

“नहीं।”

“तो तरीक़े से क्या फ़र्क़ पड़ता है।”

Nerai ने साक्ष्यों का नक़्शा खोला।

“आप इन परियोजनाओं को जानते हैं?”

“कुछ को।”

“पैसे आपने दिए थे?”

“सीधे नहीं।”

“पैसों का इंतज़ाम आपने किया था?”

“सबके लिए नहीं।”

“किस-किस के लिए?”

Arien पीठ टिकाकर बैठ गया।

“आप ऐसे पूछ रही हैं मानो कोई एक ही परियोजना थी।”

“इरादा एक था।”

“इरादा कोई खाता नहीं होता।”

“इसीलिए तो आपने उसे बाँट दिया था।”

Arien ने नक़्शा देखा।

“इनमें से हर परियोजना क़ानूनी थी।”

“अलग-अलग।”

“किसी काम की वैधता इस बात से तय नहीं होती कि बाद में कोई उसके इर्द-गिर्द कैसी लकीरें खींच देता है।”

“इतने सारे लोग आपके लिए काम करते रहे और उनमें किसी को भी नहीं मालूम था कि दूसरों का काम उसके अपने काम से कैसे जुड़ता है।”

“संवेदनशील परियोजनाओं की रक्षा ऐसे ही होती है।”

“नहीं। ऐसे आपने अपनी रक्षा की कि किसी को पूरी तस्वीर न दिखे।”

Arien ने जवाब नहीं दिया।

Nerai ने नक़्शा बड़ा किया।

“हर किसी ने एक टुकड़ा देखा। नक़्शा आपके पास था।”

उन्होंने सही किया था।

जवाब सोच पाता, उससे पहले ही पिता की आवाज़ लौट आई। कभी वह इस वाक्य से नफ़रत करता था। अब उसके सामने वही वाक्य अनुबंधों, छूटों और दस्तख़तों में बिखरा लिखा था।

“आपको लगता है नक़्शा रखना अपराध है?”

“अगर वह तीन अरब लाशों तक जाने का रास्ता दिखाता है, तो हाँ।”

Arien की नज़र झुककर पात्र पर टिक गई।

“मैंने तीन अरब मौतें नहीं सोची थीं।”

“कितनी?”

वकील उसकी तरफ़ झुका।

Arien ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

“उस संकट से यह दिखना था कि ऑरेलियाइयों को अपने असाधारण होने का जो विश्वास है, वह कितना खोखला है।”

“कितनी?”

“कोई ठीक-ठीक संख्या नहीं थी।”

“एक परिवार? एक शहर? किसी वंश की एक शाखा?”

“मैं संतुलन बदलना चाहता था।”

“कितने मृतकों को आप संतुलन कहते हैं?”

Arien ने आँखें उठाईं।

“आप मुझसे वही सवाल पूछ रही हैं जो आपके राजनेता हर युद्ध में पूछते हैं। भविष्य की शांति के लिए कितनी मौतें स्वीकार्य हैं?”

“आपने युद्ध नहीं छेड़ा था।”

“नहीं।”

“युद्ध में कम से कम दुश्मन जानता तो है कि उस पर निशाना साधा गया है।”

Arien का चेहरा शांत रहा।

“ऑरेलियाई सदियों से Elarion को बदलते आए थे। बाक़ी किसी से कभी इस पर मत नहीं लिया गया।”

“सिर्फ़ अपने होने से?”

“उससे जिसका वे प्रतीक थे।”

“Mareia आपको छोड़ गई थी।”

वकील ने झटके से साँस खींची।

Arien तनकर रह गया।

Nerai बोलती रही—

“यह ऑरेलियाइयों के ख़िलाफ़ युद्ध नहीं था। यह उस आदमी का घाव था जो मान नहीं पाया कि एक औरत उसकी मिल्कियत नहीं है।”

“आप हमारे रिश्ते के बारे में कुछ नहीं जानतीं।”

“मैं जानती हूँ उसने ना कहा था।”

“वह उसके पास चली गई।”

“वह कोई चीज़ नहीं थी जो आपके हाथों से निकलकर Jesair के हाथों में चली गई हो।”

“उसने उसे एक ऐसी कहानी दी जिसमें वह कुछ और बड़ी बन सकती थी।”

“और आपने उसे एक ऐसी दुनिया दी जिसमें उसे मरना था।”

Arien खड़ा हो गया।

सुरक्षा प्रणाली ने तत्काल उसे बैठ जाने को कहा।

Nerai उसे देखती रही।

“बैठ जाइए।”

“मैं Mareia की बात करने नहीं आया।”

“तो आपने मुझसे ही बात क्यों करनी चाही?”

Arien खड़ा रहा।

फिर धीरे से बैठ गया।

“क्योंकि सिर्फ़ आप जानती हैं कि मैं यह सब अकेले नहीं कर सकता था।”

Nerai ने जवाब नहीं दिया।

Arien ने नक़्शे की ओर इशारा किया।

“आपका ग्रह अब ऐसे पेश आ रहा है जैसे उसे एक राक्षस मिल गया हो। अकेला आदमी जिसने बैंकों, वैज्ञानिकों, प्रयोगशालाओं, सरकारों और कृत्रिम बुद्धि की प्रणालियों, सबको चकमा दे दिया।”

“कोई नहीं कह रहा कि आपने उन्हें चकमा दिया।”

“नहीं?”

“ज़्यादातर को मालूम ही नहीं था कि वे किस पर काम कर रहे हैं।”

“और क्यों नहीं मालूम था?”

Nerai चुप रही।

“क्योंकि वे जानना नहीं चाहते थे,” Arien ने कहा। “किसी को पैसा मिला, किसी को अपने काम की क़ानूनी मंज़ूरी, किसी को सेवा का श्रेय, किसी को शुल्क। हर किसी ने उतना ही देखा जितना देखकर वह अपना काम जारी रख सकता था।”

“वह अंधापन आपने पैदा किया।”

“नहीं। मैंने उसका लाभ उठाया।”

“Kael Thorne की मदद से।”

पहली बार Arien ने फ़ौरन जवाब नहीं दिया।

“पैसों के रास्ते Kael ने खोले,” उसने आख़िर कहा।

“वह जानता था किसलिए?”

“काफ़ी कुछ जानता था।”

“जैविक उद्देश्य जानता था?”

“उसे मालूम था कि मक़सद एक संकट खड़ा करना है।”

“कितना बड़ा संकट?”

“नहीं।”

“उसने आपकी मदद क्यों की?”

Arien के होंठों पर एक फीकी मुस्कान आई।

“क्योंकि Jesair ने एक ऐसी दुनिया का प्रस्ताव रखा था जिसमें Kael उस तरह जी ही नहीं सकता था जैसे अब तक जीता आया था।”

Nerai ने Nitra के मंच की रिकॉर्डिंग खोली।

Jesair वित्तीय सत्ता को सबके सामने लाने की बात कर रहा था।

अंतिम मालिकों की।

इस बात की कि हर बार कोई रिकॉर्ड देखे तो उसका निशान रहना चाहिए।

Kael सभागार में बैठा था।

“वह पारदर्शिता को रोकना चाहता था,” Nerai ने कहा।

“वह उसे टालना चाहता था। उसकी रफ़्तार कम करना। उसकी साख गिराना। वह एक ऐसा टकराव चाहता था जो दिखाए कि खुली दुनिया ख़तरनाक है।”

“और आपने उसे तिहाई दे दी।”

“उसने मुझे पैसे दिए।”

“कहाँ है वह?”

“मैं नहीं जानता।”

“आप झूठ बोल रहे हैं।”

“पहला बुख़ार आने से भी पहले Kael ने मुझ पर विश्वास करना छोड़ दिया था।”

“उसने परियोजना रोकने की कोशिश की।”

“देर हो चुकी थी।”

“क्यों?”

Arien ने साक्ष्यों के नक़्शे पर उभरे चेहरों को देखा।

“क्योंकि उसे समझ में आ गया था कि उसने ऐसे आदमी के लिए राह खोली है जो उसकी हदों को नहीं मानता।”

“आपकी अपनी कोई हदें थीं?”

“मुझे लगता था कि थीं।”

Arien ने गहरे नीले पात्र को देखा। उसके किनारे पर पड़ी छोटी-सी खरोंच पर्दे पर भी उसकी नज़र से बच नहीं पाई।

और अब मुझे बताओ, सचमुच हुआ क्या था।

माँ की आवाज़ इतनी साफ़ सुनाई दी कि उसे आँखें झुकानी पड़ीं। जब वह अपनी किसी ग़लती को करीने से गढ़ी हुई सफ़ाई में छिपाने की कोशिश करता था, माँ उससे यही पूछती थी।

“जब मैं बच्चा था तो एक यातायात दुर्घटना में मेरी माँ की मौत हो गई थी,” उसने कहा। “वहाँ गहन चिकित्सा की सुविधा वाला एक ही वाहन था। बचावकर्मी ऑरेलियाई आँखों वाले बच्चे को ले गए।”

वकील उसकी तरफ़ मुड़ा, मगर Arien कहता गया।

“मेरे पिता ने सारे रिकॉर्ड मँगवाए थे। उन्होंने मुझसे कहा कि बचावकर्मियों ने सही किया था। वह बच्चा बच गया।”

“और आपकी माँ?” Nerai ने पूछा।

“अस्पताल जाते हुए रास्ते में उनकी मौत हो गई।”

Arien ने मेज़ का किनारा छुआ।

“उसे ले जाने से पहले माँ ने ख़ुद कहा था कि लड़के को ले जाओ।”

दशकों से उसने यह वाक्य ज़ोर से नहीं कहा था।

Nerai एक दूसरा दस्तावेज़ भी जानती थी जिस पर उसका नाम था। उसने अतिरिक्त आपात वाहनों का पुराना प्रस्ताव खोला और रिकॉर्ड उसकी तरफ़ कर दिया। “उस दुर्घटना के बाद आपने इंतज़ाम किया कि बचावकर्मियों के सामने बार-बार दो घायलों में से एक को चुनने की नौबत न आए।”

Arien बचाए गए लोगों के आँकड़े देखता रहा। “तब मैं अब भी मानता था कि एक नियम बदल देना काफ़ी है।”

Nerai ने रिकॉर्ड बंद कर दिया। जिनकी उसने मदद की थी वे आज भी जीवित थे। और साक्ष्यों के नक़्शे पर जो लोग थे, उनकी ज़िम्मेदारी भी आज तक उसी की थी।

“आप क्या बदलना चाहते थे?” Nerai ने पूछा।

उसने आवाज़ ऊँची नहीं की थी। फिर भी Arien को उसके शब्दों के नीचे माँ का वही सवाल सुनाई दिया।

“मैं चाहता था कि एक बार स्वर्ण वलय किसी के काम न आए,” उसने कहा। “कि Jesair हार जाए। कि Mareia देखे कि उसे पहचानने में उससे भूल हुई। कि इस बार कोई और ऐसे दरवाज़े के बाहर खड़ा इंतज़ार करता रहे जो कभी खुलने वाला नहीं है।”

वकील ने मेज़ पर हथेली रखी। Arien ने उसकी ओर नहीं देखा।

“उस वक़्त बचावकर्मी यह तय कर रहे थे कि दो घायलों में से किसे समय रहते बचा सकते हैं,” Nerai ने कहा। “आपने लोगों की पैदाइश के आधार पर उनके लिए ख़तरा पैदा किया। बच्चों के लिए भी।”

Arien ने मुँह खोला। बरसों से जिन वाक्यों को वह दोहराता आया था, उनमें एक भी ऐसा नहीं था जो इस सवाल का जवाब बन सके।

आँखों के सामने माँ का हाथ था और शीशे के पार वह लड़का। तब वे किसी और के बच्चे को बचाने की कोशिश कर रहे थे। तस्वीर में जो बच्चा था उसे ख़तरे में डालने वाला ख़ुद वह था।

पिता के उस वाक्य से, “उन्होंने सही किया था,” उसने इतनी लंबी नफ़रत की कि उसने एक ऐसी व्यवस्था रच दी जिसमें उसके सिवा हर कोई वह वाक्य कह सकता था। उसे मालूम था कि उन सबका काम किस अंजाम की तरफ़ ले जा रहा है।

पल भर सन्नाटा रहा।

Nerai ने उसकी तरफ़ देखा।

उसके सामने किसी कहानी का राक्षस नहीं बैठा था।

एक इंसान बैठा था।

यह और भी बुरा था।

राक्षस इंसानों से बाहर की चीज़ है।

इंसान दिखाता है कि उन्हीं के बीच क्या जन्म ले सकता है।

“Kael कहाँ है?” उसने फिर पूछा।

“Thaeron पर।”

“कहाँ?”

“अगर जानता तो आपके हवाले कर देता।”

“क्यों?”

Arien ने पीठ पीछे टिका दी।

“क्योंकि मरे हुओं के नामों का बोझ मैं उठाऊँगा। वह तब भी आज़ादी की बातें करता रहेगा।”

पूछताछ छह घंटे और चली।

Arien ने माना कि उसी ने परियोजनाओं को जोड़ा था।

उसने यह नहीं माना कि बीमारी उसी ने फैलाई थी।

उसका दावा था कि आख़िरी कार्रवाइयाँ उसके सीधे नियंत्रण में नहीं थीं और उसे ठीक-ठीक नहीं पता था कि शुरुआत कब या कहाँ हुई थी।

फिर भी उसने जाँचकर्ताओं को कोड, बिचौलियों के नाम और वित्तीय ढाँचे के कुछ हिस्सों का ब्योरा दिया।

पछतावे में नहीं।

अपना दोष बाँटने की ज़रूरत से।

संपर्क बंद होने लगा तो Arien ने एक बार फिर Nerai को देखा।

“मुझे सज़ा दिलाने के बाद आप क्या करेंगी?”

“हम आगे बढ़ेंगे।”

“कहाँ?”

“उन लोगों तक जिन्होंने आपको राह दी।”

“और फिर?”

“उस व्यवस्था तक जिसने राह को छिपाए रखा।”

Arien मुस्कुराया।

“तो आख़िर आप ठीक वही करेंगी जिससे Kael डरता था।”

“उसकी ख़ातिर नहीं।”

“Jesair की ख़ातिर?”

Nerai ने गहरे नीले पात्र की ओर देखा।

“उनकी ख़ातिर जो अब देख नहीं सकते कि उनकी दुनिया का क्या हुआ।”

संपर्क टूट गया।

Arien सफ़ेद कमरे में अकेला रह गया।

Nerai ने एक नया दस्तावेज़ खोला।

यह तिहाई के कारणों पर प्रारंभिक रिपोर्ट होने वाली थी।

पहली पंक्ति में उसने लिखा—

इरादा Arien Korveth का था।

फिर वह रुकी।

दूसरी में—

Kael Thorne ने उसके लिए पैसों और राजनीति के रास्ते खोले।

तीसरी में—

Elarion की संस्थाओं ने यह सुनिश्चित किया कि अपराधियों के सिवा कोई भी सारे टुकड़े एक साथ न देख पाए।

उसने तीनों वाक्य पढ़े।

Arien।

Kael।

व्यवस्था।

व्यक्ति का दोष।

साझा दोष।

सभ्यता का अंधापन।

पहले दो छोड़ देती तो अपराधी समाज की आड़ ले लेते।

तीसरा छोड़ देती तो समाज अपराधियों को सज़ा देकर अगले अपराधियों के लिए परिस्थितियाँ ज्यों की त्यों रखता।

Nerai ने दस्तावेज़ सहेजा।

उसका शीर्षक था—

सिर्फ़ Arien नहीं।

37. सिर्फ़ Arien नहीं

प्रारंभिक रिपोर्ट उस दिन जारी हुई जब तिहाई के बाद पहली बार Elarion पर जन्मों की संख्या मौतों से अधिक दर्ज हुई।

मीडिया ने उसमें से Arien की स्वीकारोक्ति चुनी।

जनता ने Kael का नाम।

बैंकों ने क़ानूनी खामियाँ।

राज्यों ने विदेशी अधिकार-क्षेत्र।

रिपोर्ट में हर किसी को वह हिस्सा मिला जिसकी उँगली किसी और की तरफ़ उठती थी।

Therinith ने घोषणा की कि उसने कोई क़ानून नहीं तोड़ा।

यह सच था।

उसकी रजिस्ट्रियों ने ठीक प्रचलित नियमों के अनुसार मालिकों की गोपनीयता की रक्षा की थी।

बैंकों ने कहा कि सारे भुगतान जाँच में खरे उतरे थे।

यह भी सच था।

हर लेन-देन का एक विश्वसनीय उद्देश्य था, दूसरा पक्ष क़ानून की नज़र में अस्तित्व रखता था और काग़ज़ात स्थानीय शर्तों के अनुरूप थे।

न्यासों का कहना था कि जिन परियोजनाओं के लिए उन्होंने पैसे दिए, उनका अंतिम उद्देश्य उन्हें मालूम नहीं था।

अधिकांश मामलों में यह सच था।

प्रयोगशालाओं ने कहा कि उन्होंने उचित वैज्ञानिक प्रश्नों पर शोध किया।

सच।

वकीलों ने कहा कि उन्होंने काल्पनिक मामलों को परखा।

सच।

बीमा कंपनियों ने जोखिम का आकलन किया।

सच।

परिवहन कंपनियों ने जगह आरक्षित की।

सच।

राजनीतिक दलों ने ऐसे चंदे लिए जिनकी अनुमति थी।

सच।

लगभग सब कुछ सच था।

इसीलिए इतना बड़ा झूठ रचा जा सका था।

Nerai ग्रह की जाँच परिषद के सामने खड़ी हुई।

उसके पीछे तिहाई के वित्तीय ढाँचे का नक़्शा था।

“हमें कोई एक गुप्त ख़ज़ाना नहीं मिला,” उसने कहा। “कोई ऐसा भुगतान नहीं मिला जिसकी टिप्पणी में लिखा हो कि यह पैसा तबाही के लिए है। कोई ऐसी एक संस्था नहीं मिली जिसे पूरी योजना का पता रहा हो।”

उसने बिखरी हुई रेखाओं की ओर इशारा किया।

“हमें इससे भी ख़तरनाक चीज़ मिली। एक व्यवस्था जिसमें हर कोई अपने छोटे-से हिस्से के बारे में सच बोल सकता था और उसी वक़्त समूचे झूठ को गढ़ने में हाथ बँटा सकता था।”

सभागार में सभी चालीस राज्यों के प्रतिनिधि बैठे थे।

उनके पीछे मृतकों के परिजन।

पहली पंक्ति में कुछ सीटें खाली रह गई थीं।

वे मूलतः ऑरेलियाई वंश-परिषदों के प्रतिनिधियों के लिए थीं।

उनमें से अधिकांश की ओर से बैठने वाला अब कोई नहीं था।

“हमले का इरादा रखने, उसका संयोजन करने और उसे अंजाम देने के लिए अलग-अलग व्यवस्थाओं का जानबूझकर इस्तेमाल करने की ज़िम्मेदारी Arien Korveth की है,” Nerai ने आगे कहा। “Kael Thorne ने वह वित्तीय और राजनीतिक ढाँचा खड़ा किया जिसने हमले को संभव बनाया। दूसरे भी थे जिन्होंने फ़ैसले लेते समय जितना जाना था, आज उससे कम जानने की बात कहते हैं।”

पर्दे पर कोषों, राजनीतिक दलों को मिले चंदों और Vesta के स्वामित्व की कड़ियाँ उभरीं।

“लेकिन हमारा पूरा निष्कर्ष अगर यही है कि बुरे लोगों ने एक अच्छी व्यवस्था का दुरुपयोग किया, तो हमने तिहाई से कुछ नहीं सीखा।”

सभागार में बेचैनी की लहर दौड़ गई।

“व्यवस्था अच्छी नहीं थी। उसका अंधापन ही कारोबार बन चुका था।”

उसने द्वीपीय राज्यों के अधिकार-क्षेत्र बड़े करके दिखाए।

“राज्य राज़दारी बेच रहे थे। बैंक एक-दूसरे से कटे रहने की सुविधा। कोष बिना नाम का स्वामित्व बेच रहे थे। बहीखातों में ऐसी गुंजाइश बिक रही थी कि मूल्य कहीं पैदा हो और मुनाफ़ा कहीं और दिखे। राजनीतिक नियम ऐसा प्रभाव बेच रहे थे जिसका स्रोत किसी को न दिखे।”

Therinith के प्रतिनिधि ने बोलने की अनुमति माँगी।

“आप निजता की क़ानूनी रक्षा को अपराध का कारोबार कह रही हैं।”

“नहीं,” Nerai ने कहा। “मैं कह रही हूँ कि निजता की रक्षा सत्ता का कारोबार बन गई है।”

“हमारे मुवक्किलों में किसी को दोषी नहीं ठहराया गया।”

“क्योंकि हमें उनके नाम ही नहीं मालूम थे।”

“यह दोष का प्रमाण नहीं है।”

“नहीं। यह इस बात का प्रमाण है कि हम उनके दोष की जाँच तक नहीं कर सकते थे।”

“हर नागरिक को अपनी संपत्ति बाहरी राज्य से बचाने का अधिकार है।”

“और हर नागरिक को यह जानने का भी अधिकार है कि अपनी संपत्ति के बल पर कौन राजनीति को पैसा देता है, उसके अस्पताल का मालिक कौन है या उसकी जान जोखिम में डालने वाले शोध का ख़र्च कौन उठाता है।”

प्रतिनिधि पीछे को टिक गया।

“हद कौन तय करेगा?”

“ठीक इसी सवाल का जवाब महासभा को देना है।”

वह शब्द पहली बार सार्वजनिक रूप से सुनाई दिया था।

तिहाई के बाद पूरे ग्रह की महासभा।

ग्रहव्यापी महासभा सरकारों की किसी आपात बैठक से कहीं आगे जाती।

और न ही वह महज़ एक आर्थिक सम्मेलन होती।

उसे उन बुनियादों की जाँच करनी थी जिन पर Elarion का कामकाज टिका था।

संघ ने प्रस्ताव का समर्थन किया।

फिर अधिकांश सेलेनी राज्यों ने।

और बची हुई ऑरेलियाई परिषदों में से भी कुछ ने।

वेयरानी सरकारें बँट गईं।

कुछ सुधार के पक्ष में थीं। तिहाई में उनके लोग भी मरे थे। उन्होंने भी परिवार, शहर और भविष्य खोए थे।
दूसरों का कहना था कि जाँच पूरे वेयरानी समुदाय पर मुकदमा बनती जा रही थी।

Thaeron पर ग्रहव्यापी पारदर्शिता का विरोध करने वाले पहले आंदोलन उभरे।

उनके नेता कहते थे—

तिहाई को एक ही सरकार बनाने का बहाना नहीं बनने देना चाहिए।

Arien के अपराध की सज़ा में अरबों निर्दोषों की निजता नहीं छीनी जा सकती।

साझी मुद्रा गले का पट्टा बन सकती है।

दिखाई देने वाला धन सरकार को एक ही पाबंदी लगाकर किसी भी विरोधी को तबाह करने की ताक़त देगा।

इन तर्कों में बड़ी हद तक सचाई थी।

इसीलिए वे कोरे झूठ से ज़्यादा ख़तरनाक थे।

Thaeron के नए आंदोलन के प्रवक्ताओं में एक आदमी ऐसा आया जिसका नाम जनता नहीं जानती थी।

सिर्फ़ उसकी आवाज़ सुनाई देती थी।

उसका कहना था कि Elarion को सभ्यता के दो रास्ते चाहिए।

एक खुला।

दूसरा आज़ाद।

Nerai ने उसका पहला भाषण सुना।

तीन वाक्यों के बाद वह जान गई कि कौन बोल रहा है।

Kael Thorne।

उसने लहजा बदल लिया था।

बोलने की रफ़्तार कम कर ली थी।

दूसरा नाम इस्तेमाल करता था।

मगर सत्ता को ज़िम्मेदारी से अलग करने का उसका ढंग वही था।

“साबित कर सकती हो कि वही है?” Saira ने पूछा।

“नहीं।”

“आवाज़ का विश्लेषण?”

“संभावना सबूत नहीं होती।”

“Arien का कहना है वह Thaeron पर है।”

“Arien बहुत कुछ कहता है।”

“उसे हिरासत में लेने के लिए कहें?”

Nerai ने प्रसारण बंद कर दिया।

“पहले हमें पता होना चाहिए कि ठीक किस आरोप में।”

“उसने तिहाई के लिए पैसे जुटाने में मदद की।”

“हमें पैसे के रास्तों के सबूत मिले हैं। अंतिम चरणों को रोकने की उसकी कोशिश का सबूत भी है। ऐसा कोई सबूत नहीं है कि वह संकट की व्यापकता जानता था।”

“दरवाज़ा उसी ने खोला।”

“हाँ।”

“और अब आज़ादी की बातें करता है।”

“दोषी आदमी भी कोई सही आपत्ति उठा सकता है।”

Saira ने उसकी तरफ़ देखा।

“यह तुम ऐसे कह रही हो जैसे Jesair बोल रहा हो।”

“नहीं।”

Nerai ने रिकॉर्डिंग फिर खोली।

“वह इसे और अच्छे से कहता।”

जिस पल मरने वालों की संख्या तीन अरब हुई थी, उसकी पहली बरसी पर महासभा बुलाई गई।

स्थान चुना गया Nitra।

वही सभागार जहाँ बरसों पहले Jesair ने कहा था कि मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए।

इमारत के सामने नामों की दीवार खड़ी की गई।

सारे नामों की नहीं।

एक जगह तीन अरब नाम लिखना संभव नहीं था।

इसलिए हर दिन दीवार पर सूची का एक अलग हिस्सा दिखाई देता था।

बरसों बीते बिना एक भी नाम दोहराया नहीं जाता।

महासभा के उद्घाटन के दिन उस पर Auriola के लोगों के नाम चमक रहे थे।

उनमें थे—

Jesair Davion।

Mareia Lioren।

Nerai सूर्योदय से पहले पहुँची।

उसने गहरा नीला पात्र दीवार के सामने रख दिया।

उसे वहाँ छोड़ नहीं गई।

कुछ देर बाद फिर उठा लिया।

कुछ चीज़ें स्मारकों की नहीं होतीं।

वे उन जीवितों की होती हैं जिन्हें अभी उनकी कहानी पूरी करनी है।

38. तिहाई के बाद की महासभा

सभागार में जाने से पहले Nerai ने सुबह के समाचार का एक अंश सुना। तिहाई के बाद सामुदायिक रसोई चलाने वाली एक स्त्री जानना चाहती थी कि साझा धन की निगरानी का अधिकार किसे होगा। मरम्मत की एक छोटी दुकान के मालिक को डर था कि नई प्रणाली उसके ग्राहकों के भुगतान भी देख सकेगी। दोनों ने अपने खोए थे, फिर भी प्रस्ताव पर दोनों की राय अलग थी।

“आज सार्वजनिक सत्ता और निजी जीवन की सीमा का भी फ़ैसला होगा,” समाचार-वाचिका ने कहा। “बहुतों के लिए वह सीमा अब भी साफ़ नहीं है।”

Nerai ने प्रसारण बंद किया और भीतर चली गई। उस कारीगर की आपत्ति उसके अपने नोट्स में भी लिखी थी।

सभागार की एक तिहाई सीटें खाली थीं।

उन प्रतिनिधियों की संख्या के हिसाब से यह कोई सटीक गणना नहीं थी जो मर चुके थे।

यह आयोजकों का फ़ैसला था।

हर तीसरी पंक्ति बंद कर दी गई थी।

सीटों पर नाम नहीं थे।

बस रोशनी की एक महीन लकीर।

प्रतिनिधि बैठे तो खाली पंक्तियाँ जीवितों के बीच उसी तरह खिंची दिखाई दीं जैसे तिहाई परिवारों, शहरों और इतिहास के बीच खिंच गई थी।

कोई मंच की ओर देखता तो उसकी नज़र उस जगह पर भी पड़ती जहाँ कोई अनुपस्थित था।

महासभा का कोई एक अध्यक्ष नहीं था।

उसका संचालन एक परिषद के हाथ में था जिसमें राज्यों, नागरिक सभाओं, विशेषज्ञ संस्थाओं, वंश-परिषदों और Thaeron के प्रतिनिधि थे।

यह भी एक समझौता था।

सत्ता को सीमित करने के लिए बुलाई गई सभा की बागडोर कोई एक व्यक्ति सँभाले, यह किसी को स्वीकार नहीं था।

Nerai वहाँ राजनेता की हैसियत से नहीं थी।

वह चुनाव में खड़ी नहीं हुई थी।

वह किसी राज्य का प्रतिनिधित्व नहीं करती थी।

वह तिहाई की वित्तीय पृष्ठभूमि की जाँच की प्रमुख के रूप में महासभा के सामने खड़ी थी।

उसके ऊपर उसका नाम उभरा।

Nerai Sael।

वित्तीय सत्यनिष्ठा और प्रणालीगत जोखिमों का अंतरराज्यीय प्राधिकरण।

निजी हितों का प्रकटीकरण—पूर्ण।

उसने खाली पंक्तियों की ओर देखा।

फिर बोलना शुरू किया।

“एक साल पहले हमने इस विपदा को एक नाम दिया था।”

दीवारों पर एक संख्या उभरी।

तीन अरब बारह करोड़ चालीस लाख।

“हमने इसे तिहाई कहा, क्योंकि जहाँ अरबों नामों का बोझ उठाना मनुष्य के मन की सामर्थ्य से परे हो जाता है, वहाँ उसे एक शब्द चाहिए।”

संख्या ग़ायब हो गई।

उसकी जगह चेहरे उभरे।

बच्चे।

स्त्रियाँ।

पुरुष।

तीनों शाखाओं के लोग।

“आज मैं उसकी बात नहीं करूँगी जो हमने खोया। वह बात कभी ख़त्म नहीं होगी। मैं उसकी बात करूँगी जो उनकी मौत ने उजागर किया।”

पर्दे पर वित्तीय ढाँचा उभरा।

“अपने पैसों की व्यवस्था हमें क्यों बदलनी है, इसका पहला कारण महामारी है।”

सभागार में कुछ लोग अपनी जगह हिले।

कुछ ने स्वास्थ्य व्यवस्था पर भाषण की उम्मीद की थी।

Nerai कहती गई—

"तिहाई का ख़र्च किसी एक भुगतान से नहीं चला था। ऐसा होता तो किसी की नज़र उस पर पड़ जाती। जाँच में तीस मुद्राएँ, सैकड़ों विनिमय और ऐसी संस्थाएँ सामने आईं जिनकी जवाबदेही और अंतिम स्वामित्व का कोई पूरा हिसाब नहीं था।"

नक़्शे के अलग-अलग हिस्से जगमगाने लगे।

"शोध, बीमा, परिवहन, बैंक और राज्य—हरेक अपने काम का जवाब दे सकता था। लोग अपने सामने पड़े काग़ज़ देख रहे थे। उन काग़ज़ों के पीछे कौन था, और सबका काम मिलकर क्या करने वाला था, यह उन्हें नहीं दिखा।"

नक़्शा एक हो गया।

"नफ़रत एक आदमी ला सकता है। उसे राह देनी है या नहीं, यह सभ्यता के हाथ में है।"

Nerai कुछ देर रुकी।

"हमने उसे राह दी।"

सभागार में सन्नाटा था।

"अगर वार से पहले हमें पैसा नहीं दिखता, तो उसके बाद सिर्फ़ लाशें दिखेंगी।"

पर्दे पर वे श्रेणियाँ उभरीं जिन्हें अब स्वचालित प्रणालीगत निगरानी में रखने का प्रस्ताव था।

जैविक और आनुवंशिक जोखिम।

बड़े पैमाने की संगणन क्षमता।

रणनीतिक महत्त्व की प्रयोगशालाएँ।

स्वास्थ्य संबंधी आँकड़े।

राजनीतिक वित्तपोषण।

हथियार प्रणालियाँ।

अत्यावश्यक बुनियादी ढाँचा।

"मैं मन पढ़ने वाली प्रणाली नहीं माँग रही," Nerai ने कहा। "वह ऐसा कर नहीं सकती, और कर सकने का ढोंग भी उसे नहीं करना चाहिए। मैं ऐसी प्रणाली माँग रही हूँ जो यह देख सके कि कब धन, तकनीक, आँकड़े, प्रयोगशालाएँ और राजनीतिक ताक़त आपस में जुड़कर किसी ख़तरे का आकार लेने लगे हैं।"

एक वेयरानी राज्य के प्रतिनिधि ने बोलने की अनुमति माँगी।

"और यह कौन तय करेगा कि किस रूप को ख़तरा समझा जाए?"

"सार्वजनिक नियम।"

"किसके बनाए हुए?"

"महासभा द्वारा गठित एक स्वतंत्र परिषद के, जो नागरिकों, विशेषज्ञों और न्यायपालिका की निगरानी में होगी।"

"यानी ग्रह भर के लिए एक और संस्था।"

"हाँ।"

"और अगर उससे ग़लती हुई?"

"उसके फ़ैसले को चुनौती दी जा सकेगी।"

"और अगर वह सरकार का औज़ार बन गई?"

"इसीलिए वह किसी एक सरकार के अधीन नहीं होनी चाहिए।"

वह आदमी खड़ा रहा।

"यह तो केंद्रीकरण को बस एक मंज़िल और ऊपर उठा देना हुआ।"

"नहीं," Nerai ने कहा। "साझी समस्या की पूरी तस्वीर एक जगह दिखनी चाहिए। फ़ैसला करने और उसकी निगरानी करने के अधिकार बाँटे जाने चाहिए।"

"यह परस्पर विरोधी बात है।"

"नहीं। एक नक़्शा होने का यह अर्थ नहीं कि उसका एक ही मालिक हो।"

वह आदमी बैठ गया।

Nerai ने दूसरा हिस्सा खोला।

"दूसरा कारण स्वचालन है।"

दीवारों पर तिहाई के बाद के उत्पादन के आँकड़े उभरे।

काम करने वालों की संख्या।

उत्पादन क्षमता।

खपत।

स्वचालित फ़ैसले।

"तिहाई ने हमसे महीनों में वह करवा लिया जिसे हम दशकों से टाल रहे थे। मशीनों ने उत्पादन, परिवहन, ऊर्जा प्रबंधन, हिसाब-किताब, रखरखाव और कुछ चिकित्सा सेवाएँ सँभाल लीं। इसलिए नहीं कि हमें काम से खाली दुनिया चाहिए थी। इसलिए कि लोग नहीं रहे थे।"

उत्पादन का वक्र फिर ऊपर चढ़कर तिहाई से पहले के स्तर को पार कर गया।

"फिर हमने जाना कि रोज़गार न बढ़े, तब भी उत्पादन बढ़ सकता है।"

पर्दे पर वह बात उभरी जो Jesair ने Nitra में कही थी—

भत्ता वह है जो सत्ता ऊपर से देती है। हिस्सा वह है जो इंसान को सिर्फ़ इसलिए मिलता है कि वह सभ्यता का अंग है।

Nerai कुछ देर उस पंक्ति को देखती रही।

"सार्वभौमिक बुनियादी आय किसी के अनुपयोगी ठहरा दिए जाने का इनाम नहीं हो सकती। वह किसी ऐसे इंसान पर राज्य की मेहरबानी भी नहीं हो सकती जिसका काम मशीनों ने ले लिया हो। उसे उस सभ्यता में उसका हिस्सा होना चाहिए जिसे ज्ञान, आँकड़ों, ढाँचों और संसाधनों ने मिलकर खड़ा किया है—जिन्हें आज के किसी मालिक ने अकेले नहीं बनाया।"

पहली बार सभागार से सहमति की आवाज़ें आईं।

"यह हिस्सा न्यायसंगत हो, इसके लिए हमें जानना होगा कि मशीनें कितना मूल्य पैदा करती हैं, वह किसका है, लाभ कहाँ बनता है और जाता कहाँ है। पारदर्शिता के बिना सार्वभौमिक बुनियादी आय एक भत्ता है जिसे सत्ता अपनी ज़रूरत के हिसाब से तय कर सकती है। पारदर्शी बुनियादी हिस्सा एक अधिकार है, जिसकी गणना नागरिक ख़ुद जाँच सकता है।"

Nerai ने तीसरा हिस्सा खोला।

"तीसरा कारण भ्रष्टाचार है।"

दीवारों पर सार्वजनिक ठेके उभरे।

बढ़ी-चढ़ी क़ीमत पर ख़रीदी गई अस्पताल इकाइयाँ।

परिवहन के अनुबंध।

ऊर्जा परियोजनाएँ।

उन कोषों को दी गई सहायता जिनके मालिक राजनीतिक दलों को पैसा देते थे।

"भ्रष्टाचार। अपने लोगों को लाभ पहुँचाना। प्रभाव की ख़रीद। राजकोषों को भीतर से खोखला करना। राजनीति में छिपा पैसा। संपत्ति की हेराफेरी। कर-शरणस्थल। ऐसे अनुदान जो जनहित का मुखौटा पहने निजी सत्ता की सेवा करते थे। मुद्राओं, द्वीपों, न्यासों और ग्रह के बाहर के केंद्रों के बीच बहीखातों में होती रही उठापटक।"

अलग-अलग मिसालों की कड़ियाँ जुड़ने लगीं।

"यह सब अँधेरे में फलता-फूलता रहा। और हम उस अँधेरे के इतने आदी हो गए कि उसे स्वाभाविक मानने लगे।"

वह थोड़ी देर चुप रही।

"तिहाई ने दिखा दिया कि उस स्वाभाविकता की क़ीमत क्या थी।"

एक द्वीपीय राज्य की प्रतिनिधि खड़ी हुई।

"आपके प्रस्ताव में क्या धन का सारा आवागमन सार्वजनिक होगा?"

"नहीं।"

"फिर कौन तय करेगा कि क्या सार्वजनिक हो?"

"उसके प्रभाव का महत्त्व।"

"यह कोई सटीक सीमा नहीं है।"

"सटीक सीमा क़ानून तय करेगा। मामूली निजी भुगतान निजी रहेगा। अस्पतालों की पूरी शृंखला का स्वामित्व नहीं।"

"और उपहार?"

"उचित सीमा में निजी उपहार निजी रहेगा। राजनीतिक दल को दिया गया चंदा नहीं।"

"निवेश?"

“जिस निवेश से निवेशक को दूसरों की ज़िंदगी पर कोई बड़ी ताक़त नहीं मिलती, उसे सबके लिए सार्वजनिक करना ज़रूरी नहीं होगा। फिर भी उसका अस्तित्व निगरानी से ओझल नहीं हो सकता।”

“यानी राज्य सब जानेगा।”

“नहीं।”

“तो फिर कौन?”

“प्रणाली की अलग-अलग परतों को अलग-अलग हिस्से मालूम होंगे। क़ानूनी कारण के बिना कोई किसी की पूरी ज़िंदगी नहीं देख सकेगा। जब भी परतों का मेल होगा, उसका निशान रहेगा।”

उस स्त्री की भौंहें तन गईं।

“तिहाई के पहले की व्यवस्था का भी आपने ठीक यही वर्णन किया था।”

“नहीं। तिहाई से पहले अलग-अलग परतों ने आँकड़ों की रक्षा इस तरह की कि यह पता लगाना ही असंभव था कि तबाही के लिए पैसा कौन दे रहा है। नई व्यवस्था को इंसान की रक्षा करनी होगी और अदृश्य सत्ता को उस रक्षा के घेरे से बाहर रखना होगा।”

Nerai ने चौथा हिस्सा खोला।

“चौथा कारण है राज्यों का कामकाज।”

पर्दे पर बजट घाटे उभरे।

पिछले तीस वर्षों में लगभग हर साल Elarion के अधिकांश राज्यों ने अपनी वसूली से अधिक ख़र्च किया था।

आर्थिक वृद्धि के दिनों में भी क़र्ज़ चढ़ता गया था।

नेता बचत का वादा करते थे।

फिर कर बढ़ा देते थे।

“हमारे राज्य ग़रीब नहीं थे,” Nerai ने कहा। “उनका ख़र्च बहुत था।”

पर्दे पर अलग-अलग राज्यों में खरीदे गए एक जैसे चिकित्सा उपकरणों के दाम उभरे।

क़ीमतों में सैकड़ों फ़ीसदी तक का अंतर था।

“अकुशलता उन बजटों के भीतर छिपी रहती थी जिनकी तुलना नागरिक कर ही नहीं सकते थे। सार्वजनिक संस्था कहती थी कि उसने बाज़ार का भाव चुकाया है। लेकिन पड़ोसी राज्य का बाज़ार उसी चीज़ को आधे दाम पर बेच रहा था।”

आपस में जुड़े आपूर्तिकर्ताओं का जाल उभरा।

“जब हर सार्वजनिक भुगतान दिखाई देता है, तब ग़लत फ़ैसला अंतिम रिपोर्ट में गुम नहीं हो जाता। वह उस समय दिख जाता है जब उसे रोका जा सकता है।”

संघ के एक मंत्री ने आपत्ति की—

“जनता को जटिल खरीद का ग़लत अर्थ भी समझ में आ सकता है। सबसे कम क़ीमत हमेशा सबसे अच्छी नहीं होती।”

“इसीलिए कारण, गुणवत्ता और नतीजा भी दिखाई देने चाहिए,” Nerai ने कहा। “पारदर्शिता का अर्थ यह नहीं कि हर वाल्व पर हर नागरिक फ़ैसला करे। इसका अर्थ यह है कि मंत्री महँगे वाल्व को बेहतर नहीं बता सकता, अगर वह साल भर में टूट जाए और उसे बेचने वाले ने मंत्री के दल को चंदा दिया हो।”

सभागार में असहज हँसी गूँजी।

मंत्री बैठ गया।

“ग़लत उपाय तुरंत दिख जाएँ, लगभग सारा देय कर वसूल हो और हितों के छिपे टकराव दूर हों, तो पुराने घाटे अधिशेष में बदल सकते हैं। एक दिन में नहीं। पहले रिसाव रोकेंगे। फिर फ़िज़ूलख़र्ची। फिर कर घटाएँगे। उसके बाद ही विकास आएगा।”

उसने पाँचवाँ हिस्सा खोला।

“पाँचवाँ कारण कर हैं।”

पर्दे पर कर का दुष्चक्र उभरा।

ऊँची दरें।

ज़्यादा कर-चोरी।

सिकुड़ता कराधार।

दरों में फिर बढ़ोतरी।

“बड़े राज्य कर बढ़ाते थे क्योंकि मूल्य का एक हिस्सा छोटे राज्यों में चला जाता था जहाँ वह पैदा हुआ ही नहीं था। कर जितना बढ़ता, उससे बच निकलने का फ़ायदा उतना ही बढ़ जाता। जितने ज़्यादा लोग निकल भागते, पीछे रह गए लोगों को उतना ही अधिक चुकाना पड़ता।”

द्वीपीय कर-शरणस्थलों का नक़्शा उभरा।

“इन राज्यों ने उस मूल्य का अधिकांश पैदा ही नहीं किया जिसे वे अपने यहाँ दिखाते थे। उन्होंने एक ऐसी क़ानूनी जगह बनाई जहाँ मूल्य पर लगने वाला कर कम हो जाता था और उसका मालिक ग़ायब।”

Therinith का प्रतिनिधि उठ खड़ा हुआ।

“हमारी सेवाएँ क़ानूनी थीं।”

“हाँ।”

“मुवक्किलों ने अपने अनुबंधों से मिले अधिकारों का इस्तेमाल किया।”

“हाँ।”

“यानी आप उन्हें इसलिए दोषी कहती हैं कि उन्होंने तर्कसंगत आचरण किया।”

“नहीं। मैं कह रही हूँ कि हमने ऐसी व्यवस्था बनाई जिसमें समाज को नुकसान पहुँचाना तर्कसंगत था।”

वह पल भर चुप रहा।

“आप करों में प्रतिस्पर्धा समाप्त करना चाहती हैं।”

“मैं यह दावा करने की गुंजाइश ख़त्म करना चाहती हूँ कि मुनाफ़ा किसी ऐसे द्वीप पर बना जहाँ न मशीनें हैं, न कर्मचारी, न ग्राहक।”

“पूँजी Thaeron चली जाएगी।”

“तब भी दिखना चाहिए कि उसका मालिक कौन है, वह कहाँ बनी और किन सुविधाओं का इस्तेमाल करती है।”

“Thaeron आपके नियम मानने के लिए बाध्य नहीं है।”

“नहीं।”

“तो फिर?”

“फिर दो आर्थिक क्षेत्र बनेंगे। एक जिसमें बड़ी ताक़त अपने पीछे दिखाई देने वाला निशान छोड़ेगी। दूसरा जिसमें नहीं छोड़ेगी।”

“लोग आज़ादी चुनेंगे।”

“हो सकता है।”

Nerai ने उसकी तरफ़ देखा।

“लेकिन तब वे जानेंगे कि वे क्या चुन रहे हैं।”

उसने छठा हिस्सा खोला।

महासभा के ऊपर तीस मुद्राओं के चिह्न उभरे।

“छठा कारण है मुद्रा का बिखराव।”

Daren Voltr ज़रा-सा हिला।

Nerai कहती गई—

“तिहाई से पहले हम कहते थे कि तीस मुद्राओं के रहते राज्य अपनी स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप क़दम उठा सकते हैं। यह सच था। लेकिन उनके रहते बचत की क़ीमत बदलने, लाभ छिपाने, क़र्ज़ दूसरी जगह सरकाने और किसी फ़ैसले की क़ीमत को उसे चुकाने वाले से अलग कर देने के भी तीस रास्ते थे।”

मुद्रा बदलने का ख़र्च दिखाई दिया।

विनिमय दर का बीमा।

देरी।

पूँजी आरक्षित रखने की ज़रूरत।

दोहरी और तिहरी लेखा प्रणालियाँ।

“व्यापार को आसान बनाने के लिए बनी मुद्राओं से अपने व्यापार को बचाने के लिए कंपनियों ने पूरे-पूरे विभाग रखे थे। सीमा के आर-पार एक सौदे पर छोटी कंपनी बड़े व्यावसायिक संघ से ज़्यादा चुकाती थी क्योंकि उसे वही दरें और साधन उपलब्ध नहीं थे।”

पर्दे पर एलार उभरा।

“एलार महामारी की संतान था। वह राजनीतिक परियोजना के तौर पर नहीं जन्मा था। वह फ़िल्टर, दवाइयाँ और भोजन खरीदने का एक ज़रिया था, उस वक़्त जब पुरानी प्रणालियाँ समय रहते मूल्य का हस्तांतरण नहीं कर पा रही थीं।”

Nerai ने सेतु के सार्वजनिक भंडार दिखाए।

“उसकी ख़ूबी सिर्फ़ यह नहीं थी कि वह सबकी साझी मुद्रा थी। लोग उसका आधार, शुल्क, दर, भुगतान का रास्ता और उसे रोकने वाले हर व्यक्ति को देख सकते थे।”

Daren Voltr ने बोलने की अनुमति माँगी।

“एलार अब भी पुरानी मुद्राओं के सहारे खड़ा है।”

“हाँ।”

“उन्हें समाप्त कर देंगी तो उसका आधार क्या होगा?”

“उत्पादन, कर राजस्व, ऊर्जा क्षमता और साझा व्यवस्था की संपत्ति।”

“यानी ग्रहव्यापी संस्थाओं पर भरोसा।”

“हर मुद्रा किसी न किसी संस्था पर भरोसा ही है।”

“फ़र्क़ यह है कि आज का नागरिक एक मुद्रा छोड़कर दूसरी चुन सकता है।”

“अधिकांश नागरिकों के पास इतनी संपत्ति नहीं है कि उसे एक मुद्रा से दूसरी में ले जा सकें। मुद्रा चुनने की आज़ादी ख़ासकर उनकी थी जिनके पास अपने ही राज्य के फ़ैसलों के नतीजों से बच निकलने के लिए पर्याप्त साधन थे।”

Voltr खड़ा हो गया।

“फिर भी वह एक अंकुश थी। एक अकेली मुद्रा पूरे ग्रह के हर इंसान के ख़िलाफ़ एक साथ इस्तेमाल की जा सकती है।”

“हाँ।”

इस जवाब ने उसे भी चौंका दिया।

Nerai कहती गई—

“एकीकृत मुद्रा समृद्धि की बुनियाद बन सकती है। और हमारे इतिहास की सबसे मुकम्मल तानाशाही की भी।”

सभागार में गहरा सन्नाटा छा गया।

“इसीलिए इतना पर्याप्त नहीं कि नागरिक का पैसा दिखाई दे। पैसे पर जिसकी सत्ता है, वह सत्ता भी दिखनी चाहिए।”

पर्दे पर निगरानी की रूपरेखा उभरी।

संचालन की परत।

निगरानी की परत।

न्यायिक परत।

नागरिक लेखापरीक्षा।

सार्वजनिक सत्यापन शृंखला।

"मुद्रा चलाने वाले को ख़ुद फ़ैसला करने का हक़ नहीं होना चाहिए कि वह किसकी जाँच करेगा। निगरानी करने वाला अपने-आप रिकॉर्ड न बदल सके। कोई अदालत क़ानूनी वजह दर्ज किए बिना आँकड़े न खोल सके। और इनमें से कोई भी संस्था अपनी कार्रवाई का निशान न मिटा सके।"

Voltr रूपरेखा देखता रहा।

"और अपराधी?" उसने पूछा। "क्या उसे भी दिखाई देगा कि उसकी जाँच हुई थी?"

"हाँ।"

"इतनी जल्दी कि वह बाक़ी सबूत छिपा सके?"

"उसे मालूम होगा कि जाँच हुई है। यह ज़रूरी नहीं कि जाँच का हर निष्कर्ष उसी वक़्त उसके सामने आ जाए। लेकिन किसने रिकॉर्ड देखा, इसका ब्योरा हमेशा के लिए गुप्त नहीं रह सकता और न ही मिटाया जा सकता है।"

"यह Jesair के प्रस्ताव से अलग है।"

"नहीं। Jesair ने कहा था कि अपराधी को भी दिखना चाहिए कि उस पर किसकी नज़र पड़ी। उसने यह नहीं कहा था कि जाँच अपना हर क़दम उठाने से पहले उसकी घोषणा करे।"

Voltr खड़ा रहा।

"और प्रणाली को ऐसा गुप्त रास्ता बनाने से कौन रोकेगा जिसका कोई रिकॉर्ड ही न हो?"

"उसकी तकनीकी बनावट।"

दीवारों पर आँकड़ों का प्रवाह उभरा।

"जब भी कोई संरक्षित आँकड़ा खोलेगा, एक हस्ताक्षरित रिकॉर्ड बनेगा। उस रिकॉर्ड की एक कूटबद्ध छाप बनेगी। हर महत्त्वपूर्ण बदलाव और रिकॉर्ड देखने की हर घटना की छाप हर कुछ मिनट में एक वितरित सत्यापन शृंखला में भेजी जाएगी।"

"ब्लॉकचेन में," पिछली पंक्तियों से किसी ने कहा।

"हाँ," Nerai ने जवाब दिया। "सच के विकल्प के तौर पर नहीं। हैश यह साबित नहीं करता कि मूल जानकारी सही थी। वह यह साबित करता है कि बाद में किसी ने चुपके से उसे बदला नहीं। उसके सही होने की पुष्टि स्रोत के हस्ताक्षर, दूसरे स्रोतों से मिलान और लेखापरीक्षा से करनी होगी।"

Voltr फिर बैठ गया।

Nerai ने महासभा की ओर देखा।

"आज हम जो भी स्वीकार करें, निगरानी की तकनीक बेहतर होती रहेगी। हम उन पर पाबंदी लगाने का दिखावा करके उन्हें चुपके से इस्तेमाल होने दे सकते हैं। या हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि नागरिक को देखने वाली हर आँख ख़ुद भी दिखाई दे।"

आख़िरी वाक्य उभरा—

देखने के अधिकार के साथ दिखाई देने का दायित्व जुड़ा होना चाहिए।

तभी महासभा का संपर्क टूट गया।

पूरा नहीं।

सिर्फ़ एक प्रसारण।

दीवारों पर Thaeron के आंदोलन का चिह्न उभरा।

फिर एक आवाज़।

Kael की आवाज़।

"आप शीशे का पिंजरा बना रही हैं," उसने कहा। "हर किसी को सलाखें दिखेंगी और आप उसे आज़ादी कहेंगी।"

सुरक्षा प्रणालियों ने प्रसारण रोकना चाहा।

Nerai ने हाथ उठाया।

"उसे बोलने दो।"

सभागार में हलचल मची।

Kael कहता गया—

"एक मुद्रा। कर की एक परत। पैसों का एक नक़्शा। एक ग्रहव्यापी बुद्धि जो तय करेगी कि जोखिम क्या है। आप कहती हैं कि सत्ता को परिषदों, अदालतों और नागरिक परीक्षकों के बीच बाँट देंगी। लेकिन वे सब एक ही प्रणाली इस्तेमाल करेंगे।"

Nerai ने सीधे कैमरे की ओर देखा।

"Kael Thorne।"

आवाज़ पल भर चुप हो गई।

फिर हँसी सुनाई दी।

“आपके पास सबूत नहीं है।”

“नहीं।”

“फिर भी आप सबके सामने मेरा नाम ले रही हैं।”

“मैंने एक आवाज़ को नाम दिया है।”

“ऐसी होगी आपकी पारदर्शी दुनिया? एक विश्लेषक नाम लेगा और बाक़ी काम भीड़ कर देगी?”

“नहीं। इसीलिए मैं आपको दोषी नहीं ठहरा रही। आपसे एक सवाल पूछ रही हूँ।”

“क्या?”

“आप कितना जानते थे?”

सभागार में किसी के हिलने की आहट तक नहीं हुई।

Kael ने कुछ देर बाद ही जवाब दिया।

“इतना कि आज जानता हूँ, मैंने जितना रोका उससे अधिक रोकना चाहिए था।”

“यह जवाब नहीं है।”

“यही इकलौता जवाब है जो आपको मिलेगा।”

“आपने Arien के लिए पैसों के रास्ते बनाने में मदद की।”

“मैंने बहुत लोगों के लिए पैसों के रास्ते बनाने में मदद की है।”

“उसकी मदद क्यों की?”

“क्योंकि आपके भाई ने जिस दुनिया का प्रस्ताव रखा था, उससे मैं डरता था।”

“और अब उससे और ज़्यादा डरते हैं?”

“अब मेरे पास सबूत है कि मेरा डर सही था।”

Nerai उस खाली पर्दे को देखती रही जहाँ से आवाज़ आ रही थी।

“आप तिहाई को पारदर्शिता के ख़िलाफ़ सबूत मानते हैं?”

“मैं इसे सत्ता के एक जगह सिमटने के ख़िलाफ़ सबूत मानता हूँ। Arien ने जैविक ज्ञान, वित्तीय जाल और स्वचालित प्रणालियों का इस्तेमाल किया। आप तीनों को एक ग्रहव्यापी परत में जोड़ना चाहती हैं।”

“और उन कड़ियों को सामने लाना चाहती हूँ।”

“दिखाई देने से दुरुपयोग नहीं रुकेगा।”

“नहीं।”

“तो किससे रुकेगा?”

“इससे कि दुरुपयोग होगा तो वह सिर्फ़ प्रणाली थामने वाले का राज़ नहीं रहेगा।”

Kael हँसा।

“यह तो आस्था है।”

“हाँ।”

जवाब ने जैसे चुपचाप पूरे सभागार को झकझोर दिया।

“हर सामाजिक व्यवस्था इस भरोसे पर टिकी है कि लोग कम से कम कभी-कभी तो नियम मानेंगे। फ़र्क़ यह है कि जब वे नियम तोड़ें तो क्या उसे छिपा सकते हैं।”

“हम Thaeron पर आपके नियम नहीं मानेंगे।”

“यह आपका अधिकार है।”

“तो आप हमें जाने देंगी?”

“अगर आप हिंसा के लिए पैसा नहीं देंगे, जो संपत्ति आपकी नहीं उसे उठाकर नहीं ले जाएँगे और हमारे साझा ढाँचे से हुई आय नहीं छिपाएँगे।”

“यानी शर्तों के साथ आज़ादी।”

“हर आज़ादी वहाँ ख़त्म होती है जहाँ से वह हिसाब शुरू होता है जिसे चुकाना किसी और को पड़ेगा।”

Kael की आवाज़ थम गई।

फिर उसने कहा—

“एक दिन नागरिक आपकी प्रणाली से उन लोगों से भी ज़्यादा डरेंगे जिनसे उनकी रक्षा करने के लिए वह बनी थी।”

“हो सकता है।”

“और तब?”

“तब उन्हें उसे बदलने का अधिकार होना चाहिए।”

“एक ही मुद्रा में?”

“एक सार्वजनिक संवैधानिक व्यवस्था में।”

“यानी एक ही राज्य में।”

Nerai चुप हो गई।

महासभा इसी वाक्य की प्रतीक्षा कर रही थी।

कुछ उम्मीद से।

कुछ डर से।

“आज मैं एक राज्य का प्रस्ताव नहीं रख रही,” उसने कहा। “मैं कह रही हूँ कि हमारी साझा समस्याएँ हम सबको दिखाई दें और हमारी साझा सत्ता पर हम सबकी निगरानी हो।”

“यह एक राज्य की शुरुआत है।”

“हो सकता है।”

“तो कह दीजिए।”

Nerai ने चालीस प्रतिनिधिमंडलों को देखा।

खाली पंक्तियों को।

उस जगह को जहाँ कभी Jesair बैठा था।

“अगर एक दिन Elarion एक राज्य बनता है, तो इसलिए न बने कि किसी ने उसे जीत लिया। न इसलिए कि एक मुद्रा ने बाक़ी सब को हरा दिया। वह इसलिए बने कि लोग जान लें कि उनकी ज़िंदगियाँ बहुत पहले से उनकी सरकारों से कहीं ज़्यादा एक-दूसरे की साझी हैं।”

Kael ने जवाब नहीं दिया।

संपर्क टूट गया।

इस बार उसी ने बंद किया था।

महासभा में तेईस दिन और विचार-विमर्श हुआ।

Nerai ने जो कुछ प्रस्तावित किया था, वह सब स्वीकार नहीं हुआ।

बुनियादी हिस्से की पुष्टि हुई, मगर उसकी राशि पहले की तरह क्षेत्रीय जीवन-यापन की लागत के अनुसार तय होनी थी।

सेतु अब निजी कंपनी नहीं रहता। उसका स्वामित्व पूरे ग्रह के एक सार्वजनिक न्यास को सौंपा जाना था।

अंतरराज्यीय करों, सार्वजनिक भुगतानों, बुनियादी हिस्से और Thaeron से व्यापार के लिए एलार क़ानूनी निपटान इकाई बन गया।

पुरानी मुद्राएँ समाप्त नहीं हुईं।

अभी नहीं।

महासभा ने यह सिद्धांत स्वीकार किया कि आर्थिक या राजनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण प्रभाव रखने वाली हर कंपनी, कोष और न्यास के अंतिम मालिक की पहचान दिखाई देनी चाहिए।

संरक्षित वित्तीय अभिलेख जब भी कोई देखे, उसका अमिट निशान रहना था।

हर छूट के लिए उसे मंज़ूर करने वाले का नाम, क़ानूनी वजह और समाप्ति का समय दर्ज होना था।

जोखिम पहचानने का हर स्वचालित नियम सार्वजनिक जाँच के लिए खुला होना था।

महासभा ने पूरे ग्रह की एक संवैधानिक समिति गठित की।

सरकार नहीं।

अभी नहीं।

Nerai आख़िरी बैठक से निकली तो Daren Voltr बाहर निकलने के रास्ते पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

“आप जीत गईं,” उसने कहा।

“नहीं।”

“एलार क़ानूनी इकाई बन गया।”

“कई इकाइयों में से एक।”

“सेतु अब किसी निजी समूह का नहीं है।”

“यह ज़रूरी था।”

“पूरे ग्रह के लिए करों की एक परत।”

“सीमित अधिकारों वाली।”

Voltr ने उसकी तरफ़ देखा।

“जानती हैं आपकी सबसे ख़तरनाक बात क्या है?”

“नहीं।”

“आप हर क़दम को उसके असली आकार से छोटा बताती हैं।”

Nerai ने इमारत के सामने नामों की दीवार को देखा।

“और आप हर क़दम को आख़िरी क़दम बताते हैं।”

“क्योंकि मैं जानता हूँ कि वे कहाँ ले जाते हैं।”

“कहाँ?”

Voltr ने Nitra की ओर इशारा किया।

“ग्रह की राजधानी की ओर।”

Nerai नदी की तरफ़ देखती रही।

“शायद ग्रह को एक ऐसी जगह चाहिए जहाँ उसे अपना चेहरा देखना ही पड़े।”

39. एक एलार

पुरानी मुद्राएँ किसी मतदान से समाप्त नहीं हुईं।

उनका फ़ैसला रोज़ के लेन-देन में हुआ।

पहले बड़े अंतरराज्यीय आपूर्तिकर्ताओं ने उन्हें लेना छोड़ दिया।

इसलिए नहीं कि महासभा ने उन पर रोक लगा दी थी।

एलार का इस्तेमाल आसान था।

एक दाम।

एक निपटान।

एक शुल्क, सबके सामने।

विनिमय दर का बीमा नहीं।

दो दिन का इंतज़ार नहीं।

यह सवाल नहीं कि भेजने वाले से पाने वाले तक पहुँचते-पहुँचते कितना मूल्य घट जाएगा।

फिर एक से अधिक राज्यों में कारोबार करने वाली कंपनियों के कर्मचारी एलार में वेतन माँगने लगे।

वे नहीं चाहते थे कि उनकी तनख़्वाह की क़ीमत ऐसी सरकार के फ़ैसले से बदले जिसके राज में वे रहते तक नहीं थे।

दुकानदार दो मुद्राओं में दाम लिखते थे।

कुछ समय बाद सिर्फ़ एलार में।

स्थानीय मुद्राएँ खातों में, क़ानूनों में और पुराने अनुबंधों में बनी रहीं।

लेकिन रोज़मर्रा की ज़िंदगी में वे धीरे-धीरे उन भाषाओं-सी हो गईं जिनमें आज भी अनुष्ठान लिखे जाते हैं, मगर रोटी कोई नहीं माँगता।

आख़िरी दो बड़ी मुद्राओं ने अपनी स्वतंत्र विनिमय दर उस आर्थिक संकट के बाद छोड़ दी जिसे उन्होंने ख़ुद पैदा किया था।

उनके केंद्रीय बैंकों ने मुद्रा का मूल्य घटाकर निर्यात को बढ़ावा देने की कोशिश की थी।

मगर कंपनियाँ ऊर्जा और कच्चा माल एलार में ख़रीदती थीं।

उनकी लागत बढ़ गई।

नागरिकों ने अपनी बचत दूसरी जगह पहुँचा दी।

मुद्रा औंधे मुँह गिरी।

राज्य जिस उपाय से कभी अपनी मुश्किल का एक हिस्सा नागरिकों के सिर डाल सकता था, वह उस दुनिया में अब नहीं चलता था जहाँ नागरिकों की पहुँच एक साझे मूल्य तक थी।

तिहाई के सात साल बाद Elarion की एकमात्र वैध मुद्रा एलार थी।

किसी ने कोई एक दिन तय नहीं किया था कि अब यह होगा।

आख़िरी राज्य ने क़ानून स्वीकार किया।

आख़िरी बैंक ने अपने बहीखाते बदले।

आख़िरी पुरानी मुद्रा के लिए एक स्थिर विनिमय दर तय हुई।

और बस, बात ख़त्म हो गई।

इसके बाद जो आर्थिक वृद्धि हुई उसने सुधार के समर्थकों को भी चकित कर दिया।

यह सिर्फ़ मुद्रा की देन नहीं थी।

यह उन रुकावटों के हटने का नतीजा थी जो उसके साथ ग़ायब हो गई थीं।

अब किसी कंपनी को तीस तरह के बहीखाते नहीं रखने पड़ते थे।

एक छोटी कंपनी भी विदेशी मुद्रा विभाग बनाए बिना ग्रह के दूसरे छोर पर माल बेच सकती थी।

निवेशक विनिमय दर के लाभ से नहीं, असली प्रतिफल से परियोजनाओं की तुलना करते थे।

सार्वजनिक ठेकों के दाम एक ही पैमाने पर थे।

कर कार्यालयों को एक ही कराधार दिखता था।

मुनाफ़े पर कर वहीं लगता था जहाँ मूल्य पैदा हुआ था।

दरें धीरे-धीरे नीचे आईं।

पहले कम और मध्यम आय वालों के लिए।

फिर कंपनियों के लिए।

राज्यों ने देखा कि लगभग हर आय से वसूला गया कम कर, उस ऊँचे कर से अधिक राजस्व देता है जिससे आधी बड़ी पूँजी बच निकलती हो।

कर-शरणस्थलों ने अपना वजूद बचाना चाहा।

उन्होंने और भी कम दरें पेश कीं।

फिर पूरी छूट।

फिर ग्रह के नेटवर्क से बाहर गुप्त रजिस्ट्रियाँ।

मगर जिस कंपनी के मालिक का पता न हो, वह एलार में बड़े भुगतान नहीं ले सकती थी, सार्वजनिक ठेके के लिए बोली नहीं लगा सकती थी और न ही रणनीतिक ढाँचे की मालिक हो सकती थी।

राज़ रखना अब भी संभव था।

उसमें फ़ायदा नहीं रहा।

कुछ द्वीपीय राज्य ढह गए।

कुछ बदल गए।

उन्होंने अपने प्रशिक्षित वकीलों, प्रबंधकों और वित्तीय विशेषज्ञों को नई प्रणाली की जाँच में लगा दिया। जो जगहें अँधेरा बेचती थीं, वे सत्यापन के केंद्र बन गईं।

इसमें एक विडंबना थी, मगर Nerai उसे सज़ा नहीं मानती थी।

लोग हमेशा के लिए वही बने रहने को बाध्य नहीं होते जिससे कभी उनकी रोज़ी चलती थी।

बजट घाटे तत्काल दूर नहीं हुए।

तिहाई के बाद पूरे-पूरे इलाक़ों को फिर से बसाना था।

बच गए लोगों की देखभाल महँगी थी।

बुनियादी हिस्सा बढ़ रहा था।

शहर अपने ढाँचे को ऐसी दुनिया के अनुरूप बदल रहे थे जिसमें काम कम था और स्वचालन अधिक।

मगर कर-चोरी घट रही थी।

भ्रष्टाचार के जाल सिमट रहे थे।

अनाप-शनाप क़ीमत वाली परियोजनाएँ अनुबंधों पर हस्ताक्षर से पहले ही पकड़ में आ जाती थीं।

एआई क़ीमत, गुणवत्ता और स्वामित्व की कड़ियों की तुलना करती थी।

वह फ़ैसलों पर रोक नहीं लगाती थी।

चेतावनी देती थी।

चेतावनी के बावजूद कोई सरकार महँगा आपूर्तिकर्ता चुनना चाहे तो चुन सकती थी।

पर उसे वजह बतानी होती थी।

सबके सामने।

ज़िम्मेदारी लेने वाले का नाम देकर।

प्रणाली ने मूर्खता नहीं मिटाई।

अँधेरा उसे जो सुरक्षा देता था, उसमें से कुछ छीन ली।

दस साल बाद अधिकांश राज्यों के बजट में अधिशेष था।

हर साल अधिशेष नहीं होता था।

हर परिस्थिति में उसकी गारंटी नहीं दी जा सकती थी।

मगर यह पुरानी धारणा टूट गई कि राज्य को हमेशा के लिए क़र्ज़दार रहना ही है।

अधिशेष का एक हिस्सा बुनियादी हिस्से में जाता था।

कुछ आरक्षित कोष में।

कुछ स्वचालित प्रणालियों पर साझा स्वामित्व के लिए।

लोग नौकरी कर सकते थे।

कारोबार कर सकते थे।

रचना कर सकते थे।

बच्चे पाल सकते थे।

पढ़ सकते थे।

दूसरों की मदद कर सकते थे।

लेकिन घर, भोजन और बुनियादी देखभाल का उनका अधिकार इस पर निर्भर नहीं रहा कि किसी को उनका वक़्त ख़रीदने की ज़रूरत है या नहीं।

बुनियादी हिस्से ने हर समस्या हल नहीं कर दी।

कुछ लोगों ने अपने जीवन का अर्थ खो दिया।

कुछ मशीनों के गढ़े मनोरंजन की दुनिया में सिमट गए।

बहसें उठीं कि जो लोग समाज को कुछ लौटाते नहीं, उनका भार क्या समाज को उठाना चाहिए।

इन सवालों का कोई आसान जवाब Nerai के पास नहीं था।

Jesair ने कभी कहा था कि इंसान की क़ीमत इसलिए नहीं होती कि किसी मशीन को उसकी ज़रूरत है।

पर इससे यह तो नहीं होता कि इंसान को इस एहसास की ज़रूरत ही न हो कि वह दूसरे इंसान के काम आता है।

इसलिए स्कूल अब बच्चों को सिर्फ़ कोई पेशा अपनाने के लिए तैयार नहीं करते थे।

वे उन्हें रिश्ते बनाना, ज़िम्मेदारी उठाना, साझा मामलों में फ़ैसला लेना और चाहत को ज़रूरत से अलग पहचानना सिखाते थे।

काम बेकार नहीं हो गया था।

वह जीने के अधिकार का एकमात्र प्रमाण नहीं रहा था।

युद्ध भी बदल गया।

शुरू में धीरे-धीरे।

पारदर्शी धन नफ़रत को नहीं पढ़ सकता था।

वह किसी आदमी के मन में उठती यह इच्छा नहीं रोक सकता था कि किसी इलाक़े पर अधिकार जमा ले, पड़ोसियों को सज़ा दे या किसी पुराने अन्याय की आग फिर सुलगा दे।

मगर वह तैयारी को देख सकता था।

हथियारों को निर्माता चाहिए थे।

निर्माताओं को सामग्री।

सामग्री को ऊर्जा।

सेनाओं को रसद।

भाड़े के सैनिकों को भुगतान।

परिवहन मार्गों को बीमा।

प्रचार को मीडिया के मालिक।

कोई बड़ा युद्ध सिर्फ़ दिल के भीतर तैयार नहीं हो सकता था।

उसे अर्थव्यवस्था में उतरना पड़ता था।

और वहाँ वह निशान छोड़ता था।

जब दक्षिण के एक राज्य की गुप्त ख़रीदारी में संभावित सैन्य तैयारी के संकेत मिले, प्रणाली ने दूसरी सरकारों और ख़ुद उसके नागरिकों को आगाह कर दिया।

सरकार ने कहा कि यह नागरिक सेवाओं का आधुनिकीकरण है।

मात्राएँ, आपूर्तिकर्ता और साथ-साथ हो रही दूसरी ख़रीदारी सबके सामने थी।

विपक्ष ने सफ़ाई माँगी।

मित्र राज्यों ने निरीक्षण की पेशकश की।

बेड़ा बनने से पहले परियोजना रुक गई।

एक दूसरे मामले में पारदर्शिता टकराव को नहीं रोक पाई।

पानी के स्रोतों को लेकर दो इलाक़ों का झगड़ा था और दोनों खुलेआम अपने सुरक्षा-दल आगे बढ़ा रहे थे।

तैयारी दुनिया के सामने थी।

इसीलिए कोई यह दिखावा नहीं कर सकता था कि हमला अचानक हुआ।

ग्रह की परिषद पहले ही बीच में आ गई।

गुप्त कूटनीति के ज़रिए नहीं।

सबके सामने हुई बातचीत में, जहाँ दोनों पक्ष देख पाए कि झगड़ा जारी रखने की क़ीमत कितनी होगी।

संघर्ष एक समझौते पर समाप्त हुआ।

इसलिए नहीं कि लोग बेहतर हो गए थे।

इसलिए कि छिपे इरादे की बढ़त जाती रही थी।

धीरे-धीरे साझा रक्षा व्यवस्था बनी।

पहले कक्षीय वलय की सुरक्षा।

फिर Thaeron की।

बाद में रणनीतिक हथियारों की निगरानी।

राज्यों के पास अपने सुरक्षा बल रहे, लेकिन साझा ढाँचे के बिना वे अपने बूते कोई बड़ा युद्ध नहीं चला सकते थे।

मुद्रा, कर और रक्षा के बाद बारी क़ानून की थी।

पूरे ग्रह पर काम करने वाला उद्यम चालीस परस्पर विरोधी अदालतों के अधीन नहीं रह सकता था।

ऐसा नहीं हो सकता था कि नागरिक को एक क्षेत्र में राज्य की सत्ता का कामकाज देखने का अधिकार मिले और दूसरे में नहीं।

साझे संवैधानिक आधार के बिना बुनियादी हिस्सा साझा अधिकार नहीं हो सकता था।

ग्रहव्यापी संवैधानिक समिति ने बारह वर्ष काम किया।

पहला प्रारूप अस्वीकार हो गया।

दूसरा भी।

तीसरे ने ग्रह, क्षेत्र, राज्य और नगर के स्तरों के बीच अधिकार बाँटे।

एक ग्रह।

एक मुद्रा।

एक रक्षा व्यवस्था।

मूल अधिकारों का एक घोषणा-पत्र।

मगर चालीस क़ानूनी परंपराएँ।

दर्जनों भाषाएँ।

स्थानीय शासन के सैकड़ों रूप।

राज्यों का अस्तित्व नहीं मिटा।

वे सत्ता का अंतिम ठिकाना नहीं रहे।

संविधान स्वीकार किए जाने के दिन प्रतिनिधि Nitra में मिले।

कुछ रोए।

दूसरों ने विरोध में मत दिया।

कई वेयरानी प्रतिनिधिमंडल नतीजा आने से पहले ही सभागार से निकल गए।

उनके बहुत-से समर्थक पहले ही Thaeron पर रहने लगे थे।

उन्हें साझा वित्तीय व्यवस्था स्वीकार नहीं थी।

उनका कहना था कि आपसी निगरानी में रखी गई सत्ता भी एक दिन तानाशाही में बदल जाएगी।

उन्होंने अपनी बस्तियाँ, बैंक और क़ानूनी व्यवस्थाएँ खड़ी कर लीं।

Elarion ने उन्हें लौटने के लिए मजबूर नहीं किया।

मगर ग्रहों के बीच एक ऐसी सीमा बन गई जो पहले नहीं थी।

ग्रहों के बीच एक ऐसी सीमा बन गई जिसका आधार जीवविज्ञान नहीं था।

न ही वह नस्लीय बँटवारे से निकली थी।

वह दो सभ्यताओं की सीमा थी।

Elarion पर बड़ी ताक़त का दायित्व था कि वह दिखाई देने वाला निशान छोड़े।

Thaeron के एक हिस्से में राज़दारी को आज़ादी की शर्त माना जाता था।

दोनों संसारों के बीच व्यापार चलता रहा।

अविश्वास के साथ।

नियमों के साथ।

और एक ऐसे सवाल के साथ जिसका हल अभी नहीं निकला था।

समाज कितनी निजता बचाकर रख सकता है कि उसी के भीतर अदृश्य सत्ता फिर से जन्म न ले?

Kael Thorne Thaeron पर रहा।

तिहाई के लिए उसे कभी किसी अंतिम न्यायिक फ़ैसले में दोषी नहीं ठहराया गया।

सबूतों से यह सिद्ध हुआ कि उसने Arien के तंत्र को धन दिया था और अंतिम चरणों को रोकने की कोशिश की थी। जब उसने पहले रास्ते खोले, उस समय वह कितना जानता था, यह सिद्ध नहीं हुआ।
कुछ के लिए वह बच निकला अपराधी था।

दूसरों के लिए वह आदमी जिसने एकीकृत व्यवस्था का ख़तरा समय रहते समझा था।

अपनी नज़र में वह वही आदमी रहा जिसे यक़ीन था कि इतिहास एक दिन उसे सही ठहराएगा।

Arien Korveth दोषी ठहराया गया।

मुकदमा सात साल चला।

सैकड़ों वैज्ञानिकों, प्रबंधकों, बैंकरों, वकीलों और शोकाकुल परिजनों ने गवाही दी।

अदालत ने उसकी यह दलील अस्वीकार कर दी कि परियोजना के अलग-अलग हिस्से क़ानूनी थे।

उसने फ़ैसला दिया कि जो व्यक्ति जानबूझकर वैध हिस्सों को जोड़कर एक समूचे अपराध को अंजाम देता है, वह उस पूरे अपराध का ज़िम्मेदार है।

Arien को मृत्युदंड नहीं दिया गया।

Elarion में मृत्युदंड था ही नहीं।

बाक़ी जीवन उसने ऐसी संस्था में बिताया जहाँ एक-एक ख़र्च, जाँच और फ़ैसला उसी तरह दर्ज होता था जैसे किसी दूसरे नागरिक के मामले में।

वह भी देख सकता था कि उसकी जानकारी किसने खोली।

वह भी अनधिकृत पहुँच को चुनौती दे सकता था।

बहुतों ने इसे हद से ज़्यादा दया माना।

Nerai ने नहीं।

जो व्यवस्था केवल निर्दोषों के अधिकार बचाती है वह अधिकारों की रक्षा नहीं करती।

वह पसंदीदा लोगों की रक्षा करती है।

तिहाई के बीस साल बाद Nerai ग्रह की विधानसभा के सामने खड़ी थी।

उम्र ढल चली थी।

बाल चाँदी हो गए थे।

आँखों में अब भी स्वर्ण वलय नहीं था।

Nitra बदल गया था।

पुराने शहर के ऊपर नई प्रशासनिक मीनारें उठी थीं। नदी पर निःशब्द सार्वजनिक यान आते-जाते थे। कभी जो केंद्रीय बैंकों के मुख्यालय थे वे मुद्रा के इतिहास के अभिलेखागार बन गए थे।

वहाँ बच्चे सीखते थे कि कभी Elarion की तीस मुद्राएँ थीं।

कई बच्चों को यह बात समझ से परे लगती थी।

“क्यों?” वे पूछते।

शिक्षक उन्हें संप्रभुता, विनिमय दर, अवमूल्यन, करों में प्रतिस्पर्धा और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं की रक्षा समझाते।

बच्चे उसी अचरज से सुनते जिससे उनसे पहले की पीढ़ियाँ उस ज़माने के बारे में सुनती थीं जब हर राज्य भार या लंबाई की अलग इकाइयाँ इस्तेमाल करता था।

Nerai नामों की दीवार तक गई।

उस पर अब भी तिहाई में जान गँवाने वालों के नाम दिखते थे।

दशक बीतने पर अब सूची अपने आरंभ पर लौटने लगी थी।

आज उस पर Jesair नहीं था।

Mareia भी नहीं।

Nerai ने गहरा नीला पात्र ज़मीन पर रख दिया।

इस बार उसे वहीं छोड़ दिया।

उसके निजी उपकरण पर एक सूचना उभरी।

ग्रह के ऐतिहासिक अभिलेखागार ने तिहाई की जाँच के रिकॉर्ड खोले हैं।

उद्देश्य—शैक्षिक प्रदर्शनी की तैयारी।

उत्तरदायी व्यक्ति—Laren Saor।

पहुँच का दायरा—वित्तीय साक्ष्यों का नक़्शा, संरक्षित निजी जानकारी को छोड़कर।

Nerai ने सूचना को देखा।

पुरानी दुनिया में शायद उसे कभी पता ही नहीं चलता कि किसी ने उसकी बनाई फ़ाइल खोली है।

नई दुनिया में वह नाम, उद्देश्य और दायरा तीनों देख सकती थी।

वह इस पहुँच को चुनौती दे सकती थी।

उसने ऐसा नहीं किया।

Nitra पर साँझ उतरने लगी थी।

विधानसभा की इमारत पर Elarion का चिह्न जगमगा रहा था।

विधानसभा की इमारत पर पूरे ग्रह का नया चिह्न जगमगा रहा था।

वह न संघ का संकेत देता था, न पुराने राज्यों में से किसी का।

चालीस रेखाएँ एक वृत्त की ओर जाती थीं।

आलोचक कहते थे कि चिह्न में सब कुछ एक में समा जाता है।

उसे बनाने वालों का कहना था कि सब एक-दूसरे से जुड़ते हैं।

Nerai को उसमें दोनों दिखते थे।

हर एकता कुछ बचा लेती है।

और कुछ का अंत कर देती है।

Elarion एक राज्य इसलिए नहीं बना कि उसके निवासियों के बीच अंतर मिट गए थे।

वह इसलिए बना कि धीरे-धीरे उन्होंने यह दिखावा छोड़ दिया कि उनमें से किसी एक के बड़े फ़ैसले का दूसरों पर असर नहीं पड़ता।

एक आदमी का पैसा किसी शोध को चला सकता था।

शोध एक प्रयोगशाला को।

प्रयोगशाला एक बीमारी को।

बीमारी पूरे ग्रह पर मौत को।

लेकिन वही पैसा इलाज का ख़र्च भी उठा सकता था।

मशीनों का।

बुनियादी हिस्से का।

शहरों को फिर से बसाने का।

और एक ऐसी दुनिया का जिसमें दूसरों का भरोसा माँगने से पहले सत्ता को अपना चेहरा दिखाना पड़ता था।

पारदर्शिता ने लोगों को भला नहीं बना दिया।

उसने क्रोध नहीं मिटाया।

अहंकार नहीं।

अधिकार जमा लेने की इच्छा नहीं।

खो देने का डर नहीं।

न ही इंसान की ख़ुद को यह यक़ीन दिला लेने की क्षमता कि उसका अपना घाव ही न्याय है।

उसने सिर्फ़ एक काम किया।

उसने बड़ी ताक़त के लिए बिना परछाईं के चलना मुश्किल कर दिया।

Nerai ने पात्र की ठंडी सतह पर तीन उँगलियाँ रखीं।

उसे नहीं मालूम था क्यों।

इशारा अपने-आप हुआ।

कुछ ज़्यादा ही सहजता से।

पल भर उसे लगा जैसे किसी ऐसी स्मृति ने उसे छुआ हो जो पूरी तरह उसकी अपनी नहीं थी।

एक दूसरा ग्रह।

एक दूसरा सूरज।

एक बग़ीचा।

एक पुरुष और एक स्त्री जो फिर मिलेंगे, भले ही उनके नाम बदल चुके होंगे।

फिर वह अनुभूति चली गई।

Nerai शहर की तरफ़ मुड़ी।

पीछे मृतकों की दीवार रह गई।

सामने जीवितों का संसार।

एक ग्रह।

एक राज्य।

चालीस स्मृतियाँ।

और मूल्य, जिसे अब छाया में चलने की अनुमति नहीं थी।

40. सत्ता का भार

चट्टान इकतीस टन की थी।

दो हफ़्ते पहले उसे Thaeron से लाया गया था। तब से वह Arda के अनुसंधान-कक्ष के बीचोंबीच पड़ी थी। वैज्ञानिकों ने जानबूझकर ऐसी चट्टान चुनी थी जिसका कोई असाधारण भौतिक गुण न हो। उन्हें ऐसी वस्तु चाहिए थी जिसके परिणाम का श्रेय उसके पदार्थ को न दिया जा सके।

उसके चारों ओर धातु के तीन वलय खड़े थे।

हरेक का व्यास लगभग पाँच मीटर था। उनकी सतहें सैकड़ों सँकरे खंडों में बँटी थीं। खंडों के बीच से ऐसे तार गुज़रते थे जिन्हें आसपास के तापमान से बहुत नीचे तक ठंडा किया गया था। फ़र्श से ऊर्जा के मोटे केबल उनके पास तक आते थे।

सुरक्षा-दीवार के पीछे कोई चालीस लोग प्रतीक्षा कर रहे थे।

भौतिक विज्ञानी।

तकनीशियन।

विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि।

प्रौद्योगिकीय जोखिमों की ग्रहव्यापी परिषद।

दो सैन्य विश्लेषक।

और Nerai Sael।

तिहाई को बरसों बीत गए थे। Nerai अब धन के प्रवाह की रोज़मर्रा की जाँचों का नेतृत्व नहीं करती थी। फिर भी उसका नाम उन नियमों से जुड़ा था जिनकी बदौलत महासभा के बाद सेतु एक भुगतान नेटवर्क से धीरे-धीरे ग्रह की अर्थव्यवस्था की बुनियादी सूचना-परतों में से एक बन गया था।

इसीलिए जब भी कोई नया आविष्कार ऐसा प्रश्न उठाता जिसे तकनीशियन अकेले हल नहीं कर सकते थे, उसे बुलाया जाता।

यह चीज़ रखने का अधिकार किसे होगा?

प्रयोग के प्रमुख Oran Sel नियंत्रण-पटल पर खड़े थे।

“फ़र्श पर भार की माप?”

“इकतीस दशमलव चार टन,” प्रयोगशाला की एआई ने उत्तर दिया।

“ऊर्जा?”

“तैयार।”

“समकालिकता?”

“अंतर मापन-सीमा से कम।”

Oran शीशे के पीछे खड़े लोगों की ओर मुड़े।

“आप जो देखने वाले हैं वह चौथा परीक्षण है। पहले तीन में प्रयोगशाला की टोली के अलावा कोई उपस्थित नहीं था। जब तक दो स्वतंत्र केंद्रों ने परिणाम दोहरा नहीं लिया, हमने उसे प्रकाशित नहीं किया।”

फिर वे पटल की ओर मुड़े।

“क्षेत्र को दस प्रतिशत पर चालू करो।”

पर्दे पर फ़र्श पर पड़ने वाला भार दिखाई दिया।

इकतीस टन।

तीस।

अट्ठाईस।

पच्चीस।

चट्टान ज़रा भी नहीं हिली।

बीस प्रतिशत पर माप सत्रह टन था।

तीस प्रतिशत पर नौ।

कक्ष में पूरा सन्नाटा था।

Oran ने शक्ति बढ़ाकर चालीस प्रतिशत की।

भार घटकर एक टन से कम रह गया।

फिर लगभग शून्य।

चट्टान फ़र्श से उठ गई।

पहले कुछ मिलीमीटर।

कुछ ही देर में उसके और ज़मीन के बीच पाँच सेंटीमीटर का अंतर था।

Oran ने नियंत्रक सरकाया।

Thaeron की इकतीस टन चट्टान एक मीटर की ऊँचाई तक उठ गई।

Nerai को अपने कंधों में एक पीड़ादायक खिंचाव महसूस हुआ। बुद्धि कह रही थी चट्टान को क्षेत्र ने थाम रखा है। शरीर को फ़र्श के ऊपर चट्टान का विराट पिंड लटका दिखाई दे रहा था, और उसे उसके गिरने का इंतज़ार था।

“आप इसे आगे बढ़ा सकते हैं?” परिषद के एक सदस्य ने पूछा।

Oran ने सिर हिलाया।

चट्टान धीरे-धीरे दाहिनी ओर चली।

फिर वापस।

उसकी चाल इतनी शांत थी कि दृश्य बेतुका लग रहा था। जिस वस्तु को कुछ ही साल पहले हिलाने के लिए भारी परिवहन तंत्र चाहिए था, वह अब कक्ष में टहलते हुए मनुष्य की चाल से चल रही थी।

Oran ने शक्ति घटा दी।

चट्टान धीरे-धीरे उतरी।

फ़र्श को छूते ही कक्ष में गहरी धमक गूँजी।

“इसका द्रव्यमान वही रहा?” Nerai ने पूछा।

“हाँ।”

“तो बदला क्या?”

Oran कुछ देर शब्द ढूँढ़ते रहे।

“एकदम सरल शब्दों में, हमने पदार्थ और स्थानीय गुरुत्वीय क्षेत्र के बीच का बंधन बदला। पूरे समय चट्टान का जड़त्व और उसकी भीतरी बनावट पहले जैसी रही। लेकिन जब क्षेत्र का प्रभाव पूरा था, तब धरती उसे लगभग खींच ही नहीं रही थी।”

“लगभग?”

“अब तक हम बिल्कुल शून्य पर नहीं पहुँच सके हैं।”

Nerai ने फिर चट्टान की ओर देखा।

“और पहुँच जाएँगे?”

Oran मुस्कुराए।

“इसी सवाल की ख़ातिर तो हम विज्ञान करते हैं।”

प्रयोग की ख़बर कुछ ही घंटों में Elarion का चक्कर लगा आई।

सबसे अधिक चर्चा परिवहन की थी।

ऊर्जा के मॉडलों ने तुरंत हिसाब लगाया कि उड़ान के पहले चरण में माल का गुरुत्वीय बंधन कम हो सके तो उसे कक्षा तक पहुँचाने का ख़र्च कितना होगा।

निर्माण कंपनियाँ ऐसी संरचनाओं के नक़्शे बनाने लगीं जिन्हें ज़मीन पर साबुत बनाकर फिर उठाते हुए उनकी जगह रखा जा सके।

Thaeron की खानों को उन बड़ी चट्टानों को ढोने का रास्ता दिखा जिन्हें ढोने का ख़र्च खनन से अधिक था।

शहर सार्वजनिक परिवहन की एक नई पीढ़ी की बात करने लगे।

अंतरिक्ष अभियंताओं ने ऐसी परियोजनाएँ निकाल लीं जो दशकों से अभिलेखागार में पड़ी थीं क्योंकि उनकी लागत का हिसाब नहीं बैठता था।

कुछ दिन तक लगा कि Elarion के हाथ उन आविष्कारों में से एक आया है जिनके पहले और बाद के दौर में इतिहास बँट जाता है।

फिर दूसरी रिपोर्ट आई।

वह सार्वजनिक नहीं थी।

वह एक विश्वविद्यालय के सुरक्षा मॉडल से निकली थी।

वैज्ञानिक जाँच रहे थे कि अलग-अलग वलयों के क्षेत्र एक-दूसरे पर क्या असर डालते हैं। उनका अनुमान था कि कुल प्रभाव अलग-अलग प्रभावों के जोड़ के आसपास होगा।

गणनाओं ने एक दूसरा ही गुण दिखाया।

कुछ दशाओं में प्रभाव उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक बढ़ जाता था।

दो भौतिक विज्ञानियों को पहले लगा कि नतीजा किसी भूल की देन है।

उन्होंने मॉडल फिर चलाया।

फिर दूसरी संगणन प्रणाली पर।

आख़िर उन्होंने स्वतंत्र सत्यापन के लिए कहा।

नतीजा वही रहा।

Oran Sel को रिपोर्ट सुबह तीन बजे मिली।

पाँच बजे उन्होंने ग्रह की परिषद की तत्काल बैठक माँगी।

Nerai सात बजे के कुछ देर बाद पहुँची।

कमरे की दीवार पर Elarion का नक़्शा था।

बीच में लगभग चार सौ किलोमीटर व्यास का एक वृत्त चमक रहा था।

“यह क्या है?” उसने पूछा।

Oran खिड़की के पास खड़े थे। लगता था सारी रात सोए नहीं थे।

“प्रभाव का इलाक़ा।”

“किस प्रभाव का?”

“पूरे प्रभाव का।”

Nerai ने इंतज़ार किया।

Oran ने भौतिक मॉडल खोला।

“अभी हमारे पास जो जनित्र है वह छोटी-सी जगह में गुरुत्वीय बंधन कम कर सकता है। हमें बड़े या अधिक शक्तिशाली प्रभाव की उम्मीद थी। मॉडल कुछ और ही दिखा रहा है। कहीं बड़े इलाक़े में यह बंधन लगभग शून्य तक पहुँच सकता है और उस अवस्था में बना रह सकता है।”

Nerai ने वृत्त की तरफ़ इशारा किया।

“इस पूरे इलाक़े में?”

“मॉडल के अनुसार हाँ।”

“कितना बड़ा इलाक़ा है?”

“इस गणना में व्यास तीन सौ अस्सी किलोमीटर है।”

Nerai ने उनकी तरफ़ देखा।

“आप मुझसे कह रहे हैं कि एक राज्य जितने बड़े इलाक़े के ऊपर आप गुरुत्वाकर्षण बंद कर सकते हैं।”

Oran ने फ़ौरन सिर हिलाया।

“मैं कह रहा हूँ कि भौतिकी इसकी अनुमति देती जान पड़ती है। हमारे पास ऐसा कोई उपकरण नहीं है।”

“क्या बनाया जा सकता है?”

Oran कमरे में बैठे एक और आदमी की तरफ़ मुड़े।

वह परियोजना का प्रमुख तकनीकी विश्लेषक था।

“तकनीक की मौजूदा स्थिति में, हाँ,” उसने कहा।

उस जवाब ने कमरे की हवा बदल दी।

“कितना समय लगेगा?” Nerai ने पूछा।

“अगर किसी के पास सभी ज़रूरी साधन हों, तो शायद दो या तीन साल।”

“और सभी ज़रूरी साधनों से आपका क्या आशय है?”

दीवार पर एक सूची उभरी।

विशेष क्षेत्र-उपकरण।

उनका तालमेल साधने वाली तकनीक।

बड़ी मात्रा में दुर्लभ पदार्थ।

असाधारण ऊर्जा संसाधन।

कई विशेष उत्पादन सुविधाएँ।

इलाक़े के सटीक वैज्ञानिक आँकड़े।

इतनी संगणन क्षमता, जितनी पूरे ग्रह पर कुछ दर्जन केंद्रों के ही पास थी।

और अत्यंत संकरे विषयों के विशेषज्ञ तकनीकी कर्मचारियों का एक समूह।

Nerai सूची को धीरे-धीरे पढ़ती रही।

“अगर किसी ने सचमुच इसे चालू कर दिया तो क्या होगा?”

इस बार Oran ने उत्तर दिया।

“असर हर परिस्थिति में एक-सा नहीं होगा।”

“सबसे बुरी ऐसी संभावना बताइए जो सचमुच घट सकती है।”

Oran बैठ गए।

"लोग और ढीली पड़ी चीज़ें सतह से लगभग अपना बंधन खो देंगे। पानी का बर्ताव एकदम बदल जाएगा। इलाक़े की हवा तेज़ी से खिसकेगी। ज़मीन पर चलने वाले वाहनों का सतह से संपर्क टूट जाएगा। असर देर तक रहा तो ग्रह का घूर्णन हालात को और उलझा देगा।"

नक़्शे पर कुछ और परतें उभरीं।

शहर।

नदियाँ।

ऊर्जा-जाल।

परिवहन केंद्र।

"ज़मीन ख़ुद उड़कर अंतरिक्ष में नहीं चली जाएगी," Oran कहते गए। "दूसरे बल भी चट्टानों को बाँधे रखते हैं। लेकिन गुरुत्वीय संतुलन अनगिनत व्यवस्थाओं को प्रभावित करता है। बसी हुई जगह पर अचानक ऐसा क्षेत्र उत्पन्न हुआ तो भारी जनहानि हो सकती है।"

"और जब उसे बंद करेंगे?"

"गुरुत्वाकर्षण लौट आएगा।"

अगली बात Nerai उनके कहने से पहले समझ गई।

क्षेत्र के प्रभाव में जो कुछ ज़मीन से उठ गया होगा, वह सब गिरने लगेगा।

"इस घेरे में कितने लोग रहते हैं?" उसने पूछा।

"इस मॉडल में एक करोड़ दस लाख।"

किसी और ने कोई सवाल नहीं किया।

तकनीकी परिषद ने अगले छह दिन यह समझने की कोशिश में बिताए कि इस खोज को व्यावहारिक प्रयोग की पहुँच से बाहर रखा जा सकता है या नहीं।

जवाब सुखद नहीं था।

तकनीक कठिन थी, महँगी थी, और कई ऐसे उपकरणों पर निर्भर थी जो गिनी-चुनी जगहों पर बनते थे। मगर उसका भौतिक सिद्धांत इतना व्यापक था कि वह हमेशा के लिए छिपाया नहीं जा सकता था।

समय रहस्य का साथ नहीं दे रहा था।

एक प्रयोगशाला ने यह परिघटना खोजी थी तो आगे चलकर दूसरी भी खोज लेती।

एक एआई उसका मॉडल बना सकती थी तो एक दिन दूसरी भी उसे खोज निकालती।

Elarion बहुत पहले समझ चुका था कि वैज्ञानिक ज्ञान को पीढ़ियों तक भरोसे के साथ किसी एक कमरे में बंद नहीं रखा जा सकता।

इसलिए सवाल भौतिकी से चलकर समाज के पास आ गया।

एक असाधारण बैठक में निर्माताओं, विश्वविद्यालयों, ऊर्जा तंत्रों, सुरक्षा संस्थाओं, नागरिक परिषदों और सेतु के प्रतिनिधि इकट्ठे हुए।

उनके बीच Daren Voltr भी बैठा था।

वह बूढ़ा हो चुका था। लेकिन Elarion की चिकित्सा इतनी आगे बढ़ गई थी कि उम्र बढ़ने का अर्थ बहुत पहले ही सार्वजनिक जीवन से अपने-आप विदाई लेना नहीं रह गया था।

बोलने की बारी आई तो वह Oran की ओर मुड़ा।

“इसे संभव बनाने के लिए कुल कितनी अलग-अलग चीज़ें ख़रीदनी या बनानी होंगी?”

“हज़ारों।”

“उनमें कितनी आसानी से मिल जाती हैं?”

“अधिकांश।”

“तो एक-एक पुर्ज़े पर रोक लगाने से कुछ हल नहीं होगा।”

“बिल्कुल।”

“कितनी अनिवार्य हैं?”

Oran ने सूची खोली।

“यह इस पर निर्भर है कि आप अनिवार्य किसे कहते हैं। अगर बात ऐसी शर्तों की है जिनके बिना आज ऐसा तंत्र बनाया नहीं जा सकता तो लगभग सत्रह तकनीकी पूर्वशर्तें हैं।”

“सत्रह उत्पाद?”

“पूर्वशर्तें। कुछ उत्पाद हैं। दूसरी शर्तों का संबंध निर्माण की क्षमता, ऊर्जा तक पहुँच, लोगों या गणना की सामर्थ्य से है।”

Voltr ने सिर हिलाया।

“और Elarion पर कितनी संस्थाएँ हैं जो सत्रहों पूरी कर सकती हैं?”

Oran पल भर चुप रहे।

“यह मैं नहीं जानता।”

अपनी जगह से Nerai बोली।

“सेतु जानता है।”

सब उसकी तरफ़ मुड़े।

Voltr मुस्कुराया।

“और क्या।”

Nerai उसके लहजे को जानती थी।

“आपको सवाल का जवाब चाहिए या इस पर बहस कि जवाब हमारे पास क्यों है?”

“दोनों।”

“पहले जवाब।”

Nerai के सामने सेतु का कार्यपटल खुला।

“हमें तकनीकी पूर्वशर्तें भेजिए।”

Oran की भौंहें तन गईं।

“हम उनका पूरा ब्योरा वित्तीय प्रणाली में नहीं डाल सकते।”

“डालने की ज़रूरत नहीं। हमें उनके आर्थिक रूप की ज़रूरत है।”

“क्या मतलब?”

Nerai ने पहली मद की ओर इशारा किया।

“इन दुर्लभ उपकरणों की माँग कितनी होगी?”

Oran ने मात्रा बताई।

“उन्हें बनाता कौन है?”

दीवार पर तीन कंपनियों के नाम उभरे।

“और उपकरणों की दूसरी श्रेणी?”

उन्होंने उसकी न्यूनतम ज़रूरत भी बताई।

निर्माताओं और उनकी उत्पादन क्षमताओं का ब्योरा उभरा।

“ऊर्जा?”

Oran ने आवश्यक मात्रा की सीमा बताई।

सेतु ने उस ज़रूरत के अनुरूप बिजलीघरों, भंडारों और औद्योगिक तंत्रों का ब्योरा दिखाया।

“विशेष पदार्थ?”

एक और परत उभरी।

“गणना?”

एक और।

“सूक्ष्म निर्माण?”

एक और।

“विशेषज्ञ?”

यहाँ Nerai ठहर गई।

“लोगों के मामले में हम केवल कुल उपलब्ध विशेषज्ञता देखेंगे। नाम सुरक्षित रहेंगे।”

Voltr ने भौंहें उठाईं।

“चलो, कुछ तो।”

Nerai आगे बढ़ी।

सेतु धीरे-धीरे शर्तों को एक साथ जोड़ने लगा।

वह संदिग्धों की सूची नहीं बना रहा था।

वह सामर्थ्य का नक़्शा बना रहा था।

प्रणाली को बड़े उत्पादन उद्यमों के मालिकों का पता था।

उसे वे क्षमताएँ मालूम थीं जिन्हें कंपनियाँ सार्वजनिक रूप से घोषित करती थीं और जिनका सत्यापन उनकी खरीद, खपत और उत्पादन से किया जा सकता था।

वह ऊर्जा के बड़े अनुबंधों को जानती थी।

उसे अनुसंधान केंद्रों के वित्तपोषण का पता था।

वह पूँजी का मूल जानती थी।

उसे औद्योगिक भवनों के पट्टों, कच्चे माल की बड़ी खरीदारियों, विशेष मशीनों के ऑर्डरों और Elarion तथा Thaeron के बीच उपकरणों की आवाजाही का पता था।

तिहाई से पहले यह जानकारी दर्जनों बैंकों, रजिस्ट्रियों और राज्यों में अलग-अलग पड़ी रहती।

अब उसे अंतिम मालिक और आर्थिक उद्देश्य के आधार पर एक साथ देखा जा सकता था।

कुछ मिनट बाद दीवार पर एक संख्या आई।

14

Voltr के चेहरे पर अब हँसी नहीं थी।

“चौदह का क्या अर्थ हुआ?”

“चौदह आर्थिक समूह आज प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अस्सी प्रतिशत से अधिक शर्तें पूरी करने में समर्थ हैं।”

“आर्थिक समूह?”

“क़ानून की नज़र में वे सैकड़ों कंपनियाँ हो सकती हैं। सेतु अंतिम स्वामित्व, नियंत्रण, वित्तपोषण और आर्थिक निर्भरता के आधार पर उन्हें एक समूह के रूप में पहचानता है।”

Nerai ने पहला रिकॉर्ड खोला।

Thaeron का एक बड़ा खनन संघ।

इक्यानबे प्रतिशत।

दूसरा।

पूरे ग्रह पर ऊर्जा प्रणालियाँ बनाने वाली एक कंपनी।

नवासी।

तीसरा।

एक राज्य का सैन्य-औद्योगिक समूह।

चौरानबे।

चौथा।

कक्षीय निर्माण कंपनियों का एक संघ।

सत्तासी।

फिर और नाम।

कुछ निजी थे।

कुछ सार्वजनिक।

तीन राज्यों के थे।

एक आर्थिक समूह चालीस से अधिक कंपनियों में बँटा था।

“और सौ प्रतिशत किसके पास है?” Voltr ने पूछा।

“किसी के पास नहीं।”

“अभी तक।”

“अभी तक।”

कमरे में सन्नाटा रहा।

दीवार पर चौदह नाम चमक रहे थे।

कुछ दिन पहले तक उनके बीच बस इतना साझा था कि वे ग्रह के सबसे उन्नत तकनीकी संगठनों में गिने जाते थे।

अब एक और बात उनमें समान थी।

हर कोई उस क्षमता के इतना पास था कि एक विशाल इलाक़े का गुरुत्वाकर्षण बदल देने वाला उपकरण बना सके।

“इसी पल का मुझे डर था,” Voltr ने कहा।

बैठक का चौथा घंटा चल रहा था।

“क्यों?” Nerai ने पूछा।

“क्योंकि वित्तीय प्रणाली ने अभी-अभी चौदह ऐसी संस्थाओं की सूची बनाई है जिन्हें वह संभावित ख़तरा मानती है।”

“सूची प्रौद्योगिकीय क्षमता के बारे में है।”

“और आप कहती हैं कि व्यवहार में इन दोनों बातों से फ़र्क़ नहीं पड़ता?”

“फ़र्क़ बुनियादी है।”

Voltr ने पहले नाम की ओर इशारा किया।

“यह कंपनी Thaeron पर खनन करती है। किसी को धमकी नहीं देती। इसके प्रबंधन के ख़िलाफ़ हिंसा का कोई रिकॉर्ड नहीं है। ज़रूरी उपकरणों में से ज़्यादातर उसके पास इसलिए हैं क्योंकि खनन में उनका इस्तेमाल है।”

“हाँ।”

“फिर भी आप उस पर निगाह रखती हैं।”

“सेतु क्षमता में आने वाले बदलाव पर निगाह रखता है, निदेशक के बर्ताव पर नहीं।”

“इससे मुझे तसल्ली नहीं होती।”

Nerai कुछ देर नक़्शा देखती रही।

“तिहाई से पहले हम ठीक उलटी भूल करते थे।”

Voltr ने कुछ नहीं कहा।

“आँकड़े देखने से पहले हम संदेह का कारण ढूँढ़ते थे। Arien के काम को अलग-अलग देखने पर सब साधारण लगता था। शोध होता था, अनुदान मिलता था, ख़रीद होती थी, भुगतान होते थे। हर कोई अपना हिस्सा देखता था और अगले के बारे में पूछने की वजह मिलने का इंतज़ार करता था।”

Voltr ने आँखें झुका लीं।

Nerai कहती गई।

“इस तकनीक में तो इरादे से शुरुआत करना और भी ख़राब होगा। किसी को एक करोड़ दस लाख लोगों को मारने की इच्छा होना ज़रूरी नहीं। हो सकता है वह प्रयोग कर रहा हो। उससे भूल हो सकती है। हो सकता है वह क्षेत्र की अस्थिरता को कम आँक ले।”

Oran ने सिर हिलाया।

“यह सचमुच हो सकता है।”

Nerai ने सूची की ओर इशारा किया।

“हमें जानना होगा कि ग्रह पर कहाँ एक निश्चित सीमा पार करने की सामर्थ्य बन रही है। और उस जानकारी के आधार पर किए गए हर हस्तक्षेप की जाँच होनी चाहिए।”

“सीमा क्या होगी?” Voltr ने पूछा।

“यह एक राजनीतिक फ़ैसला है।”

“यानी आख़िर में राजनीति ही हुई।”

“वह हमेशा थी।”

Nerai ने मेज़ का सहारा लिया।

“अब फ़र्क़ यह है कि हम देख सकते हैं, हम किस चीज़ के बारे में फ़ैसला कर रहे हैं।”

बैठक का अगला हिस्सा एक तकनीकी अभ्यास बन गया।

किसी ने बिना लाइसेंस गुरुत्व उत्सर्जकों की बिक्री पर रोक का प्रस्ताव दिया।

Oran ने बताया कि कुछ साल में छोटे उत्सर्जक बड़ी संख्या में बनने लगेंगे।

अगला प्रस्ताव दूसरे विशेष उपकरणों के बारे में था।

निर्माताओं ने जवाब दिया कि इन्हीं का इस्तेमाल चिकित्सा, ऊर्जा और कक्षीय नौवहन में भी होता है।
विशेष पदार्थों पर रोक उद्योग के एक हिस्से को पंगु बना देती।

सिर्फ़ ऊर्जा की निगरानी से भी सटीक नतीजा नहीं मिलता।
धीरे-धीरे साफ़ हुआ कि किसी अकेली चीज़ से ख़तरा पैदा नहीं होता।

वह कई क्षमताओं के एक साथ आने से जन्म लेता था।

बहस में Nerai लगभग चुप रही।

परत में भी उसे ठीक ऐसा ही लगा था।

नक़द कारोबार अपने-आप में कुछ सिद्ध नहीं करता था।

कोष कुछ सिद्ध नहीं करता था।

प्रयोगशाला कुछ सिद्ध नहीं करती थी।

शोध के लिए दिया गया भुगतान कुछ सिद्ध नहीं करता था।

विपत्ति उनके बीच के संबंधों में जन्मी थी।

Taren ने कभी कहा था कि पूरे ग्रह को देखें तो किसी भी इंसान और किसी दूसरे के बीच महज़ कुछ अनुबंधों की दूरी है।
तब Nerai ने कहा था कि उन्हें किसी कड़ी की तलाश नहीं है।

उन्हें दिशा की तलाश है।

अब कुछ वैसा ही चाहिए था।

ऐसी प्रणाली जो ध्यान दे कि अर्थव्यवस्था के कई मामूली काम कब एक असाधारण सामर्थ्य की ओर बढ़ने लगे हैं।

दिन के अंत तक एक कार्यकारी प्रारूप बन गया।

उसे **रणनीतिक क्षमताओं का रजिस्टर** नाम दिया गया।

नाम भ्रामक था, क्योंकि यह आम पंजी जैसी नहीं थी।

उसमें कोई यह नहीं लिखता था कि अमुक कंपनी के पास गुरुत्वीय हथियार है।

सेतु लगातार गणना करता था कि अमुक आर्थिक समूह किन प्रौद्योगिकीय शर्तों को वास्तव में पूरा कर सकता है।

गणना में सार्वजनिक रूप से अनुमोदित श्रेणियों का इस्तेमाल होता था।

निर्माण में सूक्ष्मता।

पदार्थ।

ऊर्जा।

आपूर्ति और परिवहन।

संगणन क्षमता।

विशेषज्ञता।

आवश्यक उपकरणों का स्वामित्व।

नियंत्रण वाली कंपनियों के माध्यम से उन तक पहुँचने की सामर्थ्य।

दीर्घकालिक अनुबंध।

और सर्वाधिक संवेदनशील तकनीकों के लिए अलग-अलग जगह उपलब्ध क्षमताओं का सम्मिलित प्रभाव भी।

केवल सीमा पार कर लेना किसी को दोषी नहीं बनाता था।

लेकिन ऊँचे स्तरों पर परियोजना का उद्देश्य घोषित करना और कुछ परीक्षणों को स्वतंत्र निगरानी में होने देना अनिवार्य था।

विस्तृत आँकड़ों तक हर पहुँच दर्ज होती थी।

संबंधित संस्था देख सकती थी कि उसकी सामर्थ्य की पड़ताल किसने की।

प्रणाली जिन नियमों से जोखिम आँकती थी, वे विशेषज्ञों की सार्वजनिक समीक्षा के लिए खुले थे।

जो तकनीकी ब्योरे निर्देश की तरह इस्तेमाल हो सकते थे, वे संरक्षित रहते थे।

Elarion ने दो ऐसी चीज़ों को अलग करने का प्रयत्न किया जिनमें आसानी से भ्रम हो सकता था।

इंसान की निजता।

और सत्ता का अदृश्य होना।

असली समस्या सात महीने बाद सामने आई।

सेतु ने चौदह समूहों में से एक में बदलाव दर्ज किया।

वह कंपनी थी Asteron Dynamics।

लोग उसे भारी परिवहन प्रणालियों की निर्माता के रूप में जानते थे। तीन महाद्वीपों पर उसके कारख़ाने थे, एक ऊर्जा कंपनी में उसकी हिस्सेदारी थी और Thaeron के एक विशेष पदार्थ निर्माता में उसकी छोटी हिस्सेदारी थी।

गुरुत्वीय क्षेत्रों में उसकी प्रौद्योगिकीय क्षमता का प्रारंभिक आकलन तिरासी प्रतिशत था।

चार महीनों में वह बढ़कर बानवे हो गया।

इसके पीछे कोई एक बड़ी खरीद नहीं थी।

Asteron ने एक छोटी तकनीकी कंपनी खरीद ली थी।

उसकी एक सहायक कंपनी ने एक संगणन केंद्र से लंबी अवधि का अनुबंध किया था।

एक अन्य उद्यम ने ऊर्जा भंडारण की एक परियोजना में हिस्सा लिया था।

Asteron के वित्तपोषण वाले एक शोध न्यास ने चार अनुभवी वैज्ञानिकों को नियुक्त किया था।

इन घटनाओं में हर एक की अपनी आर्थिक वजह थी।

एक साथ उन्होंने एक नई स्थिति बना दी थी।

सेतु ने प्रौद्योगिकी आयोग को सूचना भेजी।

आयोग ने Asteron से स्पष्टीकरण माँगा।

जवाब उसी दिन आ गया।

कंपनी मालवाहक यानों के लिए एक नई गुरुत्वीय प्रणाली विकसित कर रही थी।

परियोजना वैध थी।

उसके तकनीकी मापदंडों की जाँच में समस्या सामने आई।

Asteron अपने परीक्षण के लिए कई बड़े उपकरण बनाने वाला था।

“केवल इनसे पूरे इलाक़े में क्षेत्र नहीं बन सकता,” Oran ने कहा।

Nerai उनके बग़ल में बैठी थी।

“और कितने चाहिए?”

“इस रूप में चाहिए तो इनके कई गुने।”

“तो बात ख़त्म।”

“नहीं।”

Oran ने स्वामित्व के संबंधों का नक़्शा दिखाया।

Asteron ने अपने लिए कुछ उपकरण मँगाए थे।

और उपकरण उससे जुड़ी एक ऊर्जा कंपनी ने मँगाए थे।

कुछ उस शोध केंद्र में बन रहे थे जिसे उसके न्यास से मदद मिलती थी।

और कुछ Thaeron की एक कंपनी के नाम आरक्षित थे जिसमें Asteron की अल्पमत हिस्सेदारी थी।

क़ानूनी अभिलेखों के अनुसार ये चार अलग-अलग परियोजनाएँ थीं।

सेतु ने पूँजी, संविदात्मक दायित्वों और साझे वित्तपोषण में उनकी कड़ियाँ पहचानी थीं।

कुल गिनती सीमा के पार थी।

Nerai देर तक उस संख्या को देखती रही।

“उन्हें इसका पता था?”

“किसे?”

“Asteron के प्रबंधन को।”

Oran ने कंधे उचकाए।

“यह हमें वित्तीय आँकड़े नहीं बता सकते।”

आयोग ने निदेशक मंडल के अध्यक्ष को बुलाया।

उसका नाम Deiran Vos था।

वह ख़ुद आया।

जब उन्होंने उसे नक़्शा दिखाया तो पहले उसके चेहरे पर उलझन दिखी।

फिर ग़ुस्सा।

“इन उत्सर्जकों का आपस में कोई संबंध नहीं है।”

Nerai ने पहले समूह की ओर इशारा किया।

“ये आपकी परियोजना के हैं।”

“हाँ।”

“ये आपकी ऊर्जा संबंधी सहायक कंपनी के।”

“वह अलग कंपनी है।”

“उस पर आपका नियंत्रण है।”

“आर्थिक। उसका तकनीकी काम हम नहीं चलाते।”

“इनमें आपके न्यास का पैसा लगा है।”

“न्यास का प्रबंधन स्वतंत्र है।”

“उसकी आय का बहत्तर प्रतिशत आपसे आता है।”

Deiran ने अपनी पीठ टिका दी।

“और Thaeron वाले उपकरणों से हमारा कोई संबंध नहीं है।”

Nerai ने अनुबंध खोला।

Asteron ने कंपनी के क़र्ज़ की ज़मानत दी थी।

क़र्ज़ न चुकाए जाने पर उसे उसकी तकनीकी परिसंपत्तियों का एक हिस्सा अपने नियंत्रण में लेने का अधिकार था।

Deiran थोड़ी देर अनुबंध पढ़ता रहा।

“यह मुझे नहीं पता था।”

“मुझे आप पर विश्वास है।”

इससे वह चौंक गया।

“तो फिर मैं यहाँ क्यों बैठा हूँ?”

“क्योंकि आपके समूह के हाथ ऐसी क्षमता आ रही है जो शायद उसके अपने प्रबंधन को भी दिखाई नहीं देती।”

कमरे में सन्नाटा छा गया।

यह बात आरोप से भी अधिक असहज करने वाली थी।

Deiran ने फिर नक़्शा देखा।

“आप कह रही हैं कि मेरी कंपनी एक पूरे इलाक़े के लिए गुरुत्वीय तंत्र बना सकती है और मुझे इसका पता भी न हो?”

Oran ने उत्तर दिया।

“अभी नहीं। दो शर्तें पूरी नहीं होतीं। मौजूदा रफ़्तार से साल भर में वे भी पूरी हो सकती हैं।”

“और अगर उन्हें किसी सहायक कंपनी ने पूरा कर लिया?”

“अगर क्षमता पर आपका वास्तविक नियंत्रण हो सकता है तो सेतु उसे आर्थिक समूह के खाते में जोड़ेगा।”

Deiran मुस्कुराया। इस बार मुस्कान में हँसी नहीं थी।

“तो प्रणाली को मेरी कंपनी के बारे में मुझसे ज़्यादा पता है।”

Nerai ने नक़्शा देखा।

“इस एक बात में, शायद हाँ।”

Asteron का मामला बिना किसी दंड के समाप्त हुआ।

कंपनी ने अपनी गुरुत्वीय परियोजनाओं को स्वतंत्र निगरानी के लिए खोल दिया और सबको एक तकनीकी कार्यक्रम के अधीन कर दिया।
सबसे बड़ा झटका बाद में आया।

ग्रह की परिषद ने एक ऐतिहासिक अनुकरण तैयार कराया।

वह जानना चाहती थी कि तिहाई से पहले के दिनों में यही तकनीक आई होती तो क्या होता।

विश्लेषकों ने सत्रह तकनीकी पूर्वशर्तें लीं और उन्हें पुरानी वित्तीय दुनिया में रखा।
तीस मुद्राएँ।

बैंकों की गोपनीयता।

अज्ञात अंतिम मालिकों वाले कोष।

न्यास।

करों के अलग-अलग अधिकार-क्षेत्र।

व्यापार के गोपनीय मामले।

तरह-तरह की लाइसेंस व्यवस्थाएँ।

राज्यों के बीच आँकड़ों का सीमित आदान-प्रदान।

फिर मॉडल को एक काम दिया गया—

पता लगाओ कि क्या पुरानी व्यवस्था इस क्षमता को उभरते देख पाती, अगर किसी एक संस्था के पास पूरी तस्वीर न होती।

एआई ने हज़ारों ऐसी संभावनाएँ खोज निकालीं।

कहीं एक कारख़ाने का ब्योरा था।

कहीं वित्तपोषण का एक रिकॉर्ड।

कहीं ऊर्जा के संसाधनों की एक प्रविष्टि।

कहीं Thaeron से आए माल का हिसाब।

कहीं विश्वविद्यालयों के शोध अनुबंध।

कहीं औद्योगिक उपकरणों का ज़िक्र।

कहीं ऊर्जा के ढाँचे की अलग प्रविष्टि।

हर दफ़्तर को कुछ दिखता।

किसी को पर्याप्त नहीं दिखता।

Nerai चुपचाप अनुकरण देखती रही।

वह इस दृश्य को कुछ ज़्यादा ही अच्छी तरह पहचानती थी।

रंग अलग थे।

तकनीक अलग थी।

ढर्रा वही था।

एक ख़तरा इतने हिस्सों में बँटा हुआ कि हर हिस्सा निर्दोष लगे।

फिर विश्लेषकों ने सेतु पर वही अभ्यास चलाया।

मॉडल ने तस्वीर धुँधली करने की कोशिश की।

सेतु ने अंतिम मालिकों का संबंध सामने रख दिया।

मॉडल ने दूसरी कोशिश की।

सेतु ने पूरा आर्थिक समूह दिखा दिया।

फिर एक न्यास सामने आया।

सेतु को उसके धन का स्रोत दिखाई दिया।

फिर वित्तपोषण का एक और रिश्ता उभरा।

सेतु ने लेनदार और ज़मानतों को भी शामिल कर लिया।

फिर उपकरणों पर अधिकार का प्रश्न उठा।

सेतु ने उस क्षमता को गिना जो समूह के नियंत्रण में थी।

फिर राज्य की सीमाएँ सामने आईं।

अब सीमा पार करते हुए मुद्रा कोई अंधा कोना नहीं बनाती थी।

पहले एक हल्का-सा संकेत मिला।

क्षमता और बढ़ी तो स्वचालित निगरानी शुरू हुई।

फिर तकनीक के बारे में सूचना देना अनिवार्य हो गया।

अंतिम स्तर पर ज़रूरी अनुमति के बिना प्रणाली महत्त्वपूर्ण खरीद पूरी नहीं होने देती।
अनुकरण समाप्त होने के बाद कमरे में देर तक कोई नहीं बोला।

Daren Voltr, Nerai के बग़ल में बैठा था।

“तो यह है आपका तर्क,” आख़िर उसने कहा।

“मेरा नहीं।”

“तो किसका?”

Nerai ने नतीजों की तरफ़ इशारा किया।

“भौतिकी का।”

Voltr ने चेहरे पर हाथ फेरा।

"Jesair ने सार्वभौमिक बुनियादी आय से शुरुआत की थी।"

"मुझे पता है।"

"वह न्यायसंगत हिस्से की बात करता था।"

"मुझे पता है।"

"फिर हम भ्रष्टाचार की बात करने लगे। करों की। राजनीति की। युद्ध की।"

उसने गुरुत्वीय क्षेत्र के नक़्शे को देखा।

"और अब आप कहती हैं कि इसी प्रणाली की ज़रूरत हमें इसलिए है कि कोई एक दिन आधे महाद्वीप के ऊपर गुरुत्वाकर्षण न बंद कर दे।"

Nerai मुस्कुराई।

"आप ऐसे कहते हैं तो कुछ बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात लगती है।"

"क्या यह बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात है?"

उसने अनुकरण के नतीजे को देखा।

"नहीं।"

क्षेत्रीय पैमाने के गुरुत्वीय क्षेत्र की संभावना का पता जनता को तभी चला जब सुरक्षा व्यवस्था स्वीकार हो चुकी थी।

ब्योरे तक पहुँच सीमित रही।

लोग जानते थे कि तकनीक क्या कर सकती है।

उन्हें मोटे तौर पर यह भी मालूम था कि किस तरह की क्षमताएँ चाहिए।

क्षेत्र की सटीक ज्यामिति, तालमेल की निर्णायक शर्तें और वे मापदंड जिनसे कोई व्यावहारिक अभिकल्प निकाल सकता था, प्रकाशित नहीं किए गए।

बहस तीखी थी।

समाज का एक हिस्सा चाहता था कि सभी गुरुत्वीय तकनीकों का स्वामी केवल राज्य हो।

वैज्ञानिकों ने इसका विरोध किया।

दूसरे लोग हर उपकरण का पूरा ब्योरा सार्वजनिक करवाना चाहते थे।

उद्योग जगत ने कहा कि गुरुत्वीय प्रणालियाँ जल्द ही परिवहन और उत्पादन का आम हिस्सा होने वाली हैं।

आख़िर Elarion ने तय किया कि क्षमता पर नियमन उसके विस्तार के अनुसार होगा।

चीज़ें उठाने वाला छोटा यंत्र साधारण उपकरण बना रहा।

औद्योगिक जनित्रों का तकनीकी पंजीकरण अनिवार्य था।

उच्च स्तर का क्षेत्र बना सकने वाली प्रणालियों के लिए अनुमति चाहिए थी।

क्षमता क्षेत्रीय प्रभाव के स्तर के पास पहुँचती तो ग्रहव्यापी निगरानी अपने-आप शुरू हो जाती।

व्यवस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा तैयार उपकरण से संबंधित नहीं था।

सेतु देखता था कि क्या कहीं उसे बनाने की **ज़रूरी परिस्थितियाँ** आकार ले रही हैं।

इससे सुरक्षा की धारणा ही बदल गई।

पिछली सभ्यताएँ हथियारों के भंडार की रखवाली करती थीं।

Elarion ने हथियार बनाने की सामर्थ्य के जन्म को देखना सीखा।

इसके लिए सेतु को किसी के मन की बात जानने की ज़रूरत नहीं थी।

इरादा मन में छिपा रहता था।

आर्थिक सामर्थ्य के भौतिक परिणाम होते थे।

उसे पदार्थ चाहिए था।

ऊर्जा।

मशीनें।

इमारतें।

लोग।

परिवहन।

गणना।

और ये सब अर्थव्यवस्था से होकर गुज़रते थे।

एक शाम बैठक के बाद Nerai और Voltr अकेले रह गए।

खिड़कियों के पार Nitra फैला था।

नदी के ऊपर अलग-अलग स्तरों पर यातायात चल रहा था और इमारतों के बीच से नए गुरुत्वीय मालवाहक मंच गुज़र रहे थे। कुछ ही साल पहले उनमें से हर एक चमत्कार लगता।

अब लोग शायद ही उनकी ओर देखते थे।

Voltr ऐसे ही एक मंच को देख रहा था।

उस पर एक पुल के ढाँचे का हिस्सा लदा था।

“मुझे अब भी लगता है कि आपने एक ख़तरनाक चीज़ के लिए दरवाज़ा खोल दिया,” उसने कहा।

“कौन-सी?”

“ऐसी प्रणाली जो आदमी के कुछ करने से पहले ही जानती है कि वह क्या कर सकता है।”

Nerai पल भर चुप रही।

“वह यह नहीं जानती।”

“अभी हमने चौदह कंपनियों की तालिका देखी है।”

“वह जानती है कि तकनीकी तौर पर वे क्या कर सकती हैं। वह यह नहीं जानती कि वे क्या करेंगी।”

“जिस आदमी की जाँच आप शुरू करेंगी, उसके लिए यह फ़र्क़ शायद बहुत छोटा हो।”

“इसीलिए जाँच की भी जाँच होती है।”

Voltr हँसा।

“हर बात का आपके पास एक ही जवाब है।”

“क्योंकि समस्या अब भी वही है।”

“सत्ता।”

“हाँ।”

Voltr उसकी तरफ़ मुड़ा।

“अगर हमारे पास सेतु नहीं होता तो?”

Nerai ने शहर को देखा।

“इस तकनीक के मामले में?”

“हाँ।”

वह Voltr की अपेक्षा से अधिक देर तक सोचती रही।

“हमारे पास लाइसेंस होते। निर्माताओं का निरीक्षण। उपकरणों की पंजी। सुरक्षा सेवाएँ। क्रमांक।”

“यह इतना निराशाजनक तो नहीं लगता।”

“है भी नहीं।”

Nerai उसकी तरफ़ मुड़ी।

“मगर किसी को प्रणाली से बचना होता तो वह उसकी अधूरी निगाह का लाभ उठा लेता।”

Voltr चुप हो गया।

“हर जगह काग़ज़ों पर अपना-अपना काम दर्ज होता। उद्योग, वित्त, शोध—हर कोई अलग जवाब देता। कुछ लोगों को शायद यह भी पता न होता कि वे किस काम में हाथ बँटा रहे हैं।”

“Arien की तरह।”

“हाँ।”

बाहर से एक और मालवाहक मंच गुज़रा।

“पुरानी व्यवस्था उपकरण को ढूँढ़ती,” Nerai कहती गई। “सेतु देखता है कि कहीं वे हालात एक साथ बन रहे हैं जिनमें उपकरण जन्म ले सकता है।”

Voltr शहर की रोशनियों को देखता रहा।

“और एक दिन तकनीक इससे भी ताक़तवर होगी।”

“ज़रूर।”

“इससे भी ताक़तवर?”

Nerai मुस्कुराई।

“सौ साल पहले आज का सवाल भी हमें बेतुका लगता।”

Voltr ने सिर हिलाया।

“तो आख़िर में पारदर्शी धन का सबसे बड़ा सरोकार पैसों से नहीं है।”

Nerai ने उसकी तरफ़ देखा।

उससे इस वाक्य की उम्मीद नहीं थी।

“पैसे कभी महज़ पैसे नहीं थे।”

“तो क्या हैं?”

Nerai कुछ देर नदी के उस पार बहती रोशनी की धारा देखती रही।

“वे इस बात का नक़्शा हैं कि एक इंसान भौतिक दुनिया में क्या कर सकता है।”

Voltr चुप रहा।

Nerai कहती गई।

“पैसे से आप खाना ख़रीद सकते हैं। घर। यान। कारख़ाना। शोध। ऊर्जा। प्रभाव। एक सेना। और अब ऐसा उपकरण भी जो गुरुत्वाकर्षण बदल देता है।”

“तो जो पैसे को देखता है, वह सत्ता को देखता है।”

“उसके एक हिस्से को।”

“और जिसके क़ब्ज़े में पैसा है, उसके क़ब्ज़े में सत्ता है।”

“इसीलिए सेतु किसी एक आदमी के क़ब्ज़े में नहीं होना चाहिए।”

Voltr के चेहरे पर हल्की मुस्कान आई।

“आख़िर आपको मेरी पुरानी आपत्तियाँ समझ आ ही गईं।”

“मैं उन्हें हमेशा से समझती थी।”

“बस अनसुना करती थीं।”

“नहीं। इसीलिए तो हमने यह दिखाने का इंतज़ाम किया कि किसने किसका रिकॉर्ड देखा।”

Voltr हँसा।

इस बार दिल से।

“आपसे कोई जीत नहीं सकता।”

“यह आप मुझसे बरसों पहले भी कहते थे।”

कुछ ही सालों में गुरुत्वीय प्रणालियाँ जीवन का हिस्सा बन गईं।

भारी माल सड़कों के ऊपर से गुज़रने लगा।

कक्षा तक परिवहन सस्ता हो गया।

Thaeron पर उन जगहों में शहर बस गए जहाँ निर्माण करना पहले आर्थिक दृष्टि से बेमानी था।

अस्पतालों में कमज़ोर क्षेत्रों से उन रोगियों का इलाज किया जाता था जिनका शरीर अपना ही भार नहीं सँभाल पाता था।

शोधकर्ता दूसरे तारों की ओर जाने वाले यानों के बारे में सोचने लगे।

जो तकनीक लाखों को मार सकती थी, उसी ने Elarion के लिए एक ऐसी दुनिया की राह खोली जिसके साधन पहले उसके पास नहीं थे।

Nerai को इसमें कोई विरोधाभास नहीं दिखा।

आग घर को गर्म भी रख सकती थी और शहर को जलाकर राख भी कर सकती थी।

ऊर्जा अस्पताल को जीवित भी रख सकती थी और हथियार को शक्ति भी दे सकती थी।

कृत्रिम बुद्धि इलाज भी ढूँढ़ सकती थी और मारने का अधिक कारगर तरीक़ा भी।

Elarion जितनी अधिक तकनीकों पर अधिकार पाता गया, यह सवाल अपने-आप में उतना ही कम महत्त्वपूर्ण होता गया कि कोई आविष्कार अच्छा है या बुरा।

निर्णायक बात यह थी कि बड़े पैमाने पर उसका इस्तेमाल करने की शक्ति किसे मिल रही है, इस शक्ति के बारे में कौन जानता है और उसे रोक कौन सकता है।

गुरुत्वीय क्षेत्रों ने ही सेतु पर सार्वजनिक बहस को हमेशा के लिए बदल दिया।

तब तक बहुत बड़ी आबादी पारदर्शी धन को अब भी आर्थिक सुधार के रूप में देखती थी।

उससे बुनियादी हिस्से की गणना होती थी।

कर-चोरी घटती थी।

भ्रष्टाचार सामने आता था।

राजनीतिक सत्ता के लिए गुप्त धन जुटाना मुश्किल होता था।

क्षेत्रीय गुरुत्वीय क्षेत्र की खोज के बाद प्रणाली का अर्थ बदल गया।

लोगों की समझ में एक सीधी बात आ गई।

जिस सभ्यता के पास ऐसी तकनीक हो कि कोई व्यक्ति, कंपनी या राज्य लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित कर सके, उसे ऐसी सत्ता को पूरा आकार लेने से पहले, उसके जन्म के समय ही पहचानना होगा।

गुप्त विचार का अपने-आप में कोई भार नहीं था।

उसे साकार करने के लिए दुनिया को हिलाना पड़ता था।

और दुनिया संसाधनों के बल पर हिलती थी।

किसी को कारख़ाने के लिए पैसे देने पड़ते थे।

किसी को सामग्री पहुँचानी पड़ती थी।

कोई ऊर्जा देता था।

कोई मशीनें बनाता था।

कोई वैज्ञानिकों को वेतन देता था।

कोई जगह किराये पर लेता था।

कोई बरसों तक उस काम का ख़र्च उठाता था जब परियोजना अभी किसी भी तरह ख़तरनाक नहीं दिखती थी।

पहली बार चालू होने से बहुत पहले हर बड़ी तकनीक अर्थव्यवस्था में अपने निशान छोड़ चुकी होती थी।

पुराना Elarion इन निशानों को बैंकों, राज्यों और मुद्राओं के बीच बाँट देता था।

नया Elarion उन्हें एक साथ देख सकता था।

तभी बहुत-से लोगों को Jesair के वाक्य का अर्थ उससे कहीं व्यापक लगा जितना Nitra के मंच के दिनों में लगा था।

मूल्य को छाया में नहीं चलना चाहिए।

क्योंकि मूल्य महज़ संपदा नहीं था।

वह दुनिया को बदलने की सामर्थ्य था।

और जो सभ्यता ख़ुद गुरुत्वाकर्षण को बदलने की सामर्थ्य पाने लगी थी, वह अब इस बात से अनजान नहीं रह सकती थी कि वह सामर्थ्य किन हाथों में बढ़ रही है।

पृथ्वी के लिए एक सीख

चौकन्ने पाठक ने अवश्य देखा होगा कि यहाँ वर्णित Elarion की समस्याएँ आज की पृथ्वी की भी समस्याएँ हैं। मेरा विश्वास है कि Elarion की तरह हम भी उन्हें सुरक्षित ढंग से, अपने नियंत्रण में रहते हुए हल कर सकते हैं। इसके लिए समूचे ग्रह पर एक ही केंद्रीकृत, पारदर्शी वित्तीय निपटान सूचना प्रणाली स्थापित करनी होगी। मैं इन समस्याओं को एक-एक कर गिनाऊँगा और कुछ वाक्यों में बताऊँगा कि ऐसी प्रणाली उनके समाधान में क्या फ़र्क डाल सकती है।

धरती पर प्रौद्योगिकी की बढ़ती ताक़त को काबू में रखने का सवाल

विज्ञान की प्रगति मानवता को ऐसी स्थिति के और क़रीब ले जा रही है जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता और जैव प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग करके, थोड़े से साधनों के बल पर, चुपचाप समूचे ग्रह को महामारी के ख़तरे में डाला जा सकता है। ऐसी गोपनीय परियोजना के लिए जितनी रकम चाहिए, आज एक हुनरमंद किशोर भी अपने यूट्यूब चैनल से कमा सकता है। किसी आधुनिक कारख़ाने के गोदाम में जाकर पूछिए कि अमुक पुर्ज़े कितने हैं और कहाँ रखे हैं। गोदाम का प्रभारी अपनी सूचना प्रणाली पर एक नज़र डालकर आपको जवाब दे देगा। मेरा मानना है कि आधुनिक समाज की व्यवस्था भी इसी तरह चलनी चाहिए। ज़रूरत पड़ने पर उसके संचालकों को निपटान प्रणाली में एक नज़र डालकर यह बता सकना चाहिए कि कौन किसी ख़ास तरह की कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल कर रहा है और जैविक उपकरण मँगाने वाली किसी संस्था से उसका कोई वित्तीय संबंध है या नहीं। ऐसे सवाल का जवाब दे पाना ही तय कर सकता है कि कोई सभ्यता बचेगी या मिट जाएगी। यह धारणा कि राजनेताओं और शासन के हाथ में जितनी कम शक्ति हो उतना अच्छा, तभी तक टिकती है जब तक धन और संपत्ति का प्रवाह आँखों से ओझल है। पारदर्शी समाज में किसी राजनेता को अपनी छिपी मंशा ढकने का अवसर नहीं मिलेगा। सत्ता के दुरुपयोग का विचार उसके पैसों के लेनदेन में झलका नहीं कि वह पकड़ा जाएगा। पारदर्शिता एक ऐसा बचाव होगी जिसके रहते आज के मुक़ाबले कहीं अधिक उपयुक्त लोग राजनीति में आएँगे।

यदि पैसे का प्रवाह सबको दिखाई देगा तो छिपकर कोई जैविक प्रयोगशाला खड़ी नहीं कर सकेगा, क्योंकि हम एक-दूसरे की हाँडी में कहीं बेहतर झाँक सकेंगे। यह उस सवाल का मेरा जवाब है कि इस ग्रह पर दस अरब लोगों को कैसे सँभाला जाए कि वे एक-दूसरे को खा न जाएँ। समाज के ठीक केंद्र में एक

मानकीकृत व्यवस्था होगी, जिसकी अपनी सुरक्षा सुनिश्चित की गई होगी। उसके ज़रिए कोई भी किसी और के काम की जाँच कर सकेगा और निगरानी का स्तर बना रहेगा।

भ्रष्टाचार और अकुशल शासन

आज किसी अर्थशास्त्री से पूछिए कि मानवता के सामने सबसे बड़ी मुश्किल क्या है। उसके पहले कुछ जवाबों में यह ज़रूर होगा कि हम अब तक राज्यों को कंपनियों जितनी कुशलता से चलाने का तरीक़ा नहीं खोज पाए हैं। एक मुद्रा वाले पारदर्शी समाज में भ्रष्टाचार की खाद पाकर कोई नया पुतिन नहीं उग सकेगा, क्योंकि वहाँ भ्रष्टाचार करना ही असंभव होगा। सत्ता का हर दुरुपयोग लगभग उसी क्षण दिख जाएगा और उसकी सज़ा भी तत्काल मिलेगी। इस बदलाव के बाद धीरे-धीरे राज्य कहीं बेहतर ढंग से काम करने लगेंगे। अस्पताल और राजमार्ग चीन से भी तेज़ी से बनेंगे। फुलाकर बताई गई क़ीमतों पर ठेके नहीं दिए जा सकेंगे। एक आदमी का जानना काफ़ी होगा कि किसी चीज़ की क़ीमत बेतहाशा बढ़ाई गई है। वह प्रणाली में देखकर, शिकायत आगे पहुँचाने के तय रास्ते से, उसी समय सारी दुनिया को पुकारकर बता सकेगा।

कर चोरी की समस्या

करों की व्यवस्था प्रायः दो तरह से चलती है। कर इतने ऊँचे होते हैं कि लोग उन्हें चुकाने से बचने के हर जतन करते हैं। वसूली कम होती है तो राजनेता कर और बढ़ाना चाहते हैं, जिससे वसूली और घटती है। या फिर कर वाजिब होते हैं, लोग ख़ुशी से उन्हें चुकाते हैं, वसूली अच्छी होती है और दरें और भी घटाई जा सकती हैं। ऊँचे करों से बुरी है ऐसी व्यवस्था जिसमें दरें भले कम हों, भुगतान से बचने के रास्ते बहुत हों। कारोबार का माहौल जितना एक ख़राब, अपारदर्शी और छूट की गलियों से भरी कर व्यवस्था बिगाड़ती है, उतना कुछ और नहीं बिगाड़ता। मेरी नज़र में वाजिब और सहने योग्य कर की ऊपरी सीमा 25 प्रतिशत है, और उसमें मूल्यवर्धित कर भी शामिल है। मिसाल के लिए, स्लोवाकिया में कर्मचारी के कुल वेतन-व्यय पर जितने कर और अंशदान चुकाने पड़ते हैं, वे हद से बाहर हैं। मूल्यवर्धित कर और उत्पाद शुल्क भी गिनें तो प्रभावी कर दर 55–60 प्रतिशत से भी ऊपर पहुँच जाती है। ऊपर से स्लोवाक राजनेताओं ने ऐसी छूटें बना दी हैं जिनके तहत, मसलन, एक लाख यूरो तक के कारोबार वाली सीमित देयता कंपनियों के मालिक महज़ 10 प्रतिशत कर दे सकते हैं। नतीजा वही हुआ जिसकी उम्मीद थी। लोग बड़ी तादाद में नौकरी और एकल व्यवसाय छोड़कर सीमित देयता कंपनियाँ बनाने लगे।

मुझे विश्वास है कि यदि करों से बच निकलने के रास्ते न होते तो कर और अंशदान मिलाकर 25 प्रतिशत की दर राज्य चलाने के लिए भरपूर होती। यदि धन पारदर्शी होता तो यह भी दिखता कि किसने कितना कर चुकाया। कर देना और उस तरह समाज को चलाने में हाथ बँटाना प्रतिष्ठा की बात बन जाती।

युद्धों का अंत और पैसों की हर हेराफेरी का तत्काल खुलासा

समाज में धन पारदर्शी हो जाए तो वह कभी न हो सकेगा जो हमास ने 2023 की शरद ऋतु में कर दिखाया था, जब उसने चोरी-छिपे हासिल किए हथियारों से सैन्य हमलों की तैयारी की। पारदर्शी प्रणाली में भुगतान की वजह के तौर पर मध्यम दूरी की मिसाइलें खरीदना दर्ज करना संभव नहीं होगा। और हालात उस हद तक पहुँच ही नहीं सकेंगे। आज इस्राइली जिस तरह फ़िलिस्तीनियों की ज़मीन छीनते हैं और बंदरों जैसी ढिठाई से उस पर हाथ धरते हैं जो उनकी है ही नहीं, वह एक पारदर्शी समाज में मुमकिन ही न होगा। आज जो बदमाश पैसों पर पड़े रहस्य के परदे का फ़ायदा उठाता है, धन पारदर्शी होते ही उसकी ओट चली जाएगी और उसके कर्मों का फ़ैसला समाज करेगा।

सार्वभौमिक मूल आय (UBI) का न्यायपूर्ण और पारदर्शी क्रियान्वयन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्रांति ने पूरी पृथ्वी को ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया है जहाँ Viditeľné peniaze परियोजना हो या न हो, समाज की बुनियाद उखड़कर नए सिरे से पड़ेगी। मेरा अनुमान है कि आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा, यानी पचास प्रतिशत से भी कहीं अधिक लोग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण रोज़गार पाने में असमर्थ हो जाएगा। काम से वंचित लोगों की रोज़ी-रोटी का संकट धरती भर में अशांति भड़का सकता है। हमें तय करना होगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता जो संपदा रचे, वह बिना आय वाले लोगों में इंसाफ़ से कैसे बाँटी जाए। किसे कितना पैसा मिले, यह तय करना, और इस तरह तय करना कि बँटवारा खुला और उचित हो तथा बाद में उसकी जाँच हो सके, ऐसी प्रणाली माँगता है जो समाज के ठीक केंद्र में हो और जिससे यह पढ़ा जा सके कि संसाधन कहाँ और कैसे बँट रहे हैं। इन जानकारियों के बिना इसका संतोषजनक हल नहीं निकल सकता। पूरे ग्रह पर केंद्रीकृत निपटान प्रणाली लागू होने से बैंकिंग के कई पूरे क्षेत्र अनावश्यक हो जाएँगे, क्योंकि वैकल्पिक मुद्राओं और उनसे जुड़े वित्तीय कारोबार की ज़रूरत जाती रहेगी। शायद शुरू में इस उद्योग में दहशत फैल जाए, पर हमें याद रखना चाहिए कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन हर हाल में आ रहा है। मेरा ख़याल है कि उसके बाद समाज में एक भी ईंट

अपनी जगह नहीं बचेगी। जब ये बदलाव हो चुकेंगे, तब जो बनेगा वह आज की दुनिया से बुनियादी तौर पर अलग होगा। नई तकनीकी नींव पर बसा वह समाज हर इंसान के साथ न्याय और पारदर्शिता बरतेगा। जब आने वाली इस बड़ी उथल-पुथल की धूल कुछ बैठेगी, लोग अपने जीवन में अर्थ और संतोष नए सिरे से तलाशेंगे। बेहतर आभासी यथार्थ और मनुष्य तथा मशीन के बीच कहीं अधिक उन्नत संपर्क-साधनों के रूप में नई तकनीक उस तलाश में निर्णायक होगी। लोग अपना अधिकांश समय आभासी दुनियाओं में बिताएँगे। वहाँ अनुभवों की इतनी छटाएँ होंगी कि उनके आगे मूल भौतिक यथार्थ बेरंग जान पड़ेगा। उसकी भूमिका मनुष्य को जीवित रखने की रह जाएगी, ताकि वह कम-से-कम अड़चनों के साथ आभासी संसारों की सामग्री का आस्वाद ले सके।

अनंत जीवन की चुनौतियाँ और पृथ्वी की आबादी के सवाल का पारदर्शी हल

मेरा मानना है कि शरीर की उम्र बढ़ने और उसके फिर स्वस्थ होने की जैविक प्रक्रियाओं पर इतनी पकड़ पा लेने से मानवता अब कुछ ही क़दम दूर है कि बीमारियाँ, यहाँ तक कि बुढ़ापा ख़ुद, मृत्यु का कारण नहीं रहेंगे।

यदि लोगों के लिए सदा जीवित रहना संभव हो गया तो पृथ्वी कितनी आबादी सँभाल सकती है, यह विकट सवाल बन जाएगा। ऐसी स्थिति में जनसंख्या घातांकीय गति से बढ़ने लगेगी। जो एक बार जन्म लेगा, उसके लिए इस ग्रह को शायद अनिश्चित काल तक गरिमापूर्ण जीवन की परिस्थितियाँ सुनिश्चित करनी होंगी। बहुत संभव है कि लोगों को संतान पैदा करने से हतोत्साहित करने की प्रवृत्तियाँ जन्म लें, क्योंकि धरती पर उसका भारी बोझ पड़ेगा। निजी तौर पर मेरा विश्वास है कि संसाधनों का कुशल उपयोग हो तो पृथ्वी आज की आबादी से दसियों गुना लोगों का पेट भर सकती है। लेकिन यदि लोग संतान भी चाहेंगे तो हमें अंतरिक्ष में बसना होगा। पहले सौरमंडल के वे ग्रह जहाँ किसी तरह गुज़ारा हो सके, और आगे चलकर, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, संभवतः तारों के बीच यात्राएँ भी। धरती लंबे समय तक कितनी नई आबादी सँभाल सकती है, इसके आकलन में भी केंद्रीय निपटान प्रणाली के आँकड़ों की मुख्य भूमिका होगी।

राजनीतिक आंदोलन https://HumanityUnitedMovement.org

लगभग बीस वर्ष सोचने-विचारने के बाद, 2019 से मैं एक सूचना प्रणाली पर काम कर रहा हूँ। यह एक वेब अनुप्रयोग है जहाँ इंटरनेट का कोई भी उपयोगकर्ता पंजीकरण करके अपनी संपत्ति का विवरण भर सकता है। अगले क़दम पर वह कुछ शर्तों के अधीन पोर्टल के दूसरे उपयोगकर्ताओं को अपने विवरण की जाँच करने दे सकता है।

यह अनुप्रयोग यहाँ उपलब्ध है https://app.visiblemoney.org

पूरा विचार एक सीधे-से सिद्धांत पर टिका है। यदि कोई अपनी सारी संपत्ति इस तरह की ऑनलाइन जाँच के लिए खोल देता है तो बहुत संभव है कि उसका ब्यौरा सही और पूरा हो। वरना बस एक ऐसे उपयोगकर्ता की ज़रूरत है जिसे उससे कुछ ज़्यादा मालूम हो। वह पलक झपकते ही अनुप्रयोग के खुले मंच पर इसका ढिंढोरा पीट सकता है, जहाँ उसी पल सारी दुनिया उसे देख सकेगी।

अनुप्रयोग का पहला संस्करण 2023 के क्रिसमस पर तैयार था। मुझे उम्मीद थी कि फ़रवरी 2024 में स्लोवाकिया के राष्ट्रपति चुनाव से पहले शायद कोई ईमानदार राजनेता मेरे साथ आ जाए। लेकिन अनुप्रयोग में किसी ने रुचि नहीं ली। राजनीतिक खेमे के जिस हिस्से का हिसाब काग़ज़ पर साफ़ होने की उम्मीद थी, उसे भी इस तरह अपनी संपत्ति सामने रखने में दिक़्क़त थी। शायद दिक़्क़त अनुप्रयोग में थी भी नहीं। एक उम्मीदवार के सहायक ने कुछ समय तक मेरे संदेशों का जवाब दिया और मुझसे बात की, लेकिन पत्रकारों ने जब संपत्ति का विवरण माँगा तो उस उम्मीदवार का बर्ताव ख़ासा अजीब था। यूरोपीय संसद के कुछ सदस्यों समेत दूसरे लोगों तक अनुप्रयोग को पहुँचाने की चंद और कोशिशों के बाद मुझे समझ में आया कि अगर मैं चाहता हूँ कि राजनीति इन सिद्धांतों पर चलने लगे, तो मुझे अपना राजनीतिक आंदोलन खड़ा करना होगा, जो पहले ही दिन से उन पर चले।

इसी तरह Humanity United Movement का विचार जन्मा।

राजनीति का आधार, सहज विवेक

आंदोलन का बुनियादी सिद्धांत सहज विवेक होगा। इससे मेरा आशय किसी धुँधली-सी सहज शक्ति से नहीं है जो इंसान को अपने आप सही हल सुझा दे। मेरा आशय सबसे पहले सोचने के एक ढंग से है। हम समस्या की जड़ समझने की कोशिश करें, उपलब्ध जानकारी जुटाएँ, अलग-अलग हलों को परखें और उसे चुनें जिससे मनचाहा नतीजा निकलने की सबसे अधिक उम्मीद हो।

राजनीति में बहुत बार हम इसका उलटा देखते हैं। पहले राय बनती है, फिर उसकी तरफ़दारी करने वाली दलीलें ढूँढ़ी जाती हैं। राजनेता जान लेते हैं कि उनके मतदाता क्या सुनना चाहते हैं, और अपनी बोली उसके हिसाब से ढाल लेते हैं। समस्या हल करने से ज़्यादा उन्हें इस बात की फ़िक्र रहती है कि उनका हल मीडिया में अच्छा दिखे और उन्हें राजनीतिक लाभ मिले।

मेरी नज़र में यह बुनियादी भूल है। अगर हम चाहते हैं कि समाज बेहतर चले तो हमें उन उपायों को भी परखने के लिए तैयार रहना होगा जो पहली नज़र में हमें नहीं सुहाते। हमें यह मानने का हौसला चाहिए कि हमसे असहमत आदमी सही हो सकता है और हमारे अपने विश्वास ग़लत मान्यताओं पर टिके हो सकते हैं।

इसीलिए मैं चाहता हूँ कि Humanity United Movement लोकलुभावन राजनीति के विरोध में अडिग रहे। इसका मतलब यह नहीं है कि औरों से अलग दिखने की ख़ातिर आंदोलन ऐसे उपाय अपनाए जो लोगों को न भाएँ। मतलब यह है कि कोई उपाय कितना लोकप्रिय है, इससे यह तय नहीं होगा कि वह कितना सही है।

हर बड़े राजनीतिक फ़ैसले के पीछे ऐसी दलीलें होनी चाहिए जिन्हें जनता परख सके। हमें समझा सकना चाहिए कि हम किस समस्या का हल चाहते हैं, किन विकल्पों पर हमने विचार किया, यही रास्ता क्यों चुना और इसमें क्या जोखिम हैं। यदि फ़ैसले के नतीजों को पहले से मॉडल पर आज़माया जा सकता है या प्रयोग से परखा जा सकता है तो हमें ऐसा करना चाहिए।

साथ ही हमें याद रखना होगा कि हर सवाल का एक साफ़ जवाब नहीं होता। कभी विशेषज्ञ एकमत नहीं होते, कुछ आँकड़े ग़ायब होते हैं, और हर उपाय अपने साथ अलग लाभ और अलग हानि लाता है। ऐसे में अपनी अनिश्चितता मान लेना कमज़ोरी नहीं है। कमज़ोरी है वहाँ निश्चय का ढोंग करना जहाँ निश्चय है ही नहीं।

यह भी ज़रूरी होगा कि बाद में फ़ैसलों का मूल्यांकन हो सके। यदि कोई उपाय नाकाम निकलता है तो सिर्फ़ इसलिए उसकी पैरवी करते नहीं रहना चाहिए कि उसे लागू हमने किया था। हमें उसे बदलना या छोड़ना चाहिए।

मक़सद ऐसे लोगों का दल खड़ा करना नहीं है जो ख़ुद को सत्य का अचूक ध्वजवाहक समझें। ठीक उलटा है। मैं ऐसा माहौल चाहता हूँ जिसमें अपनी ही राय को बार-बार कसौटी पर रखना फ़ैसले तक पहुँचने की स्वाभाविक प्रक्रिया हो।

राजनीतिक अकादमी

आज की राजनीति में मुझे जिस चीज़ की कमी खलती है, वह है शासन सँभालने के लिए लोगों की व्यवस्थित तैयारी।

मान लीजिए कि हम अपना घर बनवाना चाहते हैं। शायद ही हम यह मानकर चलें कि निर्माण का प्रभार लेने वाला आदमी काम करते-करते सब सीख जाएगा। हम चाहेंगे कि वह निर्माण के बुनियादी उसूल समझता हो, अलग-अलग कारीगरों के काम को परख सके और कहीं कुछ गड़बड़ हो तो उसे पहचान ले।

लेकिन जब राज्य चलाने की बात आती है तो अक्सर हम ऐसी अपेक्षा नहीं रखते। सार्वजनिक पदों तक ऐसे लोग पहुँचते हैं जिनके इरादे नेक हो सकते हैं, जो अच्छी तरह बात कर सकते हैं, या जिन्हें कारोबार का अनुभव है, लेकिन अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा या उन दूसरे क्षेत्रों का पर्याप्त ज्ञान होना ज़रूरी नहीं जिनकी ज़िम्मेदारी उन पर आएगी।

बेशक कोई हर चीज़ का विशेषज्ञ नहीं हो सकता। मुझे किसी राजनेता से यह उम्मीद भी नहीं होगी कि वह डॉक्टर से बेहतर रोग की पहचान करे या किसी अनुभवी शिक्षक से बेहतर पाठ्यक्रम बनाए। लेकिन मैं यह अवश्य चाहूँगा कि उसे हर क्षेत्र के बुनियादी उसूलों की समझ हो, वह विशेषज्ञों की दलीलों की गुणवत्ता परख सके और अपने फ़ैसलों के दूरगामी परिणाम समझे।
इसीलिए मैं चाहता हूँ कि Humanity United Movement अपनी राजनीतिक अकादमी बनाए।

यह अकादमी मुख्यतः उन युवाओं के लिए होगी जो पारदर्शिता अपनाने को तैयार हैं, सार्वजनिक जीवन में रुचि रखते हैं और एक दिन समाज को चलाने में हिस्सा लेना चाहते हैं। यह ज़रूरी नहीं होगा कि वे पहले से तय कर चुके हों कि सांसद बनना है, मंत्री, नगराध्यक्ष या लोक प्रशासन के विशेषज्ञ। असल बात यह होगी कि उनमें यह समझने की चाह है कि राज्य कैसे चलता है और उसे और अच्छी तरह कैसे चलाया जा सकता है।

अकादमी शासन के सभी प्रमुख क्षेत्रों में व्यवस्थित शिक्षा देगी। विद्यार्थी अर्थशास्त्र, सार्वजनिक वित्त, स्वास्थ्य, शिक्षा, विधि, अंतरराष्ट्रीय संबंध, सुरक्षा, ऊर्जा और पर्यावरण की बुनियादी बातें सीखेंगे। लोक प्रशासन के कामकाज, संगठनों के प्रबंधन, आँकड़ों के उपयोग और राजनीतिक फ़ैसलों के परिणामों के आकलन पर विशेष ध्यान होगा।

लेकिन सबसे ज़रूरी यह होगा कि हर क्षेत्र में विद्यार्थियों को उस समय उपलब्ध सर्वोत्तम ज्ञान मिले। कुछ किताबी परिभाषाएँ रट लेना इसका उद्देश्य नहीं होगा। उन्हें समझना होगा कि अलग-अलग व्यवस्थाएँ

कैसे काम करती हैं, उनके नतीजों पर किन बातों का असर पड़ता है और किसी ठोस समस्या को सुलझाने के लिए राज्य के पास क्या रास्ते हैं।

मिसाल के लिए, मैं कल्पना करता हूँ कि एक विद्यार्थी को स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार के किसी प्रस्ताव की समीक्षा करनी है। उसे समझना होगा कि इस व्यवस्था के लिए पैसा कहाँ से आता है, उसके ख़र्च के मुख्य कारण क्या हैं, बीमारी की रोकथाम की क्या भूमिका है, इलाज का असर कैसे परखा जाता है और व्यवस्था बदलने से मरीज़ों, स्वास्थ्यकर्मियों और सरकारी ख़ज़ाने पर क्या बीतेगी।

इसी तरह वह पेंशन व्यवस्था, कर सुधार, स्कूलों के कामकाज या लोक प्रशासन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग का विश्लेषण कर सकेगा। यह केवल सैद्धांतिक पढ़ाई नहीं होगी। वास्तविक मामलों का अध्ययन, परिस्थितियों का अनुकरण और सार्वजनिक नीतियों के अपने प्रस्ताव बनाना भी शिक्षा का हिस्सा होंगे।

पाठ्य-सामग्री को लगातार नया करना बहुत ज़रूरी होगा। विज्ञान और प्रौद्योगिकी आगे बढ़ते हैं। बीस साल पहले जो ज्ञान उपलब्ध ज्ञान में श्रेष्ठ माना जाता था, वह आज भी श्रेष्ठ हो, ज़रूरी नहीं। इसलिए अकादमी को हर क्षेत्र के विकास पर बराबर नज़र रखनी होगी और उन विशेषज्ञों के साथ काम करना होगा जो आज की समझ को विद्यार्थियों तक पहुँचा सकें।

साथ ही विद्यार्थी यह भेद करना सीखेंगे कि किस बात की वैज्ञानिक बुनियाद मज़बूत है, किस पर विशेषज्ञों की बहस जारी है और कहाँ सवाल मूल्यों या राजनीति का हो जाता है। समाज अपने किन मूल्यों को प्राथमिकता दे, यह सारे फ़ैसले उसके लिए अच्छे-से-अच्छा विशेषज्ञ भी नहीं कर सकता। हाँ, वह यह समझने में मदद कर सकता है कि अलग-अलग चुनावों के नतीजे क्या होंगे।

इसीलिए फ़ैसला लेने की पद्धति अकादमी में अलग से पढ़ाई जाएगी। विद्यार्थी अनिश्चितता के साथ काम करना, तर्क की भूलें पहचानना, विकल्पों को तौलना और अपनी मान्यताओं को परखना सीखेंगे। उन्हें सीखना होगा कि अच्छा फ़ैसला लेने का मतलब हर बार फ़ौरन जवाब होना नहीं है। मतलब है कि जो साधन हाथ में हैं, उनसे यथासंभव अच्छे जवाब तक पहुँचना आए।

मैं ऐसी अकादमी की कल्पना करता हूँ जिसके दरवाज़े आंदोलन के बाहर के लोगों के लिए भी खुले हों। एक ही विचारधारा के राजनेताओं का जत्था तैयार करना उसका काम नहीं होना चाहिए। उसका काम ऐसी शिक्षा देना होगा जिससे इंसान समाज का कामकाज बेहतर समझ सके, उसकी अपनी राजनीतिक धारणाएँ चाहे जो हों।

अगर हम ऐसा संस्थान बना सके तो धीरे-धीरे उससे ऐसे लोग निकल सकते हैं जो सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की ज़िम्मेदारी सँभालने के लिए तैयार हों। इसलिए नहीं कि वे अपने आप सबसे अधिक

जानते होंगे, बल्कि इसलिए कि उनकी बुनियाद अच्छी होगी, उन्हें विशेषज्ञों के साथ काम करना आता होगा और वे अपने फ़ैसलों के परिणाम समझते होंगे।

मेरे ख़याल में राजनीति का स्तर लंबे समय में ऊँचा उठाने का यह एक रास्ता है। हम केवल इस आस में बैठे न रहें कि कभी योग्य लोग उभरेंगे। हम सोच-समझकर वह माहौल बना सकते हैं जहाँ उनकी तैयारी होगी।

एक वैश्विक दुनिया के लिए वैश्विक आंदोलन

Humanity United Movement का एक और बुनियादी सिद्धांत उसका विश्वव्यापी स्वरूप होगा।

हमारी आज की राजनीतिक व्यवस्था मुख्य रूप से राष्ट्र-राज्यों पर टिकी है। हर राज्य की अपनी सरकार, अपने हित और अपनी राजनीतिक प्राथमिकताएँ हैं। इस व्यवस्था के पीछे वाजिब कारण हैं। लोगों को ऐसी संस्थाएँ चाहिए जो उनके इलाक़े के हालात, उनकी भाषा, संस्कृति और ख़ास ज़रूरतों को जानती हों।

लेकिन मुश्किल तब आती है जब राष्ट्रीय हित पूरी मानवता के हित से टकराते हैं या कोई समस्या एक देश के स्तर पर कारगर ढंग से हल नहीं हो सकती।

जलवायु परिवर्तन, महामारियाँ, अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार, सुरक्षा के ख़तरे और तकनीकी प्रगति के परिणाम देशों की सरहदें नहीं पहचानते। कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी किसी देश की सीमा पर नहीं रुकेगी। उसका विकास और उसके आर्थिक परिणाम इस ग्रह के हर हिस्से में लोगों के जीवन को प्रभावित करेंगे।

इसीलिए मेरे लिए यह ज़रूरी है कि एक ऐसा राजनीतिक आंदोलन जन्म ले जो पहले दिन से पूरी दुनिया को सामने रखकर सोचे।

Humanity United Movement को धीरे-धीरे अलग-अलग देशों में संगठन बनाने चाहिए। हर संगठन अपने इलाक़े के हालात में काम करेगा और उस देश के लोकतांत्रिक नियमों का सम्मान करेगा। साथ ही कुछ उसूल उन सबको जोड़े रखेंगे। वे हैं सहज विवेक, पारदर्शिता, जवाबदेही और समस्याओं को मानवता के व्यापक हित में सुलझाने का प्रयत्न।

मेरी कल्पना है कि जिन विषयों पर मिलकर चलने से बड़ा लाभ हो सकता है, उन पर राष्ट्रीय संगठन साथ काम करेंगे। इससे अनुभव बाँटने, नीतियों के नतीजे मिलाकर देखने और अलग-अलग देशों में कारगर साबित हुए उपाय खोजने की गुंजाइश बनेगी।

मेरे लिए विश्वव्यापी होने का अर्थ यह नहीं कि हर बात का फ़ैसला एक ही केंद्र करे। उलटे, संगठन को यह पहचानना आना चाहिए कि कौन-से सवाल साथ मिलकर हल करने होंगे और कहाँ फ़ैसला स्थानीय लोगों के हाथ में छोड़ना बेहतर होगा।

इसलिए हर शाखा के पास पर्याप्त स्वायत्तता होनी चाहिए। साथ ही ऐसी व्यवस्थाएँ भी रहनी चाहिए जो सुनिश्चित करें कि सभी शाखाएँ आंदोलन के साझा सिद्धांतों पर क़ायम रहें। गंभीर मतभेदों पर फ़ैसले खुले तौर पर होंगे, और उन फ़ैसलों की आलोचना और समीक्षा की गुंजाइश रहेगी।
उद्देश्य सत्ता का एक और ढाँचा खड़ा करना नहीं होगा जो अधिक-से-अधिक प्रभाव के लिए दूसरों से होड़ करे। हम ऐसे लोगों का अंतरराष्ट्रीय समुदाय बनाना चाहेंगे जो उन समस्याओं पर मिलकर काम कर सकें जिन्हें हल करना किसी एक देश के बस में नहीं है।

भरोसे की बुनियाद है पारदर्शिता

राजनेताओं की संपत्ति का खुला ब्यौरा Humanity United Movement की सबसे साफ़ पहचानों में से एक होगा।

जो लोग जनता के धन के बारे में फ़ैसले लेना और दूसरों के जीवन पर असर डालना चाहते हैं, उनसे मैं आम लोगों से बढ़कर तत्परता की अपेक्षा रखूँगा। वे सामने रखें कि उनके पास क्या संपत्ति है, वह कैसे हासिल हुई और कौन-से वित्तीय संबंध उनके फ़ैसलों को प्रभावित कर सकते हैं।

इसलिए आंदोलन के सदस्यों को Viditeľné peniaze परियोजना के माध्यम से अपनी संपत्ति का ब्यौरा सार्वजनिक करना होगा और पहले से तय नियमों के अनुसार उसकी स्वतंत्र जाँच करानी होगी। किसकी जाँच कितनी गहराई तक हो, यह उस व्यक्ति की सार्वजनिक ज़िम्मेदारी के अनुपात में तय करना होगा।

यह व्यवस्था केवल एक फ़ॉर्म भरने की रस्म बनकर नहीं रहनी चाहिए। इसका प्रयोजन होगा कि जानकारी जाँची जा सके और वे विसंगतियाँ सामने आ सकें जिनका स्पष्टीकरण चाहिए। जनता के पास अपने प्रतिनिधियों की विश्वसनीयता परखने के लिए तब कहीं अधिक जानकारी होगी।

बेशक, अकेली पारदर्शिता किसी को अच्छा राजनेता नहीं बना देती। आदमी की संपत्ति ईमानदारी की कमाई हो सकती है और उसके फ़ैसले फिर भी ग़लत हो सकते हैं। वह अपने विषय का जानकार होकर भी दूसरों के साथ काम करने में असमर्थ हो सकता है। उसके इरादे नेक हो सकते हैं, उसका ज्ञान अधूरा।

इसीलिए मुझे पारदर्शिता को राजनीतिक अकादमी और सार्वजनिक पदाधिकारियों के काम के परिणामों की ठोस समीक्षा से जोड़ना ज़रूरी लगता है। ये तीनों साधन समस्या के अलग-अलग हिस्सों से जूझते हैं। पारदर्शिता से वित्तीय हितों पर बेहतर नज़र रखी जा सकती है, शिक्षा से विषय की तैयारी पुख़्ता होती है, और नतीजे परखने से पता चलता है कि लिए गए फ़ैसले सचमुच काम कर रहे हैं या नहीं।

साथ ही मैं नहीं चाहूँगा कि राजनेताओं से पारदर्शिता की अपेक्षा धीरे-धीरे हर इंसान की पूरी ज़िंदगी को सार्वजनिक करने की माँग बन जाए। निजता का अधिकार महत्त्वपूर्ण है, और जाँच की हद उसके उद्देश्य के अनुरूप होनी चाहिए। सार्वजनिक ज़िम्मेदारी के नियम साधारण निजी जीवन के नियमों से अधिक सख़्त होते हैं।

फिर भी एक बुनियादी उसूल पर क़ायम रहना होगा। न आंदोलन का संस्थापक जाँच के दायरे से बाहर होगा, न उसका नेतृत्व। पारदर्शिता पर भरोसा तभी बन सकता है जब वह उसकी वकालत करने वालों पर भी लागू हो।

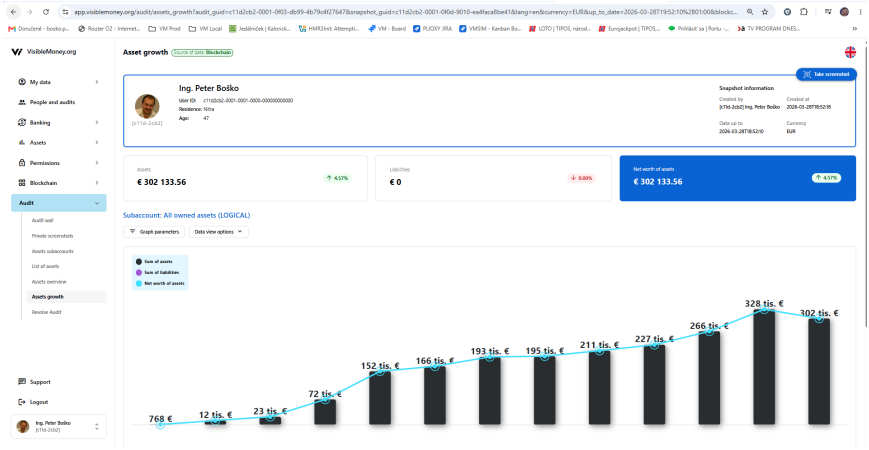

Viditeľné peniaze अनुप्रयोग में समय के साथ मेरी संपत्ति की वृद्धि

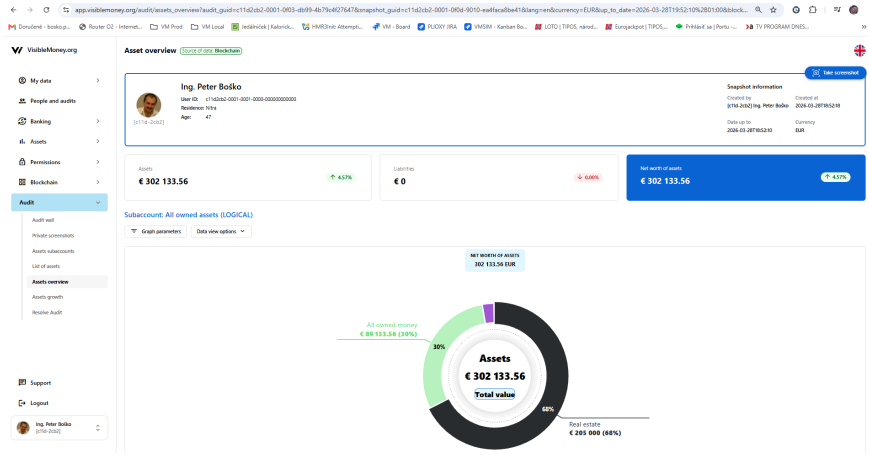

अनुप्रयोग में संपत्ति की संरचना का ब्यौरा

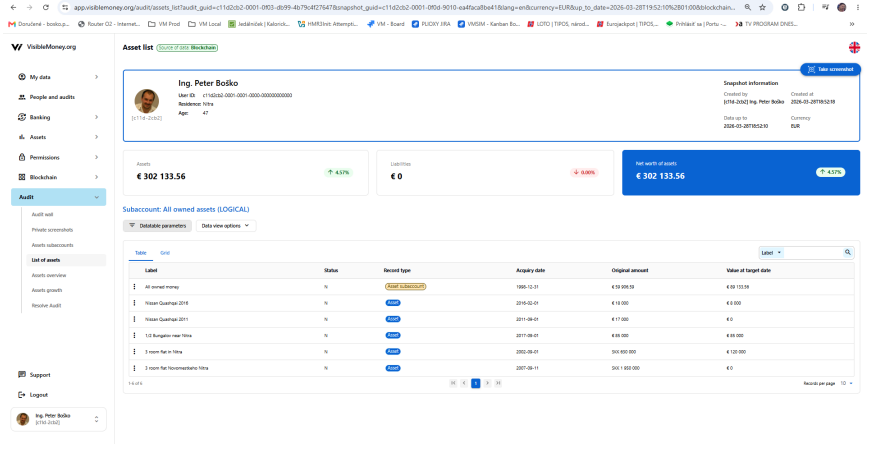

संपत्ति की अलग-अलग प्रविष्टियाँ

तकनीकी प्रगति और काम का भविष्य

आने वाले दशकों में मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन का विकास होगा।

प्रौद्योगिकी में यह क्षमता है कि वह उत्पादकता बहुत बढ़ा दे, अनेक सेवाओं की लागत घटा दे और उन उपायों को संभव बना दे जो आज बहुत महँगे या तकनीकी रूप से कठिन हैं। साथ ही वह रोज़गार के बाज़ार और लोगों के रोज़ी कमाने के ढंग को जड़ से बदल सकती है।

आज जो काम लोग करते हैं, उसका अधिकाधिक हिस्सा यदि मशीनें और बुद्धिमान प्रणालियाँ करने लगें तो हमें तय करना होगा कि इस प्रगति का लाभ कैसे बाँटा जाए।

आज अधिकांश लोगों की आय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके काम से जुड़ी है। लेकिन अगर उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बहुत कम मानवीय श्रम से संभव हो जाए, तो आय बाँटने के हमारे पुराने तौर-तरीक़े अपर्याप्त पड़ सकते हैं।

हमें ठीक से नहीं मालूम कि ये बदलाव कितनी तेज़ी से आएँगे या कैसा रूप लेंगे। लेकिन यह संभावना अनदेखी करना कि इनके गहरे सामाजिक परिणाम हो सकते हैं, मेरी नज़र में ग़ैरज़िम्मेदारी होगी।

एक उपाय जिसकी गंभीरता से पड़ताल करनी होगी, सार्वभौमिक मूल आय है। उसका उद्देश्य यह होगा कि जब लोगों के लिए परंपरागत रोज़गार ढूँढ़ना संभव न रहे तब भी उनके जीवन की बुनियादी भौतिक ज़रूरतें पूरी हों।

लेकिन ऐसे उपाय से कई सवाल उठते हैं। पैसा कहाँ से आएगा? आय कितनी होनी चाहिए? आज मिलने वाले सामाजिक भत्तों से इसका क्या संबंध होगा? काम करने की प्रेरणा, खपत, क़ीमतों और सरकारी वित्त पर इसका क्या असर होगा?

इनके उत्तर हमें अपनी विचारधारा की धारणाओं में नहीं तलाशने चाहिए। वे आर्थिक प्रतिमानों, प्रयोगों, सीमित स्तर पर चलाई गई परियोजनाओं और परिणामों की निरंतर समीक्षा से निकलने चाहिए।

यहीं Humanity United Movement के तीनों बुनियादी उसूल एक साथ काम आ सकते हैं। सहज विवेक अलग-अलग उपायों को परखने में हमारी मदद करेगा, पारदर्शिता से सार्वजनिक संसाधनों के प्रवाह पर बेहतर नज़र रखी जा सकेगी और वैश्विक सहयोग उन समस्याओं को हल करने में मदद करेगा जो देशों की सीमाएँ लाँघ जाती हैं।

अवसर की समानता और मनुष्य की गरिमा

मैं चाहता हूँ कि Humanity United Movement इस विश्वास को खुले तौर पर अपनाए कि मनुष्य का मोल उसके जन्मस्थान, वंश, त्वचा के रंग, लिंग या यौन अभिरुचि से तय नहीं होता।

लोग बहुत अलग परिस्थितियों में जन्म लेते हैं। कुछ को बचपन से अच्छी शिक्षा, सुरक्षित वातावरण और अपनी क्षमताएँ विकसित करने के अवसर मिलते हैं। दूसरों को ऐसी बाधाएँ पार करनी पड़ती हैं जिन्हें उन्होंने ख़ुद नहीं चुना और जो उनके जीवन की संभावनाएँ बुरी तरह सीमित कर सकती हैं।

मैं ऐसा समाज बनाना ज़रूरी समझता हूँ जहाँ हर मनुष्य को अपनी सामर्थ्य विकसित करने का अवसर मिले। इसका अर्थ यह नहीं कि सबको एक-से परिणाम हासिल करने होंगे। अर्थ यह है कि हमें अनावश्यक बाधाएँ दूर करनी चाहिए और उन लोगों की मदद करनी चाहिए जो समुचित सहारे के बिना बुनियादी अवसरों तक भी नहीं पहुँच पाते।

इसमें अच्छी शिक्षा, सुलभ स्वास्थ्य सेवा, संकट में पड़े लोगों की कारगर सहायता और काम तथा कारोबार के लिए न्यायसंगत परिस्थितियाँ शामिल हैं।

बराबर गरिमा का यह सम्मान उन कठिन सामाजिक सवालों में भी बना रहना चाहिए जहाँ अलग-अलग मूल्य और हित आमने-सामने आते हैं। अलग राय को देखते ही ख़ारिज कर देने के बजाय हमें उसकी दलीलें, उसके परिणाम और मनुष्य के बुनियादी अधिकारों से उसकी संगति परखनी चाहिए।

इसका अर्थ यह नहीं कि हर राय बराबर सही है या हमें हर बात पर सहमत होना चाहिए। इसका अर्थ है कि लोगों के बारे में हमारे फ़ैसले पूर्वग्रह पर न टिकें और समाज के नियमों का औचित्य उन्हें भी समझाया जा सके जिन पर वे लागू होते हैं।

दूर तक सोचना और भविष्य की ज़िम्मेदारी

आंदोलन का एक और सिद्धांत होगा कि फ़ैसले लेते वक़्त उनके दूरगामी परिणामों का ध्यान रखा जाए।

राजनीति पर अक्सर चुनावी चक्रों का असर पड़ता है। जिस क़दम का लाभ तुरंत दिख जाए, वह राजनीतिक रूप से उस उपाय से अधिक आकर्षक हो सकता है जिसका फल दस या बीस साल बाद मिलेगा। लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि समाज के लिए भी वही बेहतर है।

सार्वजनिक वित्त, ऊर्जा, पर्यावरण, शिक्षा या तकनीकी विकास के बारे में फ़ैसले लेते समय हमें उन परिणामों का भी ध्यान रखना चाहिए जिन्हें आने वाली पीढ़ियाँ भुगतेंगी।

हम वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी नवाचार और ऐसे उपायों की खोज का समर्थन करेंगे जिनसे संसाधन व्यर्थ गँवाए बिना जीवन का स्तर ऊँचा उठ सके। साथ ही हमें इस धारणा से बचना होगा कि तकनीकी प्रगति हर मुश्किल अपने आप हल कर देगी। यदि हम भविष्य के आविष्कारों के भरोसे हैं, तो दूसरे रास्ते भी तैयार रखने होंगे। हो सकता है वे आविष्कार समय पर न आएँ, या वैसा काम न करें जैसा हमने सोचा था।

अंतरराष्ट्रीय संघर्षों में भी यही सोच अपनानी चाहिए। युद्ध अक्सर जान-माल की इतनी बड़ी क्षति करते हैं कि उसका असर पीढ़ियों तक रहता है। इसीलिए मैं ऐसे तंत्र खोजना ज़रूरी मानता हूँ जो संघर्ष का जोखिम घटाएँ, कूटनीति को बढ़ावा दें और साथ ही राष्ट्रों के अपना भविष्य ख़ुद तय करने के अधिकार की रक्षा करें।

आंदोलन ख़ुद कैसे चले

Humanity United Movement की अपनी बनावट भी उन्हीं सिद्धांतों के अनुरूप होनी होगी जिन्हें वह समाज में लागू करना चाहता है।

दूसरी पार्टियों के राजनेताओं से पारदर्शिता माँगना काफ़ी नहीं। उसे अपनी पाँतों में भी लागू करना होगा। योग्यता की बातें काफ़ी नहीं, यदि उम्मीदवार चुनते वक़्त हम क़ाबिलियत से ऊपर निजी वफ़ादारी को रखते हैं। और लोकतांत्रिक निगरानी की अपील भी काफ़ी नहीं, यदि अपने ही नेतृत्व की आलोचना संभव न हो।

इसलिए नेतृत्व को चुनने और हटाने, धन के स्रोतों और ख़र्च की निगरानी करने, हितों के टकराव सुलझाने और कार्यक्रम से जुड़े बुनियादी सवाल तय करने के लिए स्पष्ट नियम बनाने होंगे।

वैश्विक आंदोलन को देशों की सीमाओं के आर-पार साथ काम करना आना चाहिए और स्थानीय लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का सम्मान भी करना होगा। साझा सिद्धांत उसकी पहचान की नींव होंगे, लेकिन ठोस उपायों को हर समाज की परिस्थितियों के अनुरूप ढालना होगा।

यह भी ज़रूरी होगा कि आंदोलन के भीतर असहमति की जगह बने। कोई हमारे कार्यक्रम की भूल दिखाए या किसी फ़ैसले के अनचाहे नतीजे सामने लाए तो उसे आंदोलन का दुश्मन नहीं समझना चाहिए। उसे अपनी दलील रखने का अवसर मिलना चाहिए और उसकी दलील पर बाक़ायदा विचार होना चाहिए।

कोई संगठन सत्ता की महत्त्वाकांक्षाओं, समूह के दबाव में एक ही तरह सोचने या ग़लत फ़ैसले लेने से अछूता नहीं है। अच्छी और ख़राब तरह से चलने वाले संगठन में फ़र्क यह नहीं कि एक कभी ग़लती नहीं करता। फ़र्क इसमें है कि वह ग़लती कैसे पकड़ता है, कैसे सुधारता है और उसे फिर होने से कैसे रोकता है।
इसीलिए मैं चाहता हूँ कि Humanity United Movement ऐसा संगठन हो जो अपने ऊपर भी निगरानी रख सके।

आख़िर हम हासिल क्या करना चाहते हैं?

अगर मुझे पूरी परियोजना का सार एक विचार में कहना हो तो मैं कहूँगा कि हम ऐसी परिस्थितियाँ बनाना चाहते हैं जिनमें मानवता अपनी ही क्षमताओं का बेहतर उपयोग कर सके।

हमारे पास प्रकृति के काम करने के ढंग की पड़ताल करने वाले वैज्ञानिक हैं। हमारे पास ऐसी तकनीकें हैं जो दिन-ब-दिन अधिक काम अपने आप कर सकती हैं। हमारे पास अपार संपदा पैदा करने वाली आर्थिक प्रणालियाँ हैं। और जानकारी तक हमारी ऐसी पहुँच है जो पिछली पीढ़ियों के सपने में भी नहीं थी।
इतना सब होते हुए भी अक्सर हम इन संभावनाओं को ज़िम्मेदार फ़ैसलों, अच्छी सार्वजनिक सेवाओं और अधिक-से-अधिक लोगों के लिए गरिमापूर्ण जीवन की परिस्थितियों में नहीं बदल पाते।

मुझे नहीं लगता कि इसके पीछे कोई एक समस्या है, या एक अनुप्रयोग, एक राजनीतिक दल अथवा एक सुधार इसे हल कर देगा। यह आपस में जुड़ी समस्याओं का समूह है। इनके लिए बेहतर संस्थाएँ, बेहतर शिक्षा, फ़ैसलों में अधिक पारदर्शिता और साथ काम करने की क्षमता चाहिए।

Viditeľné peniaze सार्वजनिक जीवन में वित्तीय हितों की बेहतर निगरानी का एक ठोस साधन है। राजनीतिक अकादमी लोगों को ज़िम्मेदार फ़ैसले लेने के लिए तैयार करने का एक तरीक़ा है। Humanity United Movement का काम ऐसा राजनीतिक और सांगठनिक ढाँचा बनाना है जो इन साधनों और ऐसे ही दूसरे उपायों को आपस में जोड़ सके और उन्हें अमल में ला सके।
इनमें से हर एक की अपनी भूमिका है। अकेले कोई भी काफ़ी नहीं।

मुझे यह उम्मीद नहीं कि हम कोई निर्दोष व्यवस्था बना लेंगे या हमारे सभी प्रस्ताव सही होंगे। लेकिन मुझे यह उम्मीद अवश्य है कि हम अपने फ़ैसलों को खुले तौर पर समझा सकेंगे, अपनी भूलें स्वीकार कर सकेंगे और व्यवस्थित रूप से बेहतर उपाय तलाश सकेंगे।
यदि इस परियोजना को सार्थक होना है तो इसकी शुरुआत ऐसे लोगों से होगी जो ज़िम्मेदारी उठाने के इच्छुक हों, उसके लिए तैयारी करें और अपने आचरण को जाँच के लिए खोल दें।

और इसके दरवाज़े उनसे असहमत लोगों के लिए भी खुले रहने चाहिए जो इसे चला रहे हैं। आख़िर उद्देश्य पूरी मानवता को एक ही राजनीतिक संगठन में शामिल होने के लिए मना लेना नहीं है। उद्देश्य इसमें हाथ बँटाना है कि हम, एक मानव समुदाय के रूप में, अपनी साझा समस्याएँ बेहतर ढंग से हल कर सकें।
इसीलिए आंदोलन का नाम Humanity United Movement है।
इसलिए नहीं कि हमारे विचार पहले से एक हैं। इसलिए कि तमाम भिन्नताओं के बावजूद हमारा भविष्य साझा है, और जो दुनिया हम अपने पीछे छोड़ेंगे उसकी ज़िम्मेदारी भी साझा है।

नई पीढ़ी के नाम

अगर तुम युवा हो और तुम्हें कभी लगता है कि दुनिया इससे कहीं बेहतर चल सकती है, तो शायद यही वक़्त है कि तुम केवल देखते न रहो, सोचने लगो कि तुम ख़ुद इसके लिए क्या कर सकते हो।

तुम्हारा अनुभवी राजनेता होना ज़रूरी नहीं। अर्थशास्त्र, क़ानून या अंतरराष्ट्रीय संबंधों की डिग्री भी ज़रूरी नहीं। हर सवाल का जवाब भी तुम्हारे पास नहीं होना चाहिए। ज़रूरी है दुनिया को समझने की ललक, सीखने की इच्छा, अपनी ही राय पर सवाल उठाने की क्षमता और उन बातों की ज़िम्मेदारी लेने का साहस जिनका तुमसे सरोकार है।
ऐसे ही लोगों को मैं Humanity United Movement में बुलाना चाहता हूँ।

ऐसी राजनीति की कल्पना करो जिसमें प्रवेश के लिए बीस साल का पेशेवर जीवन और बने-बनाए संपर्कों का जाल पास होना ज़रूरी न हो। ऐसी राजनीति जिसकी तैयारी तुम आज से शुरू कर सको। जहाँ तुम्हें सीखने का अवसर मिले कि राज्य कैसे चलता है, अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों से बहस करने, सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करने और धीरे-धीरे उस ज़िम्मेदारी के लिए तैयार होने का मौक़ा मिले जो शायद एक दिन तुम सँभालोगे।

इसीलिए हम एक राजनीतिक अकादमी बनाना चाहते हैं जो आधुनिक समाज की पेचीदा समस्याएँ समझ सकने वाली नई पीढ़ी को तैयार करने में मदद दे। हम यह नहीं चाहते कि तुम आंदोलन के संस्थापकों की हर बात बिना शर्त मान लो। हम चाहते हैं कि तुम आज़ाद होकर सोचना, तथ्यों के साथ काम करना और अच्छी दलील पहचानना सीखो। और यह कहने से न डरो कि कोई ग़लत है, चाहे वह हमारे अपने आंदोलन का कोई नेता ही क्यों न हो।
लेकिन एक शर्त है जो हमें आम राजनीति से अलग करेगी।

अगर हमें राजनेताओं से पारदर्शिता चाहिए तो उसकी शुरुआत हमें अपने आप से करनी होगी।

जो भी Humanity United Movement में आने का फ़ैसला करे, उसे शुरू से ही Viditeľné peniaze परियोजना के ज़रिए अपनी संपत्ति की खुली घोषणा करने और अपने ब्यौरे की निर्धारित जाँच कराने के लिए तैयार रहना होगा। चुनाव लड़ने का वक़्त आने पर नहीं। बड़ा पद मिलने पर भी नहीं। शुरू से।

इसलिए नहीं कि संपत्ति का मालिक होना अपने आप में संदेह की बात है। ठीक उलटा। ईमानदारी से अर्जित संपत्ति में लज्जा की कोई बात नहीं। लेकिन यदि हम ऐसा राजनीतिक वातावरण बनाना चाहते हैं जहाँ वित्तीय हित जनता की नज़रों से छिपाए न जाएँ तो हमें ख़ुद मिसाल बनने को तैयार रहना होगा।

पारदर्शी होने का अर्थ यह भी नहीं कि हम ख़ुद को उनसे बेहतर इंसान मानें जो हमारे साथ नहीं आते। इसका अर्थ है कि हम अपनी इच्छा से कड़ी जाँच स्वीकार करें और दूसरों को यह परखने दें कि हम सचमुच उस कसौटी पर खरे उतरते हैं या नहीं।

शायद तुम्हें लगे कि बड़े-बड़े राजनीतिक दलों, राज्यों और वैश्विक आर्थिक हितों के सामने एक छोटे-से आंदोलन की भला क्या बिसात है।

पर हर बड़े बदलाव को कहीं से तो शुरू होना होता है। हमें आज ठीक-ठीक जानने की ज़रूरत नहीं कि तीस साल बाद दुनिया कैसी होगी। लेकिन हमें आज से ऐसी संस्थाएँ, नियम और सोचने के ढंग विकसित करने होंगे जो हमें उसकी आने वाली चुनौतियों का सामना आज से बेहतर करने दें।

अगर हम ऐसा संगठन बना सकें जहाँ सीखने, खुले तौर पर काम करने, देशों की सीमाओं के पार हाथ मिलाने और नए ज्ञान के प्रकाश में अपनी राय पर दोबारा विचार करने को तैयार लोग एक-दूसरे से मिलें, तो अपने आप में वह सही दिशा में उठाया गया एक ठोस क़दम होगा।

इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि कल तुम सांसद बनो, मंत्री, सार्वजनिक नीति के विशेषज्ञ, उद्यमी या बस एक ऐसे इंसान रहो जिसे समाज के कामकाज में दिलचस्पी है। हर कोई अपने ढंग से हिस्सा ले सकता है।

अगर यह विचार तुम्हें छूता है, तो मैं तुम्हें पहला क़दम उठाने का निमंत्रण देता हूँ। Viditeľné peniaze परियोजना में पंजीकरण करो, उसके सिद्धांतों को समझो और Humanity United Movement से जुड़ने पर विचार करो। यह जानते हुए आओ कि तुम केवल दूसरों से बदलाव की माँग नहीं करोगे, ख़ुद से भी शुरुआत करने के लिए तैयार रहोगे।
पंजीकरण का फ़ॉर्म यहाँ मिलेगा।

https://app.visiblemoney.org/register

मैं तुमसे आँख मूँदकर भरोसा करने के लिए नहीं कहता। मैं चाहता हूँ कि तुम इस विचार को अच्छी तरह तौलो, असुविधाजनक सवाल पूछो और ख़ुद तय करो कि यह तुम्हारे वक़्त और तुम्हारी क़ाबिलियत के लायक़ है या नहीं।

हो सकता है तुम्हारा ही सवाल हमारी नज़र से छूटी कोई भूल पकड़ ले। हो सकता है तुम्हारा ही विचार ऐसी मुश्किल सुलझा दे जिसका हल हमें नहीं सूझ रहा। और हो सकता है एक दिन तुम उन लोगों में हो जो तय करेंगे कि हमारा समाज कैसे चलेगा।

भविष्य महज़ वह नहीं जो हमें पिछली पीढ़ियों से विरासत में मिलता है। वह कुछ ऐसा भी है जिसे हम अपने फ़ैसलों से आने वाली पीढ़ियों के लिए गढ़ते हैं।

अगर हम चाहते हैं कि वह बेहतर हो, तो हमें आज ही उस पर काम शुरू करने के लिए तैयार होना होगा।

Humanity United Movement — एक मानवता, एक साझा भविष्य।